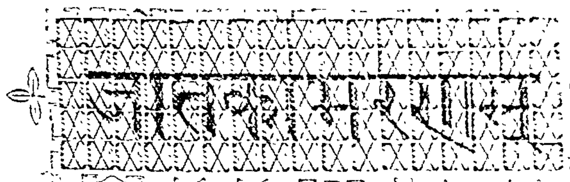
॥ श्रीः ॥

श्री ढुण्ढिराज आचार्य प्रणीत



मथुरा निवासी पंडित वनमाली चतुर्वेदी विरचित

भाषाटीका सहित ।

Agam Anuyog Prakashan,

किशनलाल द्वारकाप्रसाद ने

बम्बई टाइप से

बम्बई भूषण यन्त्रालय में छापकर

प्रकाशित किया

MUTTRA.

सम्वत् १९९२

इसके सम्पूर्ण अधिकार प्रकाशक ने स्वाधीन रक्खे हैं।

Printed by D. P. Bhartiya
at the Bombay Bhushan Press, Muttra.

प्रस्तावना।

प्रियकर !

हमारे यहां एक ज्योतिःशास्त्रही ऐसा है जिसके फलादिको देखकर विदेशियोंको भी अचम्भे में पडना पडता है, जोलोग फलादेश को नहीं मानते हैं वे भी कभी२ इसके चमत्कार को देखकर मुग्ध होजातेहैं और उनसे कुछ कहना नहीं बन पडता है, हमारे पूर्वज आचार्योंने इस विषयमें जो कुछ किया है हमसे तो उसका अनुकरण भी नहीं कर सके हैं, उन्होंने इसे ऐसा हस्तामलक कर रक्खा था कि भूत, भविष्य और वर्त्तमान् तीनों काल उनकी आंखोंके साह्मने फिरते थे और अपनी दूरदार्शिता से जो कुछ कह देतेथे वह पत्थर की लकीर था कभी किसी समय उसमें कुछ अन्तर नहीं पड सकताथा गणित और फलादेश के अनेकानेक ग्रन्थ रचकर इस विद्या को सर्वांग सुशोभित कर दिया,धन्य है उनके परिश्रम को,धन्य है उनके बुद्धि और बलोदय को,और यही कारण है कि जिनको इस असार संसारसे विदा हुए असंख्यकाल होगया फिर भी उनके नाम हरएक की जिव्हापर नृत्य करते हैं।

यह जातकाभरण नामक ग्रन्थ बहुतही उत्तम है यथा नाम तथा गुण की कहावत इसमें पूर्ण रीति से चरितार्थ होतीहै यह जातक ग्रन्थों का आभूषण रूप है जानने योग्य कोई वस्तु इससे अलग नहीं रही है, अब तक यह ग्रन्थ केवल मूलमात्र छपा था इससे सर्व साधारण को उपयोगी नहींथा और बहुतसे सज्जन महाशयों की इच्छाथी कि यह अनुवाद सहित छापा जाय इसलिये हमने पं०वनमाली चतुर्वेदीसे इसका भाषाटीका करायकर छापा है. इसमें हरएक विषयकी व्याख्या बहुत विस्तृत रीतिसे की गईहै और गूढ विषयोंको अच्छी तरह लिखा है जिसको सबही समझलें, किमाधिकं विज्ञु।

मिलने का पता—

किशनलाल द्वारकाप्रसाद

बम्बई भूषण प्रेस, मथुरा।

जातकाभरण की अनुक्रमणिका।

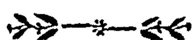




❁ अथ ❁

जातकाभरण प्रारम्भः ।

ज्योतिष,



सजलजलदवत्श्यामं गोपीमंडलकृतारामम् ।
रतिपतिकोटिललामं वंदेऽहं तं कृपाधामम् ॥ १ ॥

ग्रन्थारम्भे प्रथमं मङ्गलाचरणम् ॥

श्रीदं सदाहं हृदयारविन्दे पादारविन्दं वरदस्यवन्दे ।
मन्दोऽपि यस्य स्मरणेन सद्यो गीर्वाणवन्द्योपमतां समेति ॥१॥
उदार धीमन्दरभूधरेण प्रमथ्य होरागमसिन्धुराजम् ॥
श्रीढुण्डिराजः कुरुते किलार्यामार्यासपर्याममलोक्तिरत्नैः ॥ २॥

वर देने वाले श्री भगवान के लक्ष्मी देने वाले चरण कमलों को अपने हृदय कमल में सब समय स्मरण करता हूँ, जिन चरणोंके स्मरण करने से मन्द (तुच्छ) भी मनुष्य देवतों करके वन्दन करने लायक पुरुषों के तुल्य होता है ॥ १ ॥ ज्योतिष शास्त्र समुद्र को उदार बुद्धी मन्दराचलसे ढुण्ढिराज नाम कवि अपनी निर्मल उक्तिरत्नों से आर्या (दुर्गा) की सपर्या (पूजन) करता हूँ ॥ २ ॥

ज्ञानराजगुरुपादपङ्कजं मानसे खलु विचिन्त्य भक्तितः ॥
जातकाभरणनाम जातकं जातकज्ञ सुखदं विधीयते ॥ ३ ॥
शास्त्रोक्तां यो जन्मपत्रीं करोति नानाग्रन्थालोकनात्तस्य चित्तम् ।
अत्युद्विग्नंस्यात्ततो जातकेऽस्मिन्कुर्वे व्यक्तां जातकोक्तिं च सवाम्

मैं ज्ञानराज नाम निज गुरुके चरण कमलको अपने मन मानस में भक्ति से चिंतवन करके जातक जानने वाले पंडितों को सुख देने वाले जातकाभरण नाम जातक ग्रन्थ को निर्माण करता हूँ ॥ ३ ॥ जो कोई शास्त्रोक्त रीतिसे जन्म पत्रा को बनाता है उसका चित्त अनेक ग्रन्थोंके देखनेसे अत्यन्त उद्विग्न होताहै, इससे मैं इस जातकाभरण नाम जातक ग्रन्थ में जन्म पत्री बनाने की रीति को स्पष्ट करके प्रकट करता हूँ ॥ ४ ॥

विचित्रपत्रीकरणादराणां श्रमं विनानुक्रमलेखनार्थम् ॥
समर्थमेतत्प्रकटार्थमेवात्यर्थं ततो नाम यथार्थमस्य ॥ ५ ॥
सन्मङ्गलाशीर्वचनान्वितानि पद्यानि चाग्रे समुदीरयन्ते ॥
तान्येव पत्रीकरणे प्रवीणाः श्रेयस्कराणि प्रथमं लिखन्तु ॥ ६ ॥

विचित्र जन्म पत्री बनाने में आदर रखने वाले पण्डित पुरुषोंको क्रमसे जन्म पत्री लिखने के अर्थ जो यह एकही ग्रन्थ जन्म पत्री बनानेके समग्र स्पष्ट अर्थों से युक्त, इससे इसका जातकाभरण नाम है, अर्थात् इस एकही ग्रन्थके पढ़ने देखने से जन्मपत्री बनाने की समग्र रीति विदित हो जाती हैं ॥ ५ ॥ मङ्गल विधायक और आशीर्वचन विधायक जिन श्लोकों को ग्रन्थारम्भ में कविजन लिखते हैं, कल्याण करने वाले उन्हीं श्लोकोंको जन्मपत्री बनानेके प्रारम्भमें पण्डितजन उसी प्रकार से लिखौ, अर्थात् जन्म पत्री बनाने के समय प्रारम्भ में लिखने के श्लोकों की मैं नवीन रचना नहीं करता हूँ ॥ ६ ॥

शुण्डामण्डलसंप्रसारकरणैर्मौलिस्थलान्दोलनै
नेत्रोन्मीलनमील नैरविरलश्रीकर्णतालक्रमैः ॥
दानालिध्वनितैर्विलासचरितैरुध्वाननोद्गर्जितै
र्जातानन्दभरः करीन्द्रवदनो वः श्रेयसे कल्पताम् ।७

(पुनः पुनर्मङ्गलमूर्तिस्मरणं प्रत्यूहव्यूहनिवारणपरमेवेति पद्यान्तरम्)

नानादानविधानयज्ञनिकरैरुग्रैस्तपोभिश्चिरात्
प्राप्ते कल्पतरौ प्रकल्पितफलावाप्तिःकथंचिद्भवेत् ॥
तूर्णं यच्चरणाम्बुजस्मरणतः संपूर्णकामः पुमान्
सोऽयवोऽभिमतं ददातु सततं हेरम्बकल्पद्रुमः ॥ ८ ॥
सन्मानसावासविलासहंसी कर्णावतंसीकृतपद्मकोशा ॥
तोषादशेषाभिमतं विशेषादेषापि भाषा भवतां ददातु।९

अपने शुण्डादण्ड वारम्वार फैलाने सकोड़नेसे और पुनः पुनः शिरके झुकाने उठानेसे और नेत्रोंके खोलने मीचनेसे और निरन्तर कर्णताल पत्रों के फिराने से

और कुम्भस्थलके मदसे मत्त भ्रमरोंकी गुञ्जारसे और क्रीडानिमित्त अनेक चरित्रों से और ऊपरको शूंड उठकार किये अपने चीत्कार शब्दों में उत्पन्न हुए आनन्द से परिपूर्ण करिवदन (श्रीगजानन) तुम सबोंको कल्याण देने वाले हो ॥ ७ ॥ (मङ्गल मूर्ति श्रीगणेशजीका पुनः पुनः स्मरण करना अनेक विघ्न समूहों का निवारण करने वाला होता है, इससे और भी एक श्लोकसे प्रणाम करता हूँ) नाना प्रकार दानोंके करने से, यज्ञ समूह करनेसे और अनेक प्रकार तप करनेसे, कल्पवृक्ष के मिलने पर भी मनोभिलषित पदार्थ मिलना कठिन होता है, परन्तु जिन गण नायक के चरण कमल स्मरण करने से पुरुष शीघ्र ही सम्पूर्ण कामनाओंसे पूर्ण होता है, वे श्रीगणनायक [गणेश] रूप कल्प वृक्ष तुमारे मनोभिलाषितोंको पूर्ण करैं ॥ ८ ॥ कमलकलिका को कर्णभूषण करके धारण करने वाली, और सुजन जनोंके मन मानसमें हँसीकी तरह सदा विलास (क्रीड़ा) करने वाली जगदम्बा श्रीसरस्वती प्रसन्न होकर तुमको विशेष करके समस्त मनोभिलषित मनोरथों को देने वाली होय ॥ ९ ॥

कल्याणानि दिवामणिः सुललितां कान्तिं कलानां निधि-
र्लक्ष्मीं क्ष्मातनयो बुधश्च बुधतां जीवश्चिरं जीविताम् ।
साम्राज्यं भृगुजोऽर्कजो विजयितां राहुर्बहूत्कर्षतां
केतुर्यच्छतु तस्य वाञ्छितमयं पत्री यदीयोत्तमा ॥ १० ॥

ननु पूर्वजन्मोपार्जितानां सदसत्कर्मणां परिपाकोऽस्मिन् जन्मनि शुभाशुभफलावाप्तिकालादेव व्यक्तोऽस्तीति जातकागमोक्तप्रपञ्चेन किं प्रयोजनमिति चेत्सत्यम् पूर्वोपार्जितकर्मपरिपाकः शुभाशुभफलोपलब्धिदर्शनादेव ज्ञायते । परमभीष्टकाले ज्ञातुं न शक्यते ॥ तथा च भाग्यमग्रे खण्डितमखण्डितं रिष्टं रिष्टभङ्गोऽप्यायुर्मानमित्यादिज्ञानार्थे जातकागम एवात्यर्थं समर्थस्तदेकशरणत्वात् तथाहि-दिनरात्रिविभागेन सूक्ष्मकालावयवसाधनोपायैस्तु यो ध्रुवभ्रमादिविचित्रयंत्रैरुपलक्षितातिस्पष्टसमयोपात्तलग्नादिद्वादशराशिचक्रे स्वोच्चादिगतानां ग्रहाणां सदसद्दशानुक्रमेणाभीष्टसमयेपि प्राक्कर्म

परिपाकोवगम्यते रिष्टभङ्गः प्रकृष्टं तु रिष्टस्यापि विनष्टिं विशिनष्टि तद्वदायुर्दायानयनप्रकारेण वयःप्रमाणस्य च निर्णयः स्यात ।तस्माद्वेदाङ्गत्वेनाधुनिकाभावत्वेन प्रत्ययसिद्धत्वेनापि जातकस्कन्धांगीकरणमुचितमेवेति ॥ उपार्जितं यस्यदसद्विमिश्रितं जन्मान्तरे कर्मनरैरिदानीम् । होरागमस्तस्यविपाकमुच्चैर्दशाक्रमेण प्रकटीकरोति॥ ११॥

जन्मपत्रे प्रथम लेखनार्थः श्लोकः ।

जिस मनुष्यकी यह जन्मपत्री है उसको सूर्यनारायण तौ कल्याणोंके देनेवाले होउ चन्द्रमा ललित (प्रिय) कीर्तिको, मङ्गल लक्ष्मीको, बुध बुद्धिमानी, बृहस्पति चिरंजीविपनको शुक्र साम्राज्य (चक्रवर्तित्व) को, शनि विजयको,राहु उत्कर्षको, और केतु उस मनुष्यके सकल मनोरथोंके देने वाले होउ॥ १० ।, यदि कोई इस विषयमें यह शङ्का करै कि जब पूर्वजन्मके संचित (इकट्ठे) किये शुभाशुभकर्मो का परिपाक तौ इस जन्ममें शुभाशुभफलके प्राप्ति समयसे ही स्पष्ट प्रतीत होता है फिर इस जातक शास्त्रके बनाने का क्या प्रयोजन है ?॥ समाधान ॥ जो आपने ये शङ्का को सो ठीक है कि पूर्व जन्मों में किये कर्मोंका परिपाक शुभाशुभ फलों की प्राप्ति दीखने से ही प्रत्यक्ष जाना जाताहै, परन्तु कौनसे पूर्वसंचित शुभाशुभकर्मका परिपाकभूत सुख दुःखरूप शुभाशुभफल हमको कब प्राप्त होवेगा ये वात जातक शास्त्रके बिना किसीको कभीभी मालूम नहीं पड़ सक्तोहै इससे यह शास्त्र अवश्यही होना चाहिये कि इस संवत्में इस मासमें हमको यह सुख दुःख होवेगा । और दूसरा प्रयोजन यह है कि दिन रात्रिके विभाग करके सूक्ष्म जो कालके अवयव (परमाणु त्रुटि आदि) है उनसे ध्रुवके चतुर्दिश भ्रमणादि विचित्र यंत्रोंसे उपलक्षित अत्यन्त स्पष्ट रातिसे जाने गये जो लग्न आदि वारह राशि चक्रहैं उनके द्वारा अपने २ उच्च नीच स्वक्षेत्रादि स्थानोंको प्राप्त हुए ग्रहोंकी उत्तम निकृष्ट दशाओंके अनुक्रम करके कि कौन से उत्कृष्ट निकृष्ट ग्रहकी दशा हमको कबसे और कब तक रहैगी इस बातको जब जाना चाहै तभी जान लेवे इसके द्वारा अपने पूर्व संचित शुभाशुभ कर्म परिपाकको भी मनुष्य इस जातकशास्त्रसे जान सक्ताहै इससे भी इस शास्त्र की आवश्यकता है ॥ और तीसरा प्रयोजन यह है कि रिष्ट भङ्ग योग का होना प्रकृष्ट रिष्ट के नाश होने को जताता है कि जो यह जन्म कुण्डली में रिष्टभंग योग पड़ाहै सो अवश्यही हमारे रिष्टका नाश करैगा और इसी तरह आयुर्दायके लानेके प्रकारसे

अपनी आयुष्यके प्रमाणकाभी निर्णय मनुष्यको होजाताहै कि मेरी कुण्डली गत ग्रहों के योगोंसे इतने वर्ष प्रमाणकी मेरी आयुहै ॥ उक्त इन सब वातोंको जातकशास्त्रके अभाव होनेसे कोइ नहीं जान सक्ताहै इससे जातकशास्त्र होना ही आवश्यक है ॥ और यह ज्योतिष शास्त्र वेदके छः अङ्गोंमें एक अङ्ग होनेसे आधुनिक (नवीन) नहींहै किन्तु अनादि है इससे और प्रतीतिसे सिद्ध है इससे भी जातक विषय का अङ्गीकार करनाही उचितहै इसमें कोई शङ्का नहीं है ॥ इसी शास्त्रार्थ कियेका फल रूप सिद्धांत इस श्लोकमें कहते हैं॥ कि मनुष्योंने अनेक जन्मातरों में जो कुछ मिला हुआ शुभाशुभ कर्म संचित (इकट्ठा) किया है उस कर्मका परिपाक (फल) ज्योतिपका जानने वाला पण्डित दशाओंके क्रमसे ठीक २ वता सकता है॥ ११ ॥

साक्षाद्भवेद्भाग्यनिरीक्षणाय सुनिर्मलादर्शतलं किलेदम् ॥
शास्त्रं विपद्वारिनिधिं प्रतर्तुं तरिस्तथार्थार्जनचारुमित्रम् ॥ १२ ॥
आधानकाले कमलोद्भवेन वर्णावलिर्भालतलान्तराले ॥
या कल्पिता पश्यति दैववित्तां होरागमज्ञानविलोचनेन ॥ १३ ॥

और यह शास्त्र भाग्यरूप मुखके देखनेके वास्ते साक्षात् निर्मलदर्पणके समान है और विपत्ति समुद्रके पार जानेके वास्ते जहाज है इसी तरह धन संचय करने के लिये यह शास्त्र एक अत्युत्तम मित्र है इन प्रयोजनों से भी इस शास्त्र की अवश्य आवश्यकता है ॥ १२ ॥ और जो कुछ कर्मरेख गर्भाधानके समय में ब्रह्माजीने इस मनुष्य के ललाटपटल में लिखी है उस कर्म रेखको होरागम (ज्योतिष्शास्त्र) का जानने वाला विद्वान् (ज्योतिपी) ज्योतिष्शास्त्ररूप निर्मल नेत्रों से देख सकता है ॥ १३ ॥

होरागमव्योमचरानुसारस्तेषां विचारः सुतरामुदारः ॥
सिद्धान्त एवाकलनं तदास्याभ्यासोऽय दास्याद्गणितद्वयस्य ॥१४॥
अपारहोरागमपारगामी पाट्यां च बीजे सुतरां प्रगल्भः ॥
सद्गोलविद्याकुशलः स एव भवेत्फलादेशविधौ समर्थः ॥ १५ ॥

ये जो ज्योतिष् शास्त्र है सो ग्रहोंके आधीन है और उन ग्रहोंका जो विचार है सो अत्यन्त कठिन है उन ग्रहोंका यथार्थ ज्ञान उसी पुरुषको हो सकता है जब कि दोनों प्रकारके गणितोंके करनेका यथार्थ ज्ञान होवे ॥१४॥ और कोई पंडित

मनुष्य इस अपार ज्योतिषशास्त्र समुद्रके पार जानेवाला है और पाटीगणितमें और बीज गणितमें कृतपरिश्रम होनेसे सबतरह परिपूर्ण है और उत्तम गोलविद्यामें कुशल है वही फलादेश विधिके कहनेमें समर्थ होता है ॥१५॥

श्रीजन्मपत्री शुभदीपकेन व्यक्तं भवेद्भाविफलं समस्तम् ॥
क्षपाप्रदीपेन यथालयस्थं घटादिजातं प्रकटत्वमेति ॥ १६ ।
साजन्मपत्री विमला न यस्य तज्जीवितं संतत मन्धकं स्यात ॥
अनल्पमल्पं च ततोल्पकं वा न कल्प्यते भाग्यमतीव हेतोः॥१७॥

जैसे रात्रिके समय दीपकके प्रकाशसे घरके भीतर धरी हुई घटादि वस्तु की यथार्थ प्रतीति होती है इसी तरह जन्मपत्ररूपदीपक से जन्म भरका समग्र भविष्य फल दीख जाता है ॥१६॥ जिस मनुष्यकी वह जन्मपत्री शुद्ध न होवे उसका जन्म भर का वृत्तांत अन्धा होता है और उत्कृष्ट निकृष्ट और अतिनिकृष्ट जो भाग्य है उस की अवधि फिर कभी भी निश्चय नहीं हो सकती है ॥ १७ ॥

मङ्गलार्थं जन्मपत्र पूर्व श्लोकाः ।

जन्मकालतिथिवारतारकाश्चापि योगकरणक्षणाभिधाः ॥
मंगलाय किल सन्तु पत्रिका यस्य शास्त्रविहिता विरच्यते ॥१८॥
ये वक्ष्यमाणा इह राज्ययोगा रश्मिप्रभूता अपि नाभसाश्च ॥
ये कारकाः पूर्णफलंहिपूर्णं यच्छन्तु पत्री क्रियते यदीया ॥१९॥
यस्यामलेयं किल जन्मपत्री कुतूहलेन क्रियते यथोक्ता ॥
तस्यालये सत्कमलासलीलं सुनिश्चला तिष्ठतु दीर्घकालम् ॥२०॥

जन्मकालकी तिथि, वार, तारा, (नक्षत्र), योग, करण और मुहूर्त ये सब जिस मनुष्यकी जन्मपत्री शास्त्ररीतिके अनुसार हम बनाते हैं उसको मङ्गलार्थ होउ ॥१८॥ जिस मनुष्यकी इस उत्तमजन्मपत्रीको यथोक्त रीतिसे हम बनाते हैं उस मनुष्यके घरमें अत्युत्कृष्टलक्ष्मी लीलासहित दीर्घकालपर्यंत निश्चल होकर निवास करौ ॥१९॥ और जो राजयोग किरणयोग और नाभस नाम योग है और जो कारक ग्रह है ये भी सब जिस मनुष्यको जन्मपत्रो हम बनाते हैं उसको पूर्ण फल के देने वाले होउ ॥ २० ॥

कविप्रौढि ज्ञापनम् ।

कृतं मया नोदकयन्त्रसाधनं नृपेक्षणंचापि नशङ्कुसाधनम् ॥

पारोपदिष्टात्समयात्प्रयत्नतः शुभाशुभं जन्मफलं मयोच्यते ॥२१॥

मैंने न तौ कोई जल यन्त्रका साधन किया है और न किसी राजाका दर्शन किया है और न कोई शंकुसाधन किया है किन्तु केवल प्रश्न किये समयको ही निमित्त मानकर बड़े प्रयन्तसे शुभाशुभ जन्मका फल मैं कहता हूं ॥ २१ ॥

उसमें प्रथम संहिताविद विद्वत्पुरुषोंके अभिप्रायसे पंचागके पंचागोंके फलोंको निरूपण करता हूं ॥ तत्रादौ संवत्सर फलानि ।

अथ सांहितिकाभिप्रायेण पञ्चांगफलानि निरूप्यन्ते ॥

सर्ववस्तु परिसंग्रहेरतः पुत्रसंततिरतीव सन्मतिः ॥
सर्वभोगयुतदीर्घजीवितोजायते प्रभवसंभवः पुमान् ॥ १ ॥
उत्पन्नभोक्ताप्रियदर्शनश्च वलाधिशाली चतुरः कलाज्ञः ॥
राजाभवेदात्मकुले सुशीलो विद्वान् मनुष्यो विभवाब्दजन्मा ॥२॥

जिस मनुष्यका प्रभवनामके संवत्सरमें जन्म होता है वह मनुष्य सव वस्तुओं के संग्रह करने में निरत, पुत्र संततिसे संपन्न, अत्यंत वुद्धिमान,सव भोगोंसे युक्त और दीर्घायु होता है । १ । और विभव नामके संवत्सरमें जन्म लेनेवाला पुरुष प्राप्त हुई वस्तु का भोगने वाला, देखने में सवको प्रिय, वड़ा वली, वड़ा चतुर, कलाओंका जानने वाला, अपने कुलमें,राजा,वड़ा सुशील, और पूर्ण विद्वान होताहै

सदासहर्षोऽतितरामुदारः सत्पुत्रदारो विभवैः समेतः ॥
सद्भाग्यविद्याविनयोपपन्नो नूनं पुमान् शुक्लसमुद्भवः स्यात् ॥३॥
दातासुतानन्दयुतोऽतिकान्तः सत्येन नित्यं सहितो गुणीस्यात ॥
दक्षश्च धूर्तः परकार्यकर्ता प्रमोदजन्मा मनुजोभिमानी ॥ ४ ॥

और शुक्ल नामके संवत्सरका जन्म लेने वाला पुरुष सदा आनन्द युक्त, वड़ा उदार, उत्तम जिसके पुत्र और स्त्री, अनेक वैभवोंसे युक्त, उत्कृष्ट भाग्य और विद्यासे संपन्न होता है ॥ ३ ॥ और प्रमोद नामके संवतका जन्म लेनेवाला पुरुष वड़ा दाता, पुत्रोंके आनन्दसे युक्त, सवको अत्यन्त प्रिय, सत्य वोलने वाला, वड़ा गुणवान्, वड़ा चतुर तथा धूर्त, औरोंके कामका करने वाला होता है ॥ ४ ॥

दाराभिमानः सुतरां दयालुः कुलानुवृत्तः किलः चारु शीलः ॥

मनुष्य इस अपार ज्योतिषशास्त्र समुद्रके पार जानेवाला है और पाटीगणितमें और बीज गणितमें कृतपरिश्रम होनेसे सबतरह परिपूर्ण है और उत्तम गोलविद्यामें कुशल है वही फलादेश विधिके कहनेमें समर्थ होता है ॥१५॥

श्रीजन्मपत्री शुभदीपकेन व्यक्तं भवेद्भाविफलं समस्तम् ॥
क्षपाप्रदीपेन यथालयस्थं घटादिजातं प्रकटत्वमेति ॥ १६ ।
साजन्मपत्री विमला न यस्य तज्जीवितं संततमन्धकं स्यात ॥
अनल्पमल्पं च ततोल्पकं वा न कल्प्यते भाग्यमतीव हेतोः॥१७॥

जैसे रात्रिके समय दीपकके प्रकाशसे घरके भीतर धरी हुई घटादि वस्तु की यथार्थ प्रतीति होती है इसी तरह जन्मपत्ररूपदीपक से जन्म भरका समग्र भविष्य फल दीख जाता है ॥१६॥ जिस मनुष्यकी वह जन्मपत्री शुद्ध न होवे उसका जन्म भर का वृत्तांत अन्धा होता है और उत्कृष्ट निकृष्ट और अतिनिकृष्ट जो भाग्य है उस की अवधि फिर कभी भी निश्चय नहीं हो सकती है ॥ १७ ॥

मङ्गलार्थं जन्मपत्र पूर्व श्लोकाः ।

जन्मकालतिथिवारतारकाश्चापि योगकरणक्षणाभिधाः ॥
मंगलाय किल सन्तु पत्रिका यस्य शास्त्रविहिता विरच्यते ॥१८॥
ये वक्ष्यमाणा इह राज्ययोगा रश्मिप्रभूता अपि नाभसाश्च ॥
ये कारकाः पूर्णफलंहिपूर्णं यच्छन्तु पत्री क्रियते यदीया ॥१९॥
यस्यामलेयं किल जन्मपत्री कुतूहलेन क्रियते यथोक्ता ॥
तस्यालये सत्कमलासलीलं सुनिश्चला तिष्ठतु दीर्घकालम् ॥२०॥

जन्मकालकी तिथि, वार, तारा, (नक्षत्र), योग, करण और मुहूर्त ये सब जिस मनुष्यकी जन्मपत्री शास्त्ररीतिके अनुसार हम बनाते हैं उसको मङ्गलार्थ होउ ॥१८॥ जिस मनुष्यकी इस उत्तमजन्मपत्रीको यथोक्त रीतिसे हम बनाते हैं उस मनुष्यके घरमें अत्युत्कृष्टलक्ष्मी लीलासहित दीर्घकालपर्यंत निश्चल होकर निवास करौ ॥१९॥ और जो राजयोग किरणयोग और नाभस नाम योग है और जो कारक ग्रह है ये भी सब जिस मनुष्यको जन्मपत्री हम बनाते हैं उसको पूर्ण फल के देने वाले होउ ॥ २० ॥

कविप्रौढि ज्ञापनम् ।

कृतं मया नोदकयन्त्रसाधनं नृपेक्षणंचापि नशङ्कुसाधनम ॥

पारोपदिष्टात्समयात्प्रयत्नतः शुभाशुभं जन्मफलं मयोच्यते ॥ २१ ॥

मैंने न तो कोई जल यन्त्रका साधन किया है और न किसी राजाका दर्शन किया है और न कोई शंकुसाधन किया है किन्तु केवल प्रश्न किये समयको ही निमित्त मानकर बड़े प्रयन्तसे शुभाशुभ जन्मका फल मैं कहता हूं ॥ २१ ॥

उसमें प्रथम संहिताविद् विद्वत्पुरुषोंके अभिप्रायसे पंचागके पंचागोंके फलोंको निरूपण करता हूं ॥ तत्रादौ संवत्सर फलानि ।

अथ सांहितिकाभिप्रायेण पञ्चांगफलानि निरूप्यन्ते ॥

सर्ववस्तु परिसंग्रहेरतः पुत्रसंततिरतीव सन्मतिः ॥
सर्वभोगयुतदीर्घजीवितोजायते प्रभवसंभवः पुमान् ॥ १ ॥
उत्पन्नभोक्ताप्रियदर्शनश्च वलाधिशाली चतुरः कलाज्ञः ॥
राजाभवेदात्मकुले सुशीलो विद्वान् मनुष्यो विभवाब्दजन्मा ॥ २ ॥

जिस मनुष्यका प्रभवनामके संवत्सरमें जन्म होता है वह मनुष्य सब वस्तुओं के संग्रह करने में निरत, पुत्र संततिसे संपन्न, अत्यंत बुद्धिमान, सब भोगोंसे युक्त और दीर्घायु होता है । १ । और विभव नामके संवत्सरमें जन्म लेनेवाला पुरुष प्राप्त हुई वस्तु का भोगने वाला, देखने में सबको प्रिय, बड़ा बली, बड़ा चतुर, कलाओंका जानने वाला, अपने कुलमें, राजा, बड़ा सुशील, और पूर्ण विद्वान होताहै

सदासहर्षोऽतितरामुदारः सत्पुत्रदारो विभवैः समेतः ॥
सद्भाग्यविद्याविनयोपपन्नो नूनं पुमान् शुक्लसमुद्भवः स्यात् ॥ ३ ॥
दातासुतानन्दयुतोऽतिकान्तः सत्येन नित्यं सहितो गुणीस्यात् ॥
दक्षश्च धूर्तः परकार्यकर्ता प्रमोदजन्मा मनुजोभिमानी ॥ ४ ॥

और शुक्ल नामके संवत्सरका जन्म लेने वाला पुरुष सदा आनन्द युक्त, बड़ा उदार, उत्तम जिसके पुत्र और स्त्री, अनेक वैभवोंसे युक्त, उत्कृष्ट भाग्य और विद्यासे संपन्न होता है ॥ ३ ॥ और प्रमोद नामके संवतका जन्म लेनेवाला पुरुष बड़ा दाता, पुत्रोंके आनन्दसे युक्त, सबको अत्यन्त प्रिय, सत्य बोलने वाला, बड़ा गुणवान्, बड़ा चतुर तथा धूर्त, औरोंके कामका करने वाला होता है ॥ ४ ॥

दाराभिमानः सुतरां दयालुः कुलानुवृत्तः किलः चारु शीलः ॥

देवद्विजार्चाभिरतो विनीतो मर्त्यः प्रजाधीशसमुद्भवः स्यात् ॥५॥
कान्तः सुखी भागयुतश्च मानी प्रियप्रवक्ता बहुपुत्रयुक्तः ॥
सुगुप्तबुद्धिः खलु दीर्घजीवी नरोऽङ्गिरोवत्सरसंभवः स्यात् ॥६॥

और जिस पुरुषका प्रजाधीश नाम संवत्सरमें जन्म होताहै वह पुरुष स्त्री का अभिमान रखने वाला, बड़ा दयालु, अपने कुलवर्तावका चलने वाला, बड़ा सुशील और देवता ब्राह्मणोंकी पूजा करने में निरत होताहै ॥ ५ ॥ और जो अङ्गिरानाम संवत्में जन्म लेताहै वह पुरुष सबको प्रिय, अनेक भोगोंका भोगने वाला, बड़ा मानी, प्रिय वाक्य बोलने वाला, अनेक पुत्रोंसे युक्त गुप्त जिसकी बुद्धि दीर्घायु होता है ॥ ६ ॥

श्रीमान्प्रतापीबहुशास्त्रवेत्ता सुहृत्प्रियश्चारुमतिर्बलीयान् ॥
सत्कीर्तियुक्तो नितरामुदारो भवेन्नरः श्रीमुखसंभवोसौ ॥७॥
प्रशस्तचेताः सुतरां यशस्वी गुणान्वितो दानरतो विनीतः ॥
सदासहर्षोऽभिमतो बहूनां भावाभिधानोद्भवमानवः स्यात् ॥८॥

और जो श्रीमुख नाम संवत्में जन्म लेताहै वह पुरुष बड़ा श्रीमान्, बड़ा प्रतापी, अनेक शास्त्रों का जानने वाला, सुहृदों को प्रिय अथवा सुहृदों से प्यार रखने वाला, उत्तम जिसकी बुद्धि, बड़ा बलवान्, सत्कीर्ति से युक्त और बड़ा उदार होता है ॥ ७ ॥ और जो पुरुष भाव नाम सम्वत्में जन्म लेता है वह पुरुष प्रशंसा करने लायक चित्तवाला, बड़ा, यशस्वी, गुणी, दान करने में निरत, बड़ा नम्र, सदा प्रसन्न मूर्ति और सब जिसको चाहै ऐसा होताहै ॥ ८ ॥

प्रसन्नमूर्तिर्गुणवान विनीतः शान्तश्चदानाभिरतो नितान्तम् ॥
सुधीश्चिरायुर्दृढदेहशाली जातो युवाब्दे पुरुषः सतोषः ॥९॥
सर्वलोकगुणगौरवयुक्तः सुन्दरोऽप्यतितरां गुरुभक्तः ।
शिल्पशास्त्रकुशलश्च सुशीलो धातृवत्सरभवो हि नरः स्यात् ॥१०

और जो युवा नाम संवत्में जन्म लेता है वह पुरुष सदा प्रसन्न मूर्ति, बड़ा गुणी, बड़ा नम्र, शांतप्रकृति, दान करने में निरत, बड़ा बुद्धिमान्, दीर्घायु और दृढ़ जिसका देह ऐसा होता है ॥ ९ ॥ और जो धाता नाम संवत्में जन्म लेता है वह पुरुष सबलोकके गुण और गौरव (महत्व) से युक्त, बड़ा सुन्दर, अत्यन्त

गुरुभक्त, कारीगरीके कामोंमें निरत और बड़ा सुशील होता है ॥ १० ॥

तत्कालसंजातमहाप्रकोपो हर्षाभियुक्तो गुणवान्प्रतापी ॥
दक्षः कलाकौशलशीलशाली मर्त्यो भवेदीश्वरजातजन्मा ॥११॥
व्यापारदक्षः क्षितिपालमानी दानाभिमानी ननु शास्त्रवेत्ता ॥
बहुप्रकारैर्बहुधान्यवित्तः स्यान्मानवो वै बहुधान्यजन्मा ॥ १२ ॥

और जो ईश्वर नाम संवत्सरका जन्म लेनेवाला पुरुष होताहै वह पुरुष सब समय क्रोध करनेवाला हर्षसे युक्त, गुणी, प्रतापी, बड़ा चतुर और अनेक कलाओं में कुशल होता है ॥११॥ और जो बहुधान्य नाम संवत् में जन्म लेता है वह पुरुष व्यापारमें चतुर, राजासे मान पाने वाला, दानमें अभिमान रखनेवाला, शास्त्रका जानने वाला और अनेक प्रकारके धान्य जीविकासे धन संपादन करने वालाहोताहै

रथध्वजच्छत्रतुरंगमाद्यैर्युतश्च शास्त्राभिरतोऽरिहन्ता ॥
मन्त्री नरेन्द्रस्य नरः श्रुतज्ञः प्रमाथिसंवत्सरसंभवः स्यात् ॥१३॥
अत्युग्रकर्माभिरतो नितान्तमरातिचक्राक्रमणेतिदक्षः ॥
शूरश्च धीरोऽतितरामुदारः पराक्रमी विक्रमवर्षजातः ॥१४॥

और जो प्रमाथी नाम संवत्में जन्म लेताहै वह मनुष्य रथ ध्वज छत्र घोड़ आदिसे युक्त, शास्त्रमें अभिरत, शत्रुओंका मारने वाला, राजाका मंत्री और शास्त्रज्ञ होता है ॥ १३ ॥ और विक्रम नाम संवत्सर का जन्म लेने वाला पुरुष अति उग्र कर्म करने वाला, वैरियोंके मारनेमें कुशल, शूर वीर, धैर्यवान्, अत्यन्त उदार और बड़ा पराक्रमी होता है ॥ १४ ॥

कार्यप्रलापी किल निन्द्यशीलः खलानुयातः परकर्मकर्ता ॥
भर्त्ता बहूनां मलिनोऽलसश्च जातो वृषाब्दे मनुजोतिलुब्धः ॥१५
चित्रवस्त्रकुसुमैकमानसो मानसोद्भवचयान्वितः सदा ॥
चारुशीलविलसत्कलान्वितश्चित्रभानुजननो हि पूरुषः ॥१६॥

और वृष नाम संवत्सरमें जन्म लेने वाला पुरुष अपने किये का आप कहने वाला, निंदित स्वभावयुक्त, दुष्ट पुरुषोंके सङ्ग रहने वाला, और मनुष्यों के काम करने वाला, बहुतोंका पालक, बड़ा मलिन और बड़ा आलसी होताहै॥१५॥ और चित्र भानु नाम संवत्का जन्म लेने वाला पुरुष अनेक प्रकारके वस्त्र और पुष्पों में

मन रखने वाला, मानोसंतपन्न वस्तुसमुदायसे युक्त, उत्तम जिसका स्वभाव और कला कुशल होताहै ॥ १६ ॥

अरालकेशः सरल सुकान्तिर्जातारिपक्षो मतिमान्विनीतः ॥
प्रसन्नमूर्तिर्विलसद्विभूतिः सुभानुसंवत्सरजो नरः स्यात् ॥१७॥
धूर्तश्च शूरश्चपलः कलाज्ञः सुनिष्ठुरो गर्हितकर्मकर्ता ॥
उत्पन्नभोक्ताद्रविणेन मुक्तः स्यात्तारणाब्दोद्भवमानवो यः ॥१८॥

और सुभानु नाम संवत्सर में जन्मा पुरुष घुँघुराले नोकदार केशवाला, बड़ा सरल, दिव्य कांतियुक्त, शत्रुपक्षसे युक्त, बुद्धिमान, बड़ा नम्र, सदा प्रसन्नमूर्ति और विभूतियोंसे युक्त होता है ॥ १७ ॥ और जो तारण नाम संवत्सरमें जन्मताहै वह पुरुष वड़ा धूर्त, शूरवीर, बड़ा चपल, कलाओंका जाननेवाला, वड़ा निठुर, निंदित कर्मोंका करनेवाला, प्राप्त वस्तुका भोगने वाला और धनसे रहित होताहै ॥ १८ ॥

स्वधर्मकर्माभिरतो नितान्तं सच्छास्त्रपारंगमतामुपेतः ॥
कलाकलापे कुशलो विलासी यः पार्थिवाब्दे कुलपार्थिवः स्यात् ॥
सौख्येतिरक्तो व्यसनाभिभूतो भीतो न किंचिद् ग्रहणाहणी स्यात्॥
जातः पुमानस्थिरचित्तवृत्तिर्व्ययाभिधाने व्ययकर्मशीलः ॥२०॥

और पार्थिव नाम संवत्में जिसने जन्म लिया है वह पुरुष अपने धर्म कर्म में निरत, निरंतर शास्त्रके विचारसे शास्त्रोंमें पारङ्गत, कलाओंके समूहका जानने वाला और अनेक प्रकारके क्रीड़ा विलास करनेवाला होता है ॥ १९॥ और व्ययनामके संवत्सरका जन्म लेनेवाला पुरुष सुख भोगनेकी इच्छा करने वाला, परंतु दुःखोंसे व्याप्त, भयातुर, कुछ नहीं होनकेकारण ऋणिया और चंचल चित्तवाला होताहै।२०

राजगौरवमहोत्सवः शुचिर्मानवः पृथु तनुर्महीपतिः ॥
वैरिवर्गविजयोद्यतः सर्वजिच्छरदि यस्य संभवः ॥ २१ ॥
भूरिभृत्य बहुभोगसंयुतः सुन्दरश्च मधुरान्नभुक् सदा ॥
धीरतागुणयुतोतिधारिणः सर्वधारिणि च यस्य संभवः ॥२२॥

सर्वजित नामके संवत्सरमें जन्म लेनवाला पुरुष राज से बड़प्पन मिलने से महान् उत्सव युक्त, पवित्र, पुष्ट शरीरवाला, भूमिका पालन करने वाला और सब

समय वैरियोंके जीतने में उद्यत होता है॥ २१ ॥ सर्वधारी नाम संवत्सरका जन्म लेनेवाला पुरुष वहुत सेवक, वहुत भोगों करके युक्त, सुन्दर मीठे अन्नका खानेवाला, धीरता गुणसे युक्त होताहै, इस संवत्सरका ही दूसरा नाम अतिधारी है ॥ २२॥

वक्ता विदेशाटनतां प्रसन्नः कुटुम्बसौख्यापचयोऽतिधूर्तः ॥
जनेन साकं गतसख्यवृत्तिर्विरोधिवर्षप्रभवो नर स्यात् ॥२३॥
निर्धनः किल करालतां गतो दीर्घपूर्वबहुगर्वसंयुतः ॥
चारुबुद्धिरहितोप्यसौ हृदो मानवोविकृतिवर्षसंभवः ॥ २४ ॥

और जो मनुष्य विरोधी नाम संवत्सर में जन्म लेताहै वह पुरुष वक्ता, हर समय प्रदेशमें रहने वाला, कुटुम्ब सुखसे रहित, अत्यन्त धूर्त और किसीसे जिसकी मित्रभाव नहीं ऐसा होताहै॥२३॥ विकृति नाम संवत्सर में जिसने जन्म लिया है वह पुरुष धनसे रहित (दरिद्र) जिसे देखकर डर लगने लगे ऐसी जिसकी प्रकृति अत्यन्त अनेक प्रकारके गर्वों से युक्त, मलिन वुद्धि वाला और किसी से जिसका प्यार नहीं ऐसा होता है ॥ २४ ॥

शामातुरो धूसरकायकान्तिः कठोरदीर्घस्वरफल्गुवाक्यः ॥
क्लेशी च लज्जाविधिवर्जितः स्यान्नरःखराब्दप्रभवोतिदीर्घः॥२५॥
तडागवापीगृहकूपकर्ता सदान्नदानाभिरुचिः शुचि स्यात्॥
विलासिनीनन्दनजातहर्षो नरो भवेन्नन्दनवर्षजन्मा ॥ ॥२६॥

और खर नामक संवत्सरका जन्म लेनेवाला पुरुष अत्यन्त कामी, धूसरे रङ्ग के शरीर वाला, कड़े ऊँचे स्वरसे तुच्छ वाक्यों का कहने वाला, क्लेश युक्त और निर्लज्ज होता है ॥ २५ ॥ और नन्दननाम संवत्सरका जन्म लेने वाला पुरुष तालाव, वावड़ी, घर और कूपका वनाने वाला, सदा अन्नदान करने वाला, पवित्र और स्त्रियोंको आनन्द देनेवाला वह आप सदा प्रसन्न रहताहै ॥ २६ ॥

संग्रामधीरः सुतरां सुशीलो भूपालमान्यो वदतां वरेण्यः ॥
दातादयालुः किल वैरिहन्ता यस्य प्रसूतिर्विजयाभिधाने ॥२७॥
शास्त्रप्रसंगे विदुपा विवादी मान्यो वदान्यो रिपुगर्वहन्ता ॥
जयाभिलापी विपयानुरक्तो जातो जयाब्दे मनुजोमहौजाः॥२८॥

और जो पुरुष विजय नामक संवत्सर में जन्म लेता है वह संग्राम में वड़ा

धीर, अतिशय सुशील, राजों करके मान्य, कहने वालों में श्रेष्ठ, दाता, दयालु और अवश्य शत्रुओंका मारने वाला होताहै ॥ २७ ॥ और जय नामके संवत्सरमें जन्म लेने वाला पुरुष शास्त्र प्रसङ्ग में विद्वानोंके सङ्ग विवाद करने वाला और मान करने लायक, सत्यवक्ता, वैरियोंके गर्वका नाश करने वाला, जयकी अभिलाषा करने वाला और विषयों में अनुरक्त होता है ॥ २८ ॥

भूषाविशेषैः सहितश्च योषा विलासशीलो मृतवाक्कलाज्ञः ॥
सद्गीतनृत्याभिरतश्च भोक्ता यो मन्मथाब्दे जननं प्रपन्नः॥२९॥
क्रूरोद्धतो निन्द्यमतिश्च लुब्धो वक्रास्यबाह्वङ्घ्रिरघप्रियःस्यात् ॥
विरुद्ध भावोबहुदुष्टचेष्टो या हायने दुर्मखनाम्नि जातः ॥ ३० ॥

और जो मनुष्य मन्मथ नामके संवत्सरमें जन्म लेताहै वह अनेक भूषणोसहित स्त्रियोंके साथ विलास करनेके स्वभाववाला,अमृतसम वाक्योंका कहनेवाला, अनेक कलाओंका जाननेवाला,सुन्दरगीत नृत्यमें निरत और अनेक भोगोंका भोगनेवाला होताहै॥२९ ॥ और दुर्मुख नाम संवत्सरका जन्म लेनेवाला पुरुष वड़ा क्रूर, वड़ा उद्धतनिंदा करने लायक बुद्धिवाला,लोभी,टेढ़े मुख भुजा पावोंवाला, पाप जिसको प्रियविरोध करनेमें जिसका भाव और वहुत दुष्ट चेष्टाओंका करनेवाला होताहै।३०

तुरंगहेमाम्बरधान्यरत्नैर्युतो नितान्तं सुतदारसौख्यः ॥
समस्तवस्तुग्रहणैकबुद्धिर्यो हेमलम्बे पुरुषोभिजातः ॥ ३१ ॥
धूर्त्तोतिलुब्धो लसतां प्रपन्नः श्लेष्माधिकः सत्वविवर्जितश्च ॥
प्रारब्धकार्ये नितरां प्रलापी विलम्बसंवत्सरसंभवः स्यात् ॥३२॥

और जो पुरुष हेमलंव नामके संवत्सर में जन्म लेताहै, वह घोड़े, सुवर्ण, धान्य, वस्त्र और अनेक रत्नोंसे युक्त होता है और निरन्तर पुत्र और स्त्रीके सुख का भोगने वाला और सब वस्तुओंके ग्रहण करनेमें बुद्धि रखनेवाला होताहै।३१। और जो पुरुष विलंव नाम संवत्सर में जन्म लेता है वह वड़ा धूर्त, अतिलोभी, आलसी कफ जिसके अधिक, धैर्य अथवा पराक्रमसे रहित और प्रारम्भ किये कामोंमें प्रलाप (निरर्थ बकवाद) करने वाला होताहै ॥ ३२ ॥

दुराग्रही सर्वकलाप्रवीणः सुसंग्रही चञ्चलधीश्च धूर्तः ॥
अनल्पजल्पः ससुहृद्विकल्पो विकारिसंवत्सरजो नरः स्यात् ॥३३॥

वणिक्क्रियायां कुशलो विलासी नैवानुकूलश्च सुहृज्जनानाम् ॥
अनेकविद्याभ्यसनानुरक्तः संवत्सरे शार्वरिनाम्नि जातः ॥३४॥

जो पुरुष विकारी संवत्सरमें जन्म लेता है वह खोटे आग्रह करने वाला, सब कलाओंमें चतुर, सब वस्तुका अच्छी तरह संग्रह करनेवाला, चंचल जिसकी बुद्धि, और बड़ा धूर्त, बहुत बोलने वाला और अपने सुहृदोंसे भेद रखने वाला होता है ॥ ३३ ॥ और शार्वरी नामके संवत्सरका जन्म लेने वाला पुरुष वणिक क्रिया में कुशल (चतुर) विलास करने वाला अपने सुहृज्जनों को अनुकूल और अनेक विद्याओं का अभ्यास करने वाला होता है ॥ ३४ ॥

कामी प्रकामं धनवांश्च शश्वत्सेवादरोदारहृतार्थतप्तः ॥
सुगुप्तबुद्धिश्चपलस्वभावः प्लवाभिधानाद्भवो नरः स्यात् ॥३५॥
सौभाग्यविद्याविनयैः समेतः पुण्यैरगण्यैरपि दीर्घजीवी ॥
स्यान्मानवः सूनुधनोरुसंपद्यस्य प्रसूतिः शुभकृत्समासु ॥३६॥

और जो पुरुष प्लवनाम संवत्सर में जन्म लेताहै वह बड़ा कामी, बड़ा धनवान्, निरन्तर सेवा करने में आदर करने वाला (नौकरी करना जिसको अच्छा लगे) स्त्री धनकी चोरी होनेसे दुःखी, गुप्त बुद्धिवाला और चंचल जिसका स्वभाव ऐसा होताहै ॥ ३५ ॥ और शुभकृत नामके संवत्में जिसका जन्म हुआ है वह पुरुष सौभग्य, विद्या और विनय इनसे युक्त होताहै और अनगिनती पुण्योंसे युक्त बड़ी आयुवाला और बहुपुत्र, बहु धन, बहुत संपत्तियुक्त अथवा पुत्रही धन संपत् जिसके, ऐसा होता है ॥ ३६ ॥

सर्वोन्नतश्चारुगुणो दयालुः सत्कर्मकर्ता विजयी विशेषात् ॥
कान्तो विनीतः शुभदृक् प्रवीणो यः शोभकृद्वत्सरसंभवः स्यात् ॥
क्रूरेक्षणः क्रूरतरस्वभावः स्त्रीवल्लभः पर्वततुल्यगर्भः ॥
स्याद्न्तराभः परकार्यकाले क्रोधी भवेत्क्रोधिशरत्प्रसूतः ॥३८॥

और जो पुरुष शोभकृत् नाम संवत्सरमें जन्म लेताहै वह सबमें ऊँचा, सुन्दर गुण वाला, बड़ा दयालु, सत्कर्मोंका करने वाला, सबोंका विजय करनेवाला, सबों का प्यारा, बड़ा नम्र, मनोहर नेत्रवाला और बड़ा चतुर होताहै ॥ ३७ ॥ और जो क्रोधी नाम संवत्सरमें जन्म लेताहै वह क्रूर नेत्रवाला, अति क्रूर स्वभाववाला, स्त्री

जनोंको प्रिय, बड़ी थोंदवाला, बड़ा क्रोधी और किसीके काम करनेके समय मुख छिपाने वाला होताहै ॥ ३८ ॥

सुपुत्रदारः सुतरामुदारो नरः सदाचाररतोऽतिधीरः ॥
मिष्टान्नभुक् सर्वगुणाभिरामो विश्वावसौ यस्य भवेत्प्रसूतिः॥ ३९॥
धनस्य धान्यस्य च नैव किंचित्सुसंग्रहोत्यन्तकठोरवाक्यः ॥
आचारताल्पत्वशठत्वयुक्तो पराभवे यस्य भवेत्प्रसूतिः ॥ ४० ॥

और जो विश्वावसु नामके संवत्सर में जन्म लेताहै वह पुरुष सुन्दर, पुत्र स्त्री युक्त अतिशय उदार, सदाचार में रति, अति धीर, मीठे अन्नका खाने वाला और सब गुणोंमें रमण करने वाला होता है॥ ३९ ॥ और जो पुरुष पराभव नाम के संवत्सरमें जन्म लेताहै वह पुरुष धनधान्यके संग्रहसे रहित, अत्यन्त कठोर वाक्यों के कहने वाला, आचारहीन और शठतायुक्त होता है ॥ ४० ॥

भवेदलं चञ्चलचित्तवृत्तिर्न स्यात्प्रवृत्तः खलु साधुकार्ये ॥
धूर्तः सदाचारविचारहीनः प्लवंगजो वै मनुजः कृशांग॥४१॥
रूपेण मध्यः प्रियवाग्दयालुर्जलाभिलाषी त्वनुवेलमेव ॥
स्थूलाङ्घ्रिपन्मौलिरलं बलीयान्किलारिकीलः किलके प्रसूतः ॥

और जो मनुष्य प्लवङ्ग नाम के संवत्सर में जन्म लेता है वह पुरुष चंचलता रहित चित्तवाला, उत्तम कार्यमें प्रवृत्तिरहित, बड़ा धूर्त और सदाचारसे रहित, कृश (दुबला) जिसका अङ्ग ऐसा होताहै ॥ ४१ ॥ और किलक नाम संवत्सरमें जन्म लेने वाला पुरुष रूपसे मध्यम अर्थात् न सुन्दर न बुरा, प्रिय वाणी बोलने वाला, बड़ा दयालु, सब समय जलका इच्छुक और बड़ा बलवान् शत्रुओं का नाश करने वाला और पुष्ट चरण शिरवाला होता है ॥ ४२ ॥

पण्डितो हि धनवान्बहुभोगी देवतातिथिरुचिः शुचिरुच्चैः ॥
सात्त्विकः कृशकलेवरयष्टि, सौम्यवत्सरभवो हि नरः स्यात् ॥४३॥
इतस्ततः संचलनानुरक्तो लिपिक्रियायां कुशलो विवेकी ॥
क्रोधी शुचिर्भोगनिवृत्तचेताः प्राणीति साधारणजः प्रणीतः॥४४॥

और जो मनुष्य सौम्य नाम संवत्सर में जन्म लेताहै वह बड़ा पण्डित, बड़ा धनवान्, बड़ा भोगी, देवता अतिथिमें जिसको रुचि, बड़ा शुद्ध, सात्विक स्वभाव

वाला, कृश देह (शरीर से दुवला) होताहै॥४३॥और साधारण नाम संवत्सरका जन्म लेनेवाला मनुष्य इत उत डोलने फिरनेमें अनुरागी,लिखनेमें वड़ा चतुर, वड़ा ज्ञानी, वड़ा क्रोधी, पवित्र और भोगोंके भोग करनेकी इच्छासे रहित होताहै॥ ४४।

महेश्वराराधनतत्परः स्यात् क्रोधी विरोधी सततं वहूनाम् ॥
पराङ्मुखस्तातवचस्यतीवविरोधकृन्नाम्नि च यस्य जन्म ॥ ४५॥
विद्वान् सुशीलश्च कलाप्रवीणः सुधीश्च मान्यो वसुधाधिपानाम् ॥
व्यापारसंप्राप्तमहाप्रतिष्ठः पुमान् भवेद्वै परिधावि जन्मा॥ ४६॥

और विरोधकृत् नाम संवत्सरमें जिसका जन्म हुआहै वह पुरुष महादेवजीका वड़ा भक्त, वड़ा क्रोधी, वहुतोंसे निरन्तर विरोध करनेवाला, पिता की आज्ञा का नहीं माननेवाला और हरेकसे अत्यन्त विरोध करने वाला होताहै ॥ ४५ ॥ इसी प्रकार परिधावी संवत्में जन्म लेने वाला पुरुष वड़ा विद्वान, वड़ा सुशील, अनेकों कलाओं [गाना वजाना आदि] में प्रवीण [होशियार] सुन्दर वुद्धियुक्त राजाओं को मान्य (मान करने लायक) और व्यापारविषयमें प्रतिष्ठित होताहै ॥ ४६ ॥

दुष्टाभिमानी कलहानुरक्तो लुब्धः कुटुम्बाभिरतश्च दीनः ॥
स्यादल्पधीर्गर्हितकर्मकर्ता प्रमादिजन्मा मनुजः प्रमादी ॥४७॥
स्याद्भूरिदारश्चतुरोऽतिदक्षः शश्वत्सुतानन्दभरप्रपूरः ॥
प्राज्ञः कृतज्ञः सुतरां विनीतोप्यानन्दजातो मनुजो वदान्यः॥४८॥

और प्रमादी नामके संवत्सर में जन्मा पुरुष वड़ा दुष्ट, अभिमानी, कलह में जिसका प्यार; लोभी और कुटुम्वमें मग्न, वड़ा दीन, मंदवुद्धि, निंद्यकर्मोंका करने वाला और वड़ा प्रमादी होताहै।४७।और जिसने आनन्द नामके संवत्में जन्मलियाहै वह पुरुष वहुस्त्रीगामी, वड़ा चतुर,अत्यंत कुशल, निरंतर पुत्रोंके आनंदसे युक्त, वड़ा वुद्धिमान्, किये उपकार जाननेवाला, सत्यवक्ता,अत्यंत नम्र और दाता होताहै।४८

क्रूरस्त्वकर्मा कलहानुरक्तः संत्यक्तसद्धर्मविचारसारः ॥
दयाविहीनश्च ससाहसोऽपि भवेन्नरो राक्षसजातजन्मा ॥४९॥
सद्बुद्धिशाली जलसस्यसंपद्वैश्यानुवृत्तौ कुशलः सुशीलः ॥
स्यादल्पवित्तो वहुपालकश्च जातोऽनलाब्दे चपलो मनुष्यः॥५०॥

और जिसने राक्षस नाम संवत्में जन्म लियाहै वह पुरुष बड़ा क्रूर, काम करनेसे रहित, कलह करना जिसको प्रिय, सद्धर्म विचारसे रहित, तनकभी जिसके दया नहीं और विना विचारे काम करने वाला होताहै॥४९॥और जो पुरुष अनल नाम संवत्सर में जन्मा है वह उत्तमबुद्धिसे युक्त, जल और खेतीकी जिसकी संपत्ति वैश्योंकी चाकरीमें चतुर, बड़ा सुशील, थोड़ासा जिसके पास धन, बहुतोंका पालन करने वाला और बड़ा चपल होताहै॥५०॥

पिङ्गेक्षणो गर्हितकर्मकर्ता स्यादुद्धतश्चञ्चलवैभवाढ्यः ॥
त्यागी शठोत्यन्तकठोरवाक्यो जातो नरः पिङ्गलनामधेये ॥५१॥
अनल्पजल्पः प्रियतामुपेतस्त्वसाधुबुद्धिर्विधिना वियुक्तः ॥
कलिप्रसंगे किल कालरूपो यः कालयुक्तप्रभवः कृशांग ॥५२॥

और जो पिंगल नाम संवत् में जन्मा है वह मनुष्य पीले जिसके नेत्र, निंद्य कर्मोंका करने वाला; बड़ा उद्धत, बड़ा चांचल, बड़ा जिसका वैभव, त्यागी, बड़ा शठ और अत्यन्त कठोर बोलने वाला होताहै ॥ ५१ ॥ और जो पुरुष काल युक्त नामके संवत्में जन्माहै वह बहुत बोलनेवाला, सबको प्रिय, दुष्ट बुद्धि, दैवसे हीन, कलहके प्रसङ्गमें निश्चयसे कालरूप और कृश अङ्गवाला होताहै ॥ ५२ ॥

उदारचेता विलसत्प्रसादो रणांगणप्राप्तयशाः सुवेषः ॥
नरेन्द्रमन्त्री बहुपूजितार्थी सिद्धार्थिजातो मनुजः समर्थः ॥५३॥
भयंकरः पालयिता पशूनां शश्वत्परीवादपरोऽतिधूर्तः ॥
जातापकीर्तिः खलचित्तवृत्तिर्नरोतिरौद्रः खलु रौद्रजन्मा ॥५४॥

और जो सिद्धार्थी संवत्सरमें जन्म लेताहै वह पुरुष मनसे बड़ा उदार, अनुग्रह करने वाला, रणभूमिमें बड़ा यशस्वी, सुन्दर जिसका वेष, राजाका मंत्री और बहुतोंकी पूजासे धनवान् ऐसा होताहै।५३।और रौद्र नामके संवत्में जन्म लेने वाला मनुष्य बड़ा भयङ्कर,पशुओंकी पालना करनेवाला, हरएककी निंदा करनेवाला, बड़ा धूर्त, निंदित और दुष्टोंकीसी चित्तवृत्तिवाला और बड़ा भय देनेवाला होताहै॥५४॥

स्ववाक्यनिर्वाहमहाभिमानः प्रसन्नताहीनतरो नरः स्यात् ॥
कामीप्रकामं दुरितप्रवृत्तिर्यो दुर्मतिर्दुर्मतिवर्षजातः ॥ ५५ ॥
नित्यं नरेन्द्रादरगौरवः स्याद्गजाश्वभूहेमसमन्वितश्च ॥

तौर्यत्रिकप्रीतिरतीव जातश्चेन्मानवो दुन्दुभिनामधेये ।।५६।।

और जो पुरुष दुर्मति नाम संवत्सरमें जन्म लेता है वह पुरुष अपने वाक्य के रखने में महाभिमान रखने वाला, (बड़ा जिद्दी) सदाही प्रसन्नतारहित, बड़ा कामी दुष्ट कर्ममें प्रवृत्त और दुर्मति होताहै ॥ ५५ ॥ जो दुन्दुभि नामक संवत्सरमें जन्म लेताहै वह पुरुष राजाओंसे आदर पाने वालों से बड़ा, जिसका महत्व हाथी घोड़े सुवर्णमें युक्त और गाने बजाने में जिसकी प्रीति होतीहै ॥ ५६ ॥

आरक्ताक्षः क्वचिदपि महाकामलाद्यामयानां
प्रादुर्भावादतिकृशतनुर्जायतेत्यन्तरोषः ।
पादद्वन्द्वे भवति कुनखो हस्तयुग्मेथवा स्या-
च्छस्त्राद्दुःखं व्रजति रुधिरोद्गारिजन्मा मनुष्यः ।।५७।।

काचारधर्माभिरतो नितान्तमनाभवोत्कर्षतरो नरः स्यात् ।।
अन्याधिकत्वं सहते न किंचिद्रक्ताक्षिजातोऽक्षिरुजान्वितश्च ।।

जो मनुष्य रुधिरोद्गारि नामके संवत्सर में जन्म लेता है वह किंचित् रक्त नेत्र वाला और कभी कामल आदि रोगों के होने से अत्यन्त दुबले शरीर वाला, अत्यन्त क्रोधी, दोनों पावोंमें अथवा हाथोंमें बूरा नख वाला और किसी समय शस्त्र की चोट लगनेसे दुःख पानेवाला होताहै॥५७॥जो रक्ताक्षि संवत्सरमें जन्मताहै वह पुरुष निरन्तर अपने आचारमें और धर्ममें प्रवृत्त, बड़ा कामी, दूसरेकी किंचित् भी वृद्धिका नहीं सहनेवाला और नेत्ररोग वाला होताहै ॥ ५८ ॥

स्यादन्तरायोहि परस्य कार्ये तमोगुणाधिक्य भयंकरश्च ।।
परस्य बुद्धिं प्रहरेत्प्रकामं यो हायने क्रोधननाम्नि जातः ।।५९।।
उपार्जितार्थव्ययकृन्नितान्तं सेवारतो निष्ठुरचित्तवृत्तिः ।।
सत्कर्मताल्पत्वमनः प्रवृत्तिः क्षयाभिधाने जननं हि यस्य ।।६०।।
इति श्रीदैवज्ञढुण्डिराजविरचिते जातकाभरणे संवत्सरफलानि ।।

जो क्रोधन नामके संवत्सरमें जन्म लेताहै वह पुरुष दूसरेके काम बिगाड़ने का विघ्नरूप, तमोगुणके अधिक होनेसे भयङ्कर और दूसरेकी हर समय बुद्धि बिगाड़ने वाला होताहै॥५९॥ जो पुरुष क्षय नाम संवत्सरमें जन्म लेताहै वह कमाये धनका बिगाड़ने वाला, दूसरेकी सेवा करनेमें प्रवृत्त,निठुर चित्तवृत्तिवाला और सत्कर्म करने

में मनकी अल्प प्रवृत्ति वाला होता है ।६०।इति दैवज्ञढुण्डिराजविरचिते जातकाभरणे मार्जनीटीकायां भाषानुवादितायां चतुर्वेदवनमालिकृतायां संवत्सरफलाध्यायः प्रथमः

अथायनफलम् ।

शश्वत्प्रसन्नो ननु सूनुकान्तासंतोषयुक्तोतितरां चिरायुः ॥
नरः सदाचारपरोप्युदारो धीरश्च सौम्यायनजातजन्मा ॥ १ ॥
अखर्वगर्वः कृषिकर्मकर्ता चतुष्पदाढ्योतिकठोरचित्तः ॥
शठोप्यसह्यो ननु मानवानां याम्यायने ना जननं प्रपन्नः ॥२॥

जो पुरुष उत्तरायणमें जन्म लेताहै वह सदा प्रसन्न रहनेवाला,स्त्रीपुत्र और संतोष युक्त अथवा स्त्रीपुत्रके संतोषसे युक्त और दीर्घायु, सदाचारमें तत्पर,बड़ा उदार और बड़ा धीरजवाला होताहै।१।जो पुरुष दक्षिणायनका जन्मा होताहै वह बड़ा गर्वीला, खेती कर्मका करनेवाला, चौपाये जीवोंका रखनेवाला, अति कठोर, जिसका चित्त, शठ और सब पुरुषोंको असह्य लगने वाला होता है । २ । इति अयनजातफलम् ॥

अथऋतुफलम् ।

कन्दर्परूपोमतिमान्प्रतापी संगीतशास्त्रे गणिते प्रवीणः ॥
शास्त्रप्रसूतामलचैलचेता वसन्तजन्मा मनुजः प्रसन्नः ॥ १ ॥
ऐश्वर्यविद्याधनधानयुक्तो वक्ता प्रलम्बामलकेशपाशः ॥
भोगी भवेन्नीरविहारशीलो यो ग्रीष्मकालोद्भवतां प्रपन्नः ॥२॥

जो पुरुष वसंत ऋतुमें जन्म लेताहै वह कामदेवके समान सुन्दर, बड़ा बुद्धिमान् बड़ा प्रतापी, सङ्गीत शास्त्र में और गणित में बड़ा प्रवीण (होशियार) शास्त्रजन्य बुद्धिसे निर्मल वस्त्रवत् निर्मल बुद्धिवाला और सब समय प्रसन्नतायुक्त होताहै ।१। जो पुरुष ग्रीष्म ऋतु में जन्म लेताहै वह ऐश्वर्य, विद्या, धन, धान्यसे, पूर्ण, सबों के आगे बातोंका कहने वाला, लम्बे अति सचिक्कण जिसके शिरके बाल, भोगों का भोगने वाला और जलमें विहार करनेके स्वभाव वाला होताहै ॥ २ ॥

संग्रामधीरो मतिमान्प्रतापी तुरङ्गमप्रेमकरः सुरूपः ॥
कफानिलात्मा ललनाविलासी वर्षोद्भवो वै पुरुषः सहर्षः ॥३॥
अपूर्णरोषः पुरुषोनिलात्मा मानी धनी कर्मरुचिः शुचिः स्यात् ॥
रणप्रियो वाहनसंयुतश्च ऋतौ शरन्नाम्नि च यस्य जन्म ॥४॥

जो पुरुष वर्षा ऋतु में जन्म लेताहै वह संग्राम करनेमें वड़ा वीर, वुद्धिमान् प्रतापी, घोड़ोंसे प्यार करनेवाला, वड़ा सुन्दर, कफ वायु प्रकृतिवाला और अनेक स्त्रियोंसे भोग करनेवाला पुरुष होताहै। ३। जो पुरुष शरद ऋतुमें जन्म लेताहै वह पूर्ण रोषसे रहित, वायुकी प्रकृतिवाला, वड़ा मानी, धनवान्, कर्म करनेमें जिसकी रुचि, वड़ा पवित्र, लड़ना जिसको प्रिय और सवारियोंका रखने वाला होताहै॥४॥

नरेन्द्रमन्त्री चतुरोऽप्युदारो नरो भवेच्चारुगुणोपपन्नः ॥
सत्कर्मधर्मानुरतो मनस्वी हेमन्तजातः सततं विनीतः ॥ ५ ॥
मिष्टान्नपानानुरतो नितान्तं क्षुधान्वितः पुत्रकलत्रसौख्यः ॥
सत्कर्मवेषः पुरुष सरोषो बलाधिशाली शिशिरर्तुजन्मा ॥ ६ ॥

जिस पुरुष का हेमन्त ऋतुमें जन्म होता है वह राना का मंत्री, वड़ा चतुर, मनका उदार, उत्तम गुणोंसे युक्त, सत्कर्म धर्मका करने वाला, वड़ा ज्ञानी और नित्य नम्र है ॥ ५ ॥ शिशिर ऋतुमें जन्म हुआ है वह पुरुष मिष्टान्नका खाने पीने वाला, अत्यंत क्षुधायुक्त, पुत्र स्त्रीके सुखसे युक्त, उत्तम कर्मों के करने वालों का जिसका वेष, क्रोधसहित और वड़ा वलवान् होताहै ॥ ६ ॥

अथ मासजन्मफलम् ।

सत्कर्मविद्याविनयोपपन्नो भोगी नरः स्यान्मधुरान्नभोजी ॥
सत्पात्रमित्रानुरतश्च मन्त्री चैत्रोभवश्चापि विचित्रमन्त्रः ॥ १ ॥
सुलक्षणः पुण्यगुणानुशीलः पुमान्वलीयान्द्विजदेवभक्तः ॥
कामी चिरायुर्जलपानशीलः स्यान्माधवे वान्धवसौख्ययुक्तः ॥२॥

जिसने चैत्रमासमें जन्म लियाहै वह पुरुष सत्कर्म उत्तम विद्या और विनय इनसे युक्त, अनेक भोगोंका भोगने वाला, मीठे अन्नका भोजन करनेवाला, सत्पात्र मित्रोंमें अनुरागी, राजमंत्री और विचित्र मंत्रोंका देनेवाला होता है ॥ १॥जिसने वैशाख मासमें जन्म लियाहै वह पुरुष सुलक्षणोंसे युक्त, पवित्र गुणोंको अनुसरने वाला, वड़ा वलवान्, ब्राह्मणोंका और देवताओंका भक्त, वड़ा कामी, दीर्घायु, अतिशय जल पीने वाला और भाइयोंके सुखसे युक्त होता है ॥ २ ॥

क्षमान्वितश्चञ्चलचित्तवृत्तिर्विदेशवासाभिरुचिश्च तीव्रः ॥
विचित्रबुद्धिः खलु दीर्घसूत्रो ज्येष्ठोद्भवः श्रेष्ठतरो नरः स्यात् ॥

बहुव्ययोनल्पवचोविलासः प्रमादशीलो गुरुवत्सलश्च ॥
सदाग्निमान्द्यः शुभकर्मकृत्स्यादाषाढजो गाढतराभिमानः ॥४॥

जिसका ज्येष्ठ मास का जन्म होताहै वह पुरुष बड़ा क्षमावान्, चंचल चित्त वृत्तिवाला, परदेश में रहने की जिसकी रुचि, तीव्र, विचित्र जिसकी बुद्धि, थोड़े काममें बहुत समय विताने वाला और अत्यन्त श्रेष्ठ होताहै ॥ ३ ॥ आषाढ़ का जन्मा जो पुरुषहै वह बहुत खरच करने वाला, बहुत भाषण बोलने वाला, बड़ा प्रमादी, गुरु लोगोंसे स्नेह रखने वाला, मंदाग्नि प्रकृति, शुभकर्मों का करने वाला और अत्यन्त अभिमानी होताहै ॥ ४ ॥

पुत्रैश्च पौत्रैश्च कलत्रमित्रैः सुखी च तातस्य निदेशकर्ता ॥
लोकप्रसिद्धः कफवान्वदान्यो गुणान्वितः श्रावणमासजन्मा ॥५॥
श्रीमान् भवेत्क्षीणकलेवरश्च दाता च कान्ताश्रुतजातसौख्यः ॥
सुखे च दुःखे विकृतो हि मर्त्यो भवेन्नरो भाद्रपदात्तजन्मा ॥६॥

जो श्रवणमास का जन्माहै वह पुरुष पुत्रपौत्र मित्र स्त्रीके सुखवाला, पिताकी आज्ञा माननेवाला, सब लोकमें प्रसिद्ध, कफकी जिसकी प्रकृति; सत्यवक्ता और बड़ा गुणी होताहै ॥ ५ ॥ जिसका भाद्रपद मास का जन्म है वह पुरुष धनवान्, दुर्बल, बड़ा दाता, स्त्री और शास्त्रके द्वारा सुख पाने वाला और सुखमें सुख मानने वाला, दुःखमें दुःख मानने वाला होता है ॥ ६ ॥

विद्वान् धनी राजकुलप्रियश्च सत्कार्यकर्त्ता बहुभृत्ययुक्तः ॥
दाता गुणज्ञो बहुपुत्रसंपत्स्यादाश्विनेऽश्वादिसमृद्धियुक्तः ॥७॥
सत्कर्मकर्ता बहुवाग्विलासो धनी लसत्कुञ्चितकेशपाशः ॥
कामं सकामः क्रयविक्रयार्थी सत्कृत्यकृत्कार्तिकजातजन्मा ॥८॥

जिसने आश्विन मासमें जन्म लिया है वह पुरुष बड़ा विद्वान [पण्डित] धनवान्, राजकुलका प्यारा, सत्कार्य का कर्ता, अनेक भृत्योंसे युक्त, बड़ा दानी, गुणों का जानने वाला, बहुत पुत्र संपत्तिवाला और घोड़े आदि सवारियों का रखने वाला, होताहै ॥७ ॥ जो पुरुष कार्तिक मासमें जन्माहै वह सत्कर्मोंका करने वाला, वाग्विलासमें चतुर, धनवान्, घुंघुराले बालवाला, यथेच्छ काम करनेवाला बेचने खरीदने वाला और सत्कार पूर्वक काम करने वाला है ॥ ८ ॥

सत्तीर्थयात्रानिरतः सुशीलः कलाकलापे कुशलो विलासी ॥
परोपकर्ता धृतसाधुमार्गो मार्गोद्भवो वै विभवैः समेतः ॥ ९ ॥
परोपकारी पितृवित्तहीनः कष्टार्जितार्थव्ययकृद्विधिज्ञः ॥
सुगुप्तमन्त्रः कृतशास्त्रयत्नः पौषे विशेषात्पुरुषः कृशाङ्गः ॥१०॥

मगशिर महीने का जन्मा जो पुरुष है वह उत्तम तीर्थयात्रा करने में प्रवृत्त, बड़ा सुशील, अनेक कलाओंमें कुशल, क्रीड़ा करनेवाला, परोपकार करनेमें प्रवृत्त, भले पुरुषोंके रस्तेसे चलने वाला और अनेक विभवोंसे युक्त होताहै ॥ ९ ॥ जिसने पौषके महीनेमें जन्म लिया है वह पुरुष परोपकार करनेमें प्रवृत्त, पिता के धन से रहित, कष्टसे अपने हाथसे पैदा किये धनका खरच करने वाला, हरएक काम की तजवीज जाननेवाला, गुप्त सलाहका करनेवाला, शास्त्रमें जिसका यत्न और दुवले शरीर वाला होताहै ॥ १० ॥

सन्मन्त्रविद्वैदिकसाधुयोगो योगोक्तविद्याभ्यसनानुरक्तः ॥
बुद्धेर्विशेषान्निहतारिसंघो माघोद्भवः स्यादनघो मनुष्यः ॥११॥
परोपकारी कुशलो दयालुर्बलान्वितः कोमलकायशाली ॥
विलासनीकेलिविधानशीलो यः फाल्गुने फाल्गुवचोविलासः ॥१२॥

जिसने माघ महीनेमें जन्म लियाहै वह मनुष्य उत्तम मन्त्र का जानने वाला, वैदिक कर्म करनेवाला, योग विद्याके अभ्यासमें रत, अपने बुद्धिवलसे शत्रुमण्डल का नाश करने वाला और अनेक दोषोंसे रहित होता है ॥११ ॥ और जो पुरुष फाल्गुन मासमें जन्म लेताहै वह परोपकार का करनेवाला, बड़ा कुशल (चतुर) बड़ा दयालु, बड़ा वलवान्, कोमल जिसके अङ्ग, अनेक विलासिनी स्त्रियोंसे विलास करने वाला और मितभाषी होता है ॥ १२ ॥

अथ मलमासजन्मफलम् ।

विषयहीनमतिः सुचरित्रदृग् विविधतीर्थकरश्च निरामयः ॥
सकलवल्लभआत्महितंकरः खलु मलिम्लुचमासभवोनरः ॥१३॥

मलमासमें जन्मा हुआ पुरुष विषयोंसे बुद्धि रहित, सुन्दर जिसके चरित्र और नेत्र, अनेक तीर्थोंका करनेवाला, रोगोंसे रहित, सबोंका प्यारा और अपने हितका करनेवाला होता है ॥ १३ ॥

अथ पक्षजन्मफलम्।

चश्चिरायुः सुतरां सुशीलः श्रीपुत्रवान्कोमलकायकान्तिः॥
सदा सदानन्दविनीतकालश्चेज्जन्मकालस्तु वलक्षपक्षे॥ १॥
प्रतापशीलो विबलश्च लोलः कलिप्रियः स्वीयकुलोद्धतश्च॥
मनोभवाधिक्ययुतो नितान्तं सितेतरे यस्य नरस्य जन्म॥२॥

जिस पुरुषने शुक्लपक्षमें जन्म लियाहै वह दीर्घायु, अत्यन्त सुशील, लक्ष्मी और पुत्रवाला, कोमल जिसकी शरीर कांति और सब समय उत्तम आनन्दमें समय विताने वाला होताहै॥ १॥ और जिसका कृष्ण पक्षका जन्म है वह पुरुष बड़ा प्रतापी, बल रहित, बड़ा चंचल, कलह जिसको प्रिय, अपने कुल में बड़ा उद्धत और अत्यन्त कामी होता है॥२॥ ॥ अथ दिनरात्रिजन्मफलम्॥

तेजस्वी पितृसादृश्यश्चरुदृष्टिर्नृपप्रियः।।
बन्धुपूज्यो धनाढ्यश्च दिवाजातो नरो भवेत्॥ १॥
मन्ददृक् बहु कामार्तः क्षयरोगी मलीमसः॥
क्रूरात्मा छन्नपापश्च निशि जातो नरो भवेत॥ २॥

जो पुरुष दिनमें जन्म लेताहै वह बड़ा तेजस्वी, अपने पिता के समान गुण अवगुणसे युक्त, मनोहर जिसके नेत्र, राजाओं को अतिप्रिय, अपने भाई बांधवोंमें पूज्य और बड़ा धनवान् होता है॥ १॥ और जिसका रात्रिका जन्म होताहै वह पुरुष मन्द दृष्टिवाला, बहु कामसे पीड़ित, क्षयरोग युक्त, बड़ा मैला, क्रूर स्वभाव वाला और गुप्त पापका करने वाला होताहै॥ २॥

अथ तिथिजन्मफलम्।

बहुजनपरिवारश्चारुविद्यो विवेकी
कनकमणिविभूषावेषशाली सुशीलः॥
अतिसुललितकान्तिर्भूमिपालाप्तवित्तः
प्रतिपदि यदि सूतिर्जायते यस्य जन्तोः॥ १॥

दाता दयालुर्गुणवान् सुसंपच्चश्चत्सदाचारविचारधन्यः॥
प्रसन्नमूर्तिर्बहुगीतकीर्तिर्मर्त्यो द्वितीयातिथिसंभवः स्यात॥ २॥

जो प्रतिपदा तिथिमें जन्माहै वह पुरुष बहुत परिवार [कुटुम्ब] वाला, उत्तम विद्या जाननेवाला, बड़ा ज्ञानी, सुवर्ण मणियोंके आभूषण पहरने वाला, सुशील मनोहर जिसकी कांति, राजासे धन प्राप्त होनेवाला होताहै ॥१॥ जो पुरुष द्वितीया तिथि में जन्म लेता है वह पुरुष दाता (देने वाला) दयावान्, गुणवान्, बहुत संपत्ति युक्त, सदाचार के विचार से धन्य, सदा प्रसन्न मूर्ति और सब जगत में विख्यात जिसकी कीर्ति ऐसा होताहै ॥ २ ॥

कामाधिकः स्यादनवद्यविद्यो बलान्वितो राजकुलाप्तवित्तः ॥
प्रवासशीलश्चतुरो विलासी मर्त्यस्तृतीयाप्रभवोऽभिमानी ॥३॥
ऋणप्रवृत्तिर्बहुसाहसः स्याद्रणप्रवीणः कृपणस्वभावः ॥
द्यूते रतिर्लोलमना मनुष्यो वादी यदि स्याज्जनने चतुर्थी ॥

जिसने तृतीया तिथिमें जन्म लियाहै वह पुरुष कामदेव से भी सुन्दर, निर्दोष विद्याका जानने वाला, बड़ा बली, राजकुलमें धन पाने वाला, अतिशय परदेश में रहने वाला, बड़ा चतुर और क्रीड़ा करनेमें प्रवृत्त होताहै ॥ ३ ॥ चतुर्थी तिथि में जन्म लेने वाला पुरुष ऋण लेने वाला, विना विचारे काम करने वाला, लड़ने में बड़ा प्रवीण, कृपण जिसका स्वभाव, जूआ खेलनेमें जिसकी प्रीति, चंचल जिसका मन और हरएक से विवाद करने का जिसका स्वभाव ऐसा होताहै ॥ ४॥

सम्पूर्णगात्रश्च कलत्रपुत्रमित्रान्वितो भूतदयान्वितश्च ॥
नरेन्द्रमान्यस्तु नरो वदान्यः प्रसूतिकाले किल पञ्चमी चेत् ॥५॥
सत्यप्रतिज्ञो धनसूनुसंपद्दीर्घोरुजानुर्मनुजो महौजाः ॥
प्रकृष्टकीर्तिश्चतुरो वरिष्ठः षष्ठ्यां प्रजातो व्रणकीर्णगात्रः ॥ ६ ॥

जिस पुरुषके जन्म समयमें पंचमी तिथि होतीहै वह सर्वाङ्ग से पूर्ण, पुत्र स्त्री मित्रोंसे युक्त, प्राणीमात्रों पर दयालु, राजोंको माननीय और दाता होताहै॥५॥जिस मनुष्यका षष्ठी (छः) तिथि का जन्म होताहै वह सत्य प्रतिज्ञा करने वाला धन पुत्र संपत्तियुक्त, दीर्घ(लंबी) जाँघ पिंडरीवाला, बड़ा तेजवाला, सब जगह विख्यात जिसकी कीर्ति, चतुर, सबोंमें श्रेष्ठ और सर्वाङ्गमें जिसके घाव ऐसा होताहै ॥ ६ ॥

ज्ञानी गुणज्ञो हि विशालनेत्रः सत्पात्रदेवार्चनचित्तवृत्तिः ॥
कन्याजनेता परवित्तहर्ता स्यात्सप्तमीजो मनुजोऽरिहन्ता ॥७॥
नाना संपत्सूनुसौख्यः कृपालुः पृथ्वीपालप्राप्तविद्याधिकारः ॥

कान्ताप्रीतिश्चञ्चलाचित्तवृत्तिर्यस्याष्टम्यां जन्म चेन्मानवस्य ॥८॥

जो पुरुष सप्तमी तिथिमें जन्म लेताहै वह बड़ा ज्ञानी, गुणोंका जानने वाला, विशाल (बड़े २) नेत्र वाला, सत्पात्र पुरुषोंका और देवताओं का पूजन करने में जिसकी चित्तवृत्ति, कन्या संपत्तिवाला, दूसरे के धन हरणमें जिसकी प्रवृत्ति और शत्रुओं के मारने वाला ऐसा होताहै।७।जिस मनुष्यका अष्टमी तिथिमें जन्म होताहै वह अनेक संपत्ति अनेक पुत्र और अनेक सुखोंका भोगने वाला, बड़ा कृपालु, राजा से विद्यामें अधिकार पानेवाला, स्त्रियोंमें जिसकी प्रीति और चंचल जिसकी चित्तवृत्ति ऐसा होता है ॥८॥

पराङ्मुखोबन्धुजनस्य कार्ये कठोरवाक्यश्च सुधीविरोधी ॥
नरः सदाचारगतादरः स्यात् यस्य प्रसुतौ नवमी तिथिश्चेत् ॥९॥
धर्मैकबुद्धिर्भववैभवाढ्यः प्रलम्बकण्ठो बहुशास्त्रपाठी ॥
उदारचित्तोऽतितरां विनीतो रम्यश्च कामी दशमीभवः स्यात्॥१०॥

जो पुरुष नवमी तिथि में जन्म लेताहै वह अपने भाई बन्दों के काम करने से बहिर्मुख, कठोर वाक्योंके कहने वाला, बुद्धिमान् मनुष्योंसे विरोध करनेवाला और अपने सदाचारमें आदररहित (सदाचारसे भ्रष्ट) होताहै ॥९॥ जो मनुष्य दशमी तिथिका जन्मा होताहै वह धर्ममें बुद्धि रखनेवाला, जगत्के सब वैभवोंसे पूर्ण, लंबा जिसका कण्ठ, अनेक शास्त्रोंका पढ़ने वाला, उदार जिसका चित, अत्यन्त नम्र, सुन्दर और कामी होताहै ॥ १० ॥

देवद्विजार्चाव्रतदानशीलः सुनिर्मलान्तःकरणःप्रवीणः ॥
पुण्यैकचित्तोत्तमकर्मकृत्स्यादेकादशीजोऽतिकृशोऽतिरोपः ॥११॥
जलप्रियो वै व्यवहारशीलो निजालयावासविलासशीलः ॥
सदान्नदाताक्षितिपालवित्तः स्याद्द्वादशीजो मनुजः प्रजावान् ॥

जो पुरुष एकादशी तिथिमें जन्मताहै वह देवता ब्राह्मणोंका पूजक, व्रत और दान करने में जिसका स्वभाव, अत्यंत निर्मल जिसका अन्तःकरण, बड़ा चतुर, पुण्य करनेमें ही सब समय जिसका चित्त और उत्तमोत्तम कर्मोंका करनेवाला होता है ॥ ११ ॥ जो मनुष्य द्वादशी तिथिमें जन्म लेताहै वह जल जिसको प्रिय,व्यवहार करनेमें जिसका स्वभाव घरके रहनेमें और क्रीड़ा करने में जिसका स्वभाव, सदा अन्नका दान करनेवाला, राजाही जिसका धन और सन्तनीवाला ऐसा होताहै।१२।

रूपान्वितः सात्त्विकताविमुक्तः प्रलम्बकण्ठश्च नरप्रसूतिः ॥
नरोतिशूरश्चतुरः प्रकामं त्रयोदशीनामतिथौ प्रसूतः ॥ १३ ॥
क्रूरोतिशूरश्चतुरः सहासः कन्दर्पलीलाकुलचित्तवृत्तिः ॥
स्याद्दुःसहोत्यन्तविरुद्धभाषी चतुर्दशीजः पुरुषः सरोषः॥ १४॥

जो पुरुषका त्रयोदशी नाम तिथिमें जन्म होता है वह रूपवान्, सात्विकपनेसे रहित, लंबा जिसका कण्ठ, बड़ा शूरवीर और बड़ा चतुर होताहै ॥१३॥ चतुर्दशी तिथि में जो जन्म लेता है वह बड़ा क्रूर, अत्यन्त शूरवीर, बड़ा चतुर, हँसने की प्रकृतिवाला, कामलीलामें व्याप्त जिसकी चित्तवृत्ति, अत्यन्त विरुद्ध वचनोंके कहने वाला और सबको असह्य होताहै ॥ १४ ॥

अतिसुललितकायोन्यायसंप्राप्तवित्तो
बहुयुवतिसमेतो नित्यसंजातहर्षः ॥
प्रबलतरविलासोत्यन्तकारुण्यपुण्यो
गुणगणपरिपूर्णः पूर्णिमाजातजन्मा ॥ १५ ॥
शान्तो मनस्वी पितृमातृभक्तः क्लेशाप्तवित्तश्च गमागमेच्छुः ॥
मान्यो जनानां हतकांतिहर्षो दर्शोद्भवः स्यात्पुरुषः कृशाङ्गः ॥

जिस मनुष्यका पूर्णिमा तिथिमें जन्म होताहै वह अति मनोहर शरीर वाला, न्यायसे द्रव्य संपादन करने वाला, अनेक स्त्रियोंके सङ्ग रहने वाला, नित्यही हर्ष युक्त, अत्यन्त विहार करनेवाला, अत्यन्त दयालु और अनेक गुणगणों से पूर्ण होता है ॥ १५ ॥ जो पुरुष अमावस्या के दिन जन्म लेता है वह शांत स्वभाव, ज्ञानी, पिता माता का भक्त, क्लेश से धन प्राप्त होने वाला, सब समय जाने आनेकी इच्छा करने वाला, सब मनुष्यों को माननीय, कांति और हर्षसे रहित और दुवला जिसका अङ्ग ऐसा होताहै ॥ १६ ॥

अथवारजन्मफलम् ।

शूरोल्पकेशो विजयी रणाग्रे श्यामारुणश्चित्तचयप्रकोपः ॥
दातामहोत्साहयुतो महौजा दिने दिनेशस्य भवेन्मनुष्यः ॥१॥
प्राज्ञः प्रशान्तः प्रियवाग्विधिज्ञः शश्वन्नरेन्द्राश्रयवृत्तिवर्ती ॥

सुखे च दुःखे च समस्वभावो वारे नरः शीतकरस्य जातः॥२॥

जो पुरुष रविवारके दिन जन्म लेताहै वह बड़ा शूरवीर, शिर में विरले केश वाला, रणमें सर्वत्र विजयी, अरुणता सहित श्यामवर्ण, बड़ा क्रोधी, दान देने वाला, महान् उत्साह युक्त और बड़ा प्रतापी होताहै ॥ १ ॥ जो मनुष्य चांद्रवारके दिन जन्म लेताहै वह बड़ा बुद्धिमान्, शांत प्रकृति वाला, प्रिय वाक्यों का कहने वाला, विधिका जानने वाला, निरन्तर राजाश्रयवृत्तिसे जीविका करने वाला और दुःख सुखको समान मानने वाला होता है ॥ २ ॥

वक्रोक्तिरत्यन्तरणप्रियः स्यान्नरेंद्रमंत्री च धरोपजीवी ।
सात्वान्वितस्तीव्रतरस्वभावोदिने भवन्नावनिनंदनस्य ॥
सद्रूपशाली मृदुवाग्विलासः श्रीमान्कलाकौशलतासमेतः ॥
वणिकक्रियायां हि भवेदभिज्ञः प्राज्ञो गुणज्ञो ज्ञदिनोद्भवोयः ॥४॥

जो पुरुष मङ्गलवार के दिन जन्म लेताहै वह वक्रोक्ति कहने वाला, लड़ना जिसको अत्यन्त प्रिय, राजा का मंत्री, धरतीके द्वारसे जीविका करने वाला, सत्वगुण से युक्त, और अत्यन्त तीव्र जिसका स्वभाव ऐसा होता है ॥ ३ ॥ जो पुरुष बुधवारके दिन जन्म लेताहै वह उत्तम रूपसे युक्त, मृदुवाणिका बोलनेवाला, लक्ष्मीवान्, कलाओंमें कुशल, वणिकक्रियामें प्रवीण, बुद्धिमान् और गुणज्ञ होताहै ॥४ ॥

विद्वान् धनी सर्व गुणोपपन्नो मनोरमः क्ष्मापतिलब्धकामः ॥
आचार्यवर्यश्च जनप्रियः स्याद्वारे गुरोर्यस्य नरस्य जन्म ॥५॥
सुनीलसत्कुञ्चितकेशपाशः प्रसन्नवेषो मतिमान् विशेषात् ॥
शुक्लाम्बरः प्रीतिधरो नरः स्यात्सन्मार्गगो भार्गववारजन्मा ॥
अकालसंप्राप्तजराप्रवृत्तिर्बलोज्झितो दुर्बलदेहयष्टिः ॥
तमोगुणी क्रौर्यचयाभिभूतः शनेर्दिने जातजनुर्मनुष्यः ॥७ ॥

जो पुरुष गुरुवारके दिन जन्म लेता है वह विद्वान्, धनवान, सर्वगुणयुक्त, सबोंके मनको रमाने वाला, राजासे प्राप्त हुए मनोरथ जिसको, आचार्यों में मुकुटमणी मनुष्योंको प्रिय होताहै ॥ ५ ॥ जो पुरुष शुक्रवार के दिन जन्म लेताहै वह काले घुँघराले केशवाला, बड़ा प्रसन्न जिसका वेष, बड़ा बुद्धिमान, शुक्ल वस्त्रका धारण करनेवाला, सबसे प्रीति करनेवाला और सन्मार्गमें चलनेवाला होताहै ॥ ६॥ जिस

मनुष्यका शनिवार के दिनमें जन्म होता है वह मनुष्य युवा अवस्थामें वृद्धता धर्म वाला, बलहीन, दुबले देहवाला, बड़ा तमोगुणी और क्रूरता करके युक्त होताहै।७।

इतिजातकाभरणेऽयनत्वादिफलकथनेमार्जन्यांटीकायांवनमालिचतुर्वेदकृतायां भाषानुवादितायांद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

—*—

अथनक्षत्रजन्मफलम् ।

सदैव सेवाभ्युदितो विनीतः सत्यान्वितः प्राप्तसमस्तसंपत ॥
योषाविभूषात्मजभूरितोषः स्यादश्विनी जन्मनि मानवस्य ॥१॥
सदापकीर्तिर्हि महापवादैर्नाना विनोदैश्च विनीतकालः ॥
जलातिभीरुश्चपल खलश्च प्राणी प्रणीतो भरणीभजातः ॥२।

अश्विनी नक्षत्रमें जन्म लेनेवाला पुरुष नित्य सेवा करनेमें प्रवृत्त, बड़ा नम्र, सत्य कहनेवाला, सम्पूर्ण संपत्तियुक्त, स्त्री भूषण और पुत्रोंसे संतुष्ट होताहै॥ १ ॥ जो मनुष्य भरणी नक्षत्रमें जन्म लेताहै वह अनेक अपवादोंसे अपयशों का स्थान, अनेक खेल कूदमें अपना समय व्यतीत करनेवाला, जलसे अत्यन्त भीरु (डरने वाला) बड़ा चंचल और खल (महादुष्ट) होताहै ॥ २ ॥

क्षुधाधिकः सत्यधनैर्विहीनो वृथाटनोत्पन्नमतिः कृतघ्नः ॥
कठोरवाग्गर्हितकर्मकृत्स्याच्चेत्कृत्तिका जन्मनि यस्य जन्तोः ॥३॥
धर्मकर्मकुशलः कृशीवलश्चारुशीलविलसत्कलेवरः ॥
वाग्विलासकलिताखिलाशयो रोहिणी भवति यस्य जन्मभम् ॥

जिस मनुष्यके जन्म समयमें कृत्तिका नक्षत्र वर्तमान होताहै वह अधिक क्षुधावान्, सत्य और धनसे रहित; वृथा भ्रमण में रुचिवाला, बड़ा कृतघ्नी, कठोर वाक्य कहनेवाला और निंदित कर्मोंके करनेवाला होताहै ॥ ३ ॥ जिस मनुष्यका रोहिणी नक्षत्रमें जन्म होता है वह धर्म कर्म में कुशल (निरत) खेती का काम करनेवाला, सुंदर कांतिवान् जिसका रूप और बोलने मात्रसे ही सब अभिप्राय जानने वाला होता है ॥ ४ ॥

शरासनाभ्यासरतो विनीतः सदानुरक्तो गुणिनां गणेशु ॥
भोक्ता नृपस्नेहभरेण पूर्णः सन्मार्गवृत्तो मृगजातजन्मा ॥५॥
क्षुधाधिको रूक्षशरीरकान्तिर्बन्धुप्रियः कोपयुतः कृतघ्नः ॥
प्रसूतिकाले च भवेत्किलार्द्रा दयार्द्रचेता न भवेन्मनुष्यः ॥६॥

जो पुरुष मृगसिर नक्षत्र में जन्म लेता है वह धनुष विद्यामें रुचिवान्, बड़ा नम्र गुणियोंके गुणोंका जानने वाला, भोगोंका भोगने वाला, राजोंके स्नेहका पात्र और सन्मार्गसे चलने वाला होता है ॥ ५ ॥ जिसके जन्म समय में आर्द्रा नक्षत्र होता है वह पुरुष विशेष क्षुधावाला, रूखी शरीर की कांति वाला, भाई बन्दों को प्रिय, क्रोधी, कृतघ्नी अतिशय क्रूर (निर्दयी) होता है ॥ ६ ॥

प्रभूतमित्रः कृतशास्त्रयत्नः सद्रत्नचामीकरभूषणाढ्यः ॥
दाता प्रतापी वसुधावसुश्च पुनर्वसुर्यस्य भवेत्प्रसूतौ ॥ ७ ॥
प्रसन्नगात्रः पितृमातृभक्तः स्वधर्मसक्तो विनयाभियुक्तः ॥
भवेन्मनुष्यः खलु पुष्यजन्मा सन्माननानाधनवाहनाढ्यः ॥८॥

जिस मनुष्यके जन्म कालमें पुनर्वसु नक्षत्र होता है वह अनेक जिसके मित्र शास्त्रमें यत्न करने वाला, उत्तम रत्नों के और सुवर्ण के आभूपणों को धारण करने वाला, दाता, प्रतापी और भूमिमें गढ़े धनवाला अथवा भूमि ही जिसका धन ऐसा होता है ॥ ७ ॥ जो मनुष्य पुष्य नक्षत्र में जन्म लेता है वह उज्जल शरीर कांतिवाला, माता पिताका भक्त, अपने धर्मका करनेवाला, नम्रतायुक्त और सन्मान अनेक प्रकारके धन और अनेक वाहनों से पूर्ण होताहै ॥ ८ ॥

वृथाटनः स्यादतिदुष्टचेष्टः कष्टप्रदश्चापि वृथा जनानाम् ॥
सार्पे सदर्थो हि वृथार्पितार्थः कन्दर्पसंतप्तमना मनुष्यः ॥९॥
कठोरचित्तः पितृभक्तियुक्तस्तीव्रस्वभावस्त्वनवद्यविद्यः ॥
चेज्जन्मभं यस्य मघानघः सन्मतिः सदारातिविघातदक्ष ॥१०॥

जो मनुष्य श्लेषा नाम नक्षत्र में जन्म लेताहै वह व्यर्थ फिरनेवाला अति दुष्ट जिसकी चेष्टा सबों को व्यर्थ कष्ट दाता और उत्तम और धनको भी निरर्थ खरचने वाला और सदैवही कामाकुल चित्तवाला होताहै॥९॥जिसका जन्म नक्षत्र मघा

में होताहै वह कठोर जिसका चित्त,पिताके विषे भक्ति युक्त,वड़े तीव्र स्वभाव वाला, निर्दोष जिसकी विद्या सब दोषोंसे रहित, उत्तम वुद्धिसे युक्त और सदा शत्रुओंके मारने में वड़ा चतुर होताहै ॥ १० ॥

शूरस्त्यागी साहसी भूरिभर्त्ता कामार्तोऽपि स्याच्छिरालोऽतिदक्षः ॥
धूर्त्तः क्रूरोऽत्यन्तसंजातगर्वः पूर्वाफाल्गुन्यस्ति चेज्जन्मकाले ॥ ११ ॥
दाता दयालुः सुतरां सुशीलो विशालकीर्तिर्नृपतिप्रधानः ॥
धीरो नरोत्यन्तमृदुर्नरः स्याच्चेदुत्तराफाल्गुनिकाप्रसूतौ ॥ १२ ॥

जिस पुरुषके जन्म समयमें पूर्वाफाल्गुनी नाम नक्षत्र होता है, वह शूर, दान करनेवाला, विना विचारे काम करने वाला, वहुतोंका भर्ता, कामार्त, सव अङ्ग में जिसकी नस दीखें ऐसा, वड़ा चतुर, धूर्त, क्रूर और अत्यन्त गर्वीला होता है ॥ ११ ॥ जिसके जन्म समयमें उत्तरा फाल्गुनी नाम नक्षत्र होता है वह पुरुष दाता दयालु, अति सुशील, वड़ा यशस्वी, राजाका मंत्री, धीरजता युक्त और अत्यन्त कोमल होता है ॥ १२ ॥

दाता मनस्वी सुतरां यशस्वी भूदेवदेवार्चनकृत्प्रयत्नः ॥
प्रसूतिकाले यदि यस्य हस्तो हस्तोद्गता तस्य समस्तसंपत् ॥ १३ ॥
प्रतापसंतापितशत्रुपक्षो नयेतिदक्षश्च विचित्रवासाः ॥
प्रसूतिकाले यदि यस्य चित्रा बुद्धिर्विचित्रा खलु तस्य शास्त्रे ॥

जिसके जन्म समय में हस्त नक्षत्र होताहै वह दानी, विचारशील, जगतमें विख्यात जिसका यश, व्राह्मण और देवताओंके पूजनमें यत्न करनेवाला होता है और उस पुरुष के हस्तगत समस्त संपत्ति होती है ॥ १३ ॥ जिस मनुष्यके जन्म समयमें चित्रा नाम नक्षत्र होताहै वह अपने प्रतापसे शत्रुपक्ष को ताप देने वाला, नीतिका जानने वाला, अनेक प्रकारके वस्त्रोंका पहरने वाला और शास्त्रमें विचित्र जिसकी वुद्धि ऐसा होताहै ॥ १४ ॥

कन्दर्परूपः प्रभयासमेतः कान्तापरप्रीतिरतिप्रसन्नः ॥
स्वाती प्रसूतौ मनुजस्य यस्य महीपतिप्राप्तविभूतियुक्तः ॥ १५ ॥

सदानुरक्तोऽग्निसुरक्रियायां धातुक्रियायामपि चोग्रसौम्यः ॥
यस्य प्रसूतौ च भवेद्विशाखा सखा न कस्यापि भवेन्मनुष्यः॥१६॥

जिस मनुष्य के प्रसूति काल में स्वाति नक्षत्र होताहै वह कामदेव सम सुन्दर कांतियुक्त, स्त्री में अत्यन्त प्रीति करने वाला, सदा प्रसन्न मुख और राजासे मिली विभूतियोंसे युक्त होता है ॥ १५ ॥ जिसके जन्म समय में विशाखा नाम नक्षत्र होताहै वह मनुष्य अग्नि और देवतोंकी अर्चनक्रियामें और धातु विषयक्रिया में तत्पर होता है और किसी समय उग्र किसी समय सौम्य अथवा उग्रता समय में सौम्य होताहै और वह मनुष्य किसीका भी मित्र नहीं होताहै ॥ १६ ॥

सत्कान्तिकीर्तिश्च सदोत्सवः स्याज्जेतारिपूर्णां च कलाप्रवीणः ।
स्यात्संभवे यस्य किलानुराधा संपद्विशाला विविधा च तस्य ॥
सत्कीर्तिकांतिर्विभुतासमेतो वित्तान्वितोत्यन्तलसत्प्रतापः ॥
श्रेष्ठः प्रतिष्ठो वदतां वरिष्ठो ज्येष्ठोद्भवः स्यात्पुरुषो विशेषात् ॥१८॥

और जिस मनुष्य के जन्म समय में अनुराधा नक्षत्र होताहै वह उत्तम कांति और उत्तम कीर्तिवाला होताहै और सदा आनन्दमें मग्न, शत्रुओं का जीतने वाला अनेक कलाओं में कुशल होताहै और उस मनुष्यके अनेक तरह की भारी संपत्ति होतीहै ॥ १७ ॥ जो पुरुष ज्येष्ठा नाम नक्षत्रमें जन्म लेता है वह उत्कृष्ट कीर्ति और उत्कृष्ट कांतिवाला अथवा उत्कृष्ट कीर्तिरूप कांतीवाला, प्रभुता से युक्त, धनवान्, अत्यन्त प्रतापी, सबोंमें श्रेष्ठ, बड़ा प्रतिष्ठित और विशेषकरके कहनेवालों में मुख्य (योग्य जवाब देनेवाला) होताहै ॥ १८ ॥

अथमूलनक्षत्रेजन्मविचारः ।

मूलं विरुद्धावयवं समूलं कुलं हरत्येव वदंति संतः ॥
चेदन्यथा सत्कुरुते विशेषात्सौभाग्यमायुश्च कुलाभिवृद्धिम् ॥१९॥
ज्येष्ठान्त्यघटिकैका च मूलस्याद्यघटीद्वयम् ॥
अभुक्तमूलमित्युक्तं तत्रोत्पन्नशिशोर्मुखम् ॥ २० ॥
अष्टवर्षाणि नालोक्यं तातेन शुभमिच्छता ॥
तद्दोषपरिहारार्थं शान्तिकं प्रोच्यतेधुना ॥ २१ ॥

जिस मनुष्य का जन्म मूल नक्षत्रमें होवे उस बालकके पिताको मूलकी शांति करनी चाहिये यदि शांति न की गई होवे तब वह मूल समूल कुलको जलाता है ऐसा सब ज्योतिर्विद कहतेहैं और यदि अच्छी तरह मूलकी शांति करदी होवे तो वही मूल विशेष करके सौभाग्यवृद्धि आयुवृद्धि और कुलकी वृद्धि करता है ॥१९॥ ज्येष्ठा नक्षत्रके अत्यन्तकी (पिछली) एक घड़ी और मूल नक्षत्रके आदिकी दो घड़ी इस तीन घड़ी कालको अभुक्तमूल कहते हैं, इन तीन घड़ियोंमें जिस बालक का जन्म होवै उस बालकके पिता को चाहिये कि आठ वर्ष तक उस बालक का मुख न देखे और उसके दोष की निवृत्ति के अर्थ शांति करै; वह शांति कहते हैं ॥ २० ॥ २१ ॥

रत्नैः शतौषधीमूलैः सप्तमृद्भिः प्रपूरयेत् ॥
शतच्छिद्रोघटस्तस्मान्निः सृतेन जलेन हि ॥ २२ ॥
बालकाम्बापितृस्नाने विप्रैः सम्पादिते सति ॥
जपहोमप्रदाने च कृते स्यान्मङ्गलं ध्रुवम् ॥ २३ ॥

शतछिद्रके घटमें पञ्चरत्न शतौषधीमूल और सप्त मृत्तिका डालै फिर उसमें जल भरकर उस बालकके माता पिताको बिठाकर ब्राह्मण वेद मन्त्रों को पढ़के अभिषेक स्नान करावै और होम जप पृथक् करावे तो अभुक्तमूलमें जन्म लिये का दोष निवृत्त होताहै और अवश्य फिर मङ्गल होता है ॥ २२ ॥ २३ ॥

अथ मूलचरणफलम् ।

विरुद्धावयवे मूले विधिरेवं स्मृतो बुधैः ॥
मुनीनां वचनं सत्यं मन्तव्यं क्षेममीप्सुभिः ॥ २४ ॥
मूलस्य पादत्रितये क्रमेण पितुर्जनन्याश्च धनस्यरिष्टम् ॥
चतुर्थपादः शुभदो नितान्तं सार्पे विलोमं परिकल्पनीयम् ॥ २५॥

विरुद्धावयवमूल होय तब भी बुद्धिमानों को यही विधि करनी चाहिये और अपने हितेच्छु मनुष्यों को मुनियों का कहा वचन सत्य मानना चाहिये ॥ २४ ॥ मूलके प्रथम चरणमें जन्म होनेसे पिता का द्वितीय चरणमें जन्म होने से माताका और तीसरे चरणमें जन्म होनेसे धनका नाश होताहै और इस मूलका चौथा चरण

शुभदायक होता है और श्लेषा नक्षत्र में जन्म लेने से विपरीत फल होता है अर्थात् चतुर्थ चरणमें जन्म लेने से पिताका तृतीय चरण में जन्म लेनेसे माता का और द्वितीय चरणमें जन्म लेने से धनका नाश होता है, श्लेषा के प्रथम चरण में जन्म होना शुभदायक होता है ॥ २५ ॥ इतिमूलचरणवेलाफलम् ॥

अथमूलनक्षत्रवेलाफलम् ॥

कृष्णे तृतीया दशमी वलक्षे भूतो महीजार्किबुधैः समेतः ॥
चेज्जन्मकाले किल यस्य मूलमुन्मूलनं तत्कुरुते कुलस्य ॥ २६ ॥
दिवा सायं निशि प्रातस्तातस्य मातुलस्य च ॥
पशूनां मित्रवर्गस्य क्रमान्मूलमनिष्टदम ॥ २७ ॥

कृष्ण पक्षकी तीजके दिन मङ्गलवार और मूल नक्षत्र होवे, कृष्णपक्षकी दशमी तिथिमें शनिवार युत मूल नक्षत्र होवे और शुक्लपक्षकी चौदशतिथिमें बुधवार युत मूल नक्षत्र होवे तो इन योगोंमें जन्मा बालक अपने कुल को उन्मूलन (नाश) करता है ॥ २६ ॥ दिनमें सायङ्काल में रात्रिमें और प्रातः काल समय में मूल नक्षत्र चतुर्थ चरणभिन्न वर्तमान होवे तो क्रमसे पिताको मामाको पशुओं को और अपने मित्रों को अनिष्ट (बुरा) फल देने वाला होताहै अर्थात् दिनमें मूल नक्षत्र के होते जन्म होने से पिताको अनिष्ट देनेवाला, सायङ्काल में मूल होते जन्म होने से मामाको रात्रिको अनिष्टकारक होताहै ॥ २७ ॥ इतिमूलवेलाफलम् ।

अथ पुरुषाकृतौ मूलाश्लेषाफलम् ।

मूर्ध्नि पञ्च मुखे पञ्च स्कन्धयोर्घटिकाष्टकम् ॥
गजाश्च भुजयोर्युग्मं हस्तयोर्हृदयेऽष्टकम् ॥ २८ ॥
युग्मं नाभौ दिशो गुह्ये षट् जान्वोः षट्च पादयोः ॥
विन्यस्य पुरुषाकारे मूलस्य फलमादिशेत् ॥ २९ ॥

एक मनुष्याकार मूर्ति लिखकर मूलकी प्रवृत्तिसे लेकर जो ६० घड़ी हैं उन्हें विभागकर पहली ५ घड़ियों को उस पुरुषाकार के शिरपर स्थापन करें, ५ घड़ियों को पुरुषाकारके मुखमें, ५ घड़ियों को दोनों कन्धाओं में, ५ घड़ियों को दोनों भुजाओंमें, २ घड़ियोंको दोनों हाथोंमें, ८ घड़ियों को हृदयमें, २ घड़ियोंको

नाभिमें, १० घड़ियों को गुह्य इन्द्रिय में, ६ घड़ियोंको घुटने में और उनकी आगे की ६ घड़ियों को दोनों पावोंमें स्थापन करै, इस प्रकारसे मूल नक्षत्रकी भुक्तिरूप ६० घड़ियोंको उस पुरुषाकार के उक्तानुसार प्रत्यङ्गोंमें स्थापन करके फिर मूल नक्षत्र का फल कहैं॥

छत्रलाभः शिरोदेशे वदने पितृघातनम् ॥
स्कन्धयोर्धुर्वहत्वं च वाहुयुग्मे त्वकर्मकृत ॥ ३० ॥
हत्याकारः करद्वन्द्वे राज्याप्ति हृदये भवेत ॥
अल्पायुर्नाभिदेशे च गुह्ये च सुखमद्भुतम् ॥ ३१ ॥
जङ्घायां भ्रमणप्रीतिः पादयोर्जीवितात्पता ॥
घटीफलं किल प्रोक्तं मूलस्य मुनिपुंगवैः ॥ ३२ ॥

सो फल कहतेहै शिरगत ५ घड़ियोंमें जन्म लेनेसे छत्रका लाभ होताहै, मुख गत ५ घड़ियोंमें जन्म लेनेसे पिताका मरण, कंधोंमें वर्तमान ८ घड़ियोंमें जन्म लेने से अच्छा कार्यभार चलाने वाला, भुजगत ८ घड़ियों में जन्म लेनेसे खोटा काम करनेवाला, हस्तगत २ घड़ियोंमें जन्म लेनेवाला पुरुष इत्या करनेवाला, हृदयगत ८ घड़ियोंमें जन्म लेनेवाला पुरुष राजा, नाभिगत २ घड़ियों में जन्म लेनेवाला पुरुष अल्पायु, गुह्येन्द्रियगत १० घड़ियोंमें जन्म लेनेवाला पुरुष अद्भुत सुखको, जंघागत ६ घड़ियोंमें जन्म लेनेवाला पुरुष घूमनेमें प्रीति रखनेवाला और पादगत ६ घड़ियोंमें जन्म लेनेवाला पुरुष अल्प आयु वाला होताहै, मुनि श्रेष्ठोंने निश्चय करके मूल नक्षत्र की भोग्य घड़ियों का इस प्रकार से समग्र पृथक् पृथक् फल कहा है॥ ३०॥३१॥३२॥

विज्ञेयं विबुधैः सर्वं सार्पे तच्च विपर्ययात ॥

ये सब फल पण्डितोंके द्वारा जानना चाहिये, श्लेपा नक्षत्रकी घड़ियोंका विपरीत रीतिसे फल समझना चाहिये, जैसे मूलकी प्रारम्भ की घड़ी से लेकर क्रम से ६० घड़ियों की शिर आदि प्रत्यङ्गोंमें स्थिति कही है इसी तरह श्लेपा नक्षत्र की अन्तिम घड़ीसे लेकर विपरीत क्रमसे पूर्वोक्त पांच पांच आदि संख्यानुसार प्रत्यङ्गों में स्थापन करके फल कहना चाहिये, जैसे कि श्लेपा नक्षत्र की अन्तकी शिरोगत पांच घड़ियोंमें जन्म लेने वाले पुरुषका छत्रलाभ होताहै इत्यादि ॥ इति पुरुषाकार चक्रगत मूल श्लेपा फलम् ॥

शुभदायक होता है और श्लेषा नक्षत्र में जन्म लेने से विपरीत फल होता है अर्थात् चतुर्थ चरणमें जन्म लेने से पिताका तृतीय चरण में जन्म लेनेसे माता का और द्वितीय चरणमें जन्म लेने से धनका नाश होता है, श्लेषा के प्रथम चरण में जन्म होना शुभदायक होता है ॥ २५ ॥ इतिमूलचरणवेलाफलम् ॥

अथमूलनक्षत्रवेलाफलम् ॥

कृष्णे तृतीया दशमी वलक्षे भूतो महीजार्किबुधैः समेतः ॥
चेज्जन्मकाले किल यस्य मूलमुन्मूलनं तत्कुरुते कुलस्य ॥ २६ ॥
दिवा सायं निशि प्रातस्तातस्य मातुलस्य च ॥
पशूनां मित्रवर्गस्य क्रमान्मूलमनिष्टदम् ॥ २७ ॥

कृष्ण पक्षकी तीजके दिन मङ्गलवार और मूल नक्षत्र होवे, कृष्णपक्षकी दशमी तिथिमें शनिवार युत मूल नक्षत्र होवे और शुक्लपक्षकी चौदशतिथिमें बुधवार युत मूल नक्षत्र होवे तो इन योगोंमें जन्मा बालक अपने कुल को उन्मूलन (नाश) करता है ॥ २६ ॥ दिनमें सायङ्काल में रात्रिमें और प्रातः काल समय में मूल नक्षत्र चतुर्थ चरणभिन्न वर्तमान होवे तो क्रमसे पिताको मामाको पशुओं को और अपने मित्रों को अनिष्ट (बुरा) फल देने वाला होताहै अर्थात् दिनमें मूल नक्षत्र के होते जन्म होने से पिताको अनिष्ट देनेवाला, सायङ्काल में मूल होते जन्म होने से मामाको रात्रिको अनिष्टकारक होताहै ॥ २७ ॥ इतिमूलवेलाफलम् ।

अथ पुरुषाकृतौ मूलाश्लेषाफलम् ।

मूर्ध्नि पञ्च मुखे पञ्च स्कन्धयोर्घटिकाष्टकम् ॥
गजाश्च भुजयोर्युग्मं हस्तयोर्हृदयेऽष्टकम् ॥ २८ ॥
युग्मं नाभौ दिशो गुह्ये षट् जान्वोः षट्च पादयोः ॥
विन्यस्य पुरुषाकारे मूलस्य फलमादिशेत् ॥ २९ ॥

एक मनुष्याकार मूर्ति लिखकर मूलकी प्रवृत्तिसे लेकर जे ६० घड़ी हैं उन्हें विभागकर पहली ५ घड़ियों को उस पुरुषाकार के शिरपर स्थापन करें, ५ घड़ियों को पुरुषाकारके मुखमें, ५ घड़ियों को दोनों कन्धाओं में, ५ घड़ियों को दोनों भुजाओंमें, २ घड़ियोंको दोनों हाथोंमें, ८ घड़ियों को हृदयमें, २ घड़ियोंको

चन्द्रमा, शुक्र, शेष, पितर, मातृगण, यमराज, काल, विश्वेदेवता, महादेव, शर्व, कुबेर, शुक्र, मेघ, सूर्य, गंधर्व, यमदेव, ब्रह्मा, विष्णु, यम, ईश्वर (रुद्र), आकाश, पवन, सप्तर्षि, स्वामिकार्तिक, भृंगिरिटी, गौरी सरस्वती और प्रजापति ॥३३॥३४॥३५॥ ॥३६॥ इन तीस मुहूर्तोंमेंसे पहिले दूसरे छटे आठवें अठारवें तेईसवें और नवें मुहूर्तमें जन्मा जो बालक है वह अपने-कुलका नाश करने वाला होता है ॥३७॥

इति मूलश्लेषामुहूर्तफलम् ।

नाम	अङ्क	नाम	अङ्क	०
राक्षसः	१	दिवाकरः	१६	इ
यातुधानः	२	गंधर्वः	१७	दं
सोमः	३	यमः	१८	मू
शुक्रः	४	ब्रह्मा	१९	ल
फणीश्वरः	५	विष्णुः	२०	श्ले
पिता	६	यमः	२१	षा
माता	७	ईश्वरः	२२	मु
यमः	८	आकाश	२३	हू
कालः	९	पवन.	२४	र्त
विश्वेदेवाः	१०	मुनयः	२५	च
महेश्वरः	११	षण्मुखः	२६	क्र
शर्वः	१२	भृंगिरीटीः	२७	म्
कुबेरः	१३	गौरी	२८	०
शुक्रः	१४	सरस्वतीः	२९	०
मेघः	१५	प्रजापतिः	३०	०

पुरुषाकारमूलचक्रम्

मूर्द्धनि	५	छत्रलाभ
मुखे	५	पितृघातः
स्कंधयोः	८	धूर्वहत्वं
बाह्वोः	८	अकर्मकृत
हस्तयोः	२	हत्याकरः
हृदये	८	राज्यम्
नाभौः	२	अल्पायुः
गुह्येः	१०	सौख्यम्
जान्वोः	६	भ्रमणम्
पादयोः	६	अल्पजीवी

पुरुषाकारश्लेषानक्षत्रफलम्

पादयोः	६	अल्पजीवी
जान्वोः	६	भ्रमणम्
गुह्ये	१०	सौख्यम्
नाभौ	२	अल्पायुः
हृदये:	८	राज्यम्
हस्तयोः	२	हत्याकरः
बाह्वोः	८	अकर्मकृत्
स्कंधयोः	८	धूर्वहत्वं
मुखे	५	पितृघातः
मूर्द्धनि	५	छत्रलाभः

अथमूल श्लेषामुहूर्त फलम् ।

राक्षसो यातुधानश्च सोमः शुक्रः फणीश्वरः ॥
पिता माता यमः कालो विश्वेदेवा महेश्वरः ॥३३ ॥
शर्वाख्यश्च कुबेरश्च शुक्रो मेघो दिवाकरः ॥
गन्धर्वो यमदेवश्च ब्रह्मा विष्णुर्यमस्तथ ॥ ३४ ॥
ईश्वरो विष्णुरंध्रश्च पवनो मुनयस्तथा ॥
षण्मुखो भृङ्गिरीटी च गौरी नाम्नी सरस्वती ॥ ३५ ॥
प्रजापतीश्च मूलस्य त्रिंशद्वै क्षणनायकाः ॥
विपरीताः पुनर्ज्ञेया आश्लेषाजातबालके ॥ ३६ ॥
प्रथमे द्वितीये षष्ठे चाष्टमेऽष्टादशे तथा ॥
त्रयोविंशे च नवमे कुलक्षयकरः शिशुः ॥ ३७ ॥

मूल नक्षत्रकी भोग्य ६० घडियोंमेंसे ऋजुक्रमसे दो दो घडियोंके एक एक ऐसे ३० क्षण बनावें, उन क्षणोंके क्रमसे येतीस अधिष्ठाता होतेहैं और श्लेषा नक्षत्र के विपरीत क्रमसे ३० मुहूर्तोंके तीस देवता होतेहैं उनके नाम ये हैं, राक्षस, यातुधान,

सुखेन युक्तो धनवाहनाढ्यो हिंस्रो बलाढ्यःस्थिरकर्मकर्ता ॥
प्रतापितारातिजनो मनुष्यो मूले कृती स्याज्जननं प्रपन्नः ॥४३॥
भूयो भूयस्तोयपानानुरक्तो भोक्ता चञ्चद्वाग्विलासः सुशीलः ॥
नूनं संपज्जायते तस्य गाढा पूर्वाषाढा जन्मभं यस्य पुंसः ॥४४

यद्यपि मूल नक्षत्रके विषयमें इतना प्रकार कहा है तथापि मूल नक्षत्रमें जिसने जन्म लियाहै वह पुरुष सुखी, धनवान,घोड़ा पालकी आदि सवारियोंसे युक्त,हिंसक बडा बलवान,स्थिर कर्मोंका करनेवाला, शत्रुओंको ताप देन वाला और बड़ा पवित्रहोताहै ॥ ४३ ॥ जिस मनुष्यका जन्म नक्षत्र पूर्वाषाढा होता है वह वारंवार जल पीनेका जिसका स्वभाव, भोगोंको भोगने वाला, उतम जिसकी वाणी, बड़ा सुशील और गहरी संपतियुक्त होताहै ॥ ४४ ॥

दाता दयावान् विजयी विनीतः सत्कर्म कर्ता विभुतासमेतः ॥
कान्तासुतावाप्तसुखोनितांतं वैश्वे सुवेषः पुरुषोऽभिमानी ॥४५॥
अतिसुललितकान्तिसंमतःसज्जनानां ॥
ननुभवतिविनीतश्चारुकीर्तिःसरूपः ॥
द्विजवरसुरभक्तिर्व्यक्तवाङ्मानवःस्या ॥
दभिजिति यदि सूतिर्भूपतिः स स्ववंशे ॥ ४६ ॥

जो पुरुष उत्तराषाढा नाम नक्षत्रमें जन्म लेताहै वह बड़ा दानी, दयालु, विजय करने वाला, बड़ा नम्र, सत्कर्मोंका करनेवाला, प्रभुता युक्त स्त्रीपुत्रोंसे सुखी और अभिमानी होताहै ॥४५॥ जिसकी अभिजित नक्षत्रमें उत्पत्तिहोतीहै वह पुरुष अत्यन्त सुन्दर, सज्जनोंमें जिसकी प्रतिष्ठा,बडा नम्र, बडा यशस्वी सुन्दर जिसका रूप,देवता ब्राह्मणोंकोभक्तिसे युक्त,प्रकट वाणी कहने वाला और अपने कुलमें राजा(श्रेष्ठ)होताहै।

शास्त्रानुरक्तो बहुपुत्रमित्रः सत्पात्रभक्तिर्विजितारिपक्षः ॥
प्राणी पुराणश्रवणप्रवीणश्चेज्जन्मकाले श्रवणं हि यस्य ॥४७॥
आचारदानादरचारुशीलो धनाधिशाली बलवान् कृपालुः ॥
यस्य प्रसूतौ च भवेद्धनिष्ठा महाप्रतिष्ठासहितोनरः स्यात ॥४८॥

जिसके जन्म समय में श्रवण नक्षत्र होता है वह पुरुष शास्त्र विषयमें अनुरागी, बहुत जिसके पुत्र और मित्र, सत्पात्र पुरुषों में जिसका स्नेह,शत्रुपक्षको जीतनेवा-

अथमूलवृक्षफलम् ।

वेदाः४सप्त७गजाः ८काष्ठाः खेटा ९ बाणा५श्च षट् ६शिवाः।।११।।
मूलस्तम्भत्वचः शाखा पत्रं पुष्पं फलं शिखा ।। ३८ ।।
मूलवृक्षविभागेषु मंगलं हि फले दले ।।
अमंगलफलं विद्याच्छेषभागेषु निश्चितम् ।। ३९ ।।

वृक्षका आकार लिखै उस वृक्षमें ऋजुक्रमसे मूलकी भोग्य ६० घड़ियों में से पहिले ४ घड़ियों को जड़में, ७ घड़ियों को जड़के ऊपर खम्भमें, ८ घड़ियों को छालकी जगहमें,१० घड़ियों को डालियों में, ९ घड़ियों को पत्रों में, ५ घड़ियों को पुष्पस्थानमें, ६ घड़ियोंको फलके स्थानमें, ११ घड़ियोंको उस वृक्ष की चोटी के स्थानमें रक्खे, उस मूल नक्षत्र को फल और पत्रगत घड़ियों में जन्म लेनेवाले बालकके घरमें मङ्गल होताहै और शेषस्थानगत घड़ियोंमें जन्म लेनेवाले बालक के घरमें निश्चित अमङ्गल फल होता है ।। ३८।३९।।इति मूलवृक्षफलम् ।।

अथमूलजातस्यविशेषफलम् ।

पादे मुहूर्ते वेलायां वृक्षे च पुरुषाकृतौ ।।
अनिष्टमशुभाधिक्ये शुभाधिक्ये शुभंफलम् ।। ४० ।।

मूल नक्षत्र के चरण, मुहूर्त, पुरुषाकृति और वृक्ष इन चारों के भिन्न २ फल को उनमें यह निश्चित है कि अशुभ के आधिक्यमें अनिष्ट फल और शुभाधिक्य में इष्ट फल होता है ।। ४० ।।

वातस्य जन्म भे यस्य प्रसूतिर्जायते यदि ।।
तातं वा भ्रातरं ज्येष्ठं रिष्टं सा कुरुते ध्रुवम् ।। ४१ ।।
मूलवच्छान्तिकं तत्र विधेयं हि विचक्षणैः ।।
भूमिरत्नानि हेमान्नं देयं विप्रेषु भक्तितः ।। ४२ ।।

अब आगे नक्षत्रोंके जन्मका फल कहते हैं कि जिस मनुष्यने स्वाती नाम नक्षत्र में जन्म लिया होवे उसके बड़े भाई को अथवा पिताको अवश्यही अरिष्ट होताहै इससे मूलशांतिकी तरह स्वातिमें जन्म लेनेसे स्वाति नक्षत्रकी शांति चतुर पुरुषों को अवश्यही करनी चाहिये और इस स्वाति नक्षत्रकी शांतिके अर्थ धरती का रत्नोंका सुवर्णका और अन्नका भक्तिसे योग्य ब्राह्मणोंके अर्थ अवश्यही दान करना चाहिये ।। ४१ ।। ४२ ।।

नौ नवांश भोगते हैं उनमें से जिसका प्रथम नवांश में जन्म होता है वह पुरुष बड़ा नम्र, धर्मात्मा, सत्यवक्ता, दृढ़संकल्प और विद्याके व्यसन वाला होता है ॥ १ ॥ जो कोई दूसरे नवांश में जन्म लेता है वह मनुष्य स्वभावसिद्ध वैभवयुक्त, भोगों का भोगने वाला, लड़ाई में हारने वाला और वेश्याप्रिय (रंडीबाज)होता है॥२॥

स्त्रीजितश्चानपत्यश्च मायायुक्तोल्पवीर्यवान् ॥
वीरविद्याविचारज्ञो जायते तृतीयांशके ॥ ३ ॥
बहुस्त्रीसुभगः पूज्यो जलसेवी धनान्वितः ॥
नृपसेव्यथवाऽमात्यश्चतुर्थांशे प्रजायते ॥ ४ ॥

तीसरे नवांशका जन्मा पुरुषों स्त्रीजित, संततिरहित; बड़ा मायावी, न्यून पराक्रमी और वीर पुरुषोंकी विद्याका विचार करने वाला होता है ॥ ३ ॥ जिसका चौथे नवांशका जन्म होता है वह बहुत स्त्रियों से युक्त, पूजा करने योग्य, जलका सेवन करने वाला, धनवान् और राजा का सेवक अथवा मंत्री होता है ॥ ४ ॥

बहुमित्रजनामात्यो बन्धुमित्रसुखान्वितः ॥
महत्प्रतिष्ठामाप्नोति संजातः पञ्चमांशके ॥ ५ ॥
जितवैरिगणो वीरोदृढसौहृदकारकः ॥
जायते मण्डलाधीशो नरः षष्ठांशकोद्भवः ॥ ६ ॥

जो पुरुष पांचवे नवांश में जन्मा है उसके बहुत मित्र जन मंत्री होते हैं, भाईबंधु और मित्रोंके सुखसे सुखी और बड़ी प्रतिष्ठावाला होता है ॥ ५ ॥ जो छठे नवांश में जन्म लेता है वह पुरुष वैरिगणोंको जीतने वाला, वीर, दृढ़ प्रीति का करने वाला और मंडल भरका स्वामी होता है ॥ ६ ॥

अव्याहताज्ञः सर्वत्र पृथ्वीनाथः कलायुतः ॥
सेनापतित्वमाप्नोति संजातः सप्तमांशके ॥ ७ ॥
उदारधीः क्षितिख्यातो धनधान्यव्ययोदितः ॥
कोपी दुर्जनतप्ताङ्गो नरो जातोऽष्टमांशके ॥ ८ ॥

जो सप्तम नवांश में जन्मता है वह अमिट हुकम वाला, पृथिवीपति, अनेक कलाओं में कुशल और सेनाका पति होता है ॥ ७ ॥ जो अष्टमांश में जन्म लेताहै वह उदारबुद्धिवाला, भूमि में विख्यात धनधान्य के खर्च करने में सदा प्रवृत,बड़ा क्रोधी और दुष्ट पुरुषोके निमित्त से दुःखी होता है ॥ ८ ॥ इति बृहज्जातकोक्तनवांशफलानि ।

ला पुराण कथा सुननेमें प्रवीण होता है ॥ ४७ ॥ जिसके जन्म समय में धनिष्ठा नक्षत्र होताहै वह पुरुष आचार संपन्न, सबोंका आदर करने वाला, धनवान, बलवान, दयालु और वडा प्रतिष्ठित होताहै ॥ ४८ ॥

शीतभीरुरतिसाहसी सदा निष्ठुरो हि चतुरो नरो भवेत् ॥
वैरिणामतिशयेन दारुणो वारुणोडु यदि यस्य संभवे ॥ ४९ ॥
जितेन्द्रियः सर्वकलासु दक्षो जितारिपक्षःखलु तस्य नित्यम् ॥
भवेन्मनीषा सुतरामपूर्वा पूर्वा यदा भाद्रपदा प्रसूतौ ॥ ५० ॥

जिसका शतभिषा नक्षत्रमें जन्म होता है वह पुरुष शीत से डरनेवाला, वडा साहसी (विना विचार कार्य करने वाला), वड़ा निष्ठुर, वड़ा चतुर और शत्रु पक्षको भय देनेवाला होता है ॥ ४९ ॥ जिसके जन्म समम में पूर्वाभाद्रपदा नक्षत्र होता है वह पुरुष इन्द्रियोंका जीतनेवाला, सब कलाओंमें कुशल, शत्रु पक्षको जीतने वाला और वड़ा अपूर्व इच्छा वाला होता है ॥ ५० ॥

कुलस्य मध्येधिकभूषणं च नात्युच्चदेहः शुभकर्मकता ॥
यस्योत्तराभाद्रपदा च जन्यां धन्यां लभेन्मा च भवेद्वदान्यः ॥ ५१ ॥
चारुशीलविभवो जितेन्द्रियः सद्धनानुभवनैकमानसः ॥
मानवोननु भवेन्महामती रेवती भवति यस्य जन्मभम् ॥ ५२ ॥

जिसके जन्मकाल में उत्तराभाद्रपदा नाम नक्षत्र होता है वह पुरुष अपने कुल को भूषणरूप, जिसका अत्युच्च देह नहीं ऐसा, शुभ कर्मोंका करने वाला, दाता और वड़ा लक्ष्मीवान् होता है ॥ ५१ ॥ जिस मनुष्य का जन्म नक्षत्र रेवती होता है वह उत्तम स्वभाव और उत्कृष्ट वैभवयुक्त, जीतेन्द्रिय, न्याय से प्राप्त धनका संग्रही और वड़ा बुद्धिमान् होता है ॥ ५२ ॥ इति नक्षत्र जात फल कथने जातकाभरणे भाषानुवादितायां मार्जन्यां टीकायां वनमालिकृतायां तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

अथबृहज्जातकोक्तनवांशफलम् ।

विनीतोधर्मशीलश्च सत्यवादी दृढव्रतः ॥
विद्याव्यसनशीलश्च जायते प्रथमांशके ॥ १ ॥
उत्पन्नविभवो भोक्ता संग्रामेषु पराजितः ॥
गन्धर्वप्रमदासक्तो जायते द्वितीयांशके ॥ २ ॥

हर एक लग्न में सब लग्नों के नवांश भोगते हैं इससे एक एक लग्न में नौ

नौ नवांश भोगते हैं उनमें से जिसका प्रथम नवांश में जन्म होता है वह पुरुष बड़ा नम्र, धर्मात्मा, सत्यवक्ता, दृढ़संकल्प और विद्याके व्यसन वाला होता है ॥ १ ॥ जो कोई दूसरे नवांश में जन्म लेता है वह मनुष्य स्वभावसिद्ध वैभवयुक्त, भोगों का भोगने वाला, लड़ाई में हारने वाला और वेश्याप्रिय (रंडीवाज) होता है॥२॥

स्त्रीजितश्चानपत्यश्च मायायुक्तोल्पवीर्यवान् ॥
वीरविद्याविचारज्ञो जायते तृतीयांशके ॥ ३ ॥
बहुस्त्रीसुभगः पूज्यो जलसेवी धनान्वितः ॥
नृपसेव्यथवाऽमात्यश्चतुर्थांशे प्रजायते ॥ ४ ॥

तीसरे नवांशका जन्मा पुरुषों स्त्रीजित, संततिरहित; बड़ा मायावी, न्यून पराक्रमी और वीर पुरुषोंकी विद्याका विचार करने वाला होता है ॥ ३ ॥ जिसका चौथे नवांशका जन्म होता है वह बहुत स्त्रियों से युक्त, पूजा करने योग्य, जलका सेवन करने वाला, धनवान् और राजा का सेवक अथवा मंत्री होता है ॥ ४ ॥

बहुमित्रजनामात्यो बन्धुमित्रसुखान्वितः ॥
महत्प्रतिष्ठामाप्नोति संजातः पञ्चमांशके ॥ ५ ॥
जितवैरिगणो वीरो दृढसौहृदकारकः ॥
जायते मण्डलाधीशो नरः षष्ठांशकोद्भवः ॥ ६ ॥

जो पुरुष पांचवे नवांश में जन्मा है उसके बहुत मित्र जन मंत्री होते हैं, भाईबंधु और मित्रोंके सुखसे सुखी और बड़ी प्रतिष्ठावाला होता है ॥ ५ ॥ जो छठे नवांश में जन्म लेता है वह पुरुष वैरिगणोंको जीतने वाला, वीर, दृढ़ प्रीति का करने वाला और मंडल भरका स्वामी होता है ॥ ६ ॥

अव्याहताज्ञः सर्वत्र पृथ्वीनाथः कलायुतः ॥
सेनापतित्वमाप्नोति संजातः सप्तमांशके ॥ ७ ॥
उदारधीः क्षितिख्यातो धनधान्यव्ययोदितः ॥
कोपी दुर्जनतप्ताङ्गो नरो जातोष्टमांशके ॥ ८ ॥

जो सप्तम नवांश में जन्मता है वह अमिट हुकम वाला, पृथिवीपति, अनेक कलाओं में कुशल और सेनाका पति होता है ॥ ७ ॥ जो अष्टमांश में जन्म लेता है वह उदारबुद्धिवाला, भूमि में विख्यात धनधान्य के खर्च करने में सदा प्रवृत्त, बड़ा क्रोधी और दुष्ट पुरुषोंके निमित्त से दुःखी होता है ॥ ८ ॥ इति बृहज्जातकोक्तनवांशफलानि ।

अथ योगजातफलानि ।

शश्वत्कान्तापुत्रमित्रादिसौख्यं स्वातन्त्र्यं स्यात्सर्वकार्यप्रसंगे ॥
चञ्चद्देहोत्पादने मानसं चेद्विष्कंभे वै संभवो यस्य जन्तो ॥१॥
वक्ता चंचद्रूपसंपत्तियुक्तो दातात्यन्तं स्यात्प्रसन्नाननश्च ॥
जातानन्दः सद्विनोदप्रसंगाद्धर्मप्रीतिः प्रीतिजन्मा मनुष्यः॥२॥

जिस पुरुषका विष्कंभ नाम योग में जन्म होता है वह निरन्तर स्त्री पुत्र और मित्रादिकोंके सुख से सुखी, सबकाम करनेमें स्वतन्त्र (स्वाधीन), मनोहर देहकरने में मनका लगाने वाला होता है॥ १ ॥ प्रीति नाम योग का जन्मा मनुष्य वक्ता सुन्दर रूप संपत्तिसे युक्त, दान देने वाला, प्रसन्न मुख, उत्तम चर्चाओंके प्रसंगसे सदा आनन्दयुक्त और धर्म में प्रीति करने वाला होता है ॥ २ ॥

अर्थाप्त्यर्थं साहसैरन्वितश्च नानास्थानोद्यानयानप्रवृत्तिः ॥
यस्यायुष्मान् संभवे संभवेद्वै स्यादायुष्मान्मानवो मानयुक्तः॥३॥
ज्ञानी धनी सत्यपरायणः स्यादाचारशीलो बलवान् विवेकी ॥
सुश्लाघ्यसौभाग्यविराजमानः सौभाग्यजन्मा हि महाभिमानी ४॥

जिस मनुष्यके जन्म समय में आयुष्मान् योग होता है वह धन प्राप्तिके अर्थ साहसी, अनेक स्थान और बाग बगीचाओंके देखने में रुचि रखने वाला और बड़ी अयुवाला होता है ॥ ३ ॥ जो पुरुष सौभाग्य नाम योग में जन्मता है वह धनी, सत्य कहनेमें तत्पर, आचार करनेमें प्रवृत्त बड़ा बली; विचार से सब बातका विवेचन करने वाला, श्लाघा करनेलायक सौभाग्य से विराजमान और बड़ा अभिमानी होता है ॥ ४ ॥

सत्वरोतिचतुरः सदुत्तरश्चारुगौरवयुतश्च सन्मतिः ॥
नित्यशोभनविधानतत्परः शोभनोभवति शोभनोद्भवः ॥
सदामदोयोगलरुक् सरोषोविशालवक्त्राङ्घ्रिरतीव धूर्तः ॥
कलिप्रियो दीर्घहनुर्मनुष्यः पाखण्डिकःस्यादतिगण्डजातः॥६॥

जो पुरुष शोभन नाम योग में जन्मता है वह शीघ्रता से सब काम करने वाला, बड़ा चतुर, ठीक २ उत्तरका देनेवाला, बड़ा गौरव (बड़प्पन) से युक्त उत्तमबुद्धि से युक्त, नित्य प्रति अच्छे २ कामोंका करनेवाला और बड़ा सुन्दर होता है ॥ ५ ॥ जो अतिगंडयोग में जन्मता है वह पुरुष सब समय मदसे युक्त, गले में जिसके रोग, अतिशय क्रोधी, विशाल जिसके मुख और चरण, बड़ा धूर्त कलह जिसको प्रिय, लंबी ठोड़ा युक्त और बड़ा पाखण्डी होता है ॥ ६ ॥

हृष्टः सदा सर्वकलाप्रवीणः ससाहसोत्साहसमन्वितश्च ॥
परोपकारी सुतरां सुकर्मा भवेत्सुकर्मा परिसूतिकाले ॥ ७ ॥
प्राज्ञो वदान्यः सततं प्रहृष्टः श्रेष्ठः सभायां चपलः सुशीलः ॥
न युक्तो नियमेन धृत्या धृत्याह्वये यस्य नरस्य जन्म ॥ ८ ॥

जिसकी प्रसूतिके समयमें सुकर्मा नाम योग होताहै वह सदा प्रसन्न, सब कलाओंमें कुशल, विना विचारे कार्य करनेवाला, उत्साहसे युक्त, परोपकार करनेवाला और अतिशय करके सत्कर्म करनेवाला होता है ॥७॥ जिसका धृति नाम योगमें जन्म होताहै वह बड़ा बुद्धिमान्, सत्य बोलनेवाला निरन्तर प्रसन्न रहनेवाला, सभा में मुख्य, बड़ा चंचल, सुशील, नीतिसे युक्त और धैर्यवान् होता है ॥ ८ ॥

नरो हरिद्रामयसंयुतश्च सत्कर्मविद्याविनयैर्विरिक्तः ॥
यस्यप्रसूतिर्यदि शूलयोगे शूलव्यथा तस्य भवेत्कदाचित् ॥
धूर्तः सुहृत्कार्यपराङ्मुखश्च क्लेशी विशेपात्परुपस्वभावः ॥
चेत्संभवे यस्य भवेच्च गण्डः प्रचण्डकोपः पुरुपः प्रदिष्टः ॥१०॥

जिसकी शूल नाम योगमें प्रसूति होतीहै वह पांडु (पीलिया) रोग से युक्त सत्कर्म, सद्विद्या और सद्विनय से रहित और कभी शूलव्यथासहित होता है ॥९॥ जिसके जन्म समयमें गण्ड नामयोग होताहै वह पुरुप बडा धूर्त,मित्रोंके काम से बहिर्मुख, विशेपसे क्लेश भोगने वाला, बड़ा कठोर जिसका स्वभाव और प्रचंड क्रोध युक्त होता है ॥ १० ॥

सुसग्रहप्रीतिरतीवदक्षो धनान्वितः स्यात्क्रयविक्रयाभ्याम् ॥
प्रसूतिकाले यदि यस्य वृद्धिर्भाग्याभिवृद्धिर्नियमेन तस्य ॥११॥
निश्चला हिकमला सदालये संभवेच्च वदने सरस्वती ॥
चारुकीर्तिरपिचेद्ध्रुवं तदा चेद्ध्रुवो भवति यस्य संभवे ॥१२॥

जिमके जन्म समयमें वृद्धिनाम योग होताहै वह पुरुप संग्रह करनेमें प्रीति रखने वाला वड़ा चतुर, वेचने खरीदनेकी राहसे अनेक प्रकारके धनोंसे युक्त और उस मनुष्यका अवश्य भाग्यवृद्धि होतीहै ॥११॥ जिस मनुष्यके जन्म समयमें ध्रुव नाम योग होताहै उसके घरमें सब समय अचला लक्ष्मी निवास करती है और मुखमें

सरस्वती निवास करतीहै और बहुत दिन पर्यन्त जगमें उसकी अचल कीर्ति रहतीहै

क्रूरोल्पदृष्टिः कृपया विहीनो महाहनुः स्यादपवादवादी ॥
असत्यता प्रीतिरतीवमर्त्यो व्याघातजातः खलु घातकर्त्ता ॥१३॥
सुस्निग्धगात्रः कृतशास्त्रयत्नः सुरक्तभूषावसनानुरक्तः ॥
प्रसूतिकाले यदि हर्षणश्चेत्समानवो वै रिपुकर्षणः स्यात ॥१४॥

जो पुरुष व्याघातनाम योग में जन्म लेता है वह बड़ा क्रूर ओछी निगाहवाला, बड़ा निर्दयी, लंबी जिसकी ठोडी, सबकी खोटी कहनेवाला झूठ बोलनेमें जिसकी प्रीति और घात करनेवाला होताहै ॥१३॥ जिसके जन्म समयमें हर्षण नाम योग होताहै वह पुरुष चिकने शरीरवाला और शास्त्रमें यत्न करनेवाला, सुवर्ण भूषण वस्त्रोंके पहरनेमें अनुरागी और अपने शत्रुओंका नाश करनेवाला होता है ॥१४॥

सुधीः सुबन्धुर्गुणवान्महौजाः सत्यान्वितो रत्नपरीक्षकः स्यात् ॥
चेत्संभवे यस्य च वज्रयोगः सवज्रयुक्तोत्तमभूषणाढ्यः ॥१५॥
उदारचेताश्चतुरः सुशीलः शास्त्रादरः सारविराजमनः ॥
प्रसूतिकाले यदि यस्य सिद्धिर्भाग्याभिवृद्धिः सततं हि तस्य ॥१६॥

जिसके जन्म समयमें वज्रनाम योग होता है वह पुरुष उत्तम बुद्धियुक्त, उत्तम बंधुओंसे युक्त, बड़ा गुणी, बडा पुरुषार्थी, सत्य वाक्य कहनेवाला, रत्नोंका परीक्षक (जौहरी) और हीराओंके उत्तम आभूषण धारण करनेवाला होताहै ॥१५॥ जिसके जन्मसमयमें सिद्धिनाम योग होता है वह उदार पुरुष बड़े चित्तवाला, बड़ा चतुर बड़ा सुशील, शास्त्रमें आदर रखनेवाला, बलसे विराजमान और उसकी सदैव भाग्यकीवृद्धि होती है ॥ १६ ॥

उदारबुद्धिः पितृमातृवाक्ये गदार्तमूर्तिश्च कठोरचित्तः ॥
परस्यकार्ये व्यतिपाततुल्यो नरः खलु स्याद्व्यतिपातजन्मा ॥१७॥
उत्पन्नभोक्ता विनयोपपन्नो द्रव्याल्पता सद्व्ययतासमेतः ॥
सुकर्मसौजन्यतया वरीयान् भवेद्वरीयान् प्रभवे हि यस्यः ॥१८॥

जो पुरुष व्यतिपातयोगका जन्मा होता है वह माता पिताके वाक्यमें उदार बुद्धि

रखनेवाला, रोगोंमें आर्त जिसका शरीर ऐसा, कठोर जिसका चित्त और दूसरेके कामोंमें व्यतिपातके समान नुकसान करनेवाला होताहै ॥१७॥ जिस पुरुषके जन्म समयमें वरीयान नाम योग होताहै वह प्राप्त हुई वस्तुका भोगनेवाला, विनययुक्त अल्प धनी, सत्कर्ममें खरच करनेवाला और अपने सत्कर्म करनेसे और भलमनसाहतसे सबोंमें श्रेष्ठ होता है ॥ १८ ॥

असत्यसाक्षीप्रतिभूर्बहूनां व्यक्तात्मकर्मा क्षमया विहीनः ॥
दक्षोल्पभक्षो विजितारिपक्षस्त्वधर्षितो वै परिघोद्भवः स्यात् ॥१९॥
सन्मन्त्रशास्त्राभिरतो नितान्तं जितेन्द्रियश्चारुशरीरयष्टिः ॥
योगः शिवो जन्मनि यस्य जन्तोः सदा शिवं तस्य शिवप्रसादात्॥

जो पुरुष परिघनाम योगमें जन्म लेताहै वह झूंठी साखी कहनेवाला, बहुतोंका गवाह (जामन) होताहै, खुलासा अपना काम करनेवाला, क्षमाका जिसके लेश नहीं; बडा चतुर, थोड़ा भोजनी, अपने शत्रुओंका जीतनेवाला और किसीकी धमकीमें न आनेवाला होताहै ॥१९॥ जिसके जन्म समयमें शिव नाम योग होवे तो वह पुरुष सन्मन्त्र और अनेक शास्त्रोंमें आसक्त बड़ा जितेन्द्रिय मनोहर जिसका अङ्ग ऐसा होताहै और शिवजीके अनुग्रहसे उसका सदा कल्याण ही होताहै ॥२०॥

जितेन्द्रियः सत्यपरोतिगौरः सर्वेषु कार्येष्वतिकोविदश्च ॥
भवेत्प्रसूतौ यदि सिद्धियोगः सिद्ध्यन्ति कार्याणि कृतानि तस्य॥
नूनं विनीतश्चतुरः सुहासः स्वकार्यदक्षो जितशत्रुपक्षः ॥
सन्मन्त्रविद्याविधिनैव सर्वं संसाधयेत्साध्यभवोहि दक्षः ॥२२॥

जिसके जन्म समयमें सिद्धियोग होताहै वह मनुष्य इन्द्रियोंका जीतनेवाला, सत्यमें तत्पर, गौरवर्ण; सबकामोंमें अति निपुण और वह पुरुष जो कोई काम करताहै वे सब काम मनुष्यके सिद्ध होतेहैं ॥२१॥ जिसका साध्यनाम योगमें जन्म होता है वह पुरुष निश्चय नम्र, बडा चतुर, मन्द हँसनेवाला, अपने काम करनेमें हुशियार, शत्रुपक्षका जीतनेवाला और उत्तम मंत्रविद्यासे अपने सब अभीष्ट कर्मोंको तत्पर हो कर सिद्धि करता है ॥ २२ ॥

शुभप्रचारः शुभवाग्विलासः शुभस्य कर्ता शुभलक्षणश्च ॥
शुभोपदेशं कुरुते नराणां यस्य प्रसूतौ शुभनामयोगः ॥ २३ ॥

जितेन्द्रियः सत्यवचामहौजा वाग्वादसंग्रामजयाभ्युपेतः ॥
सन्मानशुक्लाम्बरधारणेच्छुः शुक्लोद्भवो वै भवसंयुतः स्यात् ॥२४॥

और जिसके जन्म समयमें शुभ नाम योग होताहै वह पुरुष शुभ वरतावसे वरतने वाला, शुभ वाणीका बोलनेवाला, शुभ कर्मोंका करनेवाला, शुभ लक्षणोंसे युक्त और मनुष्योंको शुभ उपदेश करनेवाला होताहै ॥२३॥ जो शुक्लनाम योगमें जन्म लेता है वह पुरुष जितेन्द्रिय, सत्यवाचक, बड़ा पुरुषार्थी, विवादमें और संग्राममें विजय करनेवाला, सन्मानसे शुक्ल वस्त्रोंके धारण करनेकी इच्छा करनेवाला और वैभव से युक्त होता है ॥ २४ ॥

विद्याभ्यासे प्रीतिरत्यन्तचेता नित्यं सत्याचारजातादरश्च ॥
शान्तो दान्तो जायते चारुकर्मा ब्रह्मायोगः संभवे यस्य पुंसः ॥२५
प्राज्ञो बलीयान्विपुलामलश्रीयुक्तः कफात्माहि भवेन्महौजाः ॥
निजान्वये वै मनुजो नरेन्द्रस्त्वैन्द्रोद्भवश्चारुतरप्रभावः ॥ २६ ॥
चंचलश्च कुटिलः खलमैत्रः शास्त्रभक्तिरहितोहतचित्तः ॥
साध्वसे मनसि तस्य नो धृतिर्वैधृतिर्भवति यस्य जन्मनि ॥२७॥

जिसके जन्मसमयमें ब्रह्मा नाम योग होताहै वह पुरुष विद्याके अभ्यास करनेमें प्रीति रखनेवाला, बड़ा ज्ञानी, नित्य सत्य आचारमें आदरयुक्त, शांतियुक्त जिस की प्रकृति, जितेन्द्रिय और पवित्र कर्मोंका करनेवाला होताहै ॥२५॥ जो ऐंद्रनाम योगमें जन्म लेताहै वह पुरुष, बड़ा बुद्धिमान्, बड़ा बलवान् निर्मल और अत्यन्त लक्ष्मीयुक्त, कफप्रकृति, बड़ा पुरुषार्थी और अपने वंशमें राजाके समान और बड़ा उत्तम जिसका प्रभाव ऐसा होताहै ॥२६॥ जिसके जन्म समयमें वैधृति नाम योग होताहै वह पुरुष बड़ा चांचल, बड़ा कुटिल, खल मनुष्योंसे मित्रता करनेवाला शास्त्र में प्रीति रहित, नष्ट जिसका चित्त, घबराहटसे मनमें धीरता रहित होता है ॥२७॥ इतियोगजातफलानि ॥

अथकरणजन्मफलानि ।

कामी दयालुर्बलवान्सुशीलो विचक्षणः शीघ्रगतिः सभाग्यः ॥
बवाभिधाने जननंहि यस्य नाना विधातस्य भवेत्सुसंपत् ॥१॥
शूरतातिविलसद्बलवत्तां संयुतो भवति चारुविलासः ॥
काव्यकृद्धितरणप्रणयश्चेद्बालवेमलमतिश्च कलाज्ञः ॥ २ ।

जिसका बव नाम करण में जन्म होता है वह पुरुष बड़ा कामी, दयालु, बलवान्, सुशील, बड़ा चतुर, शीघ्र गतिवाला, भाग्यशाली और अनेक प्रकारकी संपत्तियुक्त होता है ॥ १ ॥ जिसका बालवकरण में जन्म होता है वह पुरुष शूरवीरता से सुशोभित बलवत्तासे युक्त, सुन्दर क्रीड़ा करनेवाला, काव्यका रचनेवाला, देने की प्रतिज्ञा युक्त, निर्मल बुद्धि से युक्त और अनेक कलाओंका जाननेवाला होताहै॥२॥

कामी प्रगल्भोऽभिमतो बहूनां नूनं स्वतन्त्रो बहुमित्रसौख्यः ॥
बलान्वितः कोमलवाग्विलासः श्रेष्ठः कुले कौलवजातजन्मा ॥३॥
चारुकोमलकलेवरशाली केकिलालसमनाश्च कलाज्ञः ॥
वाग्विलासकुशलोऽतिसुशीलस्तैतिले विमलधीश्चलदृक्स्यात्॥४॥

जिसका कौलव करण में जन्म होताहै वह पुरुष बड़ा कामी, बड़ा ढीठ, सब लोक जिसको चाहते होवें, स्वाधीन रहनेवाला, अनेक मित्रों के साथ सुख भोगने वाला, बड़ा बलवान. कोमल वाणी का बोलने वाला और अपने कुलमें श्रेष्ठ होताहै ॥ ३ ॥ जो पुरुष तैतिल नाम करण में जन्म लेता है वह सुन्दर और कोमल जिसका शरीर, मोरोंके दर्शनमें जिसकी लालसा, अनेक कलाओंका जाननेवाला, बोलने में चतुर, बड़ा सुशील, निर्मल जिसकी बुद्धि और चञ्चल नेत्रवाला, पुरुष होता है॥४॥

परोपकारे विहितादरश्च विचारसारश्चतुरो जितारिः ॥
शूरोऽतिधीरः सुतरामुदारो गरे नरश्चारुकलेवरश्च ॥ ५ ॥
कलाप्रवीणः सुतरां सहासः प्राज्ञो हि सन्मानसमन्वितश्च ॥
प्रसूतिकाले वणिजं हि यस्य वाणिज्यतोर्थागमनं हितस्य ॥ ६ ॥

जिसका गर नाम करण में जन्म होता है वह पुरुष परोपकारका करने वाला, विचारशील, बड़ा चतुर शत्रुओंका जीतनेवाला, बड़ा वीर, धैर्यवान, बड़ा उदार और मनोहर शरीरवाला होता है ॥ ५ ॥ जिसके जन्मसमयमें वणिज नाम करण होताहै वह पुरुष अनेक कलाकुशल, हँसने का सुभाववाला, बड़ा बुद्धिमान्, सबोंका सन्मान करनेवाला होता है, उसको वाणिज्य (व्योपार) से धन प्राप्त होता है ॥ ६ ॥

चारुनक्त्वचपलोबलशाली हेलया सिदरितारिकुलश्च ॥
जायते खलमतिर्बहुनिद्रो यस्य जन्मसमये खलुभद्रा ॥ ७ ॥

अतिसुललितबुद्धिर्मन्त्रविद्याविधाने
गुणगणसमवेतः सर्वदा सावधानः ॥
ननु जनकृतसख्यः सर्वसौभाग्ययुक्तो
भवति शकुनजन्मा शाकुनज्ञानशीलः॥ ८ ॥

जिसके जन्मसमयमें भद्रा नाम करण होता है वह पुरुष मनोहर मुखवाला, बड़ा चपल, बड़ा बली और लीला से (सहज) शत्रुओंका नाश करनेवाला, बड़ा दुष्ट बुद्धि और अति निद्रा लेने वाला होता है ॥ ७ ॥ जो पुरुष शकुन नाम करण में जन्म लेनेवाला होता है वह मंत्रविद्याविधान में अति चञ्चल बुद्धि वाला, गुणगुणोंसे युक्त, सब समय में सावधान, सब प्राणियों से मित्रता रखने वाला, सब सौभाग्यों से युक्त और शकुनोंका जाननेवाला होता है ॥ ८ ॥

नरः सदाचारपराङ्मुखः स्यादसंग्रहः क्षीणशरीरयष्टिः ॥
चतुष्पदे यस्य भवेत्प्रसूतिश्चतुष्पदात्सत्वयुतो मनुष्यः ॥ ९ ॥
दुःशीलवक्रचलनोबलवान्खलात्मा कोपानलाहतमतिःकलिकृत्कुलाय
द्रोहात्कुलक्षयभवादतिदीर्घकाले जातो हि नागकरणे रणरंगधीरः१०
धर्मेप्यधर्मे समतामतेः स्यादंगेप्यनंगेविबलत्वमुच्चैः ॥
मैत्र्याममैत्र्यां स्थिरता न किंचित्किंस्तुघ्नजातस्य हि मानवस्य११

जिसकी चतुष्पद करण में प्रसूती (जन्म) होता है वह मनुष्य सदाचार से सदा बहिर्मुख, किसी वस्तु को पास नहीं रखनेवाला, दुर्बल जिसका शरीर और चार पावोंवाले जीवों से पराक्रमी होता है ॥ ९ ॥ नागकरणका जन्म लेनेवाला पुरुष बड़ा दुःशील, टेढ़ी चाल चलने वाला, बड़ा बलवान दुष्टांतःकरण, क्रोधाग्निसे सदा जलता, कलह करनेका कुलाय (स्थान) कुलक्षयनिमित्त द्रोहसे बड़ा रणरंगमें धीर होता है ॥ १० ॥ किंस्तुघ्न करण में जन्म लेनेवाले मनुष्यकी धर्म अधर्ममें बराबर बुद्धि होतीहै, और अङ्गमें और अनङ्ग (कामदेव) में अति दुर्बल होना है और प्यार तथा वैर उस मनुष्य के दोनों, एकसे होते हैं ॥ ११ ॥ इतियोगकरणादिफलकथनं मार्जन्यांटीकायां वनमालिकृतायां चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

—*—

अथ गंडांतजातफलम्।

पौष्णादिगण्डान्तभवो हि मर्त्यः क्रमेण पित्रोरशुभोग्रजस्थः ॥
जातस्य सत्यं विविधे प्रजातः सर्वाभिघातं कुरुते वदन्ति ॥१॥

नक्षत्र गडांत तिथि गंड़ांत आदि जे गंडांत हैं तिनमें जन्म हुएका फल इस श्लोक में कहते हैं कि रेवती नक्षत्र आदि गंडांतोंमें जो मनुष्य उत्पन्न हुआ है वह मनुष्य क्रमसे माता पिता और भाईको अशुभ फल देने वाला होताहै इसी तरह और भी अनेक गंडांतों में जन्म लेने वाला सबका अभिघात करताहै ऐसा ज्योतिर्विद ऋपि कहते हैं इस लिये गंडांतमें जन्म होना अच्छा नहीं होता है यदि दैवात् गंडांतों में जन्म हुआ होवे तो अवश्य शांति करनी चाहिये ॥ १ ॥ इति गंडांतफलम्।

अथ गणानांफलम्।

सुस्वरश्च सरलोक्तिमतिः स्यादल्पभोजनकरो हि नरश्च ॥
जायते सुरगणेन्यगुणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणोद्रविणाढ्यः ॥ १ ॥
जाच्राभिरताभिमानी धनी दयालुर्बलवान्कलाज्ञः ॥
प्राज्ञः सुकान्तिः सुखदो बहूनां मर्त्यो भवेन्मर्त्यगणे प्रसूतः॥२॥
अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च ॥
दुःशीलवृत्तः कलिकृद्वलीयान्रक्षोगणोत्पन्ननरो विरोधी ॥ ३ ॥

जिस पुरुषका देवगण होता है वह अच्छा जिसका स्वर, सरल भाषण करनेमें जिसकी बुद्धि, थोड़ा भोजन करने वाला; दूसरेके गुणोंका जाननेवाला, अच्छे पुरुषोंसे कहे जिसके गुण और बड़ा धनाढ्य होता है ॥ १ ॥ जिसका मनुष्यगण होता है वह पुरुष देवता ब्राह्मणोंका पूजक, बड़ा मानी, धनवान् दयायुक्त, बलवान् कलाओंका जाननेवाला, बड़ा बुद्धिमान् सुन्दर जिसकी कांति और बहुतोंको सुख देने वाला होता है ॥ २ ॥ जो पुरुष राक्षस गणवाला होता है वह बहुत बोलनेवाला, कठोर जिसका चित्त, बड़ा साहसी, क्रोधमें तत्पर, बड़ा उद्धत, दुष्ट जिसका स्वभाव कलह करनेवाला, बड़ा बलवान् और सबसे विरोध करनेवाला होता है ॥ ३ ॥

अथ लग्न फलम्।

चण्डाभिमानी गुणवान्सकोपः सुहृद्विरोधी च सखा परेषाम्।
पराक्रमप्राप्तयशो विशेषो मेषोदये यः पुरुषोऽतिरोषः॥ १॥

गुणाग्रणी स्याद्द्रविणेन पूर्णो भक्तो गुरूणां हि रणप्रियश्च ॥
धीरश्च शूरः प्रियवाक् प्रशान्तः स्यात्पूरुषो यस्य वृषे विलग्ने ॥२॥

जिस पुरुषका मेष लग्न में जन्म होता है वह बड़ा अभिमानी, गुणी, क्रोधयुक्त, सुहृदों (मित्र) से विरोध करने वाला, दूसरोंका मित्र,अपने पराक्रम से यश प्राप्त होनेवाला, श्रेष्ठ और अति क्रोधी होता है॥१॥जिसका वृषलग्नमें जन्म होताहै वह पुरुष गुणिओंमें अग्रगण्य, द्रव्य से पूर्ण, गुरुओंका भक्त, लड़ना जिसको प्रिय बड़ा धीर, बड़ा शूरवीर, प्रिय वाक्य कहनेवाला और अतिशय शांत प्रकृति होताहै॥२॥

भोगी वदान्यो बहुपुत्रमित्रः सुगूढमन्त्रः सधनः सुशीलः ॥
तस्य स्थितिः स्यान्नृपसन्निधाने लग्ने भवेन्ना मिथुनाभिधाने॥३॥
मिष्टान्नभुक् साधुरतो विनीतो विलोमबुद्धिर्जलकेलिशीलः ॥
प्रकृष्टसारोऽतितरामुदारो लग्ने कुलीरे हि नरो भवेत्सः ॥ ४ ॥

जिसका मिथुन लग्न में जन्म होता है वह पुरुष अनेक भोगोंका भोगनेवाला दाता, बहुत पुत्रमित्रोंसे युक्त, गुप्त जिसका मंत्र, धनसे, युक्त, बड़ा सुशील, और राजाके समीप में सब समय रहने वाला होता है ॥ ३ ॥ जिसका कर्क लग्नका जन्म होता है वह पुरुष मिष्टान्नका खाने वाला, भलेमानसोंसे प्यार करनेवाला, बड़ा नम्र, विपरीत जिसकी बुद्धि, जलक्रीड़ा करने में जिसका स्वभाव, बड़ा बलवान् और अत्यन्त उदार होता है ॥ ४ ॥

कृशोदरश्चारुपराक्रमश्च भोगी भवेदल्पसुतोल्पभक्षः ॥
संजातबुद्धिर्मनुजोऽभिमाने पञ्चानने संजनने विलग्ने ॥ ५ ॥
कामक्रीडासद्गुणज्ञानसत्त्वकौशल्याद्यैः संयुतः सुप्रसन्नः ॥
लग्नं कन्या यस्य जन्यां सधन्यां कन्यां क्षीराब्धेरवाप्नोति नित्यम्॥६

जिसका सिंह लग्न में जन्म होता है वह पुरुष कृश उदरवाला, बड़ा पराक्रमी, भोग भोगनेवाला, अल्प पुत्रवाला, थोड़ा भोजन करनेवाला और अभिमानमें बुद्धि रखने वाला होता है ॥ ५ ॥ जिस मनुष्यका कन्या लग्न में जन्म होताहै वह पुरुष कामक्रीड़ा, सद्गुणज्ञान, सत्व, कौशल आदि गुणोंसे युक्त, सदा प्रसन्न चित्त, और क्षीरसमुद्रकी कन्या लक्ष्मी समान धन्य कन्याको प्राप्त होने वाला होता है ॥ ६ ॥

गुणाधिकत्वं द्रविणोपलब्धिर्वाणिज्यकर्मण्यति नैपुणत्वम् ॥
पद्मालयातन्निलये न लोला लग्नं तुला चेत्सकुलावतंसः ॥७॥
शूरोनरोऽन्यन्तविचारसारो नवद्यविद्याधिकतासमेतः ॥
प्रसूतिकाले किल लग्नशाली भवेदलिस्तस्य कलिः सदैव ॥८॥

जिसका तुला लग्नमें जन्म होताहै वह पुरुष अधिक गुणवाला व्यौपारसे उसे द्रव्य मिलताहै और उसी व्यापारमें निपुणता उसकी होती है, अचल लक्ष्मी उसके घरमें निवास करतीहै और वह पुरुष अपने कुलका मुकटमणि होता है ॥ ७ ॥ जिस मनुष्यके जन्म समयमें वृश्चिक लग्न होता है वह शूरवीर, अत्यन्त विचारशाली, निर्दोप विद्याके आधिक्यसे युक्त होता है और उसके घरमें सदा कलह रहता है ॥

प्राज्ञश्च राज्ञः परिसेवनज्ञः सत्यप्रतिज्ञः सुतरांमनोज्ञः ॥
सुज्ञः कलाज्ञश्च धनुर्विधिज्ञश्चेन्नुर्धनुर्यस्य जनुस्तनुः स्यात् ॥९॥
कठिनमूर्तिरतीवशठः पुमान् निज मनोगतवद्बहुसंततिः ॥
सुचतुरोपि च लुब्धतरो वरोयदि नरोमकरोदयसंभवः ॥१०॥

जिसके जन्म समयमें धनुलग्न होता है वह पुरुष वड़ा बुद्धिमान, राजसेवाका जाननेवाला सत्य जिसकी प्रतिज्ञा, अत्यन्त सुन्दर, वड़ा सुज्ञ, अनेक कलाओंका जाननेवाला और धनुर्विधिका जाननेवाला होताहै ॥९॥ जिस मनुष्यका मकर लग्न का जन्म होताहै वह कठोरमूर्ति, अत्यन्त शठ, मनमानती अत्यन्त संतति युक्ति, वड़ा चतुर, अत्यन्त लोभी होता है ॥ १० ॥

लोलस्वान्तोऽत्यन्तसंजातकामश्चञ्चद्देहः स्नेहकृन्मित्रवर्गे ॥
सस्यैरम्भः संभवैर्युक्तसदम्भश्चेत्स्यात्कुम्भे संभवो यस्य लग्ने ॥
दक्षोल्पभक्षोल्पमनोभवश्च सद्रत्नहेमाचपलोतिधूर्तः ॥
स्यान्नाचनाना रचना विधाने मीनाऽभिधाने जनने विलग्ने ॥

जिसके जन्मसमयमें कुम्भ लग्न होताहै वह पुरुष चंचल अंतःकरणवाला, अत्यंत कामी, मकाशयुक्त देहवाला, मित्रवर्गोंमें स्नेह करनेवाला, जलसे उत्पन्न भयेवालतृणों से युक्त और वड़ा दंभी होता है ॥११॥ जिसका मीन लग्न में जन्म होता है वह पुरुष वडा चतुर, थोड़ासा अन्न खानेवाल, किंचित्कामदेवसे युक्त, उत्तम रत्न सुवर्णसे युक्त, वड़ा चंचल, अत्यंत धूर्त, अनेक रचनाओंका करनेवाला होता है ॥१२॥

भवेदलं लग्नबलं यथोक्तं विलग्नकाले प्रबले प्रसूतौ ॥
तस्मिन्बलोनेयदिवाविलग्ने युक्ते क्षिते क्रूरखगैस्तथाल्पम् ॥१३॥
नन्वेवमुदाहृतानां संवत्सरादिफलानां समयनियमभावात् ॥
निराधारकत्वेन फलादेशः कथं सम्यग्घटतीति व्यर्थमेव
किमर्थमुक्तमिति चेन्नसमयानियमोप्यस्ति तथाहि। उक्तानि
संवत्सरपूर्वकाणां फलानि तत्प्राप्तिरिति प्रकल्प्या ॥
सांवत्सरंसावनवर्षपस्य पाकेयनर्तुप्रभवं खरांशो ॥१४॥

ये सामान्यसे मेषादिलग्नोंका फल कहाहै परंतु इसमें इतना तारतम्यहै कि समयमें जन्म होवे उस समय उस लग्नका बलाबल और शुभाशुभ ग्रहोंका दृष्टि शुभाशुभ ग्रहोंसे युक्तायुक्तादि बल इत्यादि अनेक प्रकारसे विचार करना चाहिये यदि जन्मसमयमें उक्त बलोंसे लग्न बलवान् होवे तब यथोक्त फलसे भी अधिक फल होताहै और यदि उक्त बलोंसे रहित लग्न होवे वा पाप ग्रह युक्त या पापग्रह दृष्ट होवे तो फल कमती होता है इससे बुद्धिसे विचार करके देखना चाहिये॥१३॥इनके फलोंका विचार यहहै कि यदि कोई यह कहे कि जो तुमने ये संवत्सरादिकोंके फल कहे हैं इनका फल कब होगा इनके फलोंकी क्या अवधिहै इसके समयके नियमका जब निश्चय नहीं होता तब फिर निराधार होनेसे ये उक्त फलादेश कैसे घटेगा फिर ये फलादेश कहना तुमारा किमर्थहै इस संदेहके निवृत्त करनेको कहतेहैं कि इस शंका को तुम मतकरौ, क्योंकि उक्त फलोंके विषयमें समयका नियम भी है सो कहते हैं॥ कहे हुए संवत्सरादिकोंके फल हैं उन फलों की प्राप्ति इस रीतिसे कल्पना करनी चाहिये । जो संवत्सरोंका फल है वह तौ सावननाम संवत्सरके स्वामीके परिपाक समयमें होगा। और अयनका ऋतुका जो कुछ फलहै वह सूर्यकी दशाकी पाकावस्थामें होगा ॥ १४ ॥

मासोद्भवं मासपतेस्तथेन्दोर्गणोडुपक्षप्रभवं च यस्यात् ॥
तिथिप्रभूतं करणोद्भवं च चन्द्रान्तरेऽर्कस्य दशाविभागे ॥१५॥
वारोद्भवं वारविभोर्विचिन्त्यं योगोत्थमिन्द्वर्कबलान्वितस्य ॥
लग्नोद्भवं लग्नपतेर्दशायां दृग्भावयुग्राशिजमेवमूह्यम् ॥१६॥

जो मासोंका फलहै वह मासेस (मासस्वामी) की परिपाक अवस्थामें होगा। अथवा चन्द्रमाके दशापरिपाकमें होगा और जो गणोंका फल नक्षत्रोंका फल और पक्षोंका फल, तिथियोंका फल और करणोद्भवफल इन सबोंका फल सूर्यदशाके अन्तर्गत चंद्रांतरमें होगा ॥१५॥ और वारों का फल उस वारके स्वामीकी दशा विपाकमें होगा और योगजन्य फल चन्द्रसूर्य दोनोंके बली होनेके समय होगा और और लग्नजन्य फल लग्नेशकी दशविपाकमें होगा इसी तरह राशिजन्मफल राशीस भावेशके युक्त होनेसे होगा ऐसा विचार करना चाहिये ॥ १६ ॥

अथसूर्यनक्षत्रफलम् ॥

ढिम्भाख्यचक्रे रविभाच्च भानां त्रयंन्यसेन्मूर्धि मुखे त्रयंच ॥
द्वेस्कन्धयोर्द्वेभुजयोर्द्वयं च पाणिद्वये वक्षसि पंचमानि ॥१॥
नाभौ च लिंगे च तथैकमेकं जान्वोर्द्वयं पादयुगेभषट्कम् ॥
पुंसां सदा वै परिकल्पनीयं मुनिप्रवर्यैः फलमुक्तमत्र ॥ २ ॥

इस चक्रका नाम डिंभ है इस डिंभचक्रमें सूर्याधिष्ठित नक्षत्रसे लेकर जे सत्ताईस नक्षत्रहै उनमेंसे क्रमसे प्रथम तीन नक्षत्रोंको मस्तकमें फिर तीन नक्षत्रोंको मुख में फिर दो नक्षत्रोंकोकंधेमें फिर आगेके दो नक्षत्रोंको भुजोंमें फिर दो नक्षत्रोंको दोनों हाथोंमें फिर आगेके पांच नक्षत्रों को वक्षस्थलमें ॥१॥ फिर एक नक्षत्रको नाभिमें एक नक्षत्रको लिंगमें फिर आगेके दो नक्षत्रोंको जानुओंमें फिर छः नक्षत्रोंको दोनों पावोंमें कल्पना करने चाहिये इसका फल मुनिमुख्योंने निरूपण किया है ॥

सद्रत्नचामीकरचारुवस्त्रविचित्रवालव्यजनातपत्रैः ॥
विराजमानो मनुजो नितान्तं मौलिस्थले भं नलिनी प्रभोश्चेत् ॥
मिष्टाशनानां शयनासनानां भोक्ता च वक्ता सततं प्रसन्नः ॥
स्मिताननो नावदनानुयातं भानोर्भवेद्धञ्जनने हि यस्य ॥४॥

जो तीन नक्षत्र मस्तकमें कहेहै उनमेंसे किसी नक्षत्रमें जिसका जन्म हुआ होवे वह मनुष्य सद्रत्न सुवर्ण और उत्तम वस्त्र और विचित्र पंखा पंखा और छत्र इनसे निरन्तर विराजमान होता है॥३॥यदि सूर्याधिष्ठित नक्षत्रसे जो मुखस्थ तीन नक्षत्र हैं उनमेंसे किसी नक्षत्रका जिसका जन्म हुआ होवे वह मनुष्य मीठे भोजनोंका और

भवेदलं लग्नबलं यथोक्तं विलग्नकाले प्रबले प्रसूतौ ॥
तस्मिन्बलोनेयदिवाविलग्ने युक्ते क्षिते क्रूरखगैस्तथाल्पम् ॥१३॥
नन्वेवमुदाहृतानां संवत्सरादिफलानां समयनियमभावात ॥
निराधारकत्वेन फलादेशः कथं सम्यग्घटतीति व्यर्थमेव
किमर्थमुक्तमिति चेन्नसमयनियमोप्यस्ति तथाहि। उक्तानि
संवत्सरपूर्वकाणां फलानि तत्प्राप्तिरिति प्रकल्प्या ॥
सांवत्सरंसावनवर्षपस्य पाकेयनर्तुप्रभवं खरांशो ॥१४॥

ये सामान्यसे मेषादिलग्नोंका फल कहाहै परंतु इसमें इतना तारतम्य
समयमें जन्म होवे उस समय उस लग्नका बलाबल और शुभाशुभ ग्रहोंका

उदार होता है ॥ ९ ॥ गुह्येंद्रियगत नक्षत्र में जिसका जन्म होताहै वह पुरुष काम देवसे भी सुन्दर,सत्कर्म करनेवालोंमें उत्तम मुख्य गाने में और नृत्यमें रुचिवाला, सब कलाओंका जानने वाला और अतुल कीर्तियुक्त होता है ॥ १० ॥

नाना देशानेकधासंप्रचारः कार्योत्साहश्चञ्चलक्षामगात्रः ॥
धूर्तो मर्त्यःसत्यहीनश्च नूनं जानुस्थाने भानुभं जन्मनि स्यात्॥ ११
कृषिक्रियायां निरतोल्पधर्मः शत्रूज्झितः सेवनकर्मकर्ता ॥
तारा यदि स्यादरविन्दबन्धोः पादारविन्दे च नरस्य सूतौ ॥ १२॥

जानुगत नक्षत्रोंमेंसे किसी नक्षत्रमें यदि जन्म होवे तो वह पुरुष अनेक देशोंमें विचरनेवाला, हरएक कार्यमें उत्साह रखने वाला, बड़ा चञ्चल दुबले अंगवाला, बड़ा धूर्त और मिथ्या भाषण करने वाला होता है ॥ ११ ॥ पादगत नक्षत्रोंमेंसे किसी नक्षत्रमें जिसका जन्महुआ होवे वह पुरुष खेती करने में निरत, थोड़े से धर्म का जाननेवाला, शत्रु रहित, सेवा कर्म करनेवाला होता है ॥ १२ ॥ इतिफलम् ॥

अथावयव स्वरुपम् ।

ह्रस्वामीनवृषाजघटामिथुनधनुः कर्किमृगमुखाश्च समाः ॥
वृश्चिककन्यामृगपतिवणिजा दीर्घाः समाख्याताः॥ १ ॥
एभिर्लग्न ोणस्थैः शीर्षप्रभातिन्नशरीराणि ॥

उत्तमोत्तम शय्याशनोंका भोगनेवाला और बड़ा वक्ता निरन्तर प्रसन्न रहनेवाला और सब समय हंसमुख होता है ॥ ४ ॥

वृषांसको वंशविभूषणश्च महोत्सवार्थप्रथितः प्रतापी ॥
नरोतिशूरोऽतितरामुदारो दिवाकरोडुस्थितमंसके चेत ॥५॥
त्यक्तः स्वदेशः पुरुषो विशेषाद्गर्वोद्धतः शौर्ययुतो नितान्तम् ॥
विदेशवासाप्तमहत्प्रतिष्ठोमार्त्तण्डभं बाहुगतं प्रसूतौ ॥ ६ ॥

जिसका कंधगत नक्षत्रमें जन्म होताहै वह पुरुष वृषके समान उच्च कंधावाला अपने कुलका भूषण, महान् उत्सवके अर्थ प्रवृत्त रहनेवाला, बड़ा प्रतापी, बड़ा शूरवीर और बड़ा उदार होताहै ॥५॥ जिसके जन्म समयमें बाहुगत नक्षत्रोंमेंसे कोई नक्षत्र होता है वह पुरुष विशेषकर प्रदेशका निवासी बड़ा गर्वीला, शूरवीरता युक्त और निरन्तर परदेशके निवाससे प्राप्त महत्प्रतिष्ठावाला होता है ॥ ६ ॥

वदान्यता सद्गुणवर्जितश्च पण्यादिरत्नादिपरीक्षकश्च ॥
सत्यानृताभ्यां सहितो हि मर्त्यो दिवामणेर्भं यदि पाणिसंस्थम्॥७॥
भूपालतुल्यः स्वकुले सुशीलो बाले विशालोत्तमकीर्तिशाली ॥
शास्त्रे प्रवीणः परिसूतिकाले वक्षःस्थले चेन्नलिनीशभं स्यात् ॥८॥

और हस्तगत नक्षत्रमेंसेयदि किसी नक्षत्रमें जिसका जन्म होताहै वह पुरुष सत्य बोलनेसे और अन्य सद्गुणोंसे रहित, बेचनेके योग वस्तुओंका और अनेक रत्नादिकोंकी परीक्षा करनेवाला और व्यापारमें कुशल होताहै ॥७॥ जो वृक्षस्थल स्थित नक्षत्रोंमेंसे यदि किसी नक्षत्रमें जिसका जन्म हुआ होवे तो वह राजाके समान बड़ा सुशील, बालकपनसे ही अपने कुलमें उत्तम कीर्तिसे सुशोभित और शास्त्रविद्या में बड़ा कुशल होताहै ॥ ८ ॥

क्षमासमेतो रणकर्मभीरुः कलाकलापाकलनैकशीलः ॥
धर्मप्रवृत्तिः सुतरामुदारो नाभीसरोजन्मजबन्धुनाराः ॥ ९ ॥
कन्दर्पधुर्योजितसाधुकर्मा सद्गीतनृत्याभिरुचिः कलाज्ञः ॥
चेज्जन्मकाले नलिनीशभं स्याद्गुह्यस्थले सोनुलर्मानियुक्तः॥१०॥

वा नाभिगतनक्षत्रोंमेंसे किसी नक्षत्रमें यदि जन्म हुआ होवे तो वह पुरुष बड़ा क्षमा लड़ाईसे डरपोक, कला समूहोंका जाननेवाला, धर्ममें प्रवृत्तिवाला और अत्यन्त

उदार होता है ॥ ९ ॥ गुह्येंद्रियगत नक्षत्र में जिसका जन्म होताहै वह पुरुष काम देवसे भी सुन्दर, सत्कर्म करनेवालोंमें उत्तम मुख्य गाने में और नृत्यमें रुचिवाला, सब कलाओंका जानने वाला और अतुल कीर्ति युक्त होता है ॥ १० ॥

नाना देशानेकधासंप्रचारःकार्योत्साहश्चञ्चलक्षामगात्रः ॥
धूर्तो मर्त्यःमत्यहीनश्च नूनं जानुस्थाने भानुभं जन्मनि स्यात॥ ११
कृषिक्रियायां निरतोल्पधर्मः शत्रूज्झितः सेवनकर्मकर्ता ॥
तारा यदि स्यादरविन्दबन्धोः पादारविन्दे च नरस्य सूतौ ॥ १२॥

जानुगत नक्षत्रोंमेंसे किसी नक्षत्रमें यदि जन्म होवे तौ वह पुरुष अनेक देशोंमें विचरनेवाला, हरएक कार्यमें उत्साह रखने वाला, बड़ा चञ्चल दुबले अंगवाला, बड़ा धूर्त और मिथ्या भाषण करने वाला होता है ॥ ११ ॥ पादगत नक्षत्रोंमेंसे किसी नक्षत्रमें जिसका जन्महुआ होवे वह पुरुष खेती करने में निरत, थोड़े से धर्म का जाननेवाला, शत्रु रहित, सेवा कर्म करनेवाला होता है ॥ १२ ॥ इतिफलम् ॥

अथावयव स्वरूपम् ।

ह्रस्वामीनवृषाजघटामिथुनधनुः कर्किमृगमुखाश्च समाः ॥
वृश्चिककन्यामृगपतिवणिजा दीर्घाः समाख्याताः॥ १ ॥
एभिलग्नादिगण्यैः शीर्षप्रभृतिनृशरीराणि ॥
सदृशानि विजायन्ते स्थिनगगनचरैश्चैव तुल्यानि ॥ २ ॥

मीन, वृष, मेष, और कुम्भ इन लग्नोंके रूप ह्रस्व (छोटे) होते हैं और मिथुन धन, कर्क और मकर इन लग्नोंके रूप सम (न अति छोटे न बड़े) होते हैं और वृश्चिक, कन्या, सिंह और तुला इन लग्नोंके रूप दीर्घ (लम्बे) होते हैं ज्योतिर्विद् मनुष्यों ने ऐसा कहा है ॥१॥ इन लग्नादिकों से गणना योग्य शिर आदि मनुष्यों के शरीर उन लग्नों के समान और उन लग्नोंमें स्थित ग्रहोंके समान होतेहैं॥२॥ लग्न से काल पुरुष के आकार ये चक्र देखना चाहिये ॥ इति जा० भ० मार्जन्यां टीकायां वनमालिचतुर्वेदकृतायां पंचमोऽध्यायः

अथद्वादशभावानांफलानि ।

इदंलग्नतः सकाशात्कालपुरुषाकारचक्रं द्रष्टव्यम् ॥
भिन्नं द्वादशधाविधायविलसच्चक्रं च तत्रन्यसे ॥
लग्नाद्वादशराशयोऽतिविशदावामांगमार्गक्रमात ॥

उत्तमोत्तम शय्याशनोंका भोगनेवाला और बड़ा वक्ता निरन्तर प्रसन्न रहनेवाला और सब समय हंसमुख होता है ॥ ४ ॥

वृषांसको वंशविभूषणश्च महोत्सवार्थप्रथितः प्रतापी ॥
नरोतिशूरोऽतितरामुदारो दिवाकरोड्डास्थितमंसके चेत ॥५॥
त्यक्तः स्वदेशः पुरुषो विशेषाद्गर्वोद्धतः शौर्ययुतो नितान्तम् ॥
विदेशवासाप्तमहत्प्रतिष्ठोमार्त्तण्डभं बाहुगतं प्रसूतौ ॥ ६ ॥

जिसका कंधगत नक्षत्रमें जन्म होताहै वह पुरुष बृषके समान उच्च कंधावाला अपने कुलका भूषण, महान् उत्सवके अर्थ प्रवृत्त रहनेवाला, बड़ा प्रतापी, बड़ा शूरवीर और बड़ा उदार होताहै ॥५॥ जिसके जन्म समयमें बाहुगत नक्षत्रोंमेंसे कोई नक्षत्र होता है वह पुरुष विशेषकर प्रदेशका निवासी बड़ा गर्वीला, शूरवीरता युक्त और निरन्तर परदेशके निवाससे प्राप्त महत्प्रतिष्ठावाला होता है ॥ ६ ॥

वदान्यता सद्गुणवर्जितश्च पण्यादिरत्नादिपरीक्षकश्च ॥
सत्यानृताभ्यां सहितो हि मर्त्यो दिवामणेर्भं यदि पाणिसंस्थम् ॥७॥
भूपालतुल्यः स्वकुले सुशीलो बालो विशालोत्तमकीर्तिशाली ॥
शास्त्रे प्रवीणः परिसूतिकाले वक्षःस्थले चेन्नलिनीशभं स्यात् ॥८॥

और हस्तगत नक्षत्रमेंसेयदिकिसी नक्षत्रमें जिसका जन्म होताहै वह पुरुष सत्य बोलनेसे और अन्य सद्गुणोंसे रहित, बेचनेके योग वस्तुओंका और अनेक रत्नादिकोंकी परीक्षा करनेवाला और व्यापारमें कुशल होताहै ॥७॥ जो वृक्षस्थल स्थित नक्षत्रोंमेंसे यदि किसी नक्षत्रमें जिसका जन्म हुआ होवे तो वह राजाके समान बड़ा सुशील, बालकपनसे ही अपने कुलमें उत्तम कीर्तिसे सुशोभित और शास्त्रविद्या में बड़ा कुशल होताहै ॥ ८ ॥

क्षमासमेतो रणकर्मभीरुः कलाकलापाकलनैकशीलः ॥
धर्मप्रवृत्तिः सुतरामुदारो नाभीसरोजेम्बुजबन्धुताराः ॥ ९ ॥
कन्दर्पधुर्योजितसाधुकर्मा सङ्गीतनृत्याभिरुचिः कलाज्ञः ॥
चेज्जन्मकाले नलिनीशभं स्याद्गुह्यस्थले सोतुलकीर्तियुक्तः ॥१०॥

वा।नाभिगतनक्षत्रोंमेंसे किसी नक्षत्रमें यदि जन्म हुआ होवे तो वह पुरुष बड़ा क्षमा लग्नड़ाईसे डरपोक, कला समूहोंका जाननेवाला, धर्ममें प्रवृत्तिवाला और अत्यन्त

उदार होता है ॥ ९ ॥ गुह्येंद्रियगत नक्षत्र में जिसका जन्म होताहै वह पुरुष काम देवसे भी सुन्दर,सत्कर्म करनेवालोंमें उत्तम मुख्य गाने में और नृत्यमें रुचिवाला, सब कलाओंका जानने वाला और अतुल कीर्तियुक्त होता है ॥ १० ॥

नाना देशानेकधासंप्रचारःकार्योत्साहश्चञ्चलक्षामगात्रः ॥
धूर्तो मर्त्यःमत्यहीनश्च नूनं जानुस्थाने भानुभं जन्मनि स्यात ॥ ११
कृपिक्रियायां निरतोल्पधर्मः शत्रूज्झितः सेवनकर्मकर्ता ॥
तारा यदि स्यादरविन्दबन्धोः पादारविन्दे च नरस्य सूतौ ॥ १२ ॥

जानुगत नक्षत्रोंमेंसे किसी नक्षत्रमें यदि जन्म होवे तो वह पुरुष अनेक देशोंमें विचरनेवाला, हरएक कार्यमें उत्साह रखने वाला, वड़ा चञ्चल दुवले अंगवाला, वड़ा धूर्त और मिथ्या भापण करने वाला होता है ॥ ११ ॥ पादगत नक्षत्रोंमेंसे किसी नक्षत्रमें जिसका जन्महुआ होवे वह पुरुष खेती करने में निरत, थोड़े से धर्म का जाननेवाला, शत्रु रहित, सेवा कर्म करनेवाला होता है ॥ १२ ॥ इतिफलम् ॥

अथावयव स्वरुपम् ।

ह्स्वामीनवृपाजघटामिथुनधनुः कर्किमृगमुखाश्च समाः ॥
वृश्चिककन्यामृगपतिवणिजा दीर्घाः समाख्याताः ॥ १ ॥
एभिलग्नादिगण्यैः शीर्पप्रभृतिनृशरीराणि ॥
सदृशानि विजायन्ते स्थितगगनचरैश्चैव तुल्यानि ॥ २ ॥

मीन, वृप, मेप, और कुम्भ इन लग्नोंके रूप ह्स्व (छोटे) होते हैं और मिथुन धन, कर्क और मकर इन लग्नोंके रूप सम (न अति छोटे न बड़े) होते हैं और वृश्चिक, कन्या, सिंह और तुला इन लग्नोंके रूप दीर्घ (लम्बे) होते हैं ज्योतिर्विद मनुष्यों ने ऐसा कहा हैं ॥१॥ इन लग्नादिकों से गणना योग्य शिर आदि मनुष्यों के शरीर उन लग्नों के समान और उन लग्नोंमें स्थित ग्रहोंके समान होतेहैं ॥२॥ लग्न से काल पुरुष के आकार ये चक्र देखना चाहिये ॥ इति जा० भ० मार्जन्यां टीकायां वनमालिचतुर्वेदकृतायां पंचमोऽध्यायः

अथद्वादशभावानांफलानि ।

इदंलग्नतः सकाशात्कालपुरुपाकारचक्रं द्रष्टव्यम् ॥
भिन्नं द्वादशधाविधायविलसच्चक्रं च तत्रन्यसे ॥
लग्नाद्वादशराशयोऽतिविशदावामांगमार्गक्रमात ॥

अङ्क्यास्तत्रनभश्चराः स्फुटतराः राशौ च यत्रस्थिता ॥
स्तेभ्यः साधुफलं त्वसाधुसुधिया वाच्यं हि होरागमात ॥ १ ॥
रूपं तथा वर्णविनिर्णयश्च चिह्नानि जातिर्वयसः प्रमाणम् ॥
सुखानि दुःखान्यपि साहसं च लग्ने विलोक्यं खलुसर्वमेतत॥२॥

उस चक्रको बारह विभाग कर फिर उसमें लग्नसे लेकर बारहों राशियोंको वामांङ्कक्रमसे स्थापन करै उनमें जो जो ग्रह गोचरमें जिस जिस राशिका होवे उन ग्रहोंको उसी राशीके कोष्ठ में धरकर उन ग्रहोंके अनुसार भला या बुरा जो कुछ फल होता दीखे वह फल ज्योतिष् शास्त्र के अनुसार कहै ॥ १ ॥ रूपरंगका निर्णय, शरीरके चिन्ह, जाति और आयु प्रमाण, सुख दुःख और साहस ये सब वस्तु लग्न में देखना चाहिये ॥ २ ॥

विलोकिते सर्वखगैर्विलग्ने लीलाविलासैः सहितो बलीयान् ॥
कुले नृपालो विपुलायुरेव भयेन मुक्तोऽरिकुलस्य हन्ता ॥ ३ ॥
सौम्यास्त्रयो लग्नगतायदि स्युः कुर्वन्ति जातं नृपतिं विनीतम् ॥
पापा स्त्रयोदुःखदरिद्रशोकैर्युतं नितान्तं बहु भक्षकं च ॥ ४ ॥

जो उस लग्नको सब ग्रह अपनी सप्तमादि दृष्टि से देखते होवें तब वह पुरुष लीलाविलासोंसे युत बड़ा बलवान् मनुष्योंका पालन करने वाला, दीर्घायु, निर्भय और शत्रु कुलका मारनेवाला होताहै ॥३॥ और यदि तीन सौम्य (शुभग्रह) लग्न गत होवें तब वह पुरुष राज्ययोगवाला होताहै और यदि लग्न में तीन पाप ग्रह होवें तब वह मनुष्य निरन्तर दरिद्रपीड़ा से युक्त और बहु भोजनी होता है ॥ ४ ॥

लग्नाद्द्यूनषडष्टकेऽपि च शुभा पापैर्नयुक्ते क्षिता ।
मन्त्री दण्डपतिः क्षितेर धिपतिः स्त्रीणां बहूनां पतिः ॥
दीर्घायुर्गदवर्जितो गतभयः सौन्दर्यसख्यान्वितः ।
सच्छीलो यवनश्वरैर्निगदितो मर्त्यः प्रसन्न सदा ॥ ५ ॥
अथार्कादिग्रहाणां हि गुणवर्णविनिर्णयः ॥
आकारोऽपि शरीरस्य प्रोच्यते मुनिसंमतः ॥ ६ ॥

लग्न से सप्तम षष्ठ और अष्टम घरमें शुभ ग्रह होवे और वे शुभ ग्रह किसी पाप ग्रह से युक्तवा द्रष्ट न होवै तब वह पुरुष राजमंत्री, दंडपति, पृथिवीपति, अनेक स्त्रियोंका पति, दीर्घायु, निरोग, निर्भय, सुन्दरतायुक्त, मित्रभावयुक्त और अच्छा जिसका स्वभाव और सदा प्रसन्न रहनेवाला होताहै ऐसा यवनेश्वरोंने यवनजातक में फल कहा है ॥५॥ इसके अनन्तर सूर्यादिग्रहोंके गुणका निर्णय और वर्णका निर्णय और शरीरके आकार का मुनिसम्मत जो निर्णय है उसे कहते हैं ॥ ६ ॥

सूर्यादिग्रहाणांरूपगुणादिनिर्णयः ।

शूरो गंभीरश्चतुरः सुरूपः श्यामारुणश्चाल्पककुन्तलश्च ॥
सुवृत्तगात्रो मधुपिङ्गनेत्रो मित्रोहि पित्तास्थ्यधिकोन तुंगः॥७॥
सद्वाग्विलासोऽमलधीः सुकायो रक्ताधिकः कुञ्चितकृष्णकेशः ॥
कफाऽनिलात्माम्बुजपत्रनेत्रो नक्षत्रनाथः सुभगोऽतिगौरः ॥८॥

शूरवीर गंभीर चतुर सुरूप कुछ श्याम कुछ अरुण छोटीअलकवाला गोल जिसका अंग मदयुक्त, पीले नेत्रवाला, पित्त गुण और अस्थि (हाड) जिसके अधिक और अत्यन्त उंचा नहीं ऐसा सूर्य देवताका गुण रूप होता है॥७॥ उत्तम जिसका वाग्विलास, निर्मल जिसकी बुद्धि, सुन्दर जिसका शरीर, रक्त (रुधिरधातु) जिसके अधिक काले घुंघराले जिसके केश कफ वात प्रकृति कमल दलसे जिसके नेत्र मनोहर और रंग से गौर इतने गुणयुक्त चन्द्रमा है ॥ ८ ॥

मज्जासारोरक्तगौरोत्युदारो हिंस्रः शूरः पैत्तिकस्तामसश्च ॥
चण्डः पिंगाक्षोयुवा खर्वगर्वः खर्वश्चोर्वीसूनुरग्निप्रभः स्यात् ॥९॥
श्यामः शिरालश्च कलाविधिज्ञः कुतूहली कोमलवाक् त्रिदोषी ॥
रजोऽधिको मध्यमरूपधृक् स्यादाताम्रनेत्रो द्विजराज पुत्रः॥ १०॥

अब मंगलका रूपादि कहते हैं मज्जा धातुका जिसमें विशेष कुछ लाल कुछ गौर जिसका रंग अत्यन्त उदार हिंसक शूरवीर पित्तप्रकृति वाला तमोगण प्रधान बड़ा प्रचंड पीले जिसके नेत्र युवा जिसकी अवस्था गर्वरहित और अग्निके समान छोटी देहीवाला मंगलका स्वरूपहै॥९ ॥श्यामरूप अनेक नेत्रोंसे व्याप्त जिसका अंग अनेक कलाओंका जानने वाला, खेलने की इच्छा करने वाला, कोमल वाणीका कहनेवाला,त्रिदोष प्रधानअधिक रजोगुणसे युक्त,न बड़े न छोटे अंगोंवाला किंचित् ताम्र नेत्र ये बुधका रूप है॥ १० ॥

ह्रस्वाकारश्चारुचामीकराभः सम्यक्सारः सुस्वरोदारबुद्धिः ॥
दक्षः पिङ्गाक्षः कफी चातिमांसःप्राज्ञैःसुज्ञैः कीर्तितो जीवसंज्ञः॥११
सजलजलदनीलः श्लेष्मलश्चानिलात्मा ।
कुवलयदलनेत्रो वक्रनीलालकश्च ॥
सुसरलभुजशाली राजसश्चातिकामी ।
मदयुतगजगामी भार्गवः शुक्रसारः ॥ १२ ॥

छोटा जिसका आकार, उत्तम सुवर्णसमान जिसका रंग, दृढांग, सुन्दर जिसका स्वर, उदार जिसकी बुद्धि, बड़ा चतुर, पीले जिसके नेत्र, कफ प्रकृति अति मांसल (पुष्ट) इतने गुणयुक्त बृहस्पतिको पंडितोंने कहा है ॥ ११ ॥ काली घटा के समान नीलांग, कफप्रकृति, वातगुण प्रधान, कमलदल नेत्र, नील अलकावली युक्त, सुन्दर सरल भुजायुक्त, रजोगुण प्रधान, अत्यन्त कामी, मत्त गजकी सी जिसकी चाल और वीर्य बहुल शुक्रका रूप है ॥ १२ ॥

श्यामलोतिमालिनश्च शिरालः सालसश्च जटिलः कृशदीर्घः ॥
स्थूलदन्तनखपिंगटनेत्रो युक्शानिश्च खलतानिलकोपैः ॥ १३ ॥
लग्नस्य नन्दांशपतेर्हिमूर्त्या मूर्तिः समानाबलशालिनो वा ॥
स्यादिन्दुनन्दांशपतेस्तुवर्णः परं विचार्याः कुलजातिदेशाः॥१४॥

अति श्यामवर्ण, अति मलिन, नसोंके जालोंसे व्याप्त, आलस्ययुक्त, जटा जिसके विद्यमान, दुर्बल, लंबी, स्थूल जिसके नख दंत, पीत जिसके नेत्र और खलता वायु कोपसेयुक्त शनिका रूप होता है ॥१३॥लग्न का जो नवांश पति है वह यदि बलवान होवे तो उसीकी मूर्तिके समान उस पुरुषकी मूर्ति कहनी चाहिये और चन्द्रमा के नवांशपतिके समान पुरुषका वर्ण कुलजाति और देश कहने चाहिये ॥ १४॥

सत्त्वं भवेयुः शशिसूर्यजीवास्तमो यमारौ चरजोज्ञशुक्रौ॥
त्रिंशल्लवे यस्य गतो दिनेशो वान्यो गुणस्तस्य खगस्य नूनम् १५
शिरोक्षिणी कर्णनसाकपोलौ हनुर्मुखं च प्रथमेद्रिकाणे ॥
कण्ठांसदोर्दण्डककुक्षिवक्षः क्रोडं च नाभिस्त्रिलवेद्वितीये ॥ १६॥

चन्द्रमा सूर्य और बृहस्पति ये सत्वगुणरूप होते हैं और शनि मंगल ये ग्रह तमोगुण रूप होते हैं और बुध शुक्र रजोगुण रूप होते हैं, जिसके त्रिशांशमें सूर्य प्राप्त होवे निश्चयसे उसी ग्रहका गुण कहना चाहिये, राहुकेतुको उपग्रहत्वहै इससे इनके गुण नहीं कहे हैं ॥१५॥मस्तक नेत्र कान नासिका कपोल ठोड़ी और मुख इन अंगों में लग्नके प्रथम द्रेष्काणका फल होताहै और कंठ कंधा भुजा कूख गोदी छाती और नाभि इन अंगोंमें लग्न के दूसरे त्रिलव (अंश) का फल होता है ॥ १६ ॥

वस्तिस्ततोलिंगगुदे तथाण्डावूरू च जानू चरणौ तृतीये ॥
क्रमेण लग्नात्परपूर्वपट्के वामं तथा दक्षिणमङ्गमत्र ॥ १७ ॥
मत्स्यं तिलं लक्ष्मबलानुसारं कुर्वन्ति सौम्याव्राणमत्र पापाः ।
स्वांशस्वभागस्थिरगाश्च लक्ष्मयुक्तेक्षिताः सौम्यनभश्चरेन्द्रः ॥१८॥

और वास्त, (नले) लिंग गुदा अंडकोश घोंटू पिंडरी और चरण इन अंगों में लग्नके तृतीय द्रेष्काणका फल होता है वह फल क्रमसे लग्नसे पर पट्कमें वर्तमान ग्रहका फल वामांगमें और पूर्वपट्कमें वर्तमान ग्रहका फल दक्षिण अंगमें होता है ॥१७॥ वह फल क्या होता है सो कहते हैं, यदि अपने नवांशमें या अपने भाग में सौम्य ग्रह होवे और शुभ ग्रहोंसे युक्त अथवा दृष्ट होवे तो वे अपने बलके अनुसार मत्स्यका अथवा तिलका चिन्ह शरीर में करते हैं और यदि पापग्रह होवें तो व्रण [घाव] करते हैं ॥ १८ ॥

रवेर्व्रणः काष्ठचतुष्पदोत्थः शृंगयाम्बुचारिप्रभवः शशाङ्कात् ॥
कुजाद्विषाग्न्यस्त्रकृतश्च चान्द्रे भौमःशनेश्चापि मरुद्दृषद्भ्याम्॥१९
कुर्याद्व्रणं क्रूरखगो रिपुस्थो युक्तः शुभैर्लक्ष्म तिलं च दृष्टः ॥
गृहत्रयं यत्र बुधान्वितं स्यात्तत्रव्रणोऽङ्गे खलु राशि तुल्यः ॥२०॥

सूर्यके होने से किसी काष्ठकी चोट लगनेका व्रण होता है अथवा किसी चौपाये पशुके निमित्त चोट लगनेका व्रण (घाव) होताहै, उक्त लक्षण संपन्न यदि चन्द्रमा वर्तमान होवे तब सींग की चोटका अथवा किसी जलचर जीवके निमित्तसे व्रण होता है यदि मंगल होवे तब विष अग्नि और अस्त्रके निमित्त से व्रण होताहै और बुध मंगल

और शनि इनमेंसे कोई ग्रह होवे तब वायु या पत्थरके निमित्त व्रण होता है ॥१९॥ यदि क्रूर ग्रह शुभ युक्त होवे और लग्न से छठे नवांशमें बैठा होवे शुभ ग्रह से दृष्ट होवे तब व्रणका चिन्ह या तिलका चिन्ह करताहै और तीनग्रह बुध युक्त जिस घर में बैठे होवें तब उसी अंगमें राशिके तुल्य व्रण होता है यदि वृषराशिमें बैठे होवे तब वृषके निमित्त से व्रण होगा इत्यादि ॥ २० ॥

मेषे शशांकः कलशे शनिश्चेद्भानुर्धनुस्थश्च भृगुर्मृगस्थः ॥
तातस्य वित्तं न कदापि भुङ्क्ते स्वबाहुवीर्येण नरो वरेण्यः॥२१॥
चतुर्षु केन्द्रेषु भवन्ति पापा वित्तस्थिताश्चापि च पापखेटाः ॥
नरोदरिद्रोतितरां निरुक्तो भयंकरश्चात्मकुलोद्भवानाम् ॥ २२ ॥

मेष राशि में चन्द्रमा होवे कुम्भमें शनि होवे धनमें स्थित सूर्य होवे और मकर में स्थित शुक्र होवे जिस मनुष्य के यह योग होता है वह मनुष्य अपने पिताके कमाये द्रव्यको कभी नहीं भोगता है किंतु अपने भुजवलके कमाये धनको भोगताहै॥२१॥ जिस मनुष्यके चारों केंद्रोंमें १।४।७।१० पाप ग्रह होवें और धनभवन में भी स्थित पापग्रह होवें तब वह मनुष्य अति दरिद्री और अपने कुलके मनुष्योंमें अति भयङ्कर होता है ॥ २२ ॥

सुतस्थितो वा यदि मूर्तिवर्ती बृहस्पती राज्यगतः शशांकः ॥
नरस्तपस्वी विजितेन्द्रियश्च स्याद्राजसो बुद्धिविराजमानः ॥२३॥
कन्यायां च तुलाधरे सुरगुरुर्मेषे बृषे वा भृगुः
सौम्यो वृश्चिकराशिगः शुभखगैर्दृष्टः कुलश्रेष्ठताम्
नूनं याति नरो विचारचतुरोप्यौदार्यजातादरो
नित्यानन्दभरो गुणैर्वरतरो निष्ठापरो वित्तवान् ॥ २४ ॥

जिस मनुष्यके लग्नसे, पंचम अथवा लग्न में बृहस्पति होवे और राज्यस्थान (१०) में चन्द्रमा होवे वह मनुष्य बड़ा तपस्वी, जितेंद्रिय, बड़ा बुद्धिमान और रजोगुणी होता है ॥ २३ ॥ जिस जन्म पत्र में कन्यामें या तुलामें बृहस्पति और मेष में या वृषमें शुक्र, वृश्चिक राशिमें बुध होवे और शुभ ग्रहोंसे दृष्ट होवें तब वह पुरुष कुलमें श्रेष्ठ, विचारमें चतुर, उदारताके निमित्त आदर युक्त, नित्यानन्दयुक्त, बड़ा गुणवान् और धनवान् होता है यह एक योग है ॥ २४ ॥

षष्ठे ससौरौ भवतो बुधारौ नरो भवेच्चौर्यपरो नितान्तम् ।
स्वकर्मसामर्थ्यविधिविशेषात् पराङ्घ्रिपाणीन्कुगुणी छिनत्ति ॥२५॥

प्रसूतिकाले किल यस्य जन्तोः कर्केऽर्कजश्चेन्मकरे महीजः ॥
चौर्यप्रसंगोद्भवचण्डदण्डाच्छाखादिखण्डानि भवन्ति नूनम्॥२६॥

शनि सहित बुध मङ्गल यदि छठे घरमें स्थित होवे तब वह मनुष्य निरन्तर चोरी करने में तत्पर होताहै और कुत्सितगुणवान् वह मनुष्य अपने कर्म सामर्थ्य-विधिके विशेषसे दूसरेके हाथ पावोंका छेदन करता है ॥ २५ ॥ जिस मनुष्य के जन्म समयमें कर्क में शनि, मकरमें मङ्गल स्थित होवे वह पुरुष चोरोंके निमित्त से हुए प्रचण्ड दण्डसे निश्चय युक्त होता है ॥ २६ ॥

कुम्भे च मीने मिथुनाभिधाने शरासने स्युर्यदि पापखेटाः ॥
कुचेष्टितः स्यात्पुरुषो नितान्तं वज्रेण नूनं निधनं हि तस्य ।२७॥
यस्य प्रसूतौ खलु नैधनस्थः सौम्यग्रहः सौम्यनिरीक्षितश्च ॥
तीर्थान्यनेकानि भवन्ति तस्य नरस्य सम्यग् मतिसंयुतस्य॥२८॥

जिसके जन्म पत्रमें कुम्भ मीन मिथुन और धन इन राशियोंमें पापग्रह होवे वह पुरुष निरन्तर खोटे आचरण युक्त होताहै और वज्रके निमित्त उसका मरण होताहै ॥ २७ ॥ जिस मनुष्यके जन्म लग्नसे अष्टम स्थानमें शुभ ग्रहसे दृष्ट शुभ ग्रह स्थित होवे तो उत्तम बुद्धिसे युक्त, वह मनुष्य अनेक तीर्थोंमें विचरताहै ॥२८॥

बुधत्रिभागेन युते विलग्ने केन्द्रस्थचन्द्रेण निरीक्षितश्च ॥
शिष्टान्वये यद्यपि जातजन्मा स्यान्नीचकर्मा मनुजः प्रकामम् ।
भानौ द्वितीये भवने शनिश्चेन्निशीथिनीशो गगनाश्रितश्च ॥
भूनन्दने वै मदने तदानीं स्यान्मानवो हीनकलेवरः सः ॥ ३०॥

यदि लग्न बुधके नवांश करके युक्त होवे और केंद्रस्थ चन्द्रमा करके दृष्ट होवे तब वह पुरुष उत्तम कुल में उत्पन्न हुआ होवे तो भी यथेच्छ नीच कर्मोंका करने वाला होताहै ॥२८ ॥यदि द्वितीय स्थानमें सूर्य या शनि होय और दशम स्थानमें चन्द्रमा होवे और सप्तम स्थानमें मङ्गल होवे तब वह मनुष्य हीन कलेवर होताहै।३०।

पापान्तराले च भवेत्कलावांस्तथार्कसूनुर्मदनालयस्थः ॥
कलेवरं स्याद्विकलं च तस्य श्वासक्षयप्लीहकगुल्मरोगैः॥३१॥

शशी दिनेशस्य यदा नवांशे भवेद्दिनेशः शशिनो नवांशे ॥
एकत्र संस्थौ यदि तौ भवेतां लक्ष्मीविहीनो मनुजः सनूनम् ॥३२

यदि चन्द्रमा पापग्रहोंके मध्यमेंहोवे और सप्तम स्थानमें शनि होवे उस मनुष्यका शरीर श्वास क्षय पथरी और गुल्म इन रोगों से विकल होता है ॥ ३१ ॥ यदि चन्द्रमा सूर्यके नवांशका और सूर्य चन्द्रमाके नवांशका होवे फिर वे दोनों एक स्थानमें स्थित होवें वह मनुष्य निश्चय दरिद्री होता है ॥ ३२ ॥

व्ययेरिभावे निधने धने च निशाकरारार्कशनैश्चराः स्युः ॥
बलान्वितास्तेत्वनिलाधिकत्वात्तेजोविहीने नयने प्रकुर्युः ॥३३॥
पापास्त्रिपुत्रायगता भवन्ति विलोकिता नैव शुभैर्नभोगैः ॥
कुर्वन्ति ते कर्णविनाशनं च जामित्रयाताः खलु कर्मघातम् ॥३४॥

बारहवें घरमें छठे घरमें आठवें घरमें और दूसरे घरमें चन्द्रमा मंगल सूर्य और शनैश्चर होवें और वे बलवान् होवें तब उस मनुष्यके नेत्रोंको तेज हीन करतेहैं॥३३॥ यदि पाप ग्रह तृतीय पंचम एकादश स्थान में स्थित होवें और शुभग्रह उन्हें देखते न होवें तब वे उस मनुष्यको कर्णहीन (बहरा) करते हैं और यदि वे सप्तम स्थानमें स्थित होवें तब निश्चय कर्मघात करते हैं ॥ ३४ ॥

धनव्ययस्थानगतश्च शुक्रोवक्रोऽथवा कर्णरुजं करोति ॥
नक्षत्रनाथो यदि तत्र संस्थो दृग्दोषकारी कथितो मुनीन्द्रैः ॥३५॥
एते हि योगाः कथिता मुनीन्द्रैः सान्द्रं बलं यस्य नभश्चरस्य ॥
कल्प्यं फलं तस्य च पाककाले सुनिर्मला यस्य मतिस्तु तेन ॥३६

द्वितीय स्थान में अथवा व्यय (बारहवें) स्थान में वक्री शुक्र होवे तब वह कर्णों में रोग करता है और उक्त स्थान में स्थित चन्द्रमा होवे तो मुनियोंने नेत्रोंमें दोषकारी कहा है ॥ ३५ ॥ ये सब योग मुनियों ने कहे हैं । परन्तु अभिप्राय यह है कि जिस ग्रहका उत्कृष्ट बल होवे उसी ग्रह की दशा परिपाक मे फल होगा निर्मल बुद्धिवाले मनुष्यको इस तरह से कल्पना करनी चाहिये ॥ ३६ ॥

इतितनु भावः ॥

अथ धनभावफलम् ।

स्वर्णादिधातुक्रयविक्रयश्चरत्नादिकोशोऽपिच संग्रहश्च ॥
एतत्समस्तं परिचिन्तनीयं धनाभिधाने भवने सुधीभिः ॥१॥
भानुभूतनयभानुतनूजैश्चेद्धनस्य भवनं युतदृष्टम् ॥
जायते हि मनुजो धनहीनः किं पुनः कृशशशीक्षितयुक्तम् ॥२॥

सुवर्ण आदि धातुओं के वेचने खरीदने का और रत्नादिकों के संग्रहादि सब बातों का विचार बुद्धिमानों को धनभाव से विचार करना चाहिये ॥१॥ सूर्य मंगल और शनि इन ग्रहों से धन स्थान युक्त होय अथवा ये ग्रह धनभाव को देखते होवें तव वह पुरुष धनहीन (दरिद्री) होताहै यदि वह धनभाव क्षीण चन्द्र से युत अथवा दृष्ट होवे फिर वह पुरुष दरिद्री होवे इसमें तो कहना ही क्या है ॥२॥

धनालयस्थौ किलमङ्गलेन्दू दृग्दोषदौ मन्दविलोकनेन ॥
शनिर्धनस्थानगतः करोति धनाभिवृद्धिं च बुधेन दृष्टः ॥ ३ ॥
धने दिनेशोऽतिधनानि नूनं करोति मन्देन न चेक्षितश्च ॥
शुभाभिधानाधनभावसंस्था नाना धनाभ्यागमनानि कुर्युः॥४॥

यदि द्वितीय स्थान स्थित मंगल और चन्द्रमा दोनों होवें और शनि उन्हें देखता होवे तो नेत्रों में दोष करने वाले होते हैं और यदि शनि द्वितीय स्थान में स्थित होवे बुध उसे देखता होवे तौ धन की अतिशय करके वृद्धि करता है ॥३॥ यदि उस धनस्थान में सूर्य स्थित होवे परन्तु शनि उसे न देखता होवे तौ निश्चय ही अति धनों को करता है इसी प्रकार यदि शुभ ग्रह धनभाव में स्थित होवै तो अनेक तरह के धनों के आगमों को करते हैं ॥४॥

गीर्वाणवन्द्यो द्रविणोपयातः सौम्येक्षितश्चेद्द्रविणं करोति ॥
सोमेन दृष्टो धनभावसंस्थः सोमस्य सूनुर्धनहानिदः स्यात् ॥५॥
धनास्थितो ज्ञेन विलोकितश्च कृशः शशांकोऽपि धनादिकानाम्॥
पूर्वार्जितानां कुरुते विनाशं नवीनवित्तप्रति बन्धनं च ॥ ६ ॥

इसी तरह यदि बृहस्पति धन स्थानमें विराजे होवें और शुभ ग्रह उन्हें देखते होवे तौ भी उस पुरुषको धनवान करता है और यदि चन्द्रमा जिसे देखता होवै ऐसा बुध धन स्थान में बैठा होवे तौ धनका नाश कर देता है॥५॥ यदि बुध जिसे देखता होवै ऐसा चन्द्रमा क्षोण होवे और धनस्थानमें स्थित होवे तौ पूर्व संचित धनोंका नाश करता है और नवीन धनोंका आमदको रोक देता है ॥ ६ ॥

वित्तस्थितोदैत्यगुरुः करोति वित्तागमं सोमसुतेन दृष्टः ॥
सएव सौम्यग्रहयुक्तदृष्टः प्रकृष्टवित्ताप्तिकरो नराणाम् ॥ ७ ॥

और बुध जिसे देखता होवे ऐसा शुक्र यदि धन स्थानमें स्थित होवे तौ धनों की प्राप्ति करता है यदि वह ही शुक्र सौम्य ग्रहोंसे युक्त होवे अथवा शुभ ग्रह देखते होवें धनस्थानमें स्थित होवे तौ अत्यन्त धनकी प्राप्ति कराने वाला होताहै ॥ ॥ ७ ॥ इति धनभावफलम् ॥

अथ तृतीयभावफलम् ।

सहोदराणामथ किंकराणां पराक्रमाणामुपजीविनां च ॥
विचारणा जातकशास्त्रविद्भिस्तृतीयभावे नियमेन कार्या ॥ १ ॥
पापालयं चेत्सहजं समस्तैः पापैः समेतं प्रविलोकितं च ॥
भवेदभावः सहजोपलब्धेस्तद्वैपरीत्येन तदाप्तिरेव ॥ २ ॥

भाई चाकर पराक्रम और उपजोवि इन सबोंका विचार तीसरे घरसे करना चाहिये. जातक शास्त्रके जाननेवालोंने ऐसा कहा है॥१॥ यदि तृतीय भवन समग्र पाप ग्रहोंसे दृष्ट अथवा युक्त होवे तौ सहज से मिली वस्तुओंका नाश होता है और शुभ ग्रहोंसे दृष्ट अथवा युक्त होवे तौ उक्त वस्तुओंका नाश होता है ॥ २ ॥

क्षेपकः" अग्रेजातं रविर्हन्ति पृष्ठेजातं शनैश्चरः ॥
अग्रजं पृष्ठजं हन्ति सहजस्थोधरासुतः ,, ॥ ३ ॥
नवांशका ये सहजालयस्थाः कलानिधिक्षोणिसुतप्रदिष्टाः ॥
तावन्मिताः स्युः सहजाःभगिन्यस्त्वन्योक्षिता वै परिकल्पनीयाः ४

क्षेपक "जो सूर्य तीसरे घरमें स्थिति होवे तौ वड़े भाई वहिनोंका नाश करता है और यदि शनि तीसरे घरमें वैठा होवे तौ छोटे भाई वहिनोंको मारता है और यदि मंगल तीसरे घर में वैठा होवे तौ आगे पीछे हुए सव वहिन भाईको मारता है॥३॥

जो नवांशक तीसरे घरमें स्थित होवे और चन्द्रमा मङ्गलसे दृष्ट होवें उस पुरुष के उतनीही भगिनी होती हैं और यदि उक्त ग्रहों से जो अन्य ग्रहहैं उनसे दृष्ट होवें तौ यथा योग्य कल्पना करनी चाहिये ॥ ४ ॥

कुजेन दृष्टे रविजेऽनुजस्थे नश्यन्ति जाताः सहजास्तु तस्य ॥
दृष्टे च तस्मिन्गुरुभार्गवाभ्यां शश्वच्छुभं स्यादनुजेषु नूनम् ॥५॥
सौम्येन भूमीतनयेन दृष्टः करोति नाशं रविजोनुजानाम् ॥
शशांकवर्गे सहजे कुजेन दृष्टे सरोगाः सहजा भवेयुः ॥ ६ ॥

मङ्गल जिसे देखता होवे ऐसा शनि यदि तृतीय स्थान में स्थित होवे तव जितने उसके सहोदर वहिन भाई हैं वे सव नाश होते हैं और वोही शनि बृहस्पति शुक्रसे दृष्ट हुआ तीसरे भवन में स्थित होवे तव उसके भाई वहिनों का निश्चय शुभ होता है ॥ ५ ॥ और यदि बुध मङ्गल जिसको देखते होवे ऐसा शनि तीसरे घरमें स्थित होवे तौ उससे छोटे वहिन भाईयोंका नाश करता है और चन्द्रमाका वर्ग मङ्गल से दृष्टि तीसरे घरमें वर्तमान होवे तव उसके सव वहिन भाई रोगी होवें॥६॥

दिवामणौ पुण्यगृहे स्वगेहे संदेहएवानुजजीवितस्य ॥
एकः कदाचिच्चिरजीवितश्च भ्राता भवेत् भूपतिना समेतः ॥७॥
चन्द्रमा यदि पापानां त्रितयेन प्रदृश्यते ॥
भ्रातृनाशो भवेत्तस्य यदि नो वीक्षितः शुभ ॥ ८ ॥

यदि सूर्य नवम भवन में स्वक्षेत्री का होवे तव उसके भाईयों के जीनेका संदेह कहना चाहिये यदि एक भाई चिरजीवी होवे तौ वह भाई राजाके साथ रहनेवाला होता है ॥ ७ ॥ यदि तीन पाप ग्रहों के साथ चन्द्रमा होवे और कोई शुभ ग्रह उसे देखता न होवे तौ उसके भाईयोंका नाश होता है ॥ ८ ॥ इति तृतीय भावफलम् ।

अथ चतुर्थभावफलम् ।

सुहृद्गृहग्रामचतुष्पदानां क्षेत्रोद्यमालोकनकं चतुर्थे ॥
दृष्टे शुभानां शुभयोगतो वा भवेत्प्रभूतिर्नियमेन तेषाम् ॥ १ ॥

लग्ने चैवयदा जीवो धने सौरिश्च संस्थितः ॥
सप्तमे भवने पापः परिवारक्षयंकरः ॥ २ ॥

सुहृद गृह ग्राम चतुष्पद क्षेत्र और उद्यम इन सबको चतुर्थस्थान से देखना चाहिये वह चतुर्थ घर शुभ ग्रहोंसे दृष्ट होवे अथवा शुभ योग होवे तौ निश्चय ही सुहृद और गृहादिकों की बढवार होती है ॥ १ ॥ लग्नस्थान में बृहस्पति द्वितीय स्थान में शनि और सप्तम घरमें पाप ग्रह होवे तब वह मनुष्य परिवार का क्षय करने वाला होता है ॥ २ ॥

पापैस्त्रिभिश्चन्द्रमसि प्रदृष्टे स्यान्माननाशः शुभदृष्टिहीने ॥
व्ययास्तलग्नेष्वशुभाः स्थिताश्चेत्कुर्वन्ति ते वै परिवारनाशनम् ॥३॥
शनिर्धने संजनने यदि स्याल्लग्ने विलग्नः सुरराजमन्त्री ॥
सिंहीसुतः सप्तमभावयातो जातस्य जन्तोर्जननी न जीवेत् ॥४॥

जो चन्द्रमा को तीन पाप ग्रह देखते होवें और कोई शुभ ग्रह देखता न होवे और बारहवें घरमें सातवें घरमें और लग्नमें पाप ग्रह होवे जिस मनुष्य के यहयोग होवे वह अपने परिवार का नाश करने वाला होता है ॥३॥ धनस्थान में शनि और लग्नमें बृहस्पति और सप्तम स्थान में राहु होवे इस योग में जिस मनुष्य का जन्म होवे उस मनुष्य की माता नहीं जीती है ॥४॥ इति चतुर्थभवनम् ।

अथ पंचमसुतभावविचारः ॥

बुद्धिप्रबन्धात्मजमन्त्रविद्या विनेयगर्भस्थितिनीतिसंस्थम् ॥
सुताभिधाने भवने नराणां होरागमज्ञैः परिचिन्तनीयम् ॥ १ ॥
लग्ने द्वितीये यदि वा तृतीये विलग्ननाथे प्रथमः सुतः स्यात् ॥
तुर्यस्थितोस्मिंश्च सुतो द्वितीयः पुत्रीसुतो वेति पुरः प्रकल्प्यम् ॥२॥

बुद्धि, प्रबन्ध पुत्र विनेय मंत्रविद्या गर्भ स्थिति नीतिसंग्रह इन सबोंका विचार पंचम घरसे चिंतवन करना चाहिये ॥१॥ यदि लग्नेश लग्न में या द्वितीय तृतीय स्थान में स्थित होवे तब उस पुरुष के प्रथम पुत्र होता है और यदि लग्नेश चतुर्थ घरमें स्थित होवे तौ दूसरी बार पुत्र होता है और प्रथम पुत्री या पुत्र होता है ऐसी कल्पना करना चाहिये ॥२॥

सुताभिधानं भवनं शुभानां योगेन दृष्ट्या सहितं विलोक्य ॥
सन्तानयोगं प्रवदेन्मनीषी विपर्ययत्वे हि विपर्ययः स्यात् ॥३॥

सन्तानभावो निजनाथदृष्टः संतानलब्धिं शुभदृष्टयुक्तः ॥
करोति पुंसामशुभैः प्रदृष्टः स्वस्वाम्यदृष्टो विपरीतमेव ॥ ४ ॥

बुद्धिमान जो मनुष्य है वह पञ्चम स्थानको शुभग्रहसे युक्त अथवा शुभग्रहोंकी दृष्टिसे युक्त देखके संतानयोगको कहै और यदि पञ्चम स्थानको पापग्रहोंसे युक्त और पापग्रहोंकी दृष्टि युत देखे तौ संततिसे रहित कहै ॥ ३ ॥ जो पंचम स्थान पंचमेशकी दृष्टि से युक्त होवे या शुभ ग्रहसे दृष्ट यां युक्त होवे तौ संतान का लाभ कहना चाहिये, और पंचम भवन यदि अशुभ ग्रह दृष्ट या अशुभ ग्रहयुक्त होवे और पंचमेशकी दृष्टिसे रहित होवे तव संततिका अभाव कहना चाहिये ॥ ४ ॥

लग्ने वित्ते तृतीये वा लग्नेशोऽपत्यमग्रिमम् ॥
तुर्ये जन्म द्वितीयस्य पुरः पुत्र्यादिजन्म च ॥ ५ ॥
द्विदेहसंस्था भृगुभौमचन्द्राः सन्तानमोदा जनयन्ति नूनम् ॥
एते पुनर्धान्विगता न कुर्युःपश्चात्तथादौ गदितं महद्भिः ॥ ६ ॥

लग्न में धनमें यो तृतीयमें लग्नेश स्थित होवे तव उत्तम पुत्र होताहै और यदि चतुर्थ स्थान में पंचमेश होवे तव प्रथम पुत्री और दूसरे पुत्र होताहै ॥ ५ ॥ शुक्र मङ्गल चन्द्रमासे यदि कोई धन स्थानमें वा लग्नमें होवे तव अवश्यही प्रथम पुत्र संतति होतीहै और उक्त ग्रहोंमेंसे कोई ग्रह लग्नमें होवे तव संततिका अभाव होता है ऐसा विद्वत्पुरुषोंने कहा है ॥ ६ ॥

सन्तानभावे गगनेचराणां यावन्मितानामिह दृष्टिरस्ति ॥
स्यात्सन्ततिस्तत्प्रमितानृसंज्ञैर्नराश्च कन्याः प्रमदाभिधानैः ॥७॥
सन्तानभावाङ्कसमानसंख्या स्यात्संततिर्वेति वदन्ति केचित् ॥
नीचोच्चमित्रादिगृहस्थितानां दृष्ट्या शुभं वा शुभमर्भकाणाम्॥८॥

और संतान भावपर जितने ग्रहोंकी दृष्टि होती है उतनी संतती होती हैं और जितने पुग्रहोंकी दृष्टि होवे उतने ही पुत्र होते हैं और जितने गिनती के स्त्री ग्रहोंकी पंचम स्थानपर दृष्टि होवे उतनी गिनतीकी पुत्री होती हैं ॥७॥ पंचम भावमें जिस गिनतीका अङ्क होवे उसी गिनतीकी संतति होतीहै कोई आचार्य ऐसा कहतेहैं और फिर हुई संतानों का शुभाशुभ नीच उच्चके ग्रहोंकी दृष्टि के अनुसार और मित्र, क्षेत्री स्वक्षेत्री, शत्रुक्षेत्री आदि ग्रहोंके वलावलका विचार और उन्होंकी दृष्टिके अनुसार फल कहना चाहिये ॥ ८ ॥

नवांशतुल्याप्रभवात्रसंख्या दृष्ट्या शुभानां द्विगुणावगम्या ॥
क्लिष्टा च पापग्रहदृष्टियोगा मिश्रा च मिश्रग्रहदृष्टितोत्र ॥ ९ ॥
सुताभिधाने भवने यदि स्यात्खलस्य राशिः खलखेटयुक्तः ॥
सौम्यग्रहालोकनवर्जितश्च सन्तानहीनो मनुजस्तदानीम् ॥ १० ॥

जितने ग्रहोंका नवांश पंचम स्थान स्थित लग्नमें जन्म समयमें शेष रहा होवे उतनी गिनतीकी संतति होतीहै और जितने शुभग्रहोंकी दृष्टि पंचम स्थानपर होवें उनसे दूनी संतति होतीहै ऐसा कहना चाहिये, वे संतति पाप ग्रहोंकी दृष्टिसे और योगसे क्लेशयुक्त होतीहैं और शुभाशुभ ग्रहोंकी दृष्टि से और योगसे मिश्रफलवाली संतति होती है इसको खूब विचारके फलादेश कहना चाहिये॥ ९ ॥पंचम स्थान में यदि पाप ग्रहोंकी राशियोंमें से कोई राशि होवे और वह राशि किसी पापग्रह से ही युक्त होवे और शुभग्रहकी दृष्टिसे वर्जित होवे अर्थात् कोई भी शुभ ग्रह देखता न होवे तब वह मनुष्य संतान से रहित होता हैं ॥ १० ॥

कविः कलत्रे दशमे मृगाङ्कः पातालयाताश्च खला भवन्ति ॥
प्रसूतिकाले यदि मानवं ते सन्तानहीनं जनयन्ति नूनम् ॥११॥
सुत सितांशे च सितेन दृष्टे बहून्यपत्यानि विधोरपीदम् ॥
दासीभवान्यात्मजभावनाथे यावन्मितेंशे शिशुसंमितिःस्यात् ॥१२॥

शुक्रसप्तम घरमें स्थित होवे और दशम स्थान में चन्द्रमा होवे और चतुर्थ स्थानमें पापग्रह होवें तब अवश्यही उस पुरुषको संतानसे रहित करते हैं ॥ ११ ॥ पंचम भवनमें शुक्रका नवांश होवे और शुक्रही उसे देखता होवे तब उस पुरुषके बहुत संतति होतीहैं और यदि पंचम भवनमें चन्द्रमाका नवांश होवे चन्द्रमा देखता होवे तब भी अनेक संतति होती हैं और जो पंचम भवनका स्वामी होवे वह जिस गिनतीके नवांशमें होवे उस पुरुष के उतनी गिनती के दासीसे बालक होतेहैं॥१२॥

शुक्रेन्दुवर्गेण युते सुताख्ये युक्तेक्षिते वा भृगुचन्द्रमोभ्याम् ॥
भवन्ति कन्याः समराशिवर्गे पुत्राश्च तस्मिन्विषमाभिधाने ॥१३॥
मन्दस्य राशिः सुतभावसंस्थो मन्देन युक्तः शशिनेक्षितश्च ॥
दत्तात्मजाप्तिः शशिवद्बुधेऽपि क्रीतः सुतस्तस्य नरस्यवाच्यः॥१४

चन्द्रमा और शुक्रके वर्गसे युक्त पंचम भवन होवे अथवा शुक्र और चन्द्रमा से युक्त या दृष्ट होवे तव सम राशि के २।४।६।८।१०।१२ वर्ग होनेसे तौ कन्या होती हैं और विषम राशिके वर्ग होने से पुत्र होतेहैं ॥१३॥ और यदि शनिकी राशि(१०।११) पंचम स्थानमें स्थित होवें और शनिसे युक्त होवे और चन्द्रमा देखता होवे तव उस पुरुषको दत्तक पुत्रकी प्राप्ति होती है और यदि बुध देखता होवे तौ उस पुरुषको मोल खरीदा पुत्र कहना चाहिये ॥ १४ ॥

संतानाधिपतेः पञ्चषष्ठरिष्फस्थिते खले ॥
पुत्राभावो भवेत्तस्य यदि जातो न जीवति ॥ १५ ॥
मन्दस्य वर्गे सुतभावसंस्थे निशाकरस्थेपि च वीक्षितेस्मिन् ॥
दिवाकरेणोशनसा नरस्य पुनर्भवासंभवसूनुलब्धिः ॥ १६ ॥

यदि पंचम भवनका स्वामी पापग्रह होवे वह पञ्चम, छठे वारहवें घरमें से किसी जगह वर्तमान होवे उस पुरुषको पुत्रका अभाव (नहीं होना) कहना चाहिये, यदि होवे भी तौ जीवता नहींहै ॥ १५ ॥ जो शनिका वर्ग पञ्चम भवनमें स्थित होवे चन्द्रमा उसमें स्थित होवे या देखता होवे अथवा सूर्यसे या शुक्रसे दृष्ट या युत होवे तव उस पुरुषको पुनर्भवास्त्रीसे पुत्रकी प्राप्ति होता है ॥ १६ ॥

शनेर्गणः पञ्चनि पुत्रभावे बुधेक्षिते नो रविभूमिजाभ्याम् ॥
पुत्रो भवेत्क्षेत्रभवोथ बौधे गणेपि गेहे रविजेन दृष्टे ॥ १७ ॥
नवांशकाः पञ्चमभावसंस्था यावन्मितैः पापखगैः प्रदृष्टाः ॥
नश्यन्ति गर्भाः खलु तत्प्रमाणाच्चेद्वीक्षितं नो शुभखेचराणाम् ॥१८
भूनन्दनो नन्दनभावयातो जातं च जातं तनयं निहन्ति ॥
दृष्टे यदा चित्रशिखण्डिजेन भृगोः सुतेन प्रथमोपपन्नम् ॥ १९॥

यदि पंचम घरमें शनिका षड्वर्ग होवे वह बुध से दृष्ट होवे और मंगल सूर्य में से कोई देखता न होवे तव उसके क्षेत्रज पुत्र होताहै इसी तरह बुधका गण पंचम भवन में स्थित होवे और शनि देखता होवे तव भी क्षेत्रज पुत्र होताहै ऐसा कहना चाहिये ॥ १७ ॥ जितनी संख्या के नवांश पंचम भावमें होवे और पापग्रह उन्हें देखते होवें उतनी गिनतीके गर्भ उस पुरुष के नाश होजाते हैं और यदि शुभ

ग्रहोंकी दृष्टि होती हैं तो गर्भ नष्ट नहीं होते हैं ॥ १८ ॥ जिसके पंचम घरमें मङ्गल बैठा होताहै तौ उसके उत्पन्न हुये पुत्रों को मारताहै यदि चित्रशिखंडिज (गुरु) से दृष्ट होवे तौ पुत्रनाशक योग होता है और शुक्रसे दृष्ट होवे तब एक प्रथम पुत्रही मरता है और नहीं ॥ १९ ॥ इति पंचमभावफलम्

अथ शत्रुभावविचारः ।

वैरिव्रातः क्रूरकर्मामयानां चिन्ताशंकामातुलानां विचारः ॥
होरापारावारपारं प्रयातैरेतत्सर्वं शत्रुभावे विचिन्त्यम् ॥ १ ॥
दृष्टिर्युतिर्वा खलखेचराणामरातिभावेरिविनाशनं स्यात् ॥
शुभग्रहाणां युतिदृष्टितोऽत्र शत्रूद्गमोप्यामयसंभवः स्यात् ॥ २ ॥

वैरिमंडल, क्रूरकर्म, रोग, चिंता, शंका, मातुल इन सबोंका विचार छठे घरसे करना चाहिये ऐसा ज्योतिःशास्त्र समुद्र के पारंगत पंडितोंने कहाहै ॥ १ ॥ यदि इस छठे घरको पापग्रह देखते होवें या पापग्रह स्थित होवे तब अवश्य शत्रुओं का नाश होताहै और जो इस छठे घरमें शुभग्रह स्थित होवें या देखते होवें तब शत्रुओं की उत्पत्ति और रोगोंको उत्पत्ति होती है ॥ २ ॥ इति शत्रुभावः ॥

अथ जायाभावविचारः ।

रणाङ्गणं चाऽपि वणिक्क्रियाश्च जायाविचारागमनप्रमाणम् ॥
शास्त्रप्रवीणैर्हि विचारणीयं कलत्रभावे किल सर्वमेतत् ॥ १ ॥
मूर्ते कलत्रस्य नवांशको वा द्विषट्कभावस्त्रिलवः शुभानाम् ॥
अनेन योगेन हि मानवानां स्यादङ्गनानामचिरादवाप्तिः ॥ २ ॥

संग्राम, व्यौपार, स्त्री और यात्रा इन सब वार्तोका विचार विद्वत्पुरुषोंने इस सप्तम घरसे करना चाहिये ॥ १ ॥ सप्तम घरमें शुभ ग्रहोंका नवांश या द्वादशांश या त्रिलव विद्यमान होवे तब उन पुरुषोंको शीघ्रही स्त्रियोंकी प्राप्ति होती है ॥२॥

सौम्यैर्युतं सौम्यमसौम्यदृष्टं जायागेहं देहिनामङ्गनाप्तिम् ।
कुर्यान्नूनं वैपरीत्यादभावो मिश्रत्वेन प्राप्तिकाले प्रलापः ॥
लग्नाद्व्यये वा रिपुमन्दिरे वा दिवाकरेन्दू भवतस्तदानीम् ॥
स्यान्मानवस्यात्मजएकएव भार्यापि चैकेति वदन्ति सन्तः ॥ ४ ॥

यदि स्त्री भवनमें सौम्य ग्रहोंका लग्न होवे सौम्य ग्रहोंसे युत होवे और पाप ग्रहोंसे दृष्ट होवे तब देहीको अवश्यही स्त्री की प्राप्ति करताहै और यदि इससे विपरीत होवे तब उसको स्त्रीप्राप्तिका अभाव और ऊपर कहे हुए दोनों लक्षण मिश्रित होवे तौ प्राप्तिकालमें अनर्थक बकवाद होता है ॥ ३ ॥ लग्नसे बाहरवें घरमें या छठे घरमें सूर्य चन्द्रमा होवें तब उस पुरुषके एकही पुत्र होताहै और भार्या भी एक ही होतीहै ऐसे सन्तजन कहते हैं ॥ ४ ॥

गण्डान्तकालेपि कलत्रभावे भृगोः सुते लग्नगतेर्कजाते ॥
वन्ध्यापतिः स्यान्मनुजस्तदानीं शुभेक्षितं नो भवनं खलेन॥५॥
व्ययालये वा मदनालये वा खलेषु बुद्ध्यालयगे हिमांशौ ॥
कलत्रहीनो मनुजस्तनूजैर्विवर्जितः स्यादिति वेदितव्यम् ॥ ६ ॥

सप्तम भावके गंडांतसमयमें भी,शुक्र वर्तमान होवे और लग्नमें शनि होवे शुभ ग्रहसे दृष्ट न होवे और पापग्रह देखता होवे तौ वह पुरुष वंध्यापति होता है ॥५ ॥ बाहरवें घरमें या सप्तम घरमें पापग्रह होवे और पंचमस्थानमें चन्द्रमा होवे तौ वह पुरुष स्त्री पुत्रोंसे रहित होताहै ये जानना चाहिये ॥ ६ ॥

प्रसूतिकाले च कलत्रभावे यमस्य भूमीतनयस्य वर्गे ॥
ताभ्यां प्रदृष्टे व्यभिचारिणी स्याद्भर्ताऽपि तस्या व्यभिचारकर्त्ता।
शुक्रेन्दुपुत्रौ च कलत्रसंस्थौ कलत्रहीनं कुरुतो नरं तौ ॥
शुभेक्षितौ तौ वयसो विरामे कामं च रामां लभते मनुष्यः॥८॥

जिस पुरुषके जन्म समयमें सप्तम घरमें शनिका या मङ्गलका वर्ग होवे अथवा शनि मङ्गल करके दृष्ट होवे तो वह स्त्री व्यभिचारिणी होवे और उसका पति भी व्यभिचार करने वाला होता है ॥ ७ ॥ जिसके सप्तम घरमें बुध शुक्र होवें तौ उस मनुष्यको स्त्रीरहित करते हैं और यदि वे बुध शुक्र शुभग्रहसे दृष्ट होवें तौ वह पुरुष अवस्थाकी समाप्तिमें यथेच्छ भार्याको प्राप्त होताहै ॥ ८ ॥

शुक्रेन्दुजीवशशिजैः सकलैस्त्रिभिश्च द्वाभ्यां कलत्रभवने च तथैककेन
एषां गृहे विषमभेदविलोकिते वा सन्ति त्रयो भवनवर्गखगस्य भावाः

कलत्रभावे च नवांशतुल्या नरस्य नार्यो ग्रहवीक्षणाद्वा ॥
एकैकभौमार्कनवांशके च जामित्र भावस्थबुधार्कयोर्वा ॥ १० ॥

शुक्र, चंद्रमा, बृहस्पति और बुध इन सबों करके या तीनों करके या दोनों से या एकसे सप्तम घर दृष्ट होवे और इनके घर विषम भेदसे विलोकित होवें इस प्रकार से भवन वर्ग और ग्रह इनके तीन भाव होते हैं ॥ ९ ॥ एक एक मङ्गल सूर्य के नवांशकमें अथवा सप्तम भावमें स्थित बुध सूर्यके नवांशकमें होवे तब सप्तम भाव में नवांशके तुल्य ग्रहोंकी दृष्टि से पुरुष स्त्री होती हैं॥१०॥

शुक्रस्य वर्गेण युते कलत्रे बह्वङ्गनाप्तिर्भृगुवीक्षणेन ॥
शुक्रेक्षिते सौम्यगणेङ्गनानां बाहुल्यमेवाशुभवीक्षणान्न ॥ १० ॥
महीसुते सप्तमभावयाते कान्तावियुक्तः पुरुषस्तदा स्यात् ॥
मन्देन दृष्टे म्रियतेऽपि लब्ध्वा शुभग्रहालोकनवर्जितेऽस्मिन्॥ १२ ॥

अथवा शुक्रके वर्गसे युक्त सप्तम स्थान होय अथवा शुक्रसे दृष्ट होवे तौ बहुत स्त्रियोंकी प्राप्ति होवे अथवा शुक्र करके दृष्ट सौम्यगण होवे तब बहुत स्त्रियों की प्राप्ति होतीहै यदि अशुभ ग्रहोंसे दृष्ट होवे तब स्त्रियोंकी प्राप्ति नहीं होतीहै।११ जो सप्तम स्थानमें मङ्गल होय तौ वह पुरुष स्त्री से रहित होताहै और यदि शनिसे दृष्ट सप्तम स्थान होवे और सप्तम स्थान को कोई शुभ ग्रह न देखता होवे तौ प्राप्त हुई स्त्री भी मर जातीहै ॥ १२ ॥

पत्नीस्थाने यदा राहुः पापयुग्मेन वीक्षितः ॥
पत्नीयोगस्तदा न स्याद्भूतापि म्रियतेऽचिरात् ॥ १३ ॥

षष्ठे च भवने भौमः सप्तमे राहुसंभवः ॥
अष्टमे च यदा सौरिस्तस्य भार्या न जीवति ॥ १४ ।

यदि सप्तम स्थान में राहु स्थित होवे और दो पाप ग्रह उसे देखते होंवे तब पत्नीयोग नहीं होताहै यदि विवाह हुआ भी होवे तौ भी वह स्त्री मर जातीहै॥१३। छठे भवनमें मङ्गल होवे और सप्तममें राहु होवे और अष्टम घरमें शनि होवे तब उसकी भार्या नहीं जीवतीहै ॥ १४ ॥ इति सप्तमभावविचारः ॥

अथ संक्षेपतोऽष्टमभावविचारः ।

नद्युत्तारात्यन्तवैषम्यदुर्गं शस्त्रं चायुः सङ्कटं चेति सर्वम् ॥
रन्ध्रस्थाने सर्वदा कल्पनीयं प्राचीनानामाज्ञयाजातकज्ञैः ॥ १ ॥
तुर्यस्थाने यदा भानुः शशिना च विलोकितः ॥
यदि नो वीक्षितः सौम्यैर्मरणं तत्र निर्दिशेत ॥ २ ॥
होराविद्भिश्चाष्टमस्थानयाते नानाभेदैर्यत्फलं तत्प्रदिष्टम् ॥
रिष्टाध्याये चापि निर्याणके वा यत्नान्नूनं प्रोच्यते तच्च सर्वम् ॥
रिष्टाऽध्याये निर्याणे वाग्रे सविशेषं निरूपयिष्यामः ॥

नदी का उतरना अत्यन्त वैषम्य दुर्ग शस्त्र आयु और सङ्कट ये सब अष्टम स्थान से विचार करना ऐसी सब जातक जानने वालों ने आज्ञा करी है ॥ १॥ तुर्य (४) स्थानमें राहु होवे और चन्द्रमा उसे देखता होवे और शुभ ग्रह कोई देखता न होवे तो उसका मरण कहना चाहिये ॥ २ ॥ और ज्योतिषशास्त्र के जानने वालोंने अष्टम स्थानके विषयमें अनेक भेदों से जो जो फल कहाहै वह सब रिष्टाध्यायमें और निर्याणाध्यायमें यत्नपूर्वक निश्चय करके कहेंगे ॥३॥ इत्यष्टमः ॥

अथ नवमभावफलम् ।

धर्मक्रियायां हि भवेत्प्रवृत्तिर्भाग्योपपत्तिर्विमलं च शीलम् ॥
तीर्थप्रयाणं प्रणयः पुराणैः पुण्यालये सर्वमिदं प्रदिष्टम् ॥ १ ॥
विहाय सर्वं गणकैर्विचिन्त्यं भाग्यालयं केवलमत्र यत्नात ॥
आयुश्च माता च पिता च वंशो भाग्यान्वितेनैव भवन्ति धन्याः॥२

धर्म कर्म में प्रवृत्तिका विचार, भाग्य की प्राप्ति, निर्मल शील, तीर्थका जाना और प्रणय (स्नेह) ये सब पुराण आचार्योंने भाग्यस्थानसे ही निर्णय करना कहा है ॥ १ ॥ इसीसे सब गणकोंको यही चाहिये कि और सबको छोड़कर केवल इस विषयमें बड़े यत्नसे नवम स्थानका ही विचार करना उचितहै, क्योंकि आयु, माता, पिता, वंश इत्यादि सब भाग्यवानके ही होते हैं इससे जो पुरुष भाग्यवान हैं वह ही धन्य कहलाते हैं ॥ २ ॥

मूर्तेश्चापि निशापतेश्च नवमं भाग्यालये कीर्तितं

तत्तत्स्वामियुते क्षितं प्रकुरुते भाग्यं स्वदेशोद्भवम् ॥
चेदन्यैर्विषयान्तरेत्र शुभदाः स्वोच्चाधिपाः सर्वदा
कुर्युर्भाग्यमसाधवोऽतिविबला दुःखोपलब्धिं पराम् ॥३॥
भाग्येश्वरो भाग्यमतोऽस्ति किंवा सुस्थानगः सारविराजमानः ।
भाग्याश्रितः कोऽस्ति विचार्य सर्वमत्यल्पमल्पं परिकल्पनीयम् ॥४

लग्नसे और चन्द्रमासे जो नवम भवनहै उसे भाग्य भवन कहते हैं, वो दोनों अपने २ स्वामिसे युत होवें या दृष्ट होवें तो अपने २ देशोद्भव भाग्यको करते हैं और जो शुभग्रह औरसे युत वा दृष्ट होते हैं वे अन्य देश में फल देते हैं और जो अपने उच्चके ग्रह हैं वे सब देशोंमें सव समय फल देते हैं और जो पापग्रह हैं और निर्बल हैं वे अति दुःखप्राप्त करते हैं ॥ ३ ॥ भाग्यनाथ भाग्य में होवे या और कहीं उत्तम स्थानमें विराजमान होवे और वह बली होवे भाग्यमें कौनहै ये सब अपनी बुद्धिसे विचार करके फल कल्पना करना चाहिये ॥ ४ ॥

तनुत्रिसूनूपगतो ग्रहश्चेद्यो वाधिवीर्यो नवमं प्रपश्येत् ॥
यस्य प्रसूतौ स तु भाग्यशाली विलासशीलो बहुलार्थयुक्तः॥५॥
चेद्भाग्यगामी खचरः स्वगेहे सौम्येक्षितो यस्य नरस्य सूतौ ॥
भाग्याधिशाली स्वकुलावतंसो हंसो यथा मानसराजमानः ॥६॥

लग्न तृतीय और पञ्चम इन स्थानोंमें जो ग्रह होवे और वली होवे नवम स्थान को देखता होवे वह पुरुष वड़ा भाग्यशाली और विलास करनेवाला और बहुतसे धनोंसे युक्त होता है ॥ ५ ॥ और भाग्यस्थानमें स्थित जो ग्रहहैं ये स्वगृही होवे और सौम्य ग्रहसे दृष्ट होवे ये योग जिस मनुष्यके जन्म समयमें होवे वह मनुष्य बड़ा भाग्यशाली और अपने कुलमें श्रेष्ठ होता है जिस तरह हंस मानस सर में सुशोभित होता है ॥ ६ ॥

पूर्णेन्दुयुक्तौ रविभूमिपुत्रौ भाग्यस्थितौ सत्वसमन्वितौ च ॥
वंशानुमानात् सचिवं नृपं वा कुर्वन्ति ते सौम्यदृशं विशेषात्॥७॥
स्वोच्चोपगोभाग्यगृहेन भोगो नरस्य योगं कुरुते सुलक्ष्म्या ॥
सौम्येक्षितोऽसौ यदि सौम्यपालं दन्तावलोत्कृष्टविलासशीलः॥८॥

शनि और मङ्गल पूर्णचन्द्रसे युक्त होवें और वे भाग्यस्थानमें स्थित और बली होवे तब वे उस पुरुष को उसके वंशके अनुसार राजा या राजा का मंत्री करते हैं और विशेष करके उसे सौम्यदृष्टिवाला करते हैं ॥ ७ ॥ और जो ग्रह अपने उच्चका होकर नवम स्थानमें स्थित हुआहै वह ग्रह उस पुरुषको पूर्ण धनवान् करताहै और यदि वही ग्रह कहीं शुभ ग्रहसे दृष्ट होवे तौ मत्त गजराज जिसके द्वारपर झूमें ऐसा करता है ॥ ८ ॥ इति भाग्यग्रहफलम् ।

अथ राज्यभवनविचारः ।

व्यापारमुद्रानृपमानराज्यं प्रयोजनं चापि पितुस्तथैव ॥
महत्पदाप्तिः खलु सर्वमेतद्राज्याभिधाने भवने विचार्यम् ॥ १ ॥
समुदितमृषिवर्यैर्मानवानां प्रयत्ना
दिह हि दशमभावे सर्वकर्मप्रकामम् ॥
गगनगपरिदृष्ट्या राशिखेटस्वभावैः
सकलमपि विचिन्त्यं सत्वयोगात्सुधीभिः॥२॥

व्यापार, द्रव्य, नृपमान, राज्य, पिता प्रयोजन और महत्पदाप्ति ये सब विषय दशम भाव से विचार करने चाहिये ॥ १ ॥ बड़े बड़े ऋषिप्रवरोंने बड़े यत्नसे मनुष्योंके कर्म मात्रका प्रसंग इस दशम भावसे ही देखना चाहिये, ग्रहोंकी दृष्टि, राशियोंके स्वभाव, ग्रहोंके स्वभाव और उनके बलाबल के विचारसे बुद्धिमानोंको सब विचार करना चाहिये ॥ २ ॥

तनोः सकाशाद्दशमे शशाङ्के वृत्तिर्भवेत्तस्य नरस्य नित्यम् ॥
नानाकलाकौशलवाग्विलासैः सर्वोद्यमैः साहसकर्मभिश्च ॥ ३ ॥
तनोः शशाङ्काद्दशमे बलीयान्स्याज्जीवनं तस्य खगस्य वृत्त्या ॥
बलान्विताद्वर्गपतेस्तु यद्वा वृत्तिर्भवेत्तस्य खगस्य पाके ॥ ४ ॥

यदि लग्न से दशम चन्द्रमा होवे तब उस मनुष्यका नित्य नवीन जीविका, नाना प्रकारके कला कौशल, वाग्विलास, समग्र उद्यम और साहस किये कर्मोंसे भी जीविका होती है ॥३॥ लग्नसे दशमे स्थानमें चन्द्रमा ग्रह स्थित होवे तौ उसी ग्रहकी वृत्तिके अनुसार उस पुरुषका जीवन होताहै अथवा बलवान् जो वर्गपति उसकी परिपाक अवस्थाके समयमें उस पुरुषकी वृत्ति होताहै ॥ ४ ॥

दिवामणिः कर्मणि चन्द्रतन्वोर्द्रव्याण्यनेकोद्यमवृत्तियोगात् ॥
सत्त्वाऽधिकत्वं नरनायकत्वं पुष्टत्वमंगे मनसः प्रसादः ॥ ५ ॥
लग्नेन्दुतः कर्मणि चेन्महीजः स्यात्साहसः क्रौर्यनिषादवृत्तिः ॥
नूनं नराणां विषयाऽभिसक्तिर्दूरे निवासः सहसा कदाचित् ॥६॥

चन्द्रमासे अथवा लग्न से यदि सूर्य दशम स्थानमें स्थित होवे तो और अनेक उद्यम वृत्तियोंके योगसे द्रव्य प्राप्त होतेहैं और पराक्रमका आधिक्य, मनुष्योंका स्वाम्य, अंगमें पुष्टता और मनमें प्रसन्नता होती है ॥ ५ ॥ लग्नसे अथवा चन्द्रमा से दशमे घरमें मङ्गल बैठा होवे तो वह पुरुष बड़ा साहसी क्रूरतासे निषादकीसी वृतिवाला होताहै और उस मनुष्यकी निश्चय विषयोंमें आसक्ति होती है और कभी दूर निवास होता है ॥ ६ ॥

लग्नेन्दुभ्यां कर्मगो रौहिणेयः कुर्याद्द्रव्यं नायकत्वं बहूनाम् ॥
शिल्पेभ्यासःसाहसं सर्वकार्ये विद्वद्वृत्त्या जीवितं मानवानाम् ॥७॥
विलग्नतः शीतमयूखतो वा माने मघोनः सचिवो यथा स्यात् ॥
नानाधनाभ्यागमनानि पुंसां विचित्रवृत्त्या नृपगौरवं च ॥८ ॥

जिस मनुष्योंके लग्न से अथवा चन्द्रमासे बुध दशमे होता है तो वह धनका देनेवाला और बहुतोंका स्वामी करता है औरउन मनुष्योंका शिल्पविद्यामें अभ्यास, सब कामों में साहस और विद्वद्वृत्तिसे जीविका होती है॥७॥जिस मनुष्यके लग्न से अथवा चन्द्रमा से बृहस्पति यदि दशमे घरमें होवे तो वह पुरुष मंत्रीके समान होता है और विचित्र वृतिसे नाना धनोंकी प्राप्ति करने वाला और राजा से जिसका गौरव ऐसा होता है ॥ ८ ॥

होरायाश्च निशाकराद्भृगुसुतो मेषूरणे संस्थितो,
नानाशास्त्रकलाकलापविलसद्वृत्त्यादिशेज्जीवनम् ॥
दाने साधुमतिं तथा विनयतां कामं धनाभ्यागमं
मानं मानवनायकादविरलं शीलं विशालं यदा ॥९॥
होरायाश्च सुधाकराद्रविसुतः सूतौ स्वमध्यस्थितो
वृत्तिं हीनतरां नरस्य कुरुते कार्श्यं शरीरे सदा ॥
खेदं वादभयं च धान्यधनयोर्हीनत्वमुच्चैर्मन-
श्चित्तोद्वेगसमुद्भवेन चपलं शीलं च नो निर्मलम् ॥१०॥

यदि लग्न से अथवा चन्द्रमासे दशमे स्थानमें शुक्र होवे तो नाना शस्त्रकलाओंके समूहसे हुई जो उत्तम वृत्ति उससे अपने जीवनको व्यतीत करता है और दान करनेमें मति, विनयता, यथेच्छ धनागम, मनुष्योंके स्वामी राजासे निरन्तर बड़ा मान ये सब प्राप्त होते हैं ॥९॥ यदि जन्म समय में लग्नसे अथवा चन्द्रमासे दशमे स्थानमें शनि स्थित होवे तब उस मनुष्यकी अति निकृष्ट वृत्ति करताहै और शरीरमें कृशता, खेद, विवादके निमित्त से भय, धन धान्यकी हीनता, अतिशय करके चित्त के उद्वेगसे चपलता और मनके स्वभावको मलीन करता है ॥१०॥

सूर्यादिभिर्व्योमचरैर्विलग्नादिन्दोः स्वपाके क्रमशः प्रकल्प्या ॥
अर्थोपलब्धिर्जनकाज्जनन्याः शत्रोर्हिताद्भ्रातृकलत्रभृत्यात् ॥११॥
रवीन्दुलग्नास्पदसंस्थितांशपतेस्तु वृत्त्या परिकल्पयेताम् ॥
सदौषधोर्णादितृणैः सुवर्णैर्दिवामणिर्वृत्तिविधिं विदध्यात् ॥ १२ ॥

सूर्यसे आदि लेकर ग्रह लग्न मे अथवा चन्द्रमासे यदि दशमे स्थानमें स्थित होवें तब उनकी पाक अवस्थामें क्रमसे इस तरह फलकल्पना करना चाहिये,सूर्य दशमे में होवे तौ अपने पिता से धनप्राप्ति,चन्द्रमा होवे तौ मातासे धन प्राप्ति, मङ्गल होवे तौ शत्रुसे धनप्राप्ति,बुध होवे तौ मित्रसे,बृहस्पति होवे तौ भाईसे,शुक्र होवे तौ स्त्रीसे और शनि होवे तौ भृत्यसे धनप्राप्ति होतीहै॥११॥सूर्य चन्द्रमा और लग्न इन तीनोंसे जो दशमे भवनहै उन भवनोंके जो स्वामीहै वे जिस ग्रहके नवांशमें होवे उसी ग्रह के स्वभावानुसार फल देते हैं सूर्य होवे तौ औषधि, ऊन, रेशम, तृण और सुवर्ण इन वस्तुओंसे वह पुरुष अपनी जीविका करनेवाला होता है ॥ १२ ॥

नक्षत्रनाथोऽत्र कलत्रतश्च जलाशयात्पन्नकृषिक्रियादेः ॥
कुजोऽग्निसत्साहसधातुशस्त्रैः सोमात्मजः काव्यकलाकलापैः ॥१३॥
जीवो द्विजात्माकरदेवधर्मशुक्रो महिष्यादिकरौप्यरत्नैः ॥
शनैश्चरो नीचतरप्रकारैः कुर्यान्नराणां खलु कर्मवृत्तिम् ॥ १४ ॥

यदि चन्द्रमा होवे तो वह पुरुष अपनी स्त्रीसे अथवा जलाशय (कूपादि) से उत्पन्न हुई जो कोई खेती करता है उससे अपनी वृत्ति करता है यदि मङ्गल होवे तौ वह पुरुष अग्नि से या उत्तम साहससे धातु (सुवर्णआदि) से और शस्त्र से जीविका करता है और जो बुध होवे तो काव्य कलाओंके समुदाय से अपनी जीविका करता है ॥ १३ ॥ यदि बृहस्पति होवे तौ

द्विजसे, आकर (खान) देवता और धर्मसे जीविका करता है, यदि शुक्रहोवे तौ भैंस गाय आदि से और चांदि रत्नोंसे अपनी जीविका करता है और जोकहीं शनि दशम भवन में होवे तौ अत्यन्त नीच प्रकार से मनुष्योंकी जीविका करता है॥१४॥

कर्मस्वामी ग्रहो यस्य नवांशे परिवर्त्तते ॥
तत्तुल्यकर्मणा वृत्तिंनिर्दिशन्ति मनीषिणः ॥ १५ ॥
मित्रारिगेहोपगतैर्नभोगैस्ततस्ततोर्थः परिकल्पनीयः ॥
तुङ्गे पतङ्गे स्वगृहे त्रिकोणे स्यादर्थसिद्धिर्निजबाहुवीर्यात् ॥१६॥
लग्नार्थलाभोपगतैः सवीर्यैः शुभैर्भवेद्भूधनसौख्यमुच्चैः ॥
इतीरितं पूर्वमुनिप्रवर्यैर्बलानुमानात्परिचिन्तनीयम् ॥ १७ ॥

दशमे भवनका स्वामी ग्रह जिस ग्रहके नवांशकमें वर्तमान होवे उसीके तुल्य कर्म करके अपनी वृत्ति करता है, ज्योतिषशास्त्रके जाननेवाले पंडित ऐसा कहते हैं ॥१५॥ और जिस मनुष्यके दशमे भवनमें स्थित जो ग्रहहैं वह यदि अपने मित्र के घरका होवे तौ मनुष्य मित्रसे और शत्रुके घरका होवे तो अपने शत्रुसे जीविका करता है और सूर्य अपने उच्चका अथवा स्वगृहका होकर बैठा होवे अथवा त्रिकोण ९।५ में बैठा होवे तव वह मनुष्य अपने भुजवलसे धन संपादन करके जीविका करता है ॥१६॥ लग्न में धनमें और लाभ (११) में यदि वली होकर शुभ ग्रह होवे तव वे पृथिवी, धन और सौख्यके देनेवाले होतेहैं अथवा यहां क्रमसे ग्रहण करना लग्न में वली होकर शुभ ग्रह स्थित होवे तो पृथिवी प्राप्ति और द्वितीय भवन में वली होकर शुभ ग्रह होवे तौ धन प्राप्ति, यदि ग्यारहवें घरमें वली होकर शुभ ग्रह स्थित होवे तौ सौख्य करता है ॥ १७ ॥

अथ लाभभवनविचारः ॥

गजाश्वहेमाम्बररत्नजातमान्दोलिकामंगलमण्डनानि ॥
लाभः किलैषामखिलं विचार्यमेतत्तु लाभस्य गृहे ग्रहज्ञैः ॥ १ ॥
सूर्येण युक्ते च विलोकिते वा लाभालये तस्य गणोऽत्र चेत्स्यात्॥
भूपालतश्चौरकुयात्कलेर्वा चतुष्पदादेर्बहुधा धनाप्तिः ॥ २ ॥

हाथी, घोड़ा, सुवर्ण, वस्त्र, रत्नजात, हिंडोला, मंगल, आभूषण इन सवोंका विचार और लाभका विचार ये सव लाभ (११) भवनसे पंडितोंको विचार करना

चाहिये ॥ १ ॥ जो लाभका भवन सूर्यसे युक्त होवे अथवा विलोकित होवे या उसका गण होवे तव उस मनुष्यका राजासे, चोरके कुलसे, या कलहके निमित्तसे अथवा चौपाये पशुसे वहुत धनकी प्राप्ति होती है ॥ २ ॥

चन्द्रेण युक्तं च विलोकितं वा लाभालये चन्द्रगणाश्रित् चेत ॥
जलाशयस्त्रीगजवाजिवृद्धिः पूर्णे भवेत्क्षीणतरे विलोमम् ॥ ३ ॥
लाभालयं मंगलयुक्तदृष्टं प्रकृष्टभूपामणिहेमलब्धिः ॥
विचित्रयात्राबहुसाहसी स्यान्नानाकलाकौशलबुद्धियोगैः ॥ ४ ॥

जो लाभ भवन पूर्ण चन्द्रमा करके युक्त होवे अथवा विलोकित होवे या चन्द्रमाके गणसे आश्रित होवे तौ जलाशय स्त्री हाथी घोड़ा की वृद्धि होतीहै और यदि चन्द्रमा क्षीण होवे तौ उक्त फलसे विपरीत फल होताहै ॥ ३ ॥ यदि लाभ भवन मङ्गलसे युक्त अथवा दृष्ट होवे तव उस मनुष्यको उत्तम भूपण मणि सुवर्ण की प्राप्ति होती है और वह विचित्र यात्रा विषयमें वहु साहसी होताहै और नाना कलाओंमें कुशल और बुद्धिसे युक्त होताहै ॥ ४ ॥

लाभे सौम्यगणाश्रिते सति युते सौम्येन संवीक्षिते
नानाकाव्यकलाकलापविधिना शिल्पेन लिप्त्वा सुखम् ॥
युक्तिद्रव्यमयोभवेद्धनचयः सत्साहसैरुद्यमैः
सख्यं चापि वणिक्जनैर्बहुतर क्लीबैर्नृणां कीर्तितम् । ५ ॥
यज्ञक्रियासाधुजनानुयातो राजाश्रितोत्कृष्टकृपो नरः स्यात् ॥
द्रव्येण हेमप्रचुरेण युक्तो लाभे गुरोर्वर्गयुगीक्षणं चेत् ॥ ६ ॥

लाभ स्थान सौम्य गणसे आश्रित होवे और सौम्य ग्रह से दृष्ट हो तव वह पुरुप अनेक काव्यकलाओं के समूह से और शिल्प विधि से सुखयुत होता है और युक्तिसे प्राप्त हुई वस्तुसे युक्त और उत्तम साहस और उद्यम से धन समूह प्राप्त करनेवाला होताहै, वणिक् जनोंका नपुंसक पुरुषों का मित्र होता है ऐसा बुद्धिमान मनुष्योंने कहाहै ॥ ५ ॥ और जिस मनुष्यके लाभ स्थानमें वर्गोत्तमी बृहस्पति होताहै या बृहस्पति युक्त स्थानको देखता वह पुरुष यज्ञक्रिया करनेवाला, साधुजनोंका सङ्ग करने वाला, राजाका आश्रित, वड़ा दयालु और सुवर्ण जिसमें प्रधान ऐसे धनसे युक्त होताहै ॥ ६ ॥

लाभालयं भार्गववर्गयातं युतेक्षितं वा यदि भार्गवेण ॥
वेश्याजनैर्वापि गमागमैर्वा सद्रौप्यमुक्ताप्रचुरा स्वलब्धिः ॥७॥
लाभवेश्मनि शनीक्षितयुक्ते तद्गणेन सहिते सति पुंसाम् ॥
नीललोहमहिषीगजलाभो ग्रामवृन्दपुरगौरवमिश्रः ॥ ८ ॥

जिस मनुष्यके लाभ भवन में शुक्रका वर्ग होताहै और शुक्रसे युत अथवा दृष्ट होता है उस मनुष्यको वेश्याजनों से अथवा देशांतर के आने जानेसे उत्तम रत्न, चांदी, मोती और धनकी बहुतसी प्राप्ति होतीहै ॥ ७ ॥ और जिस मनुष्य के लाभ स्थानमें शनि स्थित हो उस स्थान को देखता हो अथवा अपने वर्गोत्तम का हो तौ उस मनुष्यको नील, लोह, भेंस और हाथी इनका लाभ होता है और उस मनुष्यका ग्रामवासी मनुष्योंमें गौरव होता है ॥ ८ ॥

युक्तेक्षिते लाभगृहे सुखाख्ये वर्गे शुभानां समवस्थिते च ॥
लाभो नराणां बहुधाथवास्मिन् सर्वग्रहैर्युक्तनिरीक्ष्यमाणे ॥९ ॥

यदि लाभ भवनमें शुभग्रह वर्ग होवे या कोई शुभग्रह ही उक्त घर में स्थित होवे अथवा सब ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो तब उस मनुष्यको इस योग के विद्यमान होनेसे अनेक तरह का लाभ होताहै ॥ ९ ॥

अथ व्ययभवनम् ।

हानिर्दानं व्ययश्चापि दण्डो निर्बन्धएव च ॥
सर्वमेतद्व्ययस्थाने चिन्तनीयं प्रयत्नतः ॥ १ ॥
व्ययालये क्षीणकरः कलावान् सूर्योथवा द्वावपि तत्र संस्थौ ॥
द्रव्यं हरेद्भूमिपतिस्तु तस्य व्ययालये वा कुजदृष्टियुक्ते ॥ २ ॥

हानि, दान, खरच, दण्ड और हठ ये सब प्रयत्न करके व्यय (१२)भवन से ही विचारने चाहिये ॥ १ ॥ यदि बारहवें घरमें क्षीण चन्द्रमा होवे या सूर्य हो अथवा दोनों ही हों अथवा उक्त स्थानको मङ्गल देखता हो या स्थित होवे तब उस मनुष्यके द्रव्यको राजा हर लेता है ॥ २ ॥

पूर्णेन्दुसौम्येज्यसिताव्ययस्थाः कुर्वन्ति संस्थां धनसंचयस्य ॥
प्रान्त्यस्थिते सूर्यसुते कुजेन युक्तेक्षिते वित्तविनाशनं स्यात् ॥३॥

यदि व्यय (१२) स्थानमें पूर्ण चन्द्र, बुध, बृहस्पति और शुक्रये चार ग्रह स्थित हों तव उस मनुष्यके सञ्चित धनका नाश होता है और यदि शनि बारहवें घरमें स्थित हो और मङ्गल से युक्त या दृष्ट हो तबभी धनका नाश होताहै ॥ ३ ॥

इति दु॰ कृते जातकाभरणेमार्जन्यांटीकायांवनमालिचतुर्वेदकृतायां

भावफलाध्यायः षष्ठ समाप्तः ॥

अरिष्टाध्यायः ।

लग्नेन्द्वोश्च कलत्रपुत्रभवने स्वस्वामिसौम्यग्रहैर्युक्ते
वाऽथ विलोकिते खलु तदा तत्प्राप्तिरावश्यकी ॥
लग्ने चेत्सविता स्थितो रविसुतो जायाश्रितो
मृत्युकृज्जायायाश्च महीसुतः सुतगतः कुर्यात्सुतानां क्षतिम् ॥ १
असौम्यमध्यस्थितभार्गवश्चेत्पातालरन्ध्रे खलखेटयुक्ते ॥
सौम्यैरदृष्टे भृगुजे च पत्नीनाशो भवेत्पाशहुताशनाद्यैः ॥ २ ॥

लग्नसे अथवा चन्द्रमासे सप्तम पञ्चम भवनमें सौम्यग्रह सप्तमेश पञ्चमेश स्थित होय या देखता हो तव अवश्य ही अरिष्ट की प्राप्ति होतीहै, अथवा लग्नमें सूर्य हो और सप्तम स्थानमें शनि वैठा हो तव स्त्री का नाश होता है और यदि पञ्चम भवनमें मङ्गल हो तौ पुत्रोंका नाश करने वाला योग होता है ॥ १ ॥ पापग्रहोंसे युत चौथे आठवें घरमें पापग्रहोंके मध्य में यदि शुक्र हो और कोई सौम्य ग्रह देखते न होवें तव उस मनुष्यकी पत्नीका फांसी और अग्नि आदि कारणोंसे मरण होताहै ॥ २

दिवाकरेन्दू व्ययवैरियातौ जायापती एकविलोचनौस्तः ॥
कलत्रधर्मात्मजगौ सितार्कौ पुमान्भवेत्क्षीणकलत्रएव ॥ ३ ॥
भसंधियाते च सिते स्मरस्थे तनौ प्रयत्नेन तु भानुसूनौ ॥
वन्ध्यापतिः स्यान्मनुजस्तदानीं सुतालयं नो शुभदृष्टयुक्तम् ४ ॥

यदि सूर्य चन्द्रमा दोनों ग्रह बारहवें घरमें अथवा छठे घरमें हो तव वे दोनों पत्नी और वर एकनेत्र (काणे) होतेहैं और यदि शुक्र और सूर्य सप्तम या नवम घरमें वैठे हों तो वह पुरुष पत्नी रहित होताहै ॥ ३ ॥ सप्तम स्थानमें यदि लग्न सन्धिगत शुक्र होवे और लग्नगत शनि होवे और पञ्चम भवनमें न तौ कोई शुभग्रह वैठा हो न कोई देखता हो तव वह मनुष्य वंध्या स्त्रीका पति होताहै ॥ ४ ॥

क्रूराश्च होराः स्मररिः फयाताः सुतालये हीनबलः कलावान् ॥
एवं प्रसूतौ किल यस्य योगो भवेत्सभार्यातनयैर्विहीनः ॥ ५ ॥
सितेस्तयाते शनिभौमवर्गे भौमार्कदृष्टे परदारगामी ॥
मन्दारचंद्रा यदि संयुताः स्युः पौंश्चल्यसक्तौ रमणीनरौ स्तः॥६॥

क्रूर लग्न सप्तम और बारहवें घरमें हो और बलहीन चन्द्रमा पञ्चम भवन में हो इस योगमें जिस मनुष्यका जन्म हो वह पुरुष भार्या और पुत्रों से रहित होता है ॥ ८ ॥ शनि या मङ्गलके वर्ग में सप्तम भवनमें शुक्र हो और मङ्गल और सूर्य उसे देखते हों तब पुरुष परस्त्रीगामी होता है और मन्द (शनि) मङ्गल और चन्द्रमा ये तीनों ग्रह यदि एकही स्थान में स्थित हों तब स्त्री पुरुष दोनों ही पर पुरुष और पर स्त्री गामी होते हैं ॥ ६ ॥

द्यूनेर्कजारौ सभृगू शशाङ्कादपुत्रभार्यं कुरुतो नरं तौ ॥
स्यातां नृनारीखगयोः स्मरस्थौ सौम्येक्षितौ तौ शुभदौ नृनार्योः।
परस्परांशोपगतौ रवीन्दू रोषामयन्तौ कुरुतो नराणाम् ॥
एकैकगेहोपगतौ तु तौ वा तमेव रोगं कुरुतो नितान्तम्॥२८॥

यदि चन्द्रमा से सप्तम भवनमें शनि और मङ्गल स्थित हो और शुक्र उनके सङ्ग में हो तब उस पुरुष को पत्नी पुत्रीसे रहित करते हैं और पुंग्रह तथा स्त्रीग्रह उन्हींसे सप्तम स्थानमें बैठे हो और शुभ ग्रह उन्हें देखता हो तब वह पुरुष और स्त्री दोनों को शुभ फल देने वाले होते हैं ॥ ७ ॥ और जिस पुरुषको जन्म समय में चन्द्रमाके नवांशमें सूर्य और सूर्य के नवांशमें चन्द्रमा हो तौ मनुष्यों को रोष और रोग करते हैं अथवा रोषरूप रोग करतेहैं और सूर्य चन्द्रमाके गृहमें स्थित हो और चन्द्रमा सूर्य के गृहमें स्थित हो तौ वह पुरुष सदा रोगी रहताहै ॥ ८ ॥

मन्दावनीसूनुरवीन्दवश्चेद्रन्ध्रारिवित्तव्ययभावसंस्थाः ॥
आन्ध्यं भवेत्सारसमन्वितस्य खेटस्य दोषात्पुरुषस्य नूनम् ॥९॥
मृगालिगोकर्कटकास्त्रिकोणे प्रसूतिकालेगलखेटयुक्ताः ॥
निरीक्षिता वा जनयन्ति जातं कुष्ठेन युक्तं प्रवदन्ति सन्तः॥१०॥

शनि मंगल सूर्य चन्द्रमा ये चारों ग्रह अष्टम छठे द्वितीय और बारहवें घरों में से किसी घरमें स्थित होवें तौ इनमें से जो ग्रह बली होवे उसके दोषसे पुरुषको निश्चय अन्धापना होताहै ।।९।। जिस मनुष्यके जन्म समयमें मकर, वृश्चिक, वृष, कर्क इनमेंसे कोई नवम पंचम होवें और पाप ग्रह युक्त होवें अथवा पापग्रह देखते होवें तव उस पुरुषको ज्योतिर्विद् मनुष्य कुष्ठ (कोढसे) युक्त कहते हैं अर्थात् वह मनुष्य कोढी होता है ॥ १० ॥

मन्दार्कचन्द्रास्त्रिसुतायधर्मे सौम्यैर्नयुक्ता न च वीक्षिताश्चेत् ॥
कर्णप्रणाशं जनयन्ति नूनं स्मरस्थितास्ते दशनाऽभिघातम्। ११॥
ग्रस्ते विधौ लग्नगताश्च पापास्त्रिकोणगा जन्मपिशाचकस्य ॥
ग्रस्ते विधौ लग्नगते तथैव नेत्रोपघातः खलु कल्पनीयः ॥ १२ ॥

जिस मनुष्यके जन्म समयमें शनि सूर्य चन्द्रमा ये तीनों ग्रह तीसरे पंचम ग्यारहवें और नवें इन घरोंमेंसे किसीघरमें बैठे होवें और न तो शुभ ग्रह कोई देखता होवे और न शुभ ग्रह कोई संग होवे तौ इस योगमें जन्मा मनुष्य बधिर होताहै यदि उक्त तीनों ग्रह सप्तम घरमें बैठे होवें तौ उस मनुष्यको दंतहीन कहतेहैं इन ग्रहोंमेंसे किसीग्रहके दशा विपाकमें पोपला होजाता है ।।११।। चन्द्रमा पापग्रह युक्त होवे और लग्नमें भी पापग्रह होवें और नवम पंचम घरमें भी पापग्रह होवें तौ वह पुरुष पिशाचके समान होताहै और यदि पापग्रह युत या ग्रस्त चन्द्रमा लग्नमें होवे तव निश्चय नेत्ररोगी उस पुरुषको कहना चाहिये ॥ १२ ॥

लग्नस्थिते देवपुरोहितेऽस्ते शनिश्च वाताधिकता नितान्तम् ॥
जीवे विलग्नेऽवनिनन्दनेऽस्ते मदोद्धतः स्यात्पुरुषोविशेषात् ।।१३।।
स्मरे त्रिकोणे धरणीतनूजे शनौ तनौ वा पवनप्रकोपः ॥
क्षीणेन्दुमन्दौ व्ययभावयातौ तदापि वाताऽधिकता नराणाम्॥१४

जिस मनुष्यके जन्म समयमें लग्नमें बृहस्पति होवे और सातवें घरमें शनैश्चर होवे तौ वह पुरुष निरन्तर वाताधिक्यसे युक्त होताहै और यदि लग्नमें बृहस्पति और सातवें घरमें मंगल होवे तौ वह पुरुष विशेष करके मदसे उद्धत होताहै ॥१३॥

जिस पुरुषके सप्तम घरमें अथवा नवम पंचम घरमें मंगल होवे अथवा लग्न में शनि होवे अथवा क्षीण चन्द्रमा और शनि बारहवें घरमें स्थित होवें इन तीनों योगों में जन्मे मनुष्यके शरीरमें वायुका कोप अधिक तर रहता है ॥ १४ ॥

वंशच्छेदकरः शशाङ्कभृगुजक्रूरैः स्वकामाम्बुपैः
शिल्पी केन्द्रगतार्किणा बुधयुतत्र्यंशे समालोकिते ॥
अन्त्ये देवगुरौ दिनेश्वरयुतस्यांशे च दासीयुतो
नीचः कामगयोः खरांशुशशिनोः सौरेण संदृष्टयोः॥१५॥
वयोराशिस्वनक्षत्रमेकी कृत्य पृथक् पृथक् ॥
द्विचतुस्त्रिगुणं कृत्वा सप्ताष्टरसभाजितम् ॥ १६ ॥
आद्यन्तयोर्भवेद्दुःखी मध्ये शून्यं धनक्षयः ॥
स्थानत्रयेऽप्यशेषं तु मृत्युः साङ्केषु वै जयी ॥ १७ ॥

जिसके जन्म समय में चन्द्रमा, शुक्र और पापग्रह संग दूसरे सातवें और चौथे घरमें बैठे होवें उसका वंशछेद होताहै अर्थात् संततिहीन होता है और केंद्र स्थित शनि बुध द्रेष्काणमें होव अथवा बुध देखता होवे तो वह पुरुष कारीगर होताहै और बृहस्पति बारहवें घरमें सूर्यके नवांशमें होवे और यदि सूर्य और चंद्रमा सप्तम घरमें होवें और उन्हें शनि देखता होवे तो वह पुरुष दासीसे युक्त और नीच होताहै॥१५॥अवस्थाकी संख्याके वर्षांक और राशिका अंक और वर्तमान नक्षत्रका अंक और इन तीनों अङ्कोंकी संख्याको एकत्र करना फिर जो अङ्क सिद्ध होवे उस अङ्कको पृथक्२तीन जगह धरना फिर प्रथम अङ्कको दोसे और द्वितीय अङ्क को चारसे और तृतीय अङ्कको तीनसे क्रमसे गुण करणा, फिर प्रथमांकको सातसे द्वितीयांकको आठसे और तृतीयांको छःसे भाजित करना,(भागदेना) उस समय आद्यंतमें शून्य आवे तो वह पुरुष दुःखी होताहै ऐसा समजना और मध्यमें शून्य आनेसे धनक्षय समजना और यदि तीनों जगह शून्य आजावे तव मृत्यु होना समजना और यदि तीनों जगह अङ्क शेष रहनेसे निश्चय विजय होगा ॥ उदाहरण॥ किसी पुरुषकी२४वर्षकी तो आयु और ८ राशि और नक्षत्र १२हैं इनके एकत्र करने से४४हुये उन्हें पृथक् २ तीन जगह रक्खे उन्हें द्विगुण करनेसे ८८ चतुर्गुण करनेसे १७६हुए और त्रिगुण करनेसे१३२ उनमेंसे प्रथमांकमें सातका भाग देनेसे शेष ४ रहे और दूसरे अङ्कमें आठका भाग देनेसे शेष शून्य रहा और तीसरे अङ्कमें छःका भाग देने से शून्य शेष रहा तब अन्त में शून्य शेष रहनेसे दुःखी होना फल होगा इसी तरह अनेक उदाहरण समजने ॥ १६ ॥ १७ ॥ इत्यरिष्टाध्यायः सप्तमः ॥

अथ रविभाव विचारः ।

लग्नेऽर्केल्पकचः क्रियालसतनुः क्रोधी प्रचण्डोन्नतो
कामी लोचनरुक् सुकर्कशतनुः शूरो क्षमा निर्घृणः ।
फुल्लाक्षः शशिभे क्रिये स्थितिहरः सिंहो निशान्धः पुमान् ॥
दारिद्र्योपहतो विनष्टतनयः संस्थस्तुलासंज्ञके ॥ १ ॥
धनसुतोत्तमवाहनवर्जितो हतमतिः सुजनोज्झितसौहृदः ॥
परगृहोपगतो हि नरो भवेद्दिनमणेर्द्रविणे यदि संस्थितिः ॥२॥

जिस मनुष्यके लग्नमें सूर्य होताहै वह मनुष्य शिरमें थोड़े वालोंवाला, काम करनेमें आलसयुक्त, बड़ा क्रोधी, बड़ा उन्नत (ऊंचा) बड़ा कामी, नेत्रोंमें जिसके रोग, कठोरांग, शूरवीर; क्षमा करने वाला और निर्दयी होताहै, और यदि कर्क राशिमें सूर्य बैठा होवे तब उसके नेत्रमें फुली होतीहै और यदि सूर्यमेषमें बैठा होवे तो वह मनुष्य एक स्थानमें वहुत काल नहीं रहताहै किंतु भ्रमणशील होताहै और जिसके सूर्य सिंह लग्नमें बैठा होवे तौ वह पुरुष रात्रिमें अन्धा होताहै और यदि तुला लग्नमें स्थित होवे तौ वह पुरुष बड़ा दरिद्री और संतति (पुत्र)रहित होताहै॥१॥ यदि सूर्य द्वितोय घरमें स्थित होवे तौ वह पुरुष धन पुत्र और उत्तम असवारीसे वर्जित और बुद्धिहीन सुजनोंसे स्नेह रहित, औरोंके घर रहनेवाला होता है ॥२॥

प्रियंवदः स्याद्धनवाहनाढ्यः सुकर्णचित्तोनुचरान्वितश्च ॥
मितानुजः स्यान्मनुजो बलीयान्दिनाधिराजे सहजेधिसंस्थे ॥३॥
सौख्येन यानेन धनेन हीनं तातस्य वित्तोपहतिप्रवृत्तम् ॥
चलन्निवासं कुरुते पुमांसं पातालशाली नलिनीविलासी ॥४॥

यदि सूर्य तीसरे घरमें स्थित होवे तौ वह पुरुष प्रिय वाक्य बोलने वाला, धन और सवारिओंसे पूर्ण, सुन्दर कान और चित्तवाला, (और जहां कहीं 'सुवर्ण चित्त' ऐसा पाठ होवे वहां सुन्दर रङ्ग और चित्तवाला ऐसा अर्थ करना) नौकरों को रखनेवाला, एकदो भाई वाला और बड़ा वलवान् होता है ॥ ३ ॥ यदि सूर्य चतुर्थ भवन में स्थित होवे तो उस पुरुष को सुखसे सवारियोंसे और धनसे रहित करता है और फिर पिताके कमाये धनका लुटाने वाला और वहुत करके परदेश का निवास करने वाला करता है ॥ ४ ॥

स्वल्पापत्यं शैलदुर्गेशभक्तं सौख्यायुक्तं सत्क्रियार्थैर्विमुक्तम्॥
भ्रान्तस्वान्तं मानवं हि प्रकुर्यात्सूनुस्थाने भानुमान्वर्तमानः॥५॥
शश्वत्सौख्येनान्वितः शत्रुहन्ता सत्त्वोपेतश्चारुयानो महौजाः॥
पृथ्वीभर्ता स्यादमर्त्यो हि मर्त्यः शत्रुक्षेत्रे मित्रसंस्थो यदि स्यात्।

यदि पंचम भवनमें सूर्य बैठा होवे तब उस पुरुषको स्वल्प संततिवाला, शिव-जीका भक्त, सुखसे रहित, सत्कर्मोंसे वहिर्मुख और अस्थिरचित्त करता है॥५॥ जिस पुरुषके छठे घरमें सूर्य स्थित होताहै वह पुरुष निरन्तर सुखसे युक्त, शत्रुओं का नाश करने वाला, बड़ा पराक्रमी, मनोहर जिसके सवारी, बड़ा पराक्रमी, भूमि का पालने वाला और देवतातुल्य होताहै॥ ६॥

श्रिया विमुक्तो हतकायकान्तिर्भयामयाभ्यां सहितः कुशीलः॥
नृपप्रकोपार्तिकृशो मनुष्यः सीमान्तिनीसद्मनि पद्मिनीशे॥७॥
नेत्राल्पत्वं शत्रुवर्गोऽभिवृद्धिर्बुद्धिभ्रंशः पूरुषस्यातिरोषः॥
अर्थाल्पत्वं कार्श्यमङ्गे विशेषादायुःस्थाने पद्मिनीप्राणनाथे॥८॥

यदि सूर्य लग्नसे सप्तम भावमें स्थित होवे तो पुरुष लक्ष्मीहीन; नष्टतेज, भय और रोग से युक्त, दुष्ट स्वभाव वाला और राजाके कोप से अति दुर्बल होता है॥ ७॥ जिस मनुष्यके लग्न से अष्टम भवनमें सूर्य होता है वह मनुष्य छोटे नेत्रोंवाला, अपने शत्रुपक्षको वढानेवाला, भ्रष्टबुद्धि और वड़ा क्रोधी, निर्धन और अंगमें विशेष दुर्बल होता है॥ ८॥

धर्मकर्मनिरतश्च सन्मतिः पुत्रमित्रजसुखान्वितः सदा॥
मातृवर्गविषमो भवेन्नरस्त्रित्रिकोणभवने दिवामणौ॥ ९॥
सद्बुद्धिवाहनधनागमनानि नूनं भूपप्रसादसुतसौख्यसमन्वितानि।
साधूपकारकरणं मणिभूषणानि मेषूरणे दिनपतिः कुरुते नराणाम्॥

जिसके नवें घरमें सूर्य स्थित होता है वह पुरुष धर्म कर्म में निरत, सद्बुद्धि युक्त, पुत्र मित्रजन्य सुखसे युक्त और सदा अपने नाना मामा आदिसे विरोध करने

वाला होताहै ॥ ९॥ यदि दशम स्थानमें सूर्य स्थित होवे तौ वह मनुष्य सद्बुद्धि, उत्तम वाहन, धनागमसे युक्त होताहै और राजानुग्रह, पुत्रके सुखसे संपन्न, साधु पुरुषोंका उपकारक, मणियोंके आभूषण धारण करनेवाला होताहै ॥ १० ॥

गीतप्रीतिं चारुकर्मप्रवृत्तिं चञ्चत्कीर्तिं वित्तपूर्तिं नितान्तम् ॥
भूपात्प्राप्तिं नित्यमेव प्रकुर्यात्प्राप्तिस्थाने भानुमान्मानवानाम् ॥११॥
तेजोविहीने नयने भवेतां तातेन साकं गतचित्तवृत्तिः ॥
विरुद्धबुद्धिर्व्ययनभावयाते कान्ते नलिन्या फलमुक्तमार्यैः॥१२॥

जिसके लाभमें सूर्य स्थित होताहै उसकी गीतोंमें प्रीति, सत्कर्म में प्रवृत्ति, प्रकाशयुक्त कीर्ति, निरन्तर धनकी पूर्ति और राजासे प्राप्ति सब समय होतीहै।११ जिसके बारहवें घरमें सूर्य बैठताहै उसको प्रथमही तौ नेत्रोंको तेजसे रहित करता है और अपने पिता से मनमें विरोध रखने वाला और विरुद्ध जिसकी बुद्धि ऐसा उस पुरुषको करताहै ॥ १२ ॥

अथ चन्द्रभावफलम् ।

दाक्षिण्यरूपधनभोगगुणैर्वरेण्य-
श्चन्द्र कुलीरवृषभाजगते विलग्ने ॥
उन्मत्तनीचबधिरो विकलोथ मूकः शेषेषु
ना भवति हीनतनौ विशेषात् ॥ १ ॥
सुखात्मजद्रव्ययुतो विनीतो भवेन्नरः पूर्णविधौ द्वितीये ॥
क्षीणे स्खलद्वाग्विधनोल्पबुद्धिर्न्यूनाधिकत्वे फलतारतम्यम्॥ २ ॥

जिसके कर्क, वृष या मेष इनमें से किसी लग्नमें चन्द्रमा होताहै वह पुरुष चतुराई, रूप, धन, भोग और अनेक गुणोंसे श्रेष्ठ होताहै और इनसे व्यतिरिक्त स्थानमें चन्द्रमा होवे तो वह पुरुष उन्मत्त, नीच, बहरा, विकल और गूँगा होता है ॥१॥ जिसके लग्नसे द्वितीय घरमें पूर्ण चन्द्रमा होताहै तौ वह मनुष्य सुख पुत्र स्त्री इनसे युक्त और नम्र होताहै, और यदि चन्द्रमा क्षीण होकर जिसके द्वितीय घर में होवे वह पुरुष इकल्ला धन रहित और मन्द बुद्धि होता है इतना तारतम्य पूर्ण क्षीणके निमित्त से होताहै ॥ २ ॥

हिंस्रः सगर्वः कृपणोल्पबुद्धिर्भवेन्नरो बन्धुजनाश्रयश्च ॥
दया भयाभ्यां परिवर्जितश्च द्विजाधिराजे सहजे प्रसूतौ । ३ ॥

लाश्रयोत्पन्नधनोलब्धिं कृष्यङ्गनावाहनसूनुसौख्यम् ॥
प्रसूतिकाले कुरुते कलावान् पातालसंस्थो द्विजदेवभक्तिम् ॥ ४॥

जो चन्द्रमा तृतीय भवनमें होवे तो वह पुरुष जीवोंका हिंसक, बड़ा गर्वीला, कृपण, अल्पबुद्धि और अपने बन्धुजनों का आश्रय लेने वाला दया तथा भय से रहित होता है ॥ ३ ॥ जिसके जन्म समयमें चतुर्थ स्थानमें चन्द्रमा स्थित होता है वह जलके आश्रयसे धन सम्पादक, खेती स्त्री सवारी और पुत्र इनके सुखसे युक्त उस पुरुषको करताहै ॥ ४ ॥

जितेन्द्रियः सत्यवचाः प्रसन्नो धनात्मजावाप्तसमस्तसौख्यः ॥
सुसंग्रही स्यान्मनुजः सुशीलः प्रसूतिकाले तनयालयेऽब्जे ५ ॥
मन्दाग्निः स्यान्निर्दयः क्रौर्ययुक्तो नाल्पालस्यो निष्ठुरो दुष्टचित्तः
रोषावेशात्यन्तसंजातशत्रुः शत्रुक्षेत्रे रात्रिनाथे नरः स्यात ॥६ ॥

जिसके जन्म समयमें पञ्चम स्थानमें चन्द्रमा होताहै वह पुरुष जितेंद्रिय, सत्य वक्ता, बड़ा प्रसन्न, धन और पुत्रके द्वारा सुख भोगनेवाला। बड़ा सुसंग्रही और बड़ा सुशील होता है ॥ ५ ॥ जिसके छठे घरमें चन्द्रमा स्थित होवे वह पुरुष मन्द जिसकी अग्नि, बड़ा निर्दयी, क्रूरतासे युक्त, बड़ा आलसी, बड़ा निष्ठुर, दुष्ट जिसका चित्त और रोषके आवेशसे उत्पन्न हुए हैं अत्यन्त शत्रु जिसको ऐसा होता है ॥ ६ ॥

महाभिमानी मदनातुरश्च नरो भवेत्क्षीणकलेवरश्च ॥
धनेन हीनो विनयेन चन्द्रे चन्द्राननास्थानविराजमाने ॥७ ॥
नानारोगक्षीणदेहोऽतिनिःस्वश्चोरागतिक्षोणिपालाभितप्तः ॥
चित्तोद्वेगैर्व्याकुलो मानवः स्यादायुः स्थाने वर्तमाने हिमांशौ ॥८

जिस पुरुषके सप्तम घरमें चन्द्रमा होताहै वह पुरुष महा अभिमानी, कामातुर, दुर्बलांग और धन तथा विनय से रहित होता है ॥ ७ ॥ जिस मनुष्य के अष्टम स्थानमें चन्द्रमा स्थित होवे वह पुरुष नानाप्रकार के रोगोंसे क्षीण जिसका देह, अति धन रहित और चोर अग्नि तथा राजा इनसे ताप पाने वाला और चित्तके उद्वेगोंसे व्याकुल होता है ॥ ८ ॥

कलत्रपुत्रद्रविणोपपन्नः पुराणवार्ताश्रवणानुरक्तः ॥
सुकर्मसत्तीर्थपरोनरः स्याद्यदा कलावान्नवमालयस्थः ॥ ९ ॥
क्षोणोपालादर्थलब्धिर्विशाला कीर्तिर्मूर्तिः सत्वसंतोषयुक्ता ॥
चञ्चलक्ष्मीः शीलसंशालिनी स्यान्मानस्थाने यामिनीनायकश्चेत् ।

यदि चन्द्रमा नवम घरमें स्थित होताहै तव वह पुरुष धन पुत्र पत्नीसे युक्त, पुराण कथाके सुननेमें अनुरागी, सत्कर्म और उत्तम तीर्थ करनेमें तत्पर होताहै।९। और जो दशम स्थानमें चन्द्रमा स्थित होवे तव वह पुरुष राजासे धनकी प्राप्ति करने वाला, विशाल जिसकी कीर्ति, सत्व और सन्तोष इनसे युक्त, जिसकी मूर्ति, अस्थिर लक्ष्मीसे युक्त और वड़ा शीलवान् होताहै ॥ १० ॥

सन्माननानाविधवाहनाप्तिः कीर्तिश्च सद्भोगगुणोपलब्धिः ॥
प्रसन्नता लाभविराजमाने ताराधिराजे मनुजस्य नूनम् ॥ ११ ॥
हीनत्वं वै चारुशीलेन मित्रैर्वैकल्यं स्यान्नेत्रयोः शत्रुवृद्धिः ॥
रोषावेशः पूरुषाणां विशेषात्पीयूषांशौ द्वादशे वेश्मनीह ॥ १२ ॥

जिसके लाभस्थान (११) में चन्द्रमा विराजमान होताहै उस पुरुषको अनेक तरहका सन्मान और सवारी मिलती है, कीर्ति, सद्भोग, सद्गुणकी प्राप्ति और प्रसन्नताका प्राप्ति होतीहै ॥ ११ ॥ जिसके व्यय (१२) स्थान में चन्द्रमा होता है वह पुरुष दुष्ट मित्रोंसे मित्रता करनेवाला, नेत्रोंका रोगी, वहुत जिसके शत्रु और विशेष करके पुरुषों पर क्रोध करने वाला होताहै॥ ११ ॥ इति चन्द्रभावफलम् ।

अथ मङ्गलभावफलम् ।

अतिमतिभ्रमता च कलेवरं क्षतयुतं बहुसाहसमुग्रताम् ॥
तनुभृतां कुरुते तनुसंस्थितो वनिसुतो गमनागमनानिच ॥ १ ॥
अधनतां कुजनाश्रयतां तथा विमतितां कृपयातिविहीनताम् ॥
तनुभृतां विदधाति विरोधितां धननिकेतनगोवनिनन्दनः ॥ २॥

यदि मङ्गल लग्नमें वैठा होवे तो उस पुरुषकी भ्रमयुत वुद्धि होतीहै और घावोंसे युक्त शरीर होताहै, बड़ा साहसी, बड़ी उग्रता युक्त और वारंवार गमन आ-

गमन युक्त उस पुरुषको करता है ॥ १ ॥ जो दूसरे घरमें मङ्गल होताहै तब धन हीन, दुष्टोंके सङ्ग रहना, निषिद्ध बुद्धिसे युक्त, दयासे रहित होना और सत्रों से विरोध कराना, इन दोषोंसे युक्त पुरुषको करताहै ॥ २ ॥

भूपप्रसादोत्तमसौख्यमुच्चैरुदारता चारुपराक्रमश्च ॥
धनानि च भ्रातृसुखोज्झितत्वं भवेन्नराणां सहजे महीजे ॥ ३ ॥
दुःखं सुहृद्वाहनतः प्रवासो कलेवरे रुग्बलताऽबलत्वम् ॥
प्रसूतिकाले किल मङ्गलाख्ये रसातलस्थे फलमुक्तमार्यैः ॥४॥

जब मनुष्योंके जन्मलग्नसे तीसरे घरमें मङ्गल होताहै तब उस पुरुषको राजा की प्रसन्नतासे उत्तम सुख मिलताहै तथा उदारता, बड़ा पराक्रम और धन प्राप्त होतेहैं और वह पुरुष भाइयों के सुखसे हीन होताहै ॥ ३ ॥ यदि चौथे घर में मङ्गल होवे तौ उस पुरुषको सुहृदोंसे और वाहनोंकी तरफसे दुःख होता है और परदेशका रहना होताहै, देहमें रोगका बल होताहै और वह पुरुष बलहीन होता ये सब फल आर्य पुरुषोंने जन्म समयमें चतुर्थ मङ्गलका कहाहै॥४॥

कफानिलाद्याकुलता कलत्रान्मित्राच्च पुत्रादपि सौख्यहानिः ॥
मतिर्विलोला विपुलात्मजेस्मिन्प्रसूतिकाले तनयालयस्थे॥५॥
प्राबल्यं स्याज्जाठराग्नेर्विशेषाद्दोषावेशः शत्रुवर्गोपशान्तिः ॥
सद्भिः सङ्गोऽनङ्गवृद्धिर्नराणां गोत्रपुत्रे शत्रुसंस्थे प्रसूतौ ॥६॥

जन्म समयमें जब मङ्गल पञ्चम घरमें स्थित होताहै उस पुरुष को सब समय कफ वायुजन्य पीड़ा रहतीहै और स्त्रीसे मित्रसे और पुत्रसे कभी सुख नहीं मिलता है और उस पुरुषकी अति चञ्चल मति रहती है॥५॥ जिसके प्रसूति समयमें छठे घरमें मङ्गल होवे तौ उस पुरुषकी जठराग्नि प्रबल होतीहै और सब समय दोषावेश से भरा होताहै और उसके शत्रुवर्गकी अपने आप शांति होतीहैं, सत्पुरुषोंसे सङ्ग होताहै और कामदेवकी वृद्धि होती है ॥ ६ ॥

नानानर्थैर्व्यर्थचिन्तोपसर्गैर्वैरिव्रातैर्मानवं हीनदेहम् ॥
दारागारात्यन्तदुःखप्रतप्तं दारागारेऽङ्गारकोऽयं करोति ॥७॥
वैकल्यं स्यान्नेत्रयोर्दुर्भगत्वं रक्तात्पीडा नीचकर्मप्रवृत्तिः ॥
बुद्धेरान्ध्यं सज्जनानां च निन्दा रन्ध्रस्थाने मेदिनीनंदनेस्मिन्॥

जब सप्तम घरमें मंगल होता है तब नाना तरह के अनर्थोंमें प्रवृत्ति करता है और निष्प्रयोजन चिंता करता है शत्रुसमूहोंको उत्पन्न करता है और उस मनुष्य को दुर्वल देह युक्त और स्त्री, तथा घरकी तरफके दुःखोंसे प्रतप्त करता है ॥ ७ ॥ और जब मङ्गल अष्टम स्थानमें होता है तब नेत्रोंमें पीड़ा, मंदभाग्य रक्तके निमित्त से पीड़ा, नीच कर्मोंमें प्रवृत्ति, बुद्धिको मंदता और सज्जन पुरुषोंकी निंदा करनी इन सब दोषोंको करता है ॥ ८ ॥

हिंसाविधाने मनसः प्रवृत्तिं भूमीपतेर्गौरवतोग्रलब्धिम् ॥
क्षीणं च पुण्यं द्रविणं नराणां पुण्यास्थितः क्षोणिसुतः करोति॥९॥
विश्वंभरापतिसमत्वमतीव तोषं सत्साहसं परजनोपकृतौ प्रयत्नम् ॥
चञ्चद्विभूषणमणिद्विविधागमाश्च मेषूरणे धरणिजः कुरुते नराणाम्॥

नवम स्थानमें स्थित जो मङ्गलहै, वह हिंसा करनेमें मनकी प्रवृत्ति और राज पक्षसे वड़प्पन वा अधिकारकी लब्धि और पुण्य तथा धनकी क्षीणता करताहै॥९॥ जब मङ्गल दशम घरमें स्थित होता है तब उस पुरुषको राजाके समान करताहै और अत्यन्त संतोषी अच्छे कामोंमें साहसी और दूसरेके ऊपर उपकार करने में यत्न शील तथा उत्तम विभूषण और मणिवरोंका संचय करनेवाला करता है ॥ १० ॥

ताम्रप्रवालविलसत्कलधौतरक्तवस्त्रागमं सुललितानि च वाहनानि॥
भूपप्रसादसुकुतूहलमङ्गलानि दद्यादत्राप्तिभवने हि सदावनेयः११।
स्वमित्रवैरं नयनातिबाधां क्रोधाभिभूतं विमलत्वमङ्गे ॥
धनव्ययं बन्धनमल्पतेजो व्यये धराजो विदधाति नूनम् ॥१२॥

यदि मङ्गल लाभ (११) स्थानमें होताहै तब तांबा, मूंगा, सुवर्ण, रूपा और रक्त वस्त्रोंकी प्राप्ति करताहै और उत्तम मनोहर वाहनोंकी प्राप्ति होतीहै और राजाके प्रसन्न होनेसे उत्तम क्रीड़ा और मङ्गलोंको देता है ॥ ११ ॥ जब मङ्गल व्यय(१२) स्थानमें स्थित होताहै तब अपने मित्रोंसे वैर, नेत्रोंमें वाधा, क्रोधसे अभिभूत, अंगमें निर्मलता, धनका व्यय और शरारमें तेजकी हानि करताहै॥१२॥इति भौमभावः ॥

अथ बुधभावफलम् ।

शान्तो विनीतः सुतरामुदारो नरः सदाचारपरोतिधीरः ॥
विद्वान्कलाज्ञो विपुलात्मजश्च शीतांशुसुनौ जनने तनुस्थे ॥१॥
विमलशीलयुतो गुरुवत्सलः कुशलताकलितार्थमहत्सुखः ॥
विपुलकान्तिसमुन्नतिसंयुतो धननिकेतनगे शशिनन्दने ॥ २ ॥

जिस पुरुष के लग्नमें बुध होता है वह पुरुष बड़ा शांत, नम्र, अत्यन्त उदार सदाचारमें तत्पर, बडा धीर, बड़ा विद्वान् कलाओं का जानने वाला, और अनेक जिसके पुत्र ऐसा होताहै ॥ १ ॥ जिसके जन्म लग्नसे दूसरे स्थानमें बुध होता है वह पुरुष निर्मल शीलसे युक्त, अपने गुरुओंका रक्षक, चतुराई से धनसंपादन करने वाला, अति सुखी और अत्यंत कांतिमान्, और सम्यक् प्रकारसे उन्नति युक्त होता है ॥ २ ॥

साहसे निजजनैः परियुक्तश्चित्तशुद्धिरहितो हतसौख्यः ॥
मानवः कुशलितेप्सितकर्त्ता शितभानुतनयेनुजसंस्थे ॥ ३ ॥
सद्वाहनैर्धान्यधनैःसमेतः संगीतनृत्याभिरुचिर्मनुष्यः ॥
विद्याविभूषागमनाधिशाली पातालगे शीतलभानुसूनौ ॥ ४ ॥

जिस मनुष्य के तीसरे स्थानमें बुध होता है वह पुरुष अपने पुरुषों करके सहित साहस में युक्त, चित्त शुद्धि से रहित, सुखहीन, बड़ा चतुर और इच्छित कामोंका करनेवाला होता है ॥ ३ ॥ और जिस मनुष्यके चौथे स्थान में बुध होता वह मनुष्य उत्तम वाहन धान्य धनसे संपन्न, नृत्य गानमें रुचि रखनेवाला, विद्या से और भूषणोंसे युक्त, और देशांतरका जानेवाला होता है ॥ ४ ॥

पुत्रसौख्यसहितं बहुमित्रं मन्त्रवादकुशलं च सुशीलम् ॥
मानवं किल करोति सलीलं शीतदीधिति सुतः सुतसंस्थः ॥५॥
वादप्रीतिः सामयो निष्ठुरात्मा नानारातिव्रातसंतप्तचित्तः ॥
नित्यालस्यव्याकुलः स्यान्मनुष्यः शत्रुक्षेत्रे रात्रिनाथात्मजोस्मिन् ॥

जब पञ्चम भवन में बुध होता है तब पुरुषको पुत्रोंके सुखसे युक्त, बहुत जिसके मित्र, मंत्रवादमें कुशल, सुशील और क्रीड़ा करने वाला करताहै॥५॥ जब

मनुष्यके छठे घरमें बुध होता है तब वाद करनेमें जिसकी प्रीति, रोगी, निठुर जिसका मन, अनेक शत्रुओंसे संतप्त जिसका चित्त, नित्य आलस्य से व्याकुल वह मनुष्य होता है ॥ ६ ॥

चारुशीलविभवैरलंकृतः सत्यवाक्यनिरतो नरो भवेत् ॥
कामिनीकनकसूनुसंयुतः कामिनीभवनगामिनीन्दुजे ॥ ७ ॥
भूपप्रसादाप्तसमस्तसंपन्नरो विरोधी सुतरां सुगर्वः ॥
सर्वप्रयत्नान्यकृतापहर्त्ता रन्ध्रेभवेच्चन्द्रसुतः प्रसूतौ ॥ ८ ॥

जिस मनुष्यके लग्नसे सप्तम घरमें बुध होता है वह पुरुष सुन्दर शील और सुन्दर वैभवोंसे अलंकृत, सत्य वाक्यमें निरत और उत्तम स्त्री और पुत्रोंसे संयुत होता है ॥ ७ ॥ जिसके लग्नसे अष्टम भवन में बुध होता है वह राजानुग्रह से सम्पत्ति प्राप्त होनेवाला सबसे विरोध करनेवाला, अतिशय गर्वीला और सब प्रयत्नोंसे दूसरेके सिद्ध किये धनादिकका हरनेवाला होता है ॥ ८ ॥

उपकृतिकृतिविद्याचारुजातादरःस्या
दनुचरधनसूनुप्राप्तहर्षोविशेषात ॥
वितरणकरणोद्यन्मानसो मानवश्चे
दमृतकिरणजन्मा पुण्यधामागमोयम् ॥९॥
ज्ञानप्रज्ञाश्रेष्ठकर्मा मनुष्यो नानासम्पत्संयुतो राजमान्यः ॥
चञ्चल्लीलावाग्विलासाधिशाली मानस्थाने बोधने वर्तमाने॥१०॥

जिस मनुष्यके नवम स्थानमें बुध होता है वह मनुष्य उपकार करने में और विद्यामें आदर युक्त, मृत्यु धन और पुत्रके द्वारा हर्षसंयुक्त और देनेमें जिसका मन ऐसा होता है ॥ ९ ॥ जिस पुरुषके लग्नसे दशम बुध होता है वह बड़ा ज्ञानी बड़ा बुद्धिमान ,श्रेष्ठ कर्मका करने वाला, अनेक सम्पत्तियोंसे संयुक्त, राजाओं को मान्य, सुन्दर लीला और सुन्दर वाग्विलाससे शोभा पानेवाला होता ह ॥ १० ॥

भोगासक्तोऽत्यन्तवित्तो विनीतो नित्यानन्दश्चारुशीलो बलिष्ठः॥
नाना विद्याभ्यासकृन्मानवःस्याल्लाभस्थाने नन्दने शीतभानोः११॥
कलाविहीनः सुजनोज्झितश्च स्वकार्यदक्षो विजितात्मपक्षः ॥

धूर्तो नितान्तं मलिनो नरः स्याद्व्ययोपपन्नेद्विजराजसूनौ ॥१२॥

जिसके ग्यारहवें घरमें बुध होता है वह पुरुष भोगोंके भोगनेमें आसक्त, बड़ा धनवान, बड़ा नम्र, सदा प्रसन्न, अच्छा जिसका स्वभाव बड़ा बलवान् और अनेक विद्याओंके अभ्यास का करने वाला होता है ॥ ११ ॥ जिस पुरुषके लग्न से बारहवें घरमें बुध होता है वह पुरुष सब कलाओंसे रहित, अपने सुजनोंसे रहित, अपने काम करने में कुशल, अपने लोगोंका जीतने वाला; बड़ा धूर्त और सब समय मैला रहने वाला होता है ॥ १२ ॥ इति बुधभावफलम् ॥

अथ गुरुभावफलम् ।

विद्यासमेतोऽभिमतो हि राज्ञां प्राज्ञः कृतज्ञो नितरामुदारः ॥
नरो भवेच्चारुकलेवरश्च तनुस्थिते चित्रशिखण्डिसूनौ ॥ १ ॥
सद्रूपविद्यागुणकीर्तियुक्तः संत्यक्तवैरोपि नरो गरीयान् ॥
त्यागी सुशीलो द्रविणेन पूर्णो गीर्वाणवन्द्ये द्रविणोपयाते ॥२॥

जिस मनुष्यके जन्म समयमें लग्नमें वृहस्पति होताहै वह पुरुष विद्यासे संयुक्त राजा जिसकी चाह करै, बड़ा बुद्धिमान उपकारका जाननेवाला, अतिशय उदार, दिव्य जिसका देह ऐसा होताहै ॥ १ ॥ जिस पुरुषके लग्नसे दूसरे घरमें वृहस्पति होता है वह सुन्दर विद्या गुण और सत्कीर्त्तिसे युक्त, सवोंसे वैर रहित, बड़ा श्रेष्ठ, त्यागी, सुशील और धन संपन्न होता है ॥ २ ॥

सौज्यन्यहीनः कृपणः : कृतघ्नः कान्तासुतप्रीतिविवर्जितश्च ॥
नरोऽग्निमान्द्याबलतासमेतः पराक्रमी शक्रपुरोहितेस्मिन् ॥३॥
सन्माननानाधनवाहनाद्यैः संजातहर्षः पुरुषः सदैव ॥
नृपानुकम्पासमुपात्तसंपद्दम्भोलिभृन्मन्त्रिणि भूतलस्थे ॥ ४ ॥

जिस पुरुषके तृतीय भवन में वृहस्पति होता है वह पुरुष बड़ा दुष्ट, बड़ा कृपण, बड़ा कृतघ्न, स्त्री पुत्रोंसे प्रीति रहित और अग्नि, मंद होने से निबलाई युक्त होता है ॥ जिसके चतुर्थ भवन में वृहस्पति बैठा होवे वह पुरुष सदा सन्मान नाना प्रकारका धन और सवारी आदिकोंसे हर्षित होता है और राजानुग्रह से संपत् प्राप्त होनेवाला होताहै ॥ ४ ॥

सन्मित्रपुत्रोत्तममन्त्रशास्त्रमुख्यानि नाना धनवाहनानि ॥
दद्याद्गुरुः कोमलवाग्विलासं प्रसूतिकाले तनयालयस्थः ॥ ५ ॥
संगीतविद्याहृतचित्तवृत्तिः कीर्तिप्रियोऽरातिजनप्रहर्ता ॥
प्रारब्धकार्यालसकृन्नरः स्यात्सुरेन्द्रमन्त्री यदि शत्रुसंस्थः ॥ ६ ॥

जिसके पञ्चम भवन में स्थित गुरु होताहै वह उत्तम मित्र पुत्र और उत्तम मंत्रशास्त्र हैं मुख्य जिन्होंमें ऐसे नाना प्रकारके धन वाहनों का देने वाला, वहुतों का गुरु और वाणी बोलने वाला होता है ॥ ५ ॥ जिसके छठे घरमें वृहस्पति होता है वह पुरुष संगीत विद्यामें चित्त लगाने वाला, कीर्ति जिसको प्यारी, वैरियों को मारनेवाला और आरम्भ किये काममें आलस्य करने वाला होताहै ॥ ६ ॥

शास्त्राभ्यासासक्तचित्तो विनीतः कान्तावित्तात्यन्तसंजातसौख्यः॥
मन्त्री मर्त्यः काव्यकर्त्ता प्रसूतौ जायाभावे देवदेवाधिदेवे ॥७॥
प्रेष्यो मनुष्यो मलिनोऽतिदीनोविवेकहीनो विनियोज्झितश्च ॥
नित्यालसः क्षीणकलेवरः स्थादायुर्विशेषो वचसामधीशे ॥ ८ ॥

जिसके जन्म लग्नसे सप्तम घरमें वृहस्पति होताहै वह पुरुष शास्त्रके अभ्यासमें आसक्त जिसका चित्त ऐसा, वड़ा नम्र, स्त्री पुत्र धनसे सुखी, मन्त्री और कविता करने वाला होताहै ॥ ७ ॥ जिस मनुष्यके अष्टम घरमें वृहस्पति होतीहै वह पुरुष दूत पनेके कामका करने वाला, अति मलीन, अति दीन, ज्ञानशून्य, विनयरहित, नित्य आलकसी और दुर्वल जिसका शरीर ऐसा होताहै ॥८॥

नरपतेः सचिव सुकृती कृती सकलशास्त्रकलाकलनादरः ॥
व्रतकरो हि नरो द्विजतत्परः सुरपुरोधसि वै तपसिस्थिते ॥ ९ ॥
सद्राजचिह्नोत्तमवाहनानि मित्रात्मजश्रीरमणीसुखानि ॥
यशोभिवृद्धिं वहुधा विधत्ते राज्ये सुरेज्यो विजयं नराणाम् ॥ १० ॥

जिसके लग्नसे नवम वृहस्पति वैठताहै वह राजा का मंत्री, सुकृत कर्मोंका करने वाला, वड़ा पवित्र, सव शास्त्रकलाओंके विचार करनेमें आदर करनेवाला, अनेक व्रतोंका करने वाला और ब्राह्मणोंकी सेवा करनेवाला होताहै ॥ ९ ॥जिस मनुष्यके

दशम बृहस्पति होता है वह उत्तम राजचिन्हों से युक्त, उत्तम सवारियोंका रखने वाला मित्र पुत्र लक्ष्मी और स्त्री सुखसे संपन्न होताहै, बहुत प्रकारसे यशकी वृद्धि को प्राप्त होताहै और सब मनुष्योंका विजय करता है ॥ १० ॥

सामर्थ्यमर्थागमनानि नूनं सद्वस्त्ररत्नोत्तमवाहनानि ॥
भूपप्रसादं कुरुते नराणां गीर्वाणवन्द्यो यदि लाभसंस्थः॥११॥
नानाचिन्तोद्वेगसंजातकोपं पापात्मनं सालसं त्यक्तलज्जम् ॥
बुद्ध्या हीनं मानवं मानहीनं वागीशोऽयं द्वादशस्थः करोति॥१२

जिसके लग्नसे ग्यारहवें घरमें बृहस्पति स्थित होताहै उसको सामर्थ्य, धनागम, उत्तम रत्न, उत्तम सवारी, उत्तम वस्त्र देताहै और उसको राजाकी प्रसन्नता का पात्र करता है ॥ ११ ॥ जिसके लग्नसे बारहवें घरमें बृहस्पति बैठताहै उसको नाना प्रकारकी चिंतासे युक्त, सब समय क्रोधयुक्त, पापमें मन रखनेवाला, निर्लज्ज, बुद्धि से हीन और मानरहित करता है ॥ १२ ॥ इतिबृहस्पतिभावफलम् ।

अथ शुक्रभावफलम् ।

बहुकलाकुशलो विमलोक्तिकृत्सुवदनो मदनानुभवः पुमान् ।
अवनिनायकमानधनान्वितो भृगुसुते तनुभावगते सति ॥१॥
सदान्नपानाभिरतं नितान्तं सद्वस्त्रभूषाधनवाहनाढ्यम् ॥
विचित्रविद्यं मनुजं प्रकुर्याद्धनोपपन्नो भृगुनन्दनोयम् ॥ २ ।

जिसके लग्नमें शुक्र होताहै वह पुरुष अनेक कलाओंमें कुशल, निर्मल वचन कहने वाला, सुन्दर मुखवाला, कामदेवका अनुभव करनेवाला, और राजाके द्वारा मान और धनसे युक्त होताहै ॥ १ ॥ जिसके लग्नसे द्वितीय भवनमें शुक्र होताहै उस पुरुषको सदा अन्नपानमें प्रीति निरंतर उत्तम धन वस्त्र भूषण और वाहन इनसे परिपूर्ण और विचित्र विद्याओंका जाननेवाला करता है ॥ २ ॥

कृशांगयष्टिः कृपणो दुरात्मा द्रव्येण हीनो मदनातुरश्च ॥
सतामनिष्टो बहुदुष्टचेष्टो भृगोस्तनूजे सहजे नरः स्यात ॥ ३ ॥
मित्रक्षेत्रग्रामसद्वाहनानां नाना सौख्यं वन्दनं देवतानाम् ॥
नित्यानन्दं मानवानां प्रकुर्याद्दैत्याचार्यस्तुर्यभावस्थितोऽयम् ॥४॥

जिसके लग्नसे तृतीय भवनमें शुक्र होताहै वह पुरुष दुर्बल शरीर; वड़ा कृपण, दुष्टांतःकरण, द्रव्यसे रहित, कामदेव के तापसे तप्त, भले मनुष्योंका अपराध करने वाला, और वड़ी दुष्ट चेष्टावाला होताहै ॥ ३ ॥ जिस पुरुषके लग्नसे शुक्र चतुर्थ भवनमें होताहै उस पुरुषको मित्र, क्षेत्र, ग्राम और उत्तम सवारियोंका तरफ से सुखी, देवताओंको प्रणामादि करने वाला और मनुष्योंमें नित्य आनन्द भोगने वाला करता है ॥ ४ ॥

सकलकाव्यकलाभिरलंकृतस्तनयवाहनधान्यसमन्वितः ॥
नरपतेर्गुरुगौरवभाङ्नरो भृगुसुते सुतसद्मनि संस्थिते ॥ ५ ॥
अभिमतो न भवेत्प्रमदाजने ननु मनोभवहीनतरो नरः ॥
विबलताकलितः किल संभवेद्भृगुसुतेऽरिगतेऽरिभयान्वितः ॥ ६ ॥

जिस मनुष्यके लग्नसे पञ्चम घरमें शुक्र बैठताहै वह पुरुष सव काव्यकलाओं से सुशोभित, पुत्र, वाहन (सवारी) धन धान्यसे युक्त, और राजासे सत्कार पानेवाला होताहै ॥ ५ ॥ जिसके लग्नसे छठे घरमें शुक्र बैठता है वह पुरुष स्त्री जनोंको अप्रिय अत्यन्त क्षीणवीर्य निर्बलतासे व्याप्त होताहै॥६॥

वहुकलाकुशलो जलकेलिकृद्रतिविलासविधानविचक्षणः ॥
अतितरां नटिनीकृतसौहृदः सुनयनाभवने भृगुनन्दने ॥
प्रसन्नमूर्तिर्नृपलब्धमानः शठोऽतिनिःशङ्कतरः सगर्वः ॥
स्त्रीपुत्रचिन्तासहितः कदाचिन्नरोऽष्टमस्थानगते सिताख्ये ॥ ८ ॥

जिसके लग्नसे सप्तम घरमें शुक्र होताहै वह पुरुष अनेक कलाओं में वड़ा कुशल, जलविहार करने वाला, रति करने के विधानों में वड़ा चतुर, और नटिनी स्त्रियोंसे अत्यन्त स्नेह करने वाला होताहै॥७ ॥ जिस पुरुषके लग्नसे अष्टम घरमें शुक्र बैठताहै वह पुरुष सदा प्रसन्न मूर्ति, राजासे मान पानेवाला, वड़ा शठ, अत्यंत ही निःशङ्क, वड़ा गर्वीला; और स्त्री पुत्रकी तरफसे सदा चिंता युक्त होताहै॥८॥

अतिथिगुरुसुरार्चातीर्थयात्रार्पितार्थः
प्रतिदिनधनयानात्यन्तसंजातहर्षः ॥
मुनिजनसमवेषः पूरुषस्त्यक्तरोषो
भवति नवमभावे संभवे भार्गवेस्मिन् ॥ ९ ॥

सौभाग्यसम्मानविराजमानः स्नानार्चनध्यानमना धनाढ्यः॥
कान्तासुतप्रीतिरतीव नित्यं भृगोः सुते राज्यगते नरः स्यात्॥१०

जिस लग्नसे नवम भवनमें शुक्र होता है वह पुरुष अतिथि, गुरु और देवताओंकी पूजा करनेवाला, तीर्थयात्राके लिये धन व्यय करनेवाला, नित्य वनको जानेसे अत्यन्त हर्षित, ऋषियोंकासा वेष धारण करनेवाला और क्रोधरहित होता है ॥ ९ ॥ जिस मनुष्यके दशम स्थानमें शुक्र होताहै वह सौभाग्य और सन्मानसे शोभित, स्नान पूजन और ध्यानमें मन लगानेवाला, धनसे परिपूर्ण, और स्त्री तथा पुत्रमें अत्यन्त प्रीति करनेवाला होताहै॥१०॥

सद्गीतनृत्यादरता नितान्तं नित्यं च चिन्तागमनानि नूनम् ॥
सत्कर्मधर्मागमचित्तवृत्तिर्भृगोः सुतो लाभगतो यदि स्यात् ॥११॥
संत्यक्तसत्कर्मगतिर्विरोधी मनोभवाराधनमानसश्च ॥
दयालुतासत्यविवर्जितः स्यात्काव्ये प्रसूतौ व्ययभावयाते ॥१२॥

जिसके लग्नसे ग्यारहवें घरमें शुक्र होता है वह पुरुष संगीत नृत्यमें निरंतर आदर रखने वाला, नित्यही गमनकी चिन्ता करनेवाला, और सत्कर्म, धर्मशास्त्रमें चित्तकी वृत्ति रखनेवाला होताहै॥१२॥जिस के लग्नसे बारहवें भवनमें शुक्र बैठता है वह पुरुष अच्छी तरहसे सत्कर्म गतिका त्यागने वाला, सबोंसे विरोध रखने वाला, कामदेवके आराधनमें मनका रखनेवाला और दयालुता तथा सत्यसे रहित होताहै ॥ १२ ॥ इति शुक्राभावफलम् ॥

अथ शनिभावफलम् ।

प्रसूतिकाले नलिनीशसूनुः स्वोच्चत्रिकोणर्क्षगतो विलग्ने ॥
कुयान्नरं देशपुराधिनाथं शेषेष्वभद्रं सरुजं दरिद्रम् ॥ १ ॥
अन्यालयस्थो व्यसनाभिभूतो जनोज्झितः स्यान्मनुजश्च पश्चात्।
देशान्तरे वाहनराजमानो धनाभिधाने भवनेर्कसूनौ ॥२॥

जिसके जन्म समयमें लग्नमें शनि अपने उच्चका होकर अथवा मूल त्रिकोणका होताहै उस पुरुषको देशका या पुरका स्वामी करता है यदि उच्च त्रिकोण से व्यतिरिक्त किसी अन्य राशिका होकर लग्नमें बैठताहै तो उस पुरुषको अमङ्गलरूप रोगी और दरिद्री करता है ॥ १ ॥ जिस मनुष्यके लग्नसे दूसरे घरमें शनि

होता है वह पुरुष अपना घर छोड़कर अन्योंके घरमें रहनेवाला, अनेक व्यसनोंसे युक्त, जिसका साथी कोई नहीं, देशांतरमें सञ्चारी और राजमानका प्राप्त होने वाला होता है ॥ २ ॥

राजमानशुभवाहनयुक्तो ग्रामपो बहुपराक्रमशाली ॥
पालको भवति भूरि जनानां मानवो हि रविजे सहजस्थे ॥३॥
पित्तानिलक्षीणबलं कुशीलमालस्ययुक्तं कलिदुर्बलाङ्गम् ॥
मालिन्यभाजं मनुजं विदध्याद्रसातलस्थो नलिनीशजन्मा ॥४॥

जिसके लग्नसे तृतीय घरमें शनि स्थित होताहै वह पुरुष राजासे मान प्राप्त करता है और शुभ वाहनोंसे युक्त होतो है और ग्रामका पालन करनेवाला, बड़ा पराक्रमी, और बहुतसे मनुष्योंका पालन करने वाला होता है ॥ ३ ॥ जिसके चतुर्थ भवन में शनि बैठता है उस पुरुषको वायु पित्तके निमित्तसे बलहीन, खोटे स्वभाव वाला, आलस्य से युक्त, कलह निमित्तसे दुर्बल अंगवाला, और मलिनता युक्त करता है ॥ ४ ॥

सदागदक्षीणतरं शरीरं धनेन हीनत्वमनङ्गहानिम् ॥
प्रसूतिकाले नलिनीशपुत्रः पुत्रास्थितः पुत्रभयं करोति ॥ ५ ॥
विनिर्जितारातिगणो गुणज्ञः सुज्ञाभ्यनुज्ञापरिपालकः स्यात् ॥
पुष्टाङ्गयष्टिः प्रबलोदराग्निर्नरोऽर्कपुत्रे सति शत्रुसंस्थे ॥ ६ ॥

जिसके लग्नसे पंचम घरमें शनि होताहै उस पुरुषको सदा रोगसे दुर्बल देहयुक्त, धनसे रहित, हीन वीर्य और पुत्रकी तरफसे भययुक्त करता है ॥ ५ ॥ जिसके लग्नसे छठे घरमें शनि होता है वह पुरुष वैरियोंके गणको जीतनेवाला, गुणोंका जाननेवाला सुज्ञ जनोंका वचन पालन करनेवाला, पुष्ट अंगवाला और प्रबल जठराग्निवाला होता है ॥ ६ ॥

आमयेन बलहीनतां गतो हीनवृत्तिजनचित्तसंस्थितिः ॥
कामिनीभवनधान्यदुःखितः कामिनीभवनगे शनैश्चरे ॥ ७ ॥
कृशतनुर्ननु दद्रुविचर्चिकाप्रभवतो भयतोपविवर्जितः ॥
अलसतासहितो हि नरो भवेन्निधनवेश्मनि भानुसुते स्थिते ॥८॥

जिसके लग्नसे सप्तम शनि होता है वह पुरुष रोगसे बलहीन, हीन वृत्तिवाले मनुष्योंमें चित्त रखनेवाला और अत्यन्त आलसी होता है ॥ ७ ॥ जिसके अष्टम भवनमें शनि होताहै वह पुरुष अत्यन्त दुर्बलांग, दाद और विचर्चिका आदि रोगों से युक्त, भय और सन्तोष से (रहित) और अत्यन्त आलसी होताहै ॥ ८ ॥

धर्मकर्मसहितोऽविकलाङ्गो दुर्मतिर्हि मनुजोतिमनोज्ञः ॥
संभवस्य समये यदि कोणस्त्रित्रिकोणभवने यदि संस्थे ॥ ९ ॥
राज्ञः प्रधानमतिनीतियुतं विनीतं सग्रामवृन्दपुरभेदनकाधिकारम्
कुर्यान्नरं सुचतुरं द्रविणेन पूर्णं मेषूरणे हि तरणेस्तनुजः करोति॥१०॥

जिसके जन्म समयमें लग्नसे नवम शनि होता है वह पुरुष धर्मकर्म से युक्त, पूर्णाङ्ग, दुर्मति, सबको अत्यन्त प्रिय अथवा सबकी मनकी बातका जानने वाला होताहै ॥ ९ ॥ जिसके लग्नसे दशम स्थानमें शनि होता है उसको राज्यमन्त्री की बुद्धि से और नीति से युक्त, बड़ा नम्र, ग्राम समूह और नगर इनके भेदन करने का अधिकारी, बड़ा चतुर और धनसे परिपूर्ण करताहै ॥ १० ॥

कृष्णाश्वानामिन्द्रनीलोर्णिकानां नाना चञ्चद्वस्तुदन्तावलानाम् ।
प्राप्तिं कुर्यान्मानवानां बलीयान् प्राप्तिस्थाने वर्तमानेर्कसूनौ॥११॥
दयाविहीनो विधनो व्ययार्तः सदाऽलसो नीचजनानुयातः ॥
नरोङ्गभंगोज्झितसर्वसौख्यो व्ययस्थिते भानुसुते प्रसूतौ ॥ १२ ॥

यदि शनि ग्यारहवें घरमें हो और बलवान हो तो पुरुष काले रङ्गके घोड़ों की, इन्द्र नीलमणियों की, काले रङ्गके ऊर्ण वस्त्रों की और अनेक उत्तम वस्तुओं की तथा हाथियोंकी प्राप्ति करने वाला होता है ॥ ११ ॥ जिस मनुष्यके लग्न से बारहवें घरमें शनि होताहै वह बड़ा निर्दयी, धन रहित खर्चाके मारे पीड़ित, सदा आलसी, नीचोंके साथ रहनेवाला और अङ्ग भङ्ग होनेसे, सब सुखोंसे,रहित होताहै।

तन्वादिस्थशनेः प्रोक्तं यच्च भावोद्भवं फलम् ॥
राहोस्तदेव विज्ञेयं मुनीनामपि संमतम् ॥ १३ ॥

स्वोच्चस्थितः पूर्णफलं विधत्ते स्वर्क्षे हितर्क्षे फलार्धमेव ॥
फलांघ्रिमात्रं रिपुमन्दिरस्थ श्चास्तं प्रयातः खचरो न किंचित् ॥

जो कुछ लग्न आदि बारह भावोंमें बैठनेका शनिका फल कहाहै वही फल राहुकाभी समझनाऐसा सब मुनियोंका मतहै ॥ १३ ॥ अब ये सब ग्रहोंके विषय में फल समझना जो ग्रह अपने उच्चका होकर स्थित होता है उसका पूर्ण फल समझना और जो स्वक्षेत्रमें या मित्र क्षेत्रमें होताहै उसका अर्ध फल समझना और जो ग्रह शत्रुक्षेत्रमें होताहै उसका चतुर्थांश फल होताहै और यदि वही ग्रह अस्तं-गत हो तौ फिर उसका बिलकुल फल नहीं होताहै ये शुभाशुभ दोनों फलों के विषयमें समझना ॥ १४ ॥

अथ राहुफलम् ।

लग्ने तमोदुष्टमतिस्वभावं नरं च कुर्यात्स्वजनानुवञ्चकम् ॥
शीर्षव्यथाकामरसेन संयुतं करोति वादे विजयं सरोगम् ॥ १ ॥
धनगते रविचन्द्रविमर्दने मुखरताङ्कितभावमथो भवेत् ॥
धनविनाशकरो हि दरिद्रतां खलु तदा लभते मनुजोटनम् ॥२॥

जिस मनुष्यके लग्नमें राहु होताहै उसको वह दुष्टबुद्धि और दुष्टस्वभाव वाला, स्वजनोंको ठगने वाला और शिरमें व्यथा और कामरससे संयुक्त करताहै ॥ १ ॥ यदि राहु लग्नमे द्वितीय स्थानमें स्थित हो तौ वह पुरुष चुगलखोर, धननाश से दरिद्री और फिरने वाला होताहै ॥ २ ॥

दुश्चिक्येऽरिभवोद्भवं वितनुते लोके यशस्वी नरः
श्रेयो वापि भवं तदाहि लभते सौख्यं विलासादिकम् ॥
भ्रातॄणां निधनं पशोश्च मरणं दारिद्र्यभावैर्युतं नित्यं
सौख्यगणैः पराक्रमयुतं यत्कुर्याच्च राहुः सदा ॥ ३ ॥
सुखगते रविचन्द्रविमर्दने सुखविनाशनतां मनुजो लभेत् ॥
स्वजनतां सुतमित्रसुखं नरो न लभते च सदा भ्रमणं नृणाम्॥

यदि राहु तीसरे घरमें स्थित हो तौ मनुष्य अपने शत्रुओंसे कल्याणको प्राप्त होता है, लोक में यशस्वी होता है, सुख और विलास को प्राप्त होता है,

उसके भाई तथा पशुओं मर जातेहैं और दरिद्री तथा सुखसमूह और पराक्रम से युक्त रहता है ॥ ३ ॥ जब राहु चतुर्थ स्थानमें होता है तब पुरुष सुखके विनाश को प्राप्त होताहै और उसे स्वजनता और पुत्र मित्र का सुख नहीं होता है तथा वह सदा भ्रमण करता है ॥ ४ ॥

सुखगतो न हि मित्रविवृद्धतामुदरशूलविलासविपीडनम् ॥
खलु तदा लभते मनुजो भ्रमं सुतगते रविचन्द्रविमर्दने ॥५॥
शत्रुक्षयं द्रव्यसमागमं च पशूत्थपीडा कटिपीडनं च ॥
समागमोम्लेच्छजनैर्महाबलं प्राप्नोति जन्तुर्यदि षष्ठगे तमे ॥ ६ ॥

यदि राहु पंचम घरमें स्थित हो तौ उसके मित्र नही बढ़ते हे, उदर में शूल रहताहै, उसको कही आनन्द प्राप्त नहीं होता है और उसके मनमें सदा भ्रम रहता है ॥ ५ ॥ छठे घरमें यदि राहु हो तौ पुरुष शत्रुनाश, द्रव्यकी प्राप्ति, पशुओं की पीड़ा, कमर में पीड़ा, म्लेच्छ मनुष्योंसे समागम और बहुत बल इन सबोंको प्राप्त होता है ॥ ६ ॥

जायां विरोधं खलु वा प्रणाशं प्रचण्डरूपामयकोपयुक्ताम् ।
विवादशीलामथ रोगयुक्तां प्राप्नोति जन्तुर्मदने तमे च ॥७॥
अनिष्टनाशं खलु गुह्यपीडां प्रमेहरोगं वृषणस्य वृद्धिम् ॥
प्राप्नोति जन्तुर्विकलारिलाभं सिंहीसुते वा खलु मृत्युगेहे ॥ ८ ॥

जिस मनुष्यके सप्तम घरमें राहु होता है उस मनुष्यका स्त्रीसे वियोग अथवा उसको स्त्रीका मरण होताहै और यदि स्त्री जीती रहे तौ वह प्रचंड रूपवाली रोग और कोप से युक्त और कलह प्रिया होती है ॥ ७ ॥ जिस मनुष्यके अष्टम घरमें राहु होता है उसके अनिष्टोंका नाश होता है और उसकी गुह्य इन्द्रियमें पीड़ा प्रमेह रोग, अंडकोशकी वृद्धि होती है तथा उसके विकल हुए शत्रुका लाभ होता है॥८॥

धर्मार्थनाशः किल धर्मगे तमे सुखाल्पता वै भ्रमणं नरस्य ॥
दरिद्रता बन्धुसुखाल्पता च भवेच्च लोके किल देहपीडा ॥ ९ ॥
पितुर्नो सुखं कर्मगो यस्य राहुः स्वयं दुर्भगः शत्रुनाशं करोति ॥
रुजो वाहने वातपीडां च जन्तोर्यदा सौख्यगो मीनगः कष्टभाजम्

जिसके लग्नसे नवम स्थानमें राहु होताहै उस मनुष्यके धर्म अर्थका नाश, सुखकी अल्पता, भ्रमण दरिद्रता, बन्धु सुखकी अल्पता और देहमें पीड़ा होती है ॥ ९ ॥ जिसके लग्नसे दशम राहु होता है उसको पितासे सुख नहीं होता है और वह आप मन्दभागी होता है, उसके शत्रुओंका नाश होता है, उसको सवारिओंको रोग होता है और उसके देह में वातकी पीड़ा होती है ॥ १० ॥

लाभे गते यदि तमे सकलार्थलाभं
सौख्याधिकं नृपगणाद्विविधं च मानम् ॥
वस्त्रादिकाञ्चनचतुष्पदसौख्यभावं
प्राप्नोति सौख्यविजयं च मनोरथं च ॥ ११ ॥
नेत्रे च रोगं किल पाद घातं प्रपञ्चभावं किल वत्सलत्वम् ॥
दुष्टे रतिं मध्यमसेवनं च करोति योनं व्ययगे तम च ॥ १२ ॥

जिस मनुष्यके ग्यारहवें घरमें राहु होता है उसको सकल धनोंका लाभ, सुख का अधिकता, राज्य से अनेक प्रकार के सन्मान और वस्त्रादि सुवर्ण और चतुष्पद इनका लाभ तथा सुख, विजय और मनोरथ प्राप्त होता है ॥११॥ जिसके बारहवें घरमें राहु स्थित होता है उस पुरुषके नेत्रोंमें और पावोंमें रोग होताहै, उसके मनमें प्रपंच और वत्सलता होती है तथा वह दुष्ट कर्ममें प्रीति करनेवाला और मध्यम जातिकी नौकरी करनेवाला होता है ॥ १२ ॥ इति राहु फलम् ॥

अथ केतुफलम् ।

यदा लग्नगश्चेच्छिखी सूत्रकर्त्ता सरोगादिभोगोभयं व्यग्रता च॥
कलत्रादिचिन्ता महोद्वेगता च शरीरे प्रवाधा व्यथा मारुतस्य॥१॥
धने चेच्छिखी धान्यनाशो धनं च कुटुम्बाद्विरोधो नृपाद्व्यचिन्त॥।
मुखे रोगता संततं स्यात्तथा च यदा स्वे गृहेसौम्यगेहेऽतिसौख्यम्॥

जब केतु लग्नमें होता है तब वह पुरुष सूतके कामका करनेवाला, रोगोंसे युक्त भोगोंका भोगने वाला भयभीत और व्यग्रता, स्त्री आदिकी चिंता, उद्वेग शरीरमें वाधा तथा वातव्यथासे युक्त होता है ॥१॥ जिसके लग्नसे द्वितीय घरमें केतु स्थित होताहै उस पुरुषके धन धान्यका नाश, कुटुम्बसे विरोध, राजाके निमित्तसे

द्रव्यकी चिंता और मुखमें निरन्तर रोग होताहै और यदि केतु अपने घरमें या सौम्य ग्रहके घरमें होताहै तौ उस पुरुषको अत्यन्त सुख मिलताहै ॥ २ ॥

शिखी विक्रमे शत्रुनाशं च वादं धनं भोगमैश्वर्यतेजोऽधिकं च ॥
भवेद्बन्धुनाशः सदा बाहुपीडा सुखं स्वोच्चगेहे भवोद्वेगता च॥३॥
चतुर्थे च मातुः सुखं नो कदाचित्सुहृद्वर्गतः पित्ततो नाशमेति ॥
शिखी बन्धुहीनःसुखं स्वोच्चगेहे चिरं नैति सर्वैः सदा व्यग्रता च४॥

जिसके लग्नसे तीसरे घरमें केतु होताहै उसके शत्रुओंका नाश, और परस्पर में विवाद करताहै, धन, भोग, ऐश्वर्य और तेजको अधिक करताहै और भाईबन्धु का नाश, सदा भुजाओं में पीड़ा देताहै और यदि अपने उच्चका होवे तौ सुख और उद्वेग होता है॥३॥जिस मनुष्यके चतुर्थ स्थानमें केतु होताहै उसको माता और सुहृद्वर्गसे कभी सुख नहीं मिलता है और वह पित्तकी बीमारी से किसी दिन मरजाता है और भाईबन्धुओंसे हीन होताहै और यदि केतु उच्चका होकर चतुर्थ घरमें स्थित होवे तौ फिर उस पुरुषको कभी व्यग्रता नहीं होती है ॥ ४ ॥

यदा पञ्चमे यस्य केतुश्च जातः स्वयं स्वोदरे घातपातादिकष्टम् ॥
स्वबन्धुप्रियासंततिः स्वल्पपुत्रः सदा संभवे द्वीर्धयुक्तोनरश्च॥५॥
शिखी यस्य षष्ठे स्थितो वैरिनाशो भवेन्मातुलात्पक्षतो मानभङ्गः॥
चतुष्पत्सुखं द्रव्यलाभो नितान्तं न रोगस्य देहेसदा व्याधिनाशः॥६

जिसके जन्म लग्नसे पंचम घरमें केतु होता है वह अपने आप अपने उदरमें घात पात आदि निमित्त से कष्ट करता है और बन्धु स्त्री संततिसे रहित करता है और वह पुरुष सदा वीर्ययुक्त होता है ॥ ५ ॥ जिस पुरुषके जन्म लग्नसे छठे घरमें केतु होताहै उसके शत्रुओंका नाश होजाता है और मामाके पक्षसे मान भङ्ग होता है चौपाये पशुओंसे सुख और निरन्तर द्रव्यका लाभ होता है उसके देहमें कभी रोग नहीं होता है और सदा व्याधिका नाश होता है ॥ ६ ॥

शिखी सप्तमे भागतश्चित्तवृत्तिं सदा वित्तनाशोऽथवावारिभृतः ॥

भवेत्कीटगे सर्वदालाभकारीकलत्रादिपीडा व्ययो व्यग्रता च ।७।
गुदे पीडनं वाहनैर्द्रव्यलाभं यदा कीटगे कन्यके युग्मगे वा ॥
भवेच्छिद्रगे राहुछायादयास्यादजेगोलिगे जायते चालिलाभः।८।

जिस मनुष्यके लग्नसे सप्तम घरमें केतु होताहै उसकी सदा मार्गके चलनेमें चित्तकी वृत्ति रहतीहै और उसके धनका नाश होताहै और सब शत्रुभूत होते हैं यदि केतु वृश्चिक का होवे तब सब समय लाभका कराने वाला होताहै वह पुरुष स्त्री आदिकी पीड़ासे खरच करताहै और सदा व्यग्रचित्त होताहै ॥ ७ ॥ जिसके लग्नसे अष्टम केतु होताहै उस मनुष्यकी गुदामें पीड़ा होतीहै और वाहनों से द्रव्य का लाभ होताहै और यदि केतु, वृश्चिक, कन्या और मिथुन इनमेंसे किसी राशि का होवे तौ अति लाभ होताहै परन्तु राहुकी छायासे होताहै ॥ ८ ॥

यदा धर्मगाः केतवः क्लेशनाशः सुतार्थी भवेन्म्लेच्छतो भाग्यवृद्धिः।
सहेतुर्व्यथां बाहुरोगं विधत्ते तपोदानतो हास्यवृद्धिं करोति।९।
पितुर्नोसुखं कर्मगो यस्य केतुः स्वयं दुर्भगः शत्रुनाशं करोति।
रुजोवाहने वातपीडा च जन्तोर्यदा कर्मगः सौख्यगः कष्टभाजम्।

जब नवम स्थानमें केतु होताहै तब वह मनुष्यके क्लेशोंका नाशक होताहै और वह मनुष्य पुत्र की चाह वाला, म्लेच्छ द्वारा भाग्यकी वृद्धि से युक्त होताहै और किसी निमित्तसे व्यथायुक्त होताहै और भुजाओंमें रोग युक्त होताहै और तप तथा दानसे उस पुरुषकी वृद्धि होतीहै ॥ ९ ॥ जिस मनुष्यके दशम भवनमें केतु होता है उसका पिताका सुख नहीं होताहै और वह पुरुष आपभी मंदभागी होताहै परन्तु अपने शत्रुओंका नाश करने वाला होताहै और उसके वाहनों में रोग और आप वातव्याधिसे पीड़ित होताहै ॥ १० ॥

सुभाषी सुविद्याधिको दर्शनीयः सुभोगः सुतेजाः सवस्त्रोपि यस्य।
गुदे पीड्यते संततेदुर्भगत्वं शिखी लाभगः सर्व लाभं करोति।११।

शिखी रिःफगः पादनेत्रे च पीडा स्वयं राजतुल्यो व्ययं वै करोति।
रिपोर्नाशनं मानसे नैव शर्म रुजा पीड्यते बस्तिगुह्यं खरोगम्।१२।

जिसके ग्यारहवें घरमें केतु होताहै वह मनुष्य सुन्दर वाक्योंका कहने वाला, उत्तम विद्यासे युक्त, देखनेके योग्य, भोगों का भोगने वाला, बड़ा तेजस्वी, उत्तम वस्त्रोंका धारण करने वाला, गुदा इन्द्रीमें पीड़ासे युक्त और सन्तान के दुःख से दुःखी होताहै ॥ ११ ॥ जिस मनुष्य के लग्नसे बारहवें घरमें केतु होता है उसके पावेंमें और नेत्रोंमें पीड़ा होतीहै और वह राजाके समान खरच करने वाला होता है उसके शत्रुओं का नाश होताहै और उसके मनमें कभी आनन्द नहीं होता और वह रोगसे पीड़ित होताहै तथा उसके नलोंमें गुप्त रोग होताहै।१२।इति केतुफलम्।

इति जा० मार्जन्यांवनमालिचतुर्वेदि कृतायां ग्रहफलाध्यायोऽष्टमः॥

॥ अथ मेषादिगृहे रवौ दृष्टिफलम् ॥

दानधर्मबहुभृत्यसंयुतः कोमलामलतनुर्गृहप्रियः ॥
आवनेयभवने विरोचने शीतदीधितिनिरीक्षिते सति ॥ १ ॥
क्रूरो नरः संगरकर्मधीरश्चारक्तनेत्राङ्घ्रिरलम्बलीयान् ॥
भवेदवश्यं कुजगेहसंस्थे दिवामणौ क्षोणिसुतेन दृष्टे । २ ॥

जो मङ्गल के घर को चन्द्रमा देखता हो तौ वह पुरुप दान धर्म और बहुत भृत्योंसे संयुत होताहै और कोमल अमल शरीर और घरसे प्रीति रखनेवाला होता है ॥ १ ॥ जो सूर्य मङ्गलके घरमें स्थितहो और मङ्गल उसे देखताहो तौ वह मनुष्य बड़ा क्रूर,संग्राममें बड़ा धीर,लाल नेत्र और चरण वाला तथा बड़ा बलवान् होताहै ।

सुखेन सत्वेन धनेन हीनः प्रेष्यः प्रवासी मलिनः सदैव ॥
भवेदवश्यं परवान्मनुष्यः सहस्ररश्मौ कुजभेज्ञदृष्टे ॥ ३ ॥
दाता दयालुर्बहुलार्थयुक्तो नृपालमन्त्रीकुलधुर्यवर्यः ॥
स्यान्मानवो भूतनयालयस्थे पत्यौ नलिन्याः किल जीवदृष्टे।४।

जो सूर्य मङ्गलके घरमें स्थित हो और उसे बुध देखता हो तौ वह मनुष्य सुख, पराक्रम और धनसे हीन, दूतका काम करने वाला, परदेश का रहने वाला, सदा मलिन और पराधीन होताहै ॥ ३ ॥ यदि मङ्गलके घरमें बैठे सूर्यको बृहस्पति देखताहो तौ वह मनुष्य दानी, दयालु, बहुत धनों से युक्त, राजाका मंत्री और अपने कुलमें शिरोमणि होता है ॥ ४ ॥

हीनाङ्गनाप्रीतिरतीव दीनो धनेन हीनो मनुजः कुमित्रः ॥
त्वग्दोषयुक्तः क्षितिपुत्रगेहे मित्रेऽधिसंस्थे भृगुपुत्रदृष्टे ॥ ५ ॥
उत्साहहीनो मलिनोतिदीनो दुःखाभिभूतो विमतिर्नरःस्यात् ॥
कान्ते नलिन्याः क्षितिजालयस्थे प्रसूतिकाले रविजेन दृष्टे ॥६॥

जो मंगलके घरमें बैठे सूर्यको शुक्र देखता हो तो वह मनुष्य नीच जाति की स्त्रीसे स्नेह करनेवाला, अत्यन्त दीन; धनसे रहित, दुष्ट पुरुषों से मित्रता करनेवाला और त्वचामें किसी प्रकार के दोषसे युक्त होता है ॥५॥ यदि मंगलके घरमें सूर्य स्थित हो और उसे शनि देखता हो तौ वह मनुष्य उत्साह से रहित, मलिन, अति दीन, दुःखों से व्याप्त और दुष्ट बुद्धि से युक्त होता है ॥ ६ ॥

वारांगनाप्रीतिकरोनितान्तं स्याद्भूरिभार्यःसलिलोपजीवी ॥
दिनाधिराजे भृगुजालयस्थे कलानिधिप्रेक्षणतां प्रयाते ॥७॥
संग्रामधीरोऽतितरां महौजाः सुसाहसप्राप्तधनोरुकीर्त्तिः ॥
क्षीणो नरः स्याद्भृगुमन्दिरस्थे सहस्ररश्मौ कुसुतेन दृष्टे ॥८॥

यदि सूर्य शुक्र के घर २।७ में स्थित हो और चन्द्रमा उसे देखता हो तौ वह मनुष्य वेश्याओं से प्रीति करनेवाला, निरन्तर अनेक भार्याओं से युक्त, और जलसे जीविका करने वाला होता है ॥ ७ ॥ शुक्र के घर २।७ में बैठे सूर्य को मंगल देखता हो तौ वह प्राणी संग्राम में बड़ा धीर, बड़ा पुरुषार्थी, साहस से धन और कीर्ति का संचय करने वाला और क्षीण शरीर होता है ॥ ८ ॥

संगीतसत्काव्यकलाकलापे लेखाक्रियायां कुशलो नरः स्यात् ॥
प्रसन्नमूर्तिर्भृगुवेश्मयाते प्रद्योतने सोमसुतेन दृष्टे ॥ ९ ॥
वंशानुमानान्नृपतिप्रधानः सद्रत्नभूषाद्रविणान्वितो वा ॥
भीरुर्नरः शुक्रगृहं प्रपन्ने दृष्टे रवौ देवपुरोहितेन ॥ १० ॥

यदि सूर्य शुक्र के घर २।७ में बैठा हो और उसे बुध देखता हो तौ वह मनुष्य संगीत, सत्काव्य, कलासमूह और लिखने में कुशल और सदा प्रसन्नमूर्ति होता है ॥ ९ ॥ जो शुक्र के घर में विराजमान सूर्य को बृहस्पति देखता होवे तौ वह मनुष्य अपने वंश के अनुमान से राजा मन्त्री, उत्तम रत्नों के भूषण और द्रव्य से समन्वित और बड़ा डरपोक होता है ॥ १० ॥

सुलोचनः कान्तवपुः प्रधानो मित्रैरमित्रैः सहितः सचिन्तः॥
भवेन्नरो दैत्यगुरोर्गृहेऽर्के संवीक्षिते दैत्यपुरोहितेन ॥ ११ ॥
दीनार्थहीनोऽलसतां प्रपन्नो भार्यामनावृत्तिविभिन्नवृत्तः ॥
असाधुवृत्तामययुङ्नरः स्याच्छुक्रालयेऽर्केऽर्कसुतेन दृष्टे ॥१२॥

जो शुक्र के घरमें बैठे सूर्यको शुक्र ही देखता हो तौ वह मनुष्य दिव्य नेत्र, मनोहर शरीर, राजा का मन्त्री, मित्र और शत्रुसे संयुक्त और अनेक चिंताओं से युक्त होता है॥११॥ यदि शुक्रके घरमें विराजमान सूर्य को शनि देखता हो तौ वह मनुष्य बड़ा दीन,धनहीन,आलसी,भार्या में मन लगाने वाला,सबसे निराला वर्ताव रखने वाला,दुष्टोंका सा चरित्र करने वाला और रोगोंमे युक्त होता है ॥१२॥

मित्रैरमित्रैः परिपीडितश्च विदेशयातोऽपि धनेन हीनः ॥
निरंतरोद्वेगकरो नरः स्यात्सौम्यालयेऽर्के हरिणाङ्कदृष्टे ॥ १३ ॥

रिपुभयकलहाद्यैः संयुतोऽत्यन्तदीनो
रणजयविधिहीनोऽत्यन्तसंजातलज्जः ॥
भवति ननु मनुष्यः सालसश्चापि हंसे
बुधभवननिवासे लोहितांगेन दृष्टे ॥ १४ ॥

जो बुधके घर ३।६ में सूर्य स्थितहो और उसे चन्द्रमा देखता हो तौ वह मनुष्य मित्र और शत्रु से पीड़ित, परदेश जानेपर भी धन रहित और निरन्तर उद्वेग करने वाला होता है ॥१३॥ जो बुधके घर ३।६ में बैठे सूर्य को मङ्गल देखता है तौ वह मनुष्य शत्रु की तरफ से कलह आदि से संयुक्त, अत्यन्त दीन, संग्राम में जय बिधि से रहित, अत्यन्त लज्जावान और अत्यन्त आलसी होता है ॥ १४ ॥

भूपप्रसादोन्नतिमात्मजातां सहन्ति नो शत्रुजनाप्तमित्राः ॥
प्रसूतिकाले नलिनीवनेशे बुधर्क्षसंस्थे च बुधेन दृष्टे ॥ १५ ॥
सुगुप्तमन्त्रोऽतितरां स्वतन्त्रः कलत्रपुत्रादिजने सगर्वः ॥
भवेन्नरः शीतकरात्मजर्क्षे दिवाकरे देवगुरुप्रदृष्टे ॥ १६ ॥

जब जन्म समयमें बुधके घरमें बैठे हुए सूर्यको बुध ही देखता होवे तब राजा के अनुग्रह से प्राप्त हुई अपनी उन्नतिको उसके शत्रु, आप्त और मित्र नहीं सहते

हैं ॥ १५ ॥ जब सूर्य बुधके घरमें स्थित होवे और गुरु देखता होवे तब वह वार्तों का गुप्तरखनेवाला, स्वतन्त्र, स्त्री पुत्र आदि जनमें गर्व युक्त होता है ॥ १६ ॥

विदेशवासी चपलो विलासी विषाग्निशस्त्राङ्कितमूर्तिवर्ती ॥
पृथ्वीपतेर्दौत्यकरो नरः स्यादर्के बुधर्क्षे भृगुपुत्रदृष्टे ॥ १७ ॥
धूर्तोतिभृत्यो गतचित्तबुद्धिर्निजैः सदोद्विग्नमना मनुष्यः ॥
दिवाकरे शीतकरात्मजर्क्षे निरीक्षिते भास्करिणा प्रसूतौ ॥ १८ ॥

जब बुधके घरमें सूर्य स्थित होवे और शुक्र उसे देखता होवे तब वह पुरुष विदेशका रहनेवाला, बड़ा चपल, क्रीडा करनेवाला, विष, शस्त्र और अग्निसे चिन्हित देहवाला और राजाका दूत होता ह ॥ १७ ॥ यदि बुधके स्थान में सूर्य होवे और शनि उसे देखता होवे तब वह पुरुष बड़ा धूर्त, बहुत भृत्योंसे युक्त, चेतना और बुद्धिसे रहित और सदा उद्वेगयुक्त होता है ॥ १८ ॥

पुण्यैश्च पानीयभवैर्महार्थी पृथ्वी पतिर्वा सचिवश्च रौद्रः ॥
भवेन्नरो जन्मनि चण्डरश्मौ कर्काटकस्थे शिशिरांशुदृष्टे ॥ १९ ॥
स्वबन्धुवर्गैर्गतचित्तबुद्धिः शोफादिरोगैश्च भगन्दरैर्वा ॥
पीडानराणां हि कुलीरसंस्थे दिवामणौ क्षोणिसुतेन दृष्टे ॥ २० ॥

जब सूर्य कर्कमें स्थित होवे और चन्द्रमा देखता होवे तब वह पुरुष पुण्य अथवा जलके निमित्तसे धन प्राप्ति करनेवाला, पृथ्वीका पति अथवा मंत्री, और बड़ा भयंकर होता है ॥ १९ ॥ सूर्य कर्कमें स्थित होवे और मङ्गल उसे देखता होवे तब वह पुरुष अपने बन्धुवर्गोंसे अहित रखनेवाला, शोथ अथवा भगन्दर आदि रोगोसे पीड़ित होता है ॥ २० ॥

विद्यायशोमानविराजमानो भूपानुकम्पासमनोभिलापः ॥
निरस्तशत्रुश्च बुधेन दृष्टे कर्काटकस्थे द्युमणौ नरः स्यात् ॥ २१ ॥
कुलाधिकश्चामलकीर्तिशाली भूपात्तसंप्राप्तमहत्पदार्थः ॥
भवेन्नरः शीतकरर्क्षयाते दिवामणौ वाक्पतिवीक्ष्यमाणे ॥ २२ ॥

सूर्य कर्कमें स्थित होवे और बुध उसे देखता होवे तब पुरुष विद्या, यश और मान इनसे विराजमान, राजाके अनुग्रहसे मनवांछित फल पानेवाला और शत्रु

ओंको मारने वाला होता है ॥ २१ ॥ जब चन्द्रमाकी राशिका सूर्य होवे और बृहस्पति उसे देखता होवे तब वह पुरुष कुलमें अधिक निर्मल कीर्तिसे सुशोभित, राजासे महत्पदार्थ पाने वाला होता है ॥ २२

स्त्रीसंश्रयाद्वस्त्रधनोपलब्धिः परस्य कृत्ये हृदये विषादः ॥
निशाकरागारकृताधिकारे दिवाकरे शुक्रनिरीक्ष्यमाणे ॥ २३ ॥
धूर्त्तो गभीरः क्षितिपालमान्यो धनोपलब्धार्थयुतः प्रसिद्धः ॥
मित्रे निजक्षेत्रयुते प्रसूतौ नक्षत्रनाथेन निरीक्ष्यमाणे ॥ २४ ॥

जब सूर्य चन्द्रमाके घरमें स्थित होवे और शुक्र से दृष्ट होवे तब वह पुरुष स्त्री के संबन्धसे वस्त्रधनकी प्राप्ति करनेवाला और किसी दूसरेके कृत्यको देखकर हृदयमें विषाद करनेवाला होताहै॥२३॥ जब सूर्य अपने क्षेत्रका हो और यदि चन्द्रमा देखता हो तब वह पुरुष बड़ा धूर्त, गंभीर, राजाको मान्य, प्राप्त धनसे युक्त और जगत में प्रसिद्ध होता है ॥ २४ ॥

कफानिलार्तः पिशुनोन्यकार्ये स्यादन्तरायश्चपलस्वभावः ॥
क्लेशी नरः शीतकरर्क्षसंस्थे दिवामणौ मन्दनिरीक्ष्यमाणे ॥ २५ ॥
नानाङ्गनाप्रीतिरतीव धूर्त्तः कफात्मकः क्रूरतरश्च शूरः ॥
महोद्यमः स्यान्मनुजः प्रधानः सिंहस्थितेऽर्के कुसुतेन दृष्टे ॥२६॥

यदि सूर्य चन्द्रमाकी राशिमें स्थित होवे और शनि देखता होवे, तब वह पुरुष बातकफसे पीडित, चुगलखोर, दूसरेके कामका बिगाड़नेवाला, चपल स्वभाव और क्लेश भोगनेवाला होता है॥२५॥जब सूर्य सिंहमें स्थित हो और उसेमङ्गल देखता हो तब वह पुरुष अनेक स्त्रियोंसे प्रीति करनेवाला, अत्यन्त धूर्त, कफ प्रकृतीवाला अत्यन्त क्रूर, बड़ा शूरवीर, महान उद्यमी और राजाका मंत्री होता है ॥ २६ ॥

धूर्त्तो नृपानुव्रजनः सुसत्त्वो विद्वत्प्रियो लेखनतत्परश्च ॥
भवेन्नरः केसरिणि प्रयाते दिवामणौ सौम्यनिरीक्ष्यमाणे ॥२७॥
देवालयारामतडागवापीनिर्माणकर्त्ता स्वजनप्रियश्च ॥
भवेन्नरो देवपुरोहितेन निरीक्षितेऽर्के मृगराजसंस्थे ॥ २८ ॥

यदि सिंहराशि में सूर्य होवे और बुध उसे देखता होवे तब वह पुरुष बड़ा धूर्त, राजाका अनुयायी, बड़ा धैर्यवान्, विद्वान्पुरुषोंको प्रिय और लिखने में तत्पर होताहै ॥ २७ ॥ जो सूर्य सिंह राशिमें स्थित हो और बृहस्पति उसे देखता हो तौ वह पुरुष देव मन्दिर बागबगीचा तालाव और बावड़ीका बनानेवाला, अपने भाई बन्धुओं को प्यारा होताहै ॥ २८ ॥

त्वग्दोषरोपापयशोभिभूतो गतोत्सवः स्वीयजनोज्झितश्च ॥
स्यान्मानवः सत्यदयाविहीनः पञ्चाननेऽर्के भृगुजेन दृष्टे ॥ २९ ॥
शठो नरः कार्यविघातकर्त्ता संतापयेदात्मजनांश्च नूनम् ॥
नरो मृगेन्द्रोपगते दिनेशे दिनेशपुत्रेण निरीक्ष्यमाणे ॥ ३० ॥

जो सूर्य सिंहराशिमें बैठा हो और उसे शुक्र देखता हो तौ वह पुरुष त्वचा (खाल) के दोष से, रोषसे और बदनामी से तिरस्कृत, उत्सव से रहित, अपने मनुष्योंसे त्यक्त और सत्य तथा दयासे विहीन होताहै ॥ २९ ॥ जिसके जन्मपत्र में सूर्य सिंहका बैठाहो और शनि उसे देखताहो तौ वह मनुष्य बड़ा शठ, कामोंका विगाड़नेवाला और अपने मनुष्योंको अवश्य सन्ताप देनेवाला होताहै ॥ ३० ॥

कायकान्तिसुतसौख्यसमेतो वाग्विलासकुशलः कुलशाली ॥
स्यान्नरः सुरपुरोहितसुस्थले भास्करे हिमकरेण हि दृष्टे ॥ ३१ ॥
संग्रामसंतप्तयशोविशेषो वक्ता विमुक्तानुजनानुसंग ॥
स्थिराश्रयो जीवगृहस्थितेऽर्के भौमेन दृष्टे पुरुषः प्रचण्डः ॥ ३२ ॥

जो सूर्य बृहस्पति के घर ९।१२ में स्थित हो और चन्द्रमा उसे देखताहो तौ वह मनुष्य देहकी कांति और पुत्रसुखसे युक्त, बोलने बतलानेमें बड़ा निपुण और कुलीन होताहै ॥ ३१ ॥ यदि सूर्य बृहस्पति के घरमें स्थित हो और मङ्गल उसे देखता हो तौ, वह पुरुष संग्राममें यश पानेवालो, वक्ता, मुक्ता मनुष्यों में स्नेह करने वाला और स्थिर आश्रय वाला होता है ॥ ३२ ॥

धातुक्रियाकाव्यकलाकथाज्ञः सद्वाक्यमन्त्रादिविधिप्रवीणः
सतां मतः स्यात्पुरुषो दिनेशे सौम्येक्षिते जीवगृहोपयाते ॥ ३३ ॥
नृपालमैत्री कुलभूमिपालः कलाविधिज्ञो धनधान्ययुक्तः ॥
विद्वान् पुमान्भानुमतीज्यगेहे संदृष्टदेहेऽमरपूजितेन ॥ ३४ ॥

यदि बृहस्पतिकी राशिमें स्थित सूर्य बुध करके दृष्ट हो तौ वह पुरुष धातुओं की क्रिया और काव्यसमूहोंकी कथाओंका जानने वाला, उत्तम वाक्य और मन्त्र आदिकों की विधिमें निपुण और भले मनुष्यों को मान्य होताहै ॥ ३३ ॥ यदि बृहस्पति की राशिमें स्थित सूर्य बृहस्पति से दृष्ट होय तौ वह पुरुष राजाओं का मित्र, अपने कुल और भूमिका पालन करने वाला, कलाओंको जानने वाला, धन धान्यसे युक्त और विद्वान होताहै ॥ ३४ ॥

सुगन्धमाल्याम्बरचारुयोषाभूषाविशेषानुभवाप्तसौख्यः ॥
भवेन्नरो देवपुरोहितर्क्षे प्रद्योतने दानववन्द्यदृष्टे ३५ ॥
परान्नभुंगीचनरैः प्रवृत्तश्चतुष्पदप्रीतिधरो नरः स्यात् ॥
सूर्ये सुराचार्यगृहे प्रयाते निरीक्षिते भानुसुतेन सूतौ । ३६ ॥

यदि बृहस्पतिके भवनमें बैठे सूर्यको शुक्र देखताहो तब वह पुरुष सुगन्धयुक्त माला, वस्त्र उत्तम स्त्री और अनेक भूषण इनसे सुख भोगनेवाला होताहै ॥ ५ ॥ जिसके जन्मकालमें बृहस्पतिके घरमें बैठे सूर्य को यदि शनि देखताहो तौ वह पुरुष परान्नका भोजन करनेवाला, नीच मनुष्योंके साथ प्रवृत्त और चतुष्पद जीवों से प्यार करनेवाला होता है ॥ ३६ ॥

नारीप्रसंगेन गतार्थसौख्यो मायापटुश्चञ्चलचित्तवृतिः ॥
भवेन्मनुष्यः शनिवेश्मनिस्थे सहस्ररश्मौ हिमरश्मिदृष्टे ॥ ३७ ॥
परकलहहतार्थो व्याधिवैरिप्रतप्तस्त्वति-
विकलशरीरोऽत्यन्तचिन्तासमेतः ॥
भवति ननु मनुष्यः संभवे तिग्म-
राशौ गतवति सुतगेहे दृष्टदेहे कुजेन ॥ ३८ ॥

जिसके जन्म समयमें सूर्य शनिके घर १० । ११ में स्थित हो उसे चंद्रमा देखता हो तौ वह मनुष्य स्त्रीप्रसङ्ग धन और सुखका नाश करने वाला, माया में चतुर और चंचल चित्तवाला होताहै ॥ ३७ ॥ यदि सूर्य शनि के घरमें बैठा हो और मङ्गल उसे देखता हो तौ वह पुरुष दूसरों के कलह से अपना धन खोने वाला व्याधि तथा वैरियों से सन्तप्त, अत्यन्त विकल और चिंता युक्त होताहै ॥ ३८ ॥

क्लीबस्वभावः परचित्तहारी साधूज्झितः शूरतरो नरः स्यात् ॥
दिवाकरे शीतकरात्मजेन दृष्टे प्रसूतौ शनिमन्दिरस्थे ॥ ३९ ॥

सत्कर्मकर्त्ता मतिमान्बहूनां समाश्रयश्चारुयशा मनस्वी ॥
स्यान्मानवो भानुसुतालयस्थे भानौ च वाचस्पतिना प्रदृष्टे॥४०॥

यदि शनिके घरमें बैठे सूर्यको बुध देखता हो तौ वह पुरुष नपुंसकोंके स्वभाव से युक्त, दूसरोंके चित्तका चुरानेवाला, साधु पुरुषोंसे परित्यक्त और बड़ा शूरवीर होताहै ॥३९॥ यदि शनिके स्थानमें स्थित सूर्यको गुरु देखता हो तौ वह पुरुष सत्कर्मोंका करने वाला, बड़ा बुद्धिमान्, बहुतोंका आश्रय, पवित्र यशवाला और बड़ा बुद्धिमान् होता है ॥ ४० ॥

शङ्खप्रवालामलरत्नवित्तं वरांगनाभ्योऽपि धनोपलब्धिम् ॥
करोति भानुर्ननु मानवानां शन्यालयस्थो भृगुजेन दृष्टः ॥४१॥
प्रौढप्रतापाद्विजितारिपक्षः क्षोणीपतिप्रीति महाप्रतिष्ठः ॥
प्रसन्नमूर्तिः प्रभवेन्मनुष्यः शन्यालयेऽर्के शनिना प्रदृष्टे ॥ ४२ ॥

यदि शनिके १०।११में स्थित सूर्यको शुक्र देखता हो तौ वह उस पुरुषको शंख मूंगा और अमल रत्नोंके धनसे युक्त करता है और वेश्याओंसे भी धनकी प्राप्ति करता है॥४१॥शनिके घरमें बैठे सूर्यको यदि शनिही देखता हो तौ वह पुरुष अपने बढ़े हुए प्रतापसे शत्रुओंका जीतनेवाला, राजासे प्रीति होनेके कारण अत्यन्त प्रतिष्ठाको प्राप्त होनेवाला और सदा प्रसन्न मूर्त्ति होताहै॥४२॥ इतिमेषादि गृहे रवोदृष्टिफलम् ॥

अथमेषादिगृहे चन्द्रे ग्रहदृष्टिफलानि ।

उग्रस्वभावोऽपि मृदुर्नतानां धीरो धराधीश्वरगौरवाढ्यः ॥
नरोभवेत्सङ्गरभीरुरेव मेषे शशाङ्के नलिनीशदृष्टे ॥ १ ॥
विषाग्निवातास्त्रभयं कदाचित्स्यान्मूत्रकृच्छ्रं महदाश्रयश्च ॥
दन्ताक्षिपीडानिविडा जडांशौ मेषस्थिते भूमिसुतेन दृष्टे ॥ २ ॥

जो चन्द्रमा मेषराशिमें बैठा हो और सूर्य उसे देखता हो तौ वह पुरुष उग्र स्वभाववाला होने पर भी नम्र मनुष्योंको मृदु होताहै तथा धीर राजासमान गौरवसे परिपूर्ण और संग्राम भीरु होताहै ॥ १ ॥ यदि मेषमें स्थित चन्द्रमाको मङ्गल देखता हो तौ उस पुरुषको विष, अग्नि, वायु और अस्त्र इनसे किसीसमय भय होताहै॥

और मूत्रकृच्छ्रका रोगभी होता है, वह महत्पुरुषोंका आश्रय और दांत तथा नेत्रों में अत्यन्त पीड़ासे युक्त होता है ॥ २ ॥

विलसदमलकीर्तिः सर्वविद्याप्रवीणो
द्रविणगुणगणाढ्यः संमतः सज्जनानाम् ॥
भवति ननु मनुष्यो मेषराशौ शशाङ्के
शशधरसुतदृष्टे श्रेष्ठसंपत्प्रतिष्ठः ॥ ३ ॥

नृपप्रधानःपृतनापतिर्वा कुलानुमानाद्बहुसंपदाढ्यः ॥
भवेन्नरः कैरविणीवनेशे मेषस्थिते गीष्पतिना प्रदृष्टे ॥ ४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मपत्रमें मेषका चन्द्रमा हो उसे यदि बुध देखता हो तौ वह पुरुष प्रसिद्ध निर्मल कीर्तिसे युक्त, सब विद्याओंमें प्रवीण, उत्तम गुणसमूहसे युक्त सज्जनोंको मान्य, द्रव्य और श्रेष्ठ सम्पत्ति और प्रतिष्ठासे युक्त होता है ॥३॥ जो चन्द्रमा मेष राशिमें स्थित हो और उसे बृहस्पति देखता हो तौ वह पुरुष राजाका मंत्री या सेनापति और अपने कुलानुसार अनेक सम्पत्तिओंसे परिपूर्ण होताहै ॥४॥

योषाविभूषाधनसूनुसौख्यो भोक्ता सुवक्ता परिमुक्तरोषः ॥
स्यात्पूरुषो मेषगतेऽमृतांशौ निरीक्ष्यमाणे भृगुणा गुणज्ञः ॥५ ।
गदयुतं हतचित्तसमुन्नतिं विगतवित्तमसत्यमसत्सुतम् ॥
क्रियगतोऽर्कसुतेन निरीक्षितो हिमकरो हि नरं कुरुते खलम् ॥६॥

मेषराशि में स्थित चन्द्रमाको यदि शुक्र देखता हो तौ वह मनुष्य स्त्री भूषण, धन, पुत्र, इनके सुखसे सुखी, भोगोंका भोगनेवाला, वक्ता शान्तचित्त और गुणों का जाननेवाला होताहै ॥५॥ मेषमें स्थित चन्द्रमाको यदि शनि देखता हो तौ उस पुरुषको रोगोंसे युक्त, मानहीन, धन रहित, झूठ बोलनेवाला, दुष्ट सन्तति वाला और अत्यन्त खल करता है ॥ ६ ॥

कृषिक्रियायां निरतो विधिज्ञः स्यान्मान्त्रिको वाहनधान्ययुक्तः ॥
नरो नितान्तं चतुरः स्वकार्ये दृष्टे दिनेशेन वृषे शशाङ्के ॥ ७ ॥
कामातुरश्चित्तहरोऽङ्गनानां स्यात्साधुमित्रः सुतरां पवित्रः ॥
प्रसन्नमूर्तिश्च नरो वृषस्थे शीतद्युतौ भूमिसुतेन दृष्टे ॥ ८ ॥

वृषराषि में स्थित चन्द्रमा हो और उसे सूर्य देखता होतौ वह पुरुष खेती करने में निरत;विधिका जाननेवाला;मांत्रिक,वाहन और धनधान्यसेयुक्त और अपनेकाममें चतुर होताहै ॥ ७ ॥ यदि वृषिराशिस्थ चन्द्रमाको मंगल देखता हो तौ वह पुरुष कामातुर, स्त्रीजनोंके चित्त का हरने वाला,साधु पुरुषोंसे मित्रता रखनेवाला,अत्यन्त पवित्र और प्रसन्नमूर्ति होता है ॥ ८ ॥

प्राज्ञं विधिज्ञं कृपया समेतं हर्षान्वितं भूतहिते रतं च ॥
गुणाभिरामं मनुजं प्रकुर्याद्वृषे शशाङ्कः शशिजेन दृष्टः ॥९॥

जायात्मजानन्दयुतं सुकीर्तिं धर्मक्रियायां निरतं च पित्रोः ॥
भक्तौ प्रसक्तं मनुजं प्रकुर्याद्वृषस्थितेन्दुर्गुरुणा प्रदृष्टः ॥१०॥

वृषराशिस्थ चंद्रमाको यदि बुध देखता होतौ उस पुरुषको बड़ा बुद्धिमान,विधि का जाननेवाला,कृपासे युक्त,हर्षयुक्त,भूतों (प्राणियों)के हित करनेमें सदा प्रवृत्त और गुणों में आसक्त करता है ॥ ९ ॥ वृषराशि में चंद्रमा स्थितहो और उसे बृहस्पति देखता होतौ उस पुरुष को स्त्रीके और पुत्रके आनन्दसे युक्त,सुन्दरकीर्तियुक्त, धर्म क्रिया में निरत और माता पिता के भक्ति में आसक्त करता है ॥ १० ॥

भूषणाम्बरगृहासनशय्यागन्धमाल्यचतुरङ्घ्रिसुखानि ॥
आतनोति सततं मनुजानां चन्द्रमावृषगतो भृगुदृष्टः ॥ ११ ॥

कलानिधिः पूर्वदले वृषस्य शनीक्षितश्चेन्निधनं जनन्याः ॥
करोति सत्यं मुनिभिर्यदुक्तं तथापरार्धे खलु तातघातम् ॥१२॥

जो चन्द्रमा वृषराशिमें स्थितहो और उसे शुक्र देखता होतौ उस पुरुष को भूषण, वस्त्र, गृह, आसन, शय्या, गंधमाल्य और पशु इनके सुख को देता है ॥ ११ ॥ जिस मनुष्यके वृषके प्रथम अर्धमें चंद्रमा स्थितहो और उसे शनि देखता हो तौ उस पुरुषकी माता मर जाती है और यदि वृषके उत्तरार्ध में चंद्रमा स्थितहो और वह शनिदृष्ट होतौ पिताको घात करता है ऐसा मुनियोंने कहाहै, यह सत्यहै॥१२॥

प्राज्ञं सुशीलं द्रविणेन हीनं क्लेशाभिभूतं सततं करोति ॥
नरं च सर्वोत्सवदं प्रसूतौ द्वन्द्वेस्थितो भानुमता च दृष्टः ॥ १३ ॥

उदारदारं चतुरं च शूरं प्राज्ञं च सुज्ञं धनवाहनाद्यैः ॥
युक्तं प्रकुर्यान्मिथुनस्थितेन्दुर्निरीक्षितोजन्मनि भूसुतेन ॥१४॥

जब चंद्रमा मिथुन लग्नमें स्थितहो और उसे सूर्य देखता हो तो उस पुरुषको बुद्धियुक्त,सुशील,धनहीन,अनेक क्लेशोंसे युक्त और सबोंको आनन्द देनेवाला करता है ॥१३॥ मिथुनमें स्थित चन्द्रमाको मङ्गल देखता हो तब उस पुरुष को उदार स्त्री युक्त, चतुर, शूरवीर बुद्धिमान्,सुज्ञ और धनवाहनादिकों से युक्त करता है ॥१४॥

धीरं सदाचारमुदारसारं नरं नरेन्द्राप्तधनं करोति ॥
निशाधि नाथो मिथुनाधिसंस्थो निशीथिनीनाथसुतेन दृष्टः॥१५
विद्याविवेकान्वितमर्थवन्तं ख्यातं विनीतं सुतरां सुपुण्यम् ॥
करोति मर्त्यं मिथुनेऽधिसंस्थो निशीथिनीशो गुरुणा प्रदृष्टः॥१६॥

मिथुन राशिमें स्थित चन्द्रमाको बुध देखता हो तब वह पुरुष बड़ा धीर,सदाचारसे युक्त, बड़ा बली, राजासे धन पाने वाला होता है ॥१५॥ मिथुन में चंद्रमा स्थित हो और उसे बृहस्पति देखता हो तब वह पुरुष विद्या और विवेक से युक्त धनवान, सर्वत्र विख्यात, बड़ा नम्र, पुण्य कर्म करने वाला होता है ॥ १६ ॥

वस्त्रप्रसूनान्नवराङ्गनाभ्यः सद्वाहनेभ्यश्च विभूषणेभ्यः ॥
करोति सौख्यं हि सुधामयूखो द्वन्द्वे स्थितो जन्मनि शुक्रदृष्टः॥१७
धनाङ्गनावाहननन्दनाद्यैर्विश्लेषमायाति विगर्हितत्वम् ॥
नरोहि नीहारकरे नृयुग्मे निरीक्षित भानुसुतेन सूतौ ॥ १८ ॥

जो चन्द्रमा मिथुनमें स्थितहो और उसे शुक्र देखताहोवे तब वह पुरुष वस्त्र, पुष्प, उत्तमान्न, उत्तम स्त्री,उत्तम वाहन, उत्तम भूषणसे सुख युक्त होता है॥१७॥ जिसके जन्म समय में मिथुनमें स्थित चंद्रमा होवे उसे शनि देखता होवे तब वह पुरुष धन,स्त्री,वाहन, और पुत्रसे वियोगयुक्त और सर्वत्र निंदित होता है ॥१८॥

निरर्थकक्लेशकरं विकीर्णंनृपाश्रयं दुर्गकृताधिकारम् ॥
कुर्यात्कलावान्परिसूतिकाले कुलीरसंस्थो नलिनीशदृष्टः॥१९॥
दक्षं च शूरं जननीविरुद्धं क्षीणांगयष्टिं मनुजं करोति ॥
कुलीर संस्थः परिसूतिकाले दृष्टः कलावान्किल मंगलेन ॥२०॥

जिस मनुष्य के जन्मसमयमें कर्कमें स्थित चंद्रमा होवे उसे सूर्य देखता होवे तब वह पुरुष निरर्थ क्लेश करनेवाला,नृपके आश्रयसे युक्त,और किलेका अधिकारी

होता है ॥ १९ ॥ कर्कराशिस्थ चंद्रमा को यदि मङ्गल देखता होवे तब उस पुरुष को चतुर, शूरवीर, माता से विरोध युक्त और दुर्बलांग करता है ॥ २० ॥

दारार्थपुत्रोन्नतिनीतिसौख्यं सेनापतिं वा सचिवं मनुष्यम् ॥
कर्काधिरूढः कुरुते हिमांशुर्हिमांशुपुत्रेण निरीक्ष्यमाणः ॥२१॥

नृपाधिकारं गुणिनं नयज्ञं सुखान्वितं चारुपराक्रमं च ॥
करोति जातं यदि चक्रवर्त्ती पीयूषमूर्तिर्गुरुणेक्ष्यमाण ॥ २२ ॥

यदि कर्कमें चन्द्रमा होवे उसे बुध देखता होवे तब उस मनुष्य को स्त्री, धन पुत्रकी उन्नति और नीति, सुखयुक्त और सेनापति या मन्त्री करता है ॥ २१ ॥ कर्कराशिमें स्थित चन्द्रमा को गुरु देखता होवे तब उस पुरुष को राजा का अधिकारी गुणवान नीति का जानने वाला, सुख और उत्तम पराक्रमसे युक्त करता है ॥२२॥

सद्रत्नचामीकररत्नभूषावराङ्गनासौख्ययुतं नितान्तम् ॥
नरं निजागारगतः करोति सुधाकरः शुक्रनिरीक्ष्यमाणः ॥ २३ ॥

सत्येन हीनं जननीविरुद्धं सदाटनं पापरतं गतार्थम् ॥
करोति जातं निजगेहगामी चेद्यामिनीशो रविजेन दृष्टः ॥२४॥

जब चन्द्रमा कर्कराशिमें स्थित होवे और उसे शुक्र देखता होवे तब उस पुरुष को उत्तम रत्न, सुवर्ण, रत्नोंके भूषण और उत्तम स्त्रियोंके सुखसे युक्त करता है, ॥२३॥ जब कर्कराशिमें स्थित चन्द्रमा शनि देखताहोवे तब वह पुरुष सत्यसे रहित मातासे विरोधयुक्त, सदा देशाटन करनेवाला, पाप में रत और धनहीन होताहै ॥२४

गुणयुतं सततं नृपतिप्रियं वरपदं च विलङ्घितसंततिम् ॥
हरिगतो वितनोति निशाकरः खरकरप्रविलोकनसंयुतः ॥२५॥
नरपतेः सचिवो धनवाहनात्मजकलत्रसुखो हि भवेन्नरः ॥
हरिणलक्ष्मणिकेसरिणिस्थिते क्षितिसुतेन तनुप्रविलोकिते ॥२६॥

जिसके जन्मसमय में जब चन्द्रमा सिंहराशिमें स्थित होवे और उसे सूर्य देखता होवे तब वह पुरुष गुणोंसे युक्त, निरंतर राजा को प्रिय, उत्तम चरण वाला और संततिहीन होता है ॥ २५ ॥ जब सिंह राशिमें स्थित चन्द्रमा होवे और उसे मंगल देखता होवे तब उस पुरुष को राजा का मंत्री और धन वाहन पुत्र कलत्र के सुख से युक्त करता है ॥ २६ ॥

धनाङ्गनावाहननन्दनेभ्यः सुखप्रपूरं हि नरं करोति ॥
द्विजाधिराजो मृगराजसंस्थो द्विजाधिराजात्मजसंप्रदृष्टः ॥२७॥
बहुश्रुतं विस्मृतसाधुवृत्तं कुर्यान्नरं भूमिपतेः प्रधानम् ॥
चन्द्रोमरेन्द्रोपगतोऽमरेन्द्रोपाध्यायदृष्टिः परिसूतिकाले ॥ २८ ॥

जब चंद्रमा सिंहराशिमें स्थित होवे और बुध उसे देखता होवे तब वह पुरुष धन,स्त्री,वाहन और पुत्र के सुख से पूर्ण होताहै ॥ २७ ॥ जब चंद्रमा सिंह राशिमें स्थित होवे और गुरु उसे देखता होवे तब वह पुरुष बहुत शास्त्रोंका ज्ञान, साधुतासे रहित और राजा का मन्त्री होता है ॥ २८ ॥

स्त्रीवैभवं वै गुणिनं गुणज्ञं प्राज्ञं विधिज्ञं कुरुते मनुष्यम् ॥
पीयूषरश्मिर्जनने यदि स्यात्पञ्चाननस्थो भृगुसूनुदृष्टः॥ २९ ॥
कान्तावियुक्तः कृषिकर्मदक्षो दुर्गाधिकारी हि नरोल्पकार्थः ॥
सिंहोपयाते सति शीतभानौ निरीक्षिते सूर्यसुतेन सूतौ ॥३०॥

जिसके जन्म समयमें सिंहस्थ चन्द्रमा को शुक्र देखता होवे तब वह पुरुष स्त्री वैभवयुक्त, बड़ा गुणी,गुणों का जानने वाला, बड़ा बुद्धिमान्,विधि का जाननेवाला होताहै ॥ २९ ॥ जिस पुरुषके जन्म समयमें सिंहराशिस्थ चन्द्रमाको शनि देखता होवे तब वह पुरुष अपनी स्त्राके वियोगयुक्त,खेती करनेमें बड़ा चतुर, किसी किले, आदि दुर्गस्थानका अधिकारी और थोड़ा धनवान् होता है ॥ ३० ॥

भूमीशकोशाधिकृतं सुवृत्तं भार्याविमुक्तं गुरुभक्तियुक्तम् ॥
जातं च कन्याश्रितशीतरश्मिस्तनोति जन्तुं खररश्मिदृष्टः ॥३१॥
हिंसापरं शूरतरं सकोपं नृपाश्रितं लब्धजयं रणादौ ॥
कुमारिकासंश्रितशीतभानुर्भूसूनुदृष्टो मनुज करोति ॥ ३२ ॥

कन्या राशिमें स्थित चंद्रमा होवे उसे सूर्य देखता होवे तो वह पुरुष राजा का खजानची,उत्तम वरतावसे युक्त,स्त्रीसे रहित और गुरुभक्तिसे युक्त होता है ॥३१॥ जब कन्या राशिमें वर्तमान चंद्रमाको मङ्गल देखता है तब वह पुरुष हिंसा करने में तत्पर, बड़ा शूरवीर, क्रोधसे युक्त, राजाका आश्रित और संग्रामादिकों में विजयी होता है ॥ ३२ ॥

ज्योतिर्विद्याकाव्यसङ्गीतविद्यं प्राढ्यं युद्धे लब्धकीर्तिं विनीतम् ॥
कुर्यान्नूनं मानवं मानवन्तं कन्यास्थश्चेदिन्दुजेन प्रदृष्टः ॥३३॥
भूरिबन्धुमवनीपतिप्रियं चारुवृत्तशुभकीर्तिसंयुतम् ॥
मानवं हि कुरुतेऽङ्गनाश्रितश्चन्द्रमाः सुरपुरोहितेक्षितः ॥ ३४ ॥

कन्याराशिमें बैठे चन्द्रमाको बुध देखता होवे तब वह पुरुष ज्योतिर्विद्या, काव्य और गान विद्यासे युक्त, अत्यन्त धनवान्. युद्धमें कीर्तिवान और मानसे युक्त होताहै॥३३॥कन्याराशिमें स्थित चन्द्रमाको जब गुरु देखता है तब वह पुरुष बहु कुटुम्बी, राजाका प्रिय, उत्तम आचरणसे शुभ कीर्तियुक्त होता है ॥३४॥

विलासिनीकेलिविलासचित्तं कान्ताश्रितं भूपतिलब्धवित्तम् ॥
कुर्यान्नरं शीतकरः कुमार्यां संस्थः सितेन प्रविलोकितश्च ॥३४॥
निष्किञ्चनं हीनमतिं नितान्तं स्त्रीसंश्रयादाप्तधनं जनन्या ॥
हीनं प्रकुर्यात्खलु कन्यकायां गतोमृगाङ्कोऽर्कसुतेन दृष्टः ॥३६॥

यदि कन्याराशिस्थ चन्द्रमाको शुक्रदेखता हो तब वह पुरुष स्त्रीओंके साथ क्रीड़ा करने मेंदच चित्त, स्त्रीके आधीन, राजासे धन पानेवाला होता है ॥ ३५ ॥ यदि चन्द्रमा कन्यामें स्थित होवे और उसे शनि देखता होवे तब वह पुरुष सर्वस्वहीन, बुद्धिरहित, निरन्तर स्त्रीके निमित्तसे धन कमानेवाला और मातासे रहित होता है ॥ ३६॥

सदाटनः सौख्यधनैर्विहीनः सदङ्गनासूनुजनैर्विहीनः ॥
मित्रैरमित्रैश्च नरोतितप्तस्तुलाधरे शीतकरेऽर्कदृष्टे ॥ ३७ ॥
बुद्ध्या परार्थाकरणैकचित्तं मायासमेतं विषयाभितप्तम् ॥
करोति जातं हि तुलागतेन्दुर्निरीक्ष्यमाणो धरणीसुतेन ॥

जब चन्द्रमा तुलाका होवे और उसे सूर्य देखता होवे तब वह पुरुष सदा देशों में फिरनेवाला, सुख और धनसे रहित, उत्तम स्त्री जन और पुत्रोंसे रहित तथा मित्रऔर शत्रु द्वारा खेदित होता है ॥ ३७ ॥ तुलाराशि में स्थित चन्द्रमाको यदि मङ्गल देखता होवे तब वह पुरुष अपनी बुद्धिसे परअपकारकारक अनेक छलों से युक्त और विषयोंसे ताप युक्त होता है ॥ ३८ ॥

कलाविधिज्ञं धन धान्ययुक्तं वक्तृत्वविद्याविभवैः समेतम् ॥
कुर्यान्नरं शीतकरस्तुलास्थः प्रसूतिकाले शशिजेन दृष्टः ॥३९॥
विचक्षणो वस्त्रविभूषणेषु क्रयेथवा विक्रयताविधाने ॥
तुलाधरे शीतकरे नरः स्याद्दृष्टे शुनासीरपुरोहितेन ॥ ४० ॥

तुला राशिमें बैठे चन्द्रमाको बुध देखता होवे तब वह पुरुष कलाओंका जानने वाला, धन धान्यसे युक्त और वक्तृत्व तथा विद्याविभवोंसे युक्त होता है ॥ ३९ ॥ जब चन्द्रमा तुला राशिका होवे और बृहस्पति उसे देखता होवे तब वह पुरुष वस्त्राभूषणके काममें कुशल और बेचने खरीदनेके काममें अति निपुण होता है ॥४०

प्राज्ञस्त्वनेकोद्यमसाधितार्थः स्यात्पार्थिवानां कृपयासमेतः ॥
हृष्टो नरः प्रीतकलेवरश्च शुके मृगाङ्के भृगुजेन दृष्टे ॥ ४१ ॥
धनैश्च धान्यैर्वरवाहनैश्च युतो विहीनो विषयोपभोगैः ॥
भवेन्नरस्तौलिनि जन्मकाले कलानिधौ भानुतनूज दृष्टे ॥४२॥

जिस पुरुषके जन्म में तुलास्थ चन्द्रमाको शुक्र देखता है तब वह पुरुष बड़ा बुद्धिमान अनेक उद्यमोंसे धनसंपादन करने वाला, राजाके अनुग्रहोंका पात्र, सदा प्रसन्न और दिव्य देहवाला होता है ॥ ४१ ॥ जब तुलास्थ चन्द्रमाको शनि देखता होवे तब वह पुरुष धन, धान्य, उत्तम वाहनसे युक्त होने पर भी विषयभोगों से हीन होता है ॥ ४२ ॥

सद्वृत्तहीनं धनिनं जनानामसह्यमत्यन्तकृतप्रयासम् ॥
बलं निवासं मनुजं प्रकुर्यात्ताराधिपः कौर्प्यगतोऽर्कदृष्टः ॥४३॥
रणाङ्गणावाप्तयशो विशेषो गभीरतागौरवसंयुतश्च ॥
भूपानुकम्पासमुपात्तवित्तो नरोऽलिनीन्दौ क्षितिजेन दृष्टे ॥४४॥

यदि चन्द्रमा वृश्चिक राशिका बैठा होवे और उसे सूर्य देखता होवे तब सद्वर्तावसे रहित, धनवान् मनुष्योंको असह्य, और अत्यन्त परिश्रमी तथा बलका स्थान होता है ॥ ४३ ॥ वृश्चिक राशिस्थ चन्द्रमाको मङ्गल देखता होवे तब वह पुरुष रणांगणसे यश संपादन करनेवाला और गंभीरता तथा गौरवसे युक्त, राजानुग्रह से धनसंपादन करनेवाला होता है ॥ ४४ ॥

वाग्विलास कुशलो रणशीलो गीतनृत्यनिरतश्च नितान्तम् ॥
कूटकर्मणि नरो निपुणः स्याद्वृश्चिके शशिनि चन्द्रजदृष्टे ॥४५॥
लोकानुरूपः सुतरां सुरूपः सत्कर्मकृद्वित्तविभूषणाढ्यः ॥
स्यान्मानवोजन्मनि शीतरश्मौ संस्थोलिनीज्येन निरीक्ष्यमाणे॥४६

जब वृश्चिक राशिस्थ चन्द्रमाको बुध देखता होवे तब वह पुरुष भाषण करनेमें कुशल, लड़नेमें जिसकी रुचि, गाने नाचनेमें निरत और सब समय कपटके कामों का करनेवाला होता है ॥ ४५ ॥ जब चन्द्रमा वृश्चिक राशिमें बैठा होवे और बृहस्पति उसे देखता होवे तब वह पुरुष लोकोंका अनुरूप,अतिशय सुरूप,सत्कर्मों का करने वाला और भूषण धारी होता है ॥ ४६ ॥

प्रसन्नमूर्तिः समुदारकीर्तिः कूटक्रियाज्ञो धनवाहनाढ्यः ॥
कान्ताहतार्थः पुरुषोऽलियाते शीतद्युतौ दैत्यगुरुप्रदृष्टे ॥ ४७ ॥
स्थानभ्रंशं दैन्यनाशाल्पवित्तं नीचापत्यासत्वयक्ष्मप्रकोपम् ॥
कुर्याच्चन्द्रः सूतिकालेऽलिसंस्थे छायापुत्रप्रेक्षणत्वं प्रयातः ॥४८॥

वृश्चिक राशिका चन्द्रमा होवे उसे शुक्र देखता होवे तो वह पुरुष सदा प्रसन्न मूर्ति, उदारकीर्ति युक्त, कपट कर्मोंका जानने वाला, धन वाहनसे परिपूर्ण, और स्त्रीके निमित्तसे उसका धन नष्ट होता है ॥ ४७ ॥ जिसके जन्म समयमें चन्द्रमा वृश्चिक राशिमें बैठा होवे और उसे शनि देखता होवे तो वह पुरुष स्थान भ्रष्ट, दैन्य रहित,अल्प धन, नीच संतति, किंचित्पराक्रम युक्त और यक्ष्मारोगी होताहै४८

प्रौढप्रतापोत्तमकीर्तिसंपत्सद्वाहनान्याहवजं जयं च ॥
नृपप्रसादं कुरुते नराणां ताराधिपश्चापगतोऽर्कदृष्टः ॥ ४९ ॥
सेनापतित्वं च महत्प्रतापं पद्मालयालंकरणोपलब्धिम् ॥
कुर्यान्नराणां हरिणाङ्क एष शरासनस्थोऽवनिजेन दृष्टः ॥५०॥

जिसके धनुराशिमें चन्द्रमा बैठा होवे और उसे सूर्य देखता होवे तब वह पुरुष प्रौढ प्रतापयुक्त, उत्तम कीर्ति, संपत् और उत्तम वाहनसे युक्त, संग्राम में जययुक्त, और राजानुग्रहका पात्र होता है॥४९॥जिसके जन्म समयमें धनुकाराशि का चन्द्रमा होवे और उसे मङ्गल देखता होवे तब उस पुरुषको सेनाका पति, महत्प्रतापी, लक्ष्मी और आभूषणसे युक्त करता है ॥ ५० ॥

सद्वाग्विलासं बहुभृत्ययुक्तं कुर्यान्नरं ज्योतिषशिल्पविद्यम् ॥
तुरंगजङ्घे हि कुरंगजन्मा कुरंगलक्ष्मप्रभवेण दृष्टः । ५१ ।
महत्पदस्थो धनवान्सुवृत्तो भवेन्नरश्चारुशरीरयष्टिः ॥
धनुर्धरे शीतकरे प्रयाते निरीक्षितशक्रपुरोहितेन ॥ ५२ ॥

जिसके जन्म समयमें चन्द्रमा धनुराशिमें बैठा होवे उसे बुध देखता होवे तब वह मनुष्य उत्तम वाग्विलाससे युक्त, अनेक नौकरों से युक्त, ज्योतिषविद्या और शिल्पविद्यासे युक्त होता है ॥ ५१ ॥ जिसके जन्म समयमें धनुराशिमें चन्द्रमा स्थित होता है और उसे बृहस्पति देखता होवे तौ वह पुरुष महत्पदमें स्थिति, धनवान् उत्तम बरतावसे युक्त और सुन्दर शरीरवाला होता है ॥ ५२ ॥

संतनार्थात्यन्तसंजातधर्मः शश्वत्सौख्येनान्विता मानवः स्यात्॥
तारास्वामी चापगामी प्रसूतौ दैत्यामात्यप्रेक्षणत्वं प्रयातः ॥५३॥
सत्वोपेतं नित्यशास्त्रानुरक्तं सद्वक्तारं मानवं च प्रचण्डम् ॥
कोदंडस्थस्तीक्ष्णरश्म्यात्मजेन दृष्टः सूतौ शीतरश्मिःकरोति । ५४॥

जिस पुरुष के जन्म समयमें धनुराशिमें बैठे चन्द्रमाको शुक्र देखता होवे तब वह पुरुष संतान के अर्थ अनेक धर्मादिक करने वाला और निरन्तर सुखसे युक्त होता है ॥ ५३ ॥ जिस पुरुषके जन्म समयमें धनराशिमें चन्द्रमा होवे उसे यदि शनि देखता होवे तब उस पुरुषको सत्व (बल) से युक्त, नित्य शास्त्रमें अनुरक्त, उत्तम वक्ता और बड़ा प्रचण्ड करता है ॥ ५४ ॥

गतधनो मलिनश्चलनप्रियो हतमतिः खलु दुःखितमानसः ॥
हिमकरे मकरे च दिवाकरे क्षितितनौ हि नरः प्रभवेद्यदि ॥५५॥
अतिप्रचण्डो धनवाहनाढ्यः प्राज्ञश्च दारात्मजसौख्ययुक्तः ॥
स्यान्मानवो वैभवभाङ्नितान्तं मृगे मृगाङ्केऽवनिसूनुदृष्टे ॥५६॥

जिस मनुष्यके जन्म समय में मकर राशिमें चन्द्रमा होवे और उसे सूर्य देखता होवे तौ वह मनुष्य धनहीन, मलिन, चलना फिरना जिसको प्रिय, नष्ट जिसकी बुद्धि और निश्चय करके दुःखित जिसका मन ऐसा होता है ॥५५॥ जिस मनुष्यके जन्म समयमें मकरराशिमें चन्द्रमा स्थित होवे उसे मंगल देखता होवे तब

प्रचंड, धन और वाहनोंसे परिपूर्ण, बड़ा बुद्धिमान् और स्त्री पुत्रों के सुखसे युक्त होता है ॥ ५६ ॥

बुद्धया हीनो निर्धनस्त्यक्तगेहो गेहिन्याद्यैरुज्झित पूरुषः स्यात॥
आर्क्षौ केरः स्थावरे शीतरश्मौ पीयूषाशोरात्मजेन प्रदृष्टे ॥५७॥

नृपात्मजः सत्ययुतो गुणज्ञः कलत्रपुत्रादियुतो नर स्यात् ॥
मृगानने जन्मनि यामिनीशे वाचामधीशेन निरीक्ष्यमाणे॥५८॥

जिस मनुष्य के जन्म समय में चंद्रमा मकरमें स्थितहोवे और उसे यदि बुध देखताहोवे तब वह पुरुष बुद्धिसे हीन.धनरहित, घरका त्याग करने वाला, स्त्रीआदि से परित्यक्त होता है ॥५७॥ जिसके जन्म समयमें मकरमें चन्द्रमा स्थितहोवे और उसे बृहस्पति देखता होवे तौ वह पुरुष राजाका पुत्र, सत्यता से युक्त, गुणोंकाज्ञाता और स्त्री पुत्रादिकों से युक्त होता है ॥ ५८ ॥

सुनयनो धनवाहनसंयुतः सुतविभूपणवस्त्रसुखो नरः ॥
कुमुदिनीदयिते मृगसंस्थिते भृगुसुतेन जनो ननु वीक्षिते ॥५९॥

महालसो मन्दधनस्त्वसत्यो मलीमसः स्याद्व्यसनाभिभूतः ॥
पीयूषमूर्तिर्यदि नक्रवर्तीत्रिमूर्तिपुत्रेण निरीक्ष्यमाणः ॥६०॥

जिसके जन्म समयमें मकरराशिमें स्थित चन्द्रमाको शुक्र देखता होवे तो वह पुरुष सुन्दर नेत्र, धन और वाहन से युक्त और पुत्र आभूषण वस्त्र इनके सुखोंसे संयुक्त होता है ॥ ५९ ॥ जिसके जन्म समयमें मकर राशिस्थ चन्द्रमा को शनि देखता हो वह पुरुष बड़ा आलसी, अल्प धनवाला, झूंठ बोलनेवाला, अति मलिन और अनेक व्यसनोंसे युक्त होता है ॥ ६० ॥

कृषीवलः कैतवसंयुतश्च नृपाश्रितो धर्मरतो नरः स्यात ॥
पीयूषमूर्तिर्यदि कुम्भगामी त्वम्भोजिनीस्वामिनिरोक्ष्यमाणः॥६१॥

धनभवनजनित्रीतातविश्लेषयुक्तो
विपमतमपदार्थोत्पादकोऽनल्पजल्पः ॥
भवति मलिनचित्तोत्यन्तधूर्तो हि मर्त्यः
शशिनि कलशयाते वीक्षिते भूसुतेन ॥

जिसके जन्म समयमें चन्द्रमा कुम्भराशिमें स्थितहो और यदि उसेसूर्य देखता हो तब वह पुरुष खेती करनेवाला,बड़ा कपटी,राजाका आश्रित और धर्ममें रतहोता है॥६१॥जिसके जन्म समयमें कुम्भराशिमें चन्द्रमा स्थितहो उसे मङ्गल देखताहोतौ वह पुरुष धन,घर,माता और पिता इनसे सदा रहित,अत्यन्त विषम वस्तुका उत्पादन करने वाला,बहुभाषी, अत्यन्त मलिन मनवाला और बड़ा धूर्त होता है ॥६२॥

विषयसौख्यरतोशनसंविधौ रुचिरतीव शुचिः प्रियभाषणः ॥
युवतिगीतसुनीतकृतादरो घटगतेन्दुरिह ज्ञनिरीक्षितः ॥ ६३ ॥
महीपुरग्रामसुखादिसौख्यं भोगान्वितं साधुजनप्रवृत्तिम् ॥
कुर्यान्नरं श्रेष्ठतरं घटस्थो निशाकरः शक्रगुरुप्रदृष्टः ॥ ६४ ॥

यदि कुम्भराशिमें स्थित चन्द्रमाको बुध देखता हो तौ वह पुरुष विषयके सुखमें रत, भोजन की विधिमें रुचि रखने वाला, अत्यंत पवित्र, प्रियवक्ता और युवती (स्त्री) गीत और सुन्दरनीति इनमें आदर युक्त होताहै॥६३॥ यदि कुम्भमें चन्द्रमा स्थित और उसे बृहस्पति देखताहोतौ उस पुरुषको पृथ्वी,पुर,ग्राम, इनके सुखसे युक्त,भोगोंका भोगने वाला,साधुजनोंमें प्रीति रखने वाला और सबोंमें अत्यन्त श्रेष्ठ करता है ॥ ६४ ॥

मित्रात्मजस्त्रीगृहसौख्यहीनो दीनो जनोत्सारितगौरवः स्यात् ॥
निशाकरे कुम्भधरे प्रसूतौ संवीक्षिते दानवपूजितेन ॥ ६५ ॥
नखोष्ट्रबाला श्वतरादिलाभकुस्त्रीरतं धर्मविरुद्धवृत्तिम् ॥
करोति पुंसां हि घटेऽधितिष्ठन् निशाकरो भास्करसूनुदृष्टः॥६६॥

जिसके जन्म समयमें कुम्भ राशिमें स्थित चन्द्रमा को शुक्र देखता होतौ वह पुरुष मित्र पुत्र स्त्री घर इन सबोंके सुख संरहित,बड़ादीन और मनुष्योंसे तिरस्कृत होता है ॥६५॥ जिसके जन्मसमयमें कुम्भगत चन्द्रमा शनि करके दृष्ट होता है उस पुरुष को नखवाले जीवों का, ऊंटका बच्चा और खिच्चरादिकोंका लाभ करता है और किसी दुष्ट स्त्रीमें रत करता है और उस पुरुष की धर्मसे विरोध करनेवाली वृत्ति करता है ॥ ६६ ॥

मनोभवोत्कर्षमतीव सौख्यं सेनापतित्वं बहुवित्तवृद्धिम् ॥
सत्कार्यसिद्धिं कुरुते हिमांशुर्झषे दिनेशेन निरीक्ष्यमाणः ॥

पराभिभूतं कुटिलाधिसख्यं सौख्योज्झितं पापरतं नितान्त ॥
करोति जातं हि निधिः कलानां मीनस्थितो भूमिसुतेन दृष्टः॥६८

जिसके जन्मपत्र में चन्द्रमा मीन राशिका होकर बैठता है और उसे सूर्य देख देखताहो तौ उस पुरुषको अत्यन्त कामी,अत्यन्त सुखी और सेनापति करताहै,बहुत से धनकी वृद्धि करता है और उसके अच्छे कार्योंका सिद्धि करता है ॥६७॥ जब मीन राशिमें स्थित चंद्रमाको मंगल देखता हो तब उसको सब समय शत्रु से दबा रहना,कुलटा से स्नेह करने वाला,सुखसेहीन और पापोंमें निरन्तर रत करताहै॥६८॥

वाराङ्गनासूनुसुखानि नूनं मानं धनं भूमिपतेः प्रसादम् ॥
कुर्यान्नराणां हरिणाङ्कएष वैसारिणस्थोज्ञनिरीक्ष्यमाणः ॥ ६९ ॥
उदारदेहं सुकुमारदेहं सद्गेहिनीसूनधनादिसौख्यम् ॥
नृपं विदध्यात्पृथुरोमगामी तमीपतिर्वाक्पतिवीक्षितश्चेत ॥ ७० ॥

मीन राशिमें स्थित चन्द्रमाको जब बुध देखता है तब वह मनुष्य को वेश्याके सुख और पुत्र के सुख, मान, धन और राजा की प्रसन्नता इन सबोंसे युक्तकरता है ॥ ६९ ॥ जब मीन राशिमें स्थित चन्द्रमा गुरु से दृष्ट होवे तब वह मनुष्य को उदार देह वाला, अत्यन्त सुकुमार, उत्तम स्त्री पुत्र धनादिकों के सुख से युक्त और किसी समय राजा करता है ॥ ७० ॥

सद्गीतवाद्यादिरतं सुवृत्तं विलासिनीकेलिविलासशीलम् ॥
करोतिमर्त्यं तिमियुग्मसंस्थः शीतद्युतिजन्मनि शुक्रदृष्टः ॥७१॥
कामातुरं दारसुतैर्विहीनं नीचाङ्गनासख्यमविक्रमं च ॥
नीहाररश्मिः शफरं प्रपन्नो नरं विदध्याद्रविसूनुदृष्टः ॥ ७२ ॥

जिसके जन्म समयमेंमीनमें स्थित चंद्रमाको शुक्र देखताहोतौ उसपुरुषकोउत्तम गीत वाद्योंमें रत,सुन्दर वरताववाला और स्त्रियोंके साथ क्रीड़ा करनेवाला करता है ॥७१॥ जब शनिसे दृष्ट चन्द्रमा मीनराशिमें स्थित होताहै तब वह मनुष्यको सदा कामातुर,स्त्री पुत्रसे विहीन,नीच स्त्रीसे मीत करने वाला और पराक्रम हीन करताहै॥७२

अथ स्वभेभौमेदृष्टयः ॥

प्राज्ञः सुवक्ता पितृमातृभक्तो धनी प्रधानोऽतितरामुदारः ॥
नरो भवेदात्मगृहे महीजे सरोजिनीराजनिरीक्ष्यमाणे ॥ १ ॥

अन्यांगनासक्तमतीव शूरं कृपाविहीनं हतचोरवर्गम् ॥
नरं प्रकुर्य्यान्निजधामगामी भूमीतनूजो द्विजराजदृष्टः ॥ २ ॥

सूर्य जिसे देखताहो ऐसा मङ्गल यदि मेषराशिमें हो तौ मनुष्यको बड़ा बुद्धिमान्, बड़ा वक्ता, माता पिताकाभक्त, धनवान, राजाकामन्त्री और अतिशय उदार करताहै ॥ १ ॥ यदि मङ्गल अपने स्थान का हो और चन्द्रमा उसे देखताहो तौ उस मनुष्य को अन्य स्त्रीमें आसक्त, अत्यंत शूर, कृपाहीन और चोरों को मारने वाला होता है ॥ २ ॥

पण्यांगनालंकरणैकवृत्तिर्विचक्षणोऽन्यद्रविणापहारी ॥
भवेन्नरः स्वर्क्षगते प्रसूतौ क्षोणीसुते सोमसुतेन दृष्टे ॥ ३ ॥
वंशेऽवनीशो धनवान्सकोपो नृपोपचारः कृतचारसौख्यः ॥
आरे निजागारगते नरः स्यात्सूतौ सुराचार्य्यनिरीक्ष्यमाणे ॥ ४ ॥

यदि मङ्गल अपने घरका हो और उसे बुध देखताहो तौ वह पुरुष वेश्याओंके शृङ्गार करनेकी जीविका करनेवाला बड़ाचतुर और दूसरेके धनका हरनेवाला होता है ॥ ३ ॥ अपने घरमें मङ्गल बैठा हो और उसे बृहस्पति देखता हो तौ वह मनुष्य अपने वंश में राजा, धनसे संयुक्त, राजाकेसे जिसके उपचार और गुप्तदूतोंके सुखसे संयुक्त होता है ॥ ४ ॥

भूयो भूयो भोजनोत्सुक्यसक्तः कान्ताहेतोर्यानचिन्तानितान्तम् ॥
प्राणी पुण्ये कर्मणि प्रीतिमान्स्यात्स्वर्क्षे भौमे भार्गवेण प्रदृष्टे ॥५॥
मित्रोज्झितं मातृवियोगतप्तकृशांगयष्टिं विषमं कुटुम्बे ॥
ईर्ष्याविशेषं पुरुषं विदध्यात्कुजः स्वभेस्थोर्कसुतेन दृष्टः ॥ ६ ॥

मङ्गल अपने घरमें स्थित हो और शुक्र उसे देखता हो तौ वह पुरुष वारम्वार भोजन में उत्कण्ठा रखनेवाला, स्त्रीके निमित्तसे निरंतर यात्रा विषयकी चिंतायुक्त और पुण्य कर्ममें प्रीति रखनेवाला होता है ॥५॥ जब मङ्गल अपने स्थानमें वर्तमानहो और उसे शनि देखताहोतौ उस पुरुषको मित्रोंसे रहित, माताके वियोगसे कृश अङ्ग कुटुम्वमें विषम और विशेष ईर्षायुक्त करता है ॥ ६ ॥ इति स्वभे भौमे दृष्टयः ॥

अथ शुक्रगृहस्थे भौमे ग्रहदृष्टयः ।

कान्तामनोवृत्तिविहीनमुच्चैर्वनाद्रिसंस्थानरुचिं विपक्षम् ॥
प्रचंडकोपं कुरुते मनुष्यं कुजः सितागारगतोऽर्कदृष्टः ॥१॥
अम्बाविरुद्धः खलु युद्धभीरुर्बह्वङ्गनानामपि नायकश्च ॥
स्यान्मानवोभूतनये सितर्क्षे नक्षत्रनाथेन निरीक्ष्यमाणे ॥ २ ॥

यदि मङ्गल शुक्र के स्थानमें होवे और उसे सूर्य देखता होवे तब स्त्रीमें मनो वृत्तिरहित, वनमें और पर्वतमें रहनेमें रुचियुक्त और अत्यन्त कोपयुक्त उस पुरुषको करता है ॥ १ ॥ जो शुक्रस्थानगत मङ्गलको चन्द्रमा देखता होवे तब वह पुरुष मातासे विरोधी, युद्धमें डरपोक और अनेक स्त्रियोंका नायक होता है ॥ २ ॥

शास्त्रप्रवृत्तिः कलहप्रियः स्यादनल्पजल्पोऽल्पधनागमश्च ॥
सत्कायकान्तिः परिसूतिकाले सितालयस्थे शशिजेन दृष्टे ॥३॥
बन्धुप्रिये स्यान्निरतोतिभाग्यः सद्गीतनृत्यादिविधिप्रवीणः ॥
क्षोणीतनूजे भगजर्क्षयाते संवीक्षिते वाक्पतिना प्रसूतौ ॥ ४ ॥

जो शुक्राशिस्थ मङ्गलको बुध देखता होवे तब वह पुरुष शास्त्रमें प्रवृत्तिवाला कलहहै प्रिय जिसको, बहुत बोलने वाला, बहुत धनवाला और अच्छे शरीरकी कांतिसे युक्त होताहै ॥३॥ जो शुक्रकी राशिमें मङ्गल होवे उसे बृहस्पति देखता होवे तब भाइयोंके प्यारमें निरत, बड़ा बड़भागी, नृत्य गायनविद्यामें कुशल होता है॥४॥

सुश्लाघ्यनामा क्षितिपालमन्त्री सेनापतिर्वा बहुसौख्ययुक्तः ॥
स्यान्मानवः शुक्रगृहोपयाते निरीक्षिते भूमिसुते सितेन ॥ ५ ॥
ख्यातो विनीतो धनवान्सुमित्रः पवित्रबुद्धिः कृतशास्त्रयत्नः ॥
नरः पुरग्रामपतिः सितर्क्षे भूनन्दने भानुसुतेन दृष्टे ॥ ६ ॥

जो शुक्रके घरमें स्थित मङ्गलको शुक्रही देखता होवे तव वह पुरुष प्रशंसित नामवाला, राजाका मंत्री, सेनाका पति और बहु सुखसे युक्त होता है ॥५॥ शुक्र के घरमें स्थित मङ्गलको शनि देखता होवे तब वह पुरुष विख्यात, बड़ा नम्र, धन युक्त, अच्छे जिसके मित्र, पवित्र जिसकी बुद्धि, शास्त्रमें यत्न करनेवाला और पुरग्रामोंका पति होता है ॥ ६ ॥ इति शुक्रभवनस्थे भौमे ग्रहदृष्टयः ।

अथ बुधभवनस्थे भौमे ग्रहदृष्टयः ।

विद्याधनैश्वर्ययुतः ससत्त्वमरण्यदुर्गाचलकेलिशीलम् ॥
कुर्यान्नरं सोमसुतालयस्थः क्षोणीसुतः सूर्यनिरीक्ष्यमाणः ॥ १॥
संरक्षणे भूपतिना नियुक्तं कान्तारतिं सत्वयुतं सतोषम्॥
भूमीसुतः संजनयेन्मनुष्यं बुधर्क्षसंस्थः शशिनी प्रदृष्टः ॥ २ ॥

यदि मङ्गल बुधके घरमें स्थित होवे उसे सूर्य देखता होवे तब वह पुरुष विद्याधन और ऐश्वर्यसे युक्त, पराक्रम सहित और वन दुर्ग पर्वतमें क्रीड़ा करनेके स्वभाव वाला होता है ॥१॥ यदि बुधके घरमें बैठे मङ्गल को चन्द्रमा देखता होवे तब वह पुरुष राजा से नियत किया हुआ रक्षक, स्त्रीमें रति करने वाला, सत्व से युक्त और संतोषी होता है ॥ २ ॥

अनल्पजल्पं गणितप्रगल्भं काव्यप्रियं चानृतचारुवाक्यम् ॥
दौत्ये प्रयासैः सहितं प्रकुर्याद्धरातनूजोज्ञगृहे ज्ञदृष्टः ॥ ३ ॥
अन्यदेशगमनं व्यसनाद्यैः संयुतं हि कुरुते नरमुच्चैः ॥
सोमसूनुभवनेऽवनिसूनुर्दानवारिसचिवेन च दृष्टः ॥ ४ ॥

बुधके स्थान में स्थित मङ्गलको बुध देखता होवे तब वह पुरुष अत्यन्त बोलने वाला, गणितमें दृढ़, काव्यप्रिय, झूंठे और प्यारे वाक्योंका कहने वाला और दूतकर्ममें प्रयाससहित होता है॥३॥बुधके भवन में मङ्गल होवे और गुरु उसे देखता होवे तब पुरुष अन्य देशमें जाता है और संकटादिकों से युक्त होता है॥ ४ ॥

वस्त्रान्नपानीयसुखैः समेतं कान्ताप्रसक्तं सुतरां समृद्धम् ॥
कुर्यान्नरो भूमिसुतोबुधर्क्षसंस्थः प्रदृष्टो भृगुनन्दनेन ॥ ५ ॥
अतीव शूरो मलिनोऽलसश्च दुर्गाचलारण्यविलासशीलः ॥
भवेन्नरो भास्करसूनुदृष्टे धरासुते सोमसुतालयस्थे ॥ ६ ॥

मङ्गल बुध के घरमें स्थित होवे उसे शुक्र देखता होवे तब वह पुरुष वस्त्र अन्नपानके सुखसे युक्त, स्त्रीमें आसक्त और अतिशय करके समृद्ध होता है॥ ५ ॥ यदि मङ्गल बुधके घरमें स्थित होवे और उसे शनि देखता होवे तब वह पुरुष अत्यन्त शूरवीर, मलिन, आलसी और दुर्ग पर्वत बनमें क्रीडा करनेके स्वभाववाला होता है ॥ ६ ॥ इति बुधभवनस्थ भौमे ग्रहदृष्टयः ॥

अथ कर्कस्थभौमे ग्रहदृष्टयः ।

पित्तप्रकोपार्तियुतोतिधीरो दण्डाधिकारी सुतरा महौजाः ॥
भवेन्नरः कर्कगते महीजे निरीक्ष्यमाणे रविणा प्रसूतौ ॥ १ ॥
गदर्दितो गतवस्तुशोको विहीनवेषो गतसाधुवृत्तः ॥
भवेन्नरो जातः टगे महीजे सोमेन सूतौ च निरीक्ष्यमाणे ॥ २ ॥

जब कर्कराशिमें मङ्गल स्थितिहो और उसे सूर्य देखता हो तब वह मनुष्य पित्तजन्य व्याधियोंसे युक्त; बड़ा धीर, दण्डका अधिकारी और बड़ा पुरुषार्थी होता है॥१॥जब कर्कमें स्थित मङ्गलको चन्द्रमा देखता हो तब वह मनुष्य रोगसे व्याप्त, गई वस्तुके शोकसे युक्त,विहीन (खराब)जिसका वेश और साधुवृत्तसे रहित होता है॥२॥

मित्रैर्विमुक्तोल्पकुटुम्बभारः पापप्रचारः खलचित्तवृत्तिः ॥
बुधेन दृष्टे सति कर्कटस्थे भौमे नरः स्याद्व्यसनाभिभूतः ॥३॥
नरेन्द्रमन्त्री गुणगौरवाढ्यो मान्यो वदान्यो मनुजः प्रसिद्धः ॥
कुलीरसंस्थे तनये धरित्र्या निरीक्षिते चित्रशिखण्डिजेन ॥ ४ ॥

जब कर्क राशिमें स्थित चन्द्रमाको बुध देखता होवे तब वह मनुष्य मित्रों से रहित, थोड़ा कुटुम्बवाला, पापमें प्रवृत्त, खल पुरुषों के चित्तकीसी वृत्तिवाला और अनेक व्यसनों से युक्त होता है ॥ ३ ॥ कर्क में स्थित मङ्गलको यदि बृहस्पति देखता हो तो वह पुरुष राजा का मन्त्री, गुण गौरवसे परिपूर्ण, मान्य, वदान्य (दाता) और बड़ा प्रसिद्ध होता है ॥ ४ ॥

अर्थक्षयो दुर्व्यसनेन नूनं निरन्तरानर्थसमुद्भवः स्यात् ॥
भवेन्नराणां भृगुणा प्रदृष्टे त्वाङ्गारके कर्कटराशिसंस्थे ॥ ५ ॥
कीलालधान्यादिधनः सुकान्तिर्महीपतिप्राप्तधनो मनुष्यः ॥
महीसुतः कर्कटराशियाते निरीक्षिते सूर्यसुतेन सूतौ ॥ ६ ॥

कर्क राशिस्थ चन्द्रमाको शुक्र देखता हो तौ वह पुरुष दुर्व्यसन से धनक्षय करनेवाला और निरन्तर अनर्थ उत्पन्न करनेवाला होता है॥५॥कर्क राशिस्थ मङ्गल को शनि देखताहो तौ वह मनुष्य जल धान्यादि धन आदिकोंसे युक्त,सुन्दर कांति युक्त और राजासे मिले धन पाने वाला होताहै॥६॥इति कर्कस्थभौमे ग्रहदृष्टिफलम् ।

अथ सिंहस्थेभौमे ग्रहदृष्टयः ।

हितप्रकर्ताऽभिमतेषु नूनं द्विषज्जनानामहितप्रदाता ॥
वनाद्रिकुञ्जेषु कृतप्रचारः सिंहे महीजे रविणा प्रदृष्टे ॥ १ ॥
प्रपुष्टमूर्तिः कठिणस्वभावश्चाम्बाविनीतो निपुणः स्व[illegible] ॥
तीव्रः पुमांश्चारुमतिः प्रसूतौ सिंहे महीजे द्विजराजदृष्टः ॥ २ ॥

जब मङ्गल सिंहमें बैठा हो और सूर्य उसे देखता हो तौ वह मनु[illegible] वह पुरुष प्रिय मनुष्यों का हित करने वाला, शत्रुजनोंका अहित करने वाला और वन, [illegible] पर्वत कुञ्जोंमें विचरने वाला होता है ॥ १ ॥ सिंह राशिस्थ मङ्गलको चन्द्रमा देखता होता हो तौ वह पुरुष अत्यन्त पुष्ट, कठोर स्वभाव वाला, माताका सेवक, अपने [illegible]र्यमें कुशल, बड़ा तीव्र और पवित्रबुद्धिसे युक्त होता है ॥ २ ॥

सत्काव्यशिल्पादिकलाकलापेऽभिज्ञोऽपि लुब्धश्चलचित्तवृत्तिः ॥
स्वकार्यसिद्धौ निपुणो नरः स्यात्सिंहे महीजे शशिजेन दृष्टे ॥ ३ ॥
प्रशस्तबुद्धिर्नृपतेः सुहृच्च सेनाधिनाथोऽभिमतो बहूनाम ॥
विद्याप्रवीणोहि नरः प्रसूतौ जीवेक्षिते सिंहगते महीजे ॥ ४ ॥

सिंह का मङ्गल हो और उसे बुध देखता हो तौ वह पुरुष सत्काव्यशिल्पादिक [क]लाओंका जाननेवाला होवे तौभी बड़ा लोभी, अपने कार्यमें निपुण और चञ्चल चित्त वृत्तिसे युक्त होता है ॥ ३ ॥ सिंहस्थ मङ्गलको यदि गुरु देखताहो तौ वह पुरुष उत्तम बुद्धिसे युक्त, राजाका सुहृद, सेनाका स्वामी, बहुतोंको अभिमत और विद्यामें निपुण होता है ॥ ४ ॥

गर्वोन्नतोऽत्यन्तशरीरकान्तिर्नानांगनाभोगयुतः समृद्धः ॥
भूमीसुते सिंहगते प्रसूतो निरीक्षिते दैत्यपुरोहितेन ॥ ५ ॥
भवेन्निवासोऽन्यगृहेऽतिचिन्ता वृद्धाकृतित्वं द्रविणोज्झितत्वम् ॥
भवेन्नराणां धरणीतनूजे सिंहस्थिते भानुसुतेन दृष्टे ॥ ६ ॥

सिंहस्थ मङ्गलको शुक्र देखता हो तौ वह पुरुष बड़ा गर्वीला, बड़ा तेजस्वी, अनेक स्त्रियोंके संग भोग करनेवाला और समृद्ध होताहै ॥ ५ ॥ सिंहराशिस्थ मङ्गलको यदि शनि देखता हो तौ वह पुरुष दूसरोंके घरमें रहने वाला अति चिन्ता-

युक्त, वृद्धपुरुषकीसी आकृतिवाला और धनरहित होताहै ॥ ६ ॥ इति सिंहस्थिते भौमे ग्रहदृष्टयः ।

अथ जीवभवनस्थे भौमे ग्रहदृष्टयः ।

वनाद्रिदुर्गेषु कृताधिवासं क्रूरं सभाग्यं जनपूजितं च ॥
करोति जातं धरणी तनूजो जीवर्क्षयातस्तरणिप्रदृष्टः ॥ १ ॥
विद्वद्विधिज्ञं नृपतेरसह्यं कलिप्रियं सर्वनिराकृतं च ॥
प्राज्ञं प्रकुर्यान्मनुजं धराजो जीवर्क्षगः शीतकरप्रदृष्टः ॥ २ ॥

बृहस्पतिकी राशि धन और मीन (९।१२) में जब मङ्गल स्थितहो और सूर्य उसे देखता हो तब वह उस मनुष्यको वन, पर्वत और दुर्ग इनमें वास करने वाला, क्रूर स्वभाव और मनुष्योंसे पूजित करता है ॥ १ ॥ बृहस्पति की राशि में स्थित मंगलको यदि चन्द्रमा देखता होतौ उस पुरुषको विद्वानोंकी विधिका जाननेवाला; राजा को भी असह्य, कलह प्रिय, सर्वोका तिरस्कार करनेवाला और बड़ा बुद्धिमान करता है ॥ २ ॥

प्राज्ञं च शिल्पे निपुणं सुशीलं समस्तविद्याकुशलं विनीतम् ॥
करोति जातं खलु लोहितांगः सौम्येन दृष्टो गुरुगेहयातः॥३॥
कान्तातिचिन्तासहितं नितान्तमरातिवर्गैः कलहानुरक्तम् ॥
स्थानच्युतं भूमिसुतः प्रकुर्याज्जीवेक्षितोजीवग्रहाधिसंस्थः ॥ ४ ॥

बृहस्पति के स्थानमें मंगल स्थित हो और उसेबुध देखताहोतौ वहउस पुरुषको बड़ा बुद्धिमान, शिल्पमें निपुण,सुशील,समस्त विद्यामें कुशल और बड़ा नम्र करता है ॥३॥ जब बृहस्पतिके घरमें बैठे मङ्गलको यदि बृहस्पति ही देखता हो तौ वह उस पुरुषको स्त्रीविषयक चिंतासे युक्त,शत्रुवर्गों से निरंतर कलह करनेवाला और स्थान से भ्रष्ट करता है ॥ ४ ॥

उदारचेताविषयानुसक्तो विचित्रभूषापरिभूषितश्च ॥
भाग्यान्वितः स्यात्पुरुषोऽवनीजे जीवक्षगे दानवपूज्यदृष्टे ॥५॥
कायकान्तिरहितश्च नितान्तं स्थानसंचलरतोऽपि च दुःखी ॥
अन्यकर्मनिरतश्च नरः स्याज्जीवधाम्नि कुसुतेऽर्कजदृष्टे ॥ ६ ॥

जिसके जन्म समयमें बृहस्पति की राशिमें मङ्गल स्थित हो और यदि उसे शुक्र देखता होतो वह पुरुष उदार चित्त, विषयों में अनुरक्त, विचित्र भूषणों से भूषित और बड़ा भाग्यवान् होता है ॥५॥ बृहस्पति की राशिमें मङ्गल स्थित हो और उसे शनि देखता हो तौ वह पुरुष निरन्तर तेजहीन और सब जगह भ्रमण करनेवाला, बड़ा दुःखी और अन्यों के कर्म करने में सदा प्रवृत्त होता है ॥ ६ ॥ इति जीवभवनस्थे भौमे ग्रहदृष्टयः ॥

अथ शन्यगारगतभौमे ग्रहदृष्टयः ।

कलत्रपुत्रार्थसुखैः समेतं श्यामं सुतीक्ष्णं सुतरां च शूरम् ॥
कुर्यान्नरं भूतनयोऽर्कदृष्टश्चार्कात्मजागारगतः प्रसूतौ ॥ १ ॥
सद्भूषणं मातृसुखेन हीनं स्थानच्युतं चञ्चलसौहृदं च ॥
उदारचित्तं प्रकरोति जातं कुजोऽर्कजस्थे शशिना प्रदृष्टः॥२॥

जिसके जन्मसमयमें सूर्य दृष्ट मङ्गल शनि की राशि १०।११ में स्थित हो वह मनुष्य धन पुत्र कलत्रसे सुखी श्यामवर्ण, बड़ा तीक्ष्ण और अत्यन्त शूरवीर होता है।१। जब मङ्गल शनि के घर में स्थित हो और उसे चन्द्रमा देखता हो तौ उसपुरुष को उत्तम भूषणों से युक्त, माताके सुख से रहित, स्थान से भ्रष्ट, चञ्चल मित्रता रखने वाला और उदारचित्त करता है ॥ २ ॥

प्रियोक्तियुक्तोऽटनलब्धवित्तः सत्त्वान्वितः कैतवसंयुतश्च ॥
अभीर्नरोमन्दगृहं प्रयाते पृथ्वीसुते चन्द्रसुतेन दृष्टे ॥ ३ ॥
दीर्घायुषं भूपकृपागुणाढ्यं बन्धुप्रियं चारुशरीरकान्तिम् ॥
कार्यप्रलापं जनयेन्मनुष्यं जीवेक्षितोमन्दगृहे महीज ॥४॥

जब मङ्गल शनि के घर में बैठा हो और उसे बुध देखता होतौ वह पुरुष प्रियवक्ता, देशाटन करके धन प्राप्त करनेवाला, बड़ा पुरुषार्थी, बड़ा कपटी और निर्भय होता है ॥३॥ जब शनि की राशिमें बैठे मङ्गल को बृहस्पति देखता है तब उसपुरुष की दीर्घायु राजा की कृपा के लिये योग्य गुणों से परिपूर्ण, भाई का प्यारा, दिव्य शरीरकी कान्तिसे युक्त और कार्यों (कर्मों) का प्रलाप करने वाला करताहै ॥४॥

सद्भोगसौभाग्यसुखैः समेतः कान्ताप्रियोऽत्यन्तकलिप्रियश्च ॥
क्षोणीसुते मन्दगृहं प्रयाते निरीक्ष्यमाणे भृगुणाः नर स्यात् ॥५॥

नृपाप्तवित्तो वनिताविषादो बहुश्रुतोऽत्यन्तमतिः सकष्टः ॥
रणप्रियः स्याद्धरणीतनूजे मन्देक्षिते मन्दगृहं प्रयाते ॥ ६ ॥

मङ्गल शनिकी राशिमें स्थितहो और उसे शुक्र देखताहो तौ वह पुरुष उत्तम भोग और सौभाग्य सुखोंसे युक्त, स्त्रीप्रेमी और कलह प्रिय होताहै॥५॥जब मङ्गल शनिके स्थानमें स्थितहो और उसे शनि ही देखता हो तौ वह पुरुष राजा से धन प्राप्त करनेवाला, स्त्रीसे दुःखी, अनेक शास्त्रोंको देखनेवाला, बड़ा बुद्धिमान, कष्टसे युक्त और युद्ध प्रिय होताहै ॥ ६ ॥ इति मन्दागारगतभौमे ग्रहदृष्टयः ॥

अथ भौमगेहगत बुधे ग्रहदृष्टयः ।

बन्धुप्रियं सत्यवचोविलासं नृपालसद्गौरवसंयुतं च ॥
करोति जातं क्षितिसूनुगेहे संस्था बुधो भानुमता प्रदृष्टः ॥१ ॥
सद्गीतनृत्यादिरुचिः प्रकामं कान्तारतिर्वाहनभृत्ययुक्तः ॥
कौटिल्यभाक्स्यान्मनुजः कुजर्क्षे सोमात्मजे शीतकरप्रदृष्टे ॥२ ॥

जब बुध मङ्गलके घरमें बैठाहो और उसे सूर्य देखताहो तौ वह पुरुष बन्धु जनोंको प्रिय, सत्य बोलने वाला, राजासे प्राप्त गौरवसे युक्त होताहै॥१॥जब मङ्गल के घरमें स्थित बुधको चन्द्रमा देखताहो तौ उस पुरुषके सद्गीतनृत्य आदि में रुचि से युक्त, स्त्रीमें अत्यन्त आसक्त, वाहन और भृत्योंसे युक्त और कुटिल भाव युक्त करता है ॥ २ ॥

भूपप्रियं भूरिधनं च शूरं कलाप्रवीणं कलहोद्यतं च ॥
क्षुधान्वितं सञ्जनयेन्मनुष्यं सौम्यः कुजर्क्षे कुसुतेन दृष्टः ॥ ३ ॥
सुखोपपन्नं चतुरं सुवाक्यं कान्तासुताद्यैः सहितं प्रसन्नम् ॥
करोति मर्त्यं कुजगेहगामी सोमात्मजो वाक्पतिना प्रदृष्टः॥४ ॥

जब मङ्गलके घरमें स्थित बुधको मङ्गलही देखताहो तब वह मनुष्य राजा को प्रिय, बहुत धन से युक्त, शूरवीर, कलाओं में कुशल, कलह करने को उद्यत और क्षुधासे युक्त करताहै ॥ ३ ॥ जब मङ्गल के घरमें बैठे हुए बुधको बृहस्पति देखताहो तब वह उस मनुष्यको सुखसे युक्त, बड़ा चतुर, सुन्दर वचन कहनेवाला, स्त्री पुत्रादिकों युक्त और सदा प्रसन्न मुख करता है ॥ ४ ॥

कान्ताविलासं गुणगौरवाढ्यं सुहृत्प्रियं चारुमतिं विनीतम् ॥
करोति जातं शशिजः कुजर्क्षे संस्थश्च शुक्रेण निरीक्ष्यमाणः ॥५ ।

सुसाहसं चोग्रतरस्वभावं कुलोत्कलिप्रीतिमसाधुवृत्तिम् ॥
करोति मर्त्यं हरिणाङ्कसूनुर्भौमर्क्षसंस्थः शनिना प्रदृष्टः ॥ ६ ॥

जब मङ्गल के घर में बुध बैठाहो औरशुक्रउसे देखता हो तब वह पुरुषको स्त्री सुखसे परिपूर्ण, गुणोंके निमित्त बड़प्पनसे परिपूर्ण, सुहृद्जनों को प्रिय, पवित्र बुद्धि और बड़ा नम्र करताहै ॥५॥ जब मङ्गलके घरमें बैठेहुए बुधको शनि देखता हो तब वह पुरुषको बड़ा साहसी, उग्र स्वभाववाला, अपने कुलकी बढ़वारमें प्रीति युक्त, और खोटा जीविका करनेवाला करताहै ॥६॥ इति भौमगेहगतबुधे ग्रहदृष्टयः॥

अथ शुक्रर्क्षगे बुधे ग्रहदृष्टयः ।

दारिद्र्यदुःखामयतप्तदेहं परोपकाराभिरतं नितान्तम् ॥
शान्तं सुचित्रं पुरुषं प्रकुर्यात्सौम्यो भृगुक्षेत्रयुतोऽर्कदृष्टः ॥१॥
बहुप्रपञ्चं धनधान्ययुक्तं दृढव्रतं भूमिपतिप्रधानम् ॥
ख्यातं प्रकुर्यान्मनुजं हि सौम्यःशुक्रर्क्षसंस्थःशशिना प्रदृष्टः ॥२॥

यदि बुध शुक्रके घर २।७में बैठा होवे और उसेसूर्य देखता होवे तब उसपुरुष को दारिद्र, दुख और रोग से तप्त देह, परोपकार करनेमें निरंतर मन रखनेवाला शांत प्रकृत वाला और अति विचित्र करता है ॥ १ ॥ शुक्र के घरमें बुध बैठा होवे औरउसे चन्द्रमा देखता होवे तब वह पुरुष बड़ा प्रपंच वाला,धनधान्यसे युक्त दृढ़व्रती, राजा का मन्त्री और विख्यात होता है ॥ २ ॥

राजापमानादिगदप्रतप्तं त्यक्तं सुहृद्भिर्विषयैश्च नूनम् ॥
कुर्यान्नरं सोमसुतः सितर्क्षे संस्थो धरापुत्रनिरीक्ष्यमाणः ॥३॥
देशोत्तमग्रामपुराधिराजं प्राज्ञं गुणज्ञं गुणिनं सुशीलम् ॥
कुर्यान्नरं चन्द्रसुतः सितर्क्षे संस्थः सुराचार्यनिरीक्ष्यमाणः ॥४॥

शुक्र के घरमें बैठे बुधको यदि मङ्गल देखता होवे तब वह मनुष्य राजा से अपमान और रोगोंसे तापयुक्त और सुहृद और विषयोंसे परित्यक्त होताहै॥३॥ जब बुध शुक्र की राशि २।७ में स्थित होवे और बृहस्पति उसे देखता होवे तब वह पुरुष किसी उत्तम देश ग्राम अथवा पुर का राजा होताहै और बड़ा बुद्धिमान गुणों का जानने वाला, अनेक गुणों से युक्त और बड़ा सुशील होता है ॥ ४ ॥

अतिसुललितवेषवस्त्रभूषाविशेषैर्युवतिजनमनोज्ञंमन्मथोत्कर्षहर्षम् ॥
अतिचतुरमुदारंचारुभाग्यंप्रकुर्याद्भृगुगृहगतसौम्योभार्गवेणप्रदृष्टः ॥५॥
कलत्रपुत्रात्मजयानपीडासन्तप्तचित्तं सुखवित्तहीनम् ॥
कुर्यान्नरं शत्रुजनाभिभूतं मन्देक्षितोज्ञः सितधामगामी ॥ ६ ॥

जिसके जन्मपत्रमें शुक्रकी राशि २।७ में बुध बैठा होवे उसे शुक्रही देखता होवे तब वह पुरुष अति मनोहर वेषयुक्त वस्त्र भूषणोंसे युवति स्त्रियोंको प्रिय और कामदेवकी वृद्धिसे हर्षयुक्त, अत्यन्त चतुर, बड़ा उदार और बड़े भाग्यसे युक्त होता है ॥५॥ जिसके जन्म समयमें शुक्रके घर २।७ में बुध बैठा होवे और उसे यदि शनि देखता होवे तब वह पुरुष स्त्री पुत्र और वाहनोंद्वारा पीड़ा से सन्तप्तचित्त, सुख और धनसे रहित और शत्रजनोंसे अभिभूत (तिरस्कृत) होता है ॥ ६ ॥
इति शुक्रर्क्षगे ग्रहदृष्टयः ।

अथ स्वक्षेत्रस्थबुधंप्रति ग्रहदृष्टयः ।

सत्योपेतं चारु लीलाविलासं भूमिपालात्प्राप्तमानोन्नतिं च ॥
चञ्चत्क्षीणं चापि कुर्यान्मनुष्यं स्वक्षेत्रस्थश्चन्द्रपुत्रोऽर्कदृष्टः ॥ १ ॥
अनल्पजल्पोऽमृततुल्यभाषी कलिप्रियो राजसमीपवर्त्ती ॥
भवेन्नरः सोमसुते स्वगेहे निरीक्ष्यमाणे मृगलाञ्छनेन ॥ २ ॥

जिसके जन्मपत्रमें अपने घर (३।६) में बुध बैठा होवे और उसे सूर्य देखता होवे तब वह पुरुष सत्य बोलने वाला, उत्तम लीलाओंमें आनन्दसे विलास करने वाला. राजाके द्वारा प्राप्त मानोन्नतिसे युक्त होता है परन्तु इस योगमें उस मनुष्य का शरीर अति क्षीण होता है ॥ १ ॥ स्वक्षेत्र (३।६) में स्थित बुधको यदि चन्द्रमा देखता होवे तब वह मनुष्य थोड़ा बोलने वाला, मधुरभाषी, कलहप्रिय और सब समय राजाके पास रहनेवाला होता है ॥ २ ॥

प्रसन्नगात्रं कुटिलं कलाज्ञं नरेन्द्रकृत्ये सुतरां प्रवीणम् ॥
जनप्रियं संजनयेन्मनुष्यं भौमेक्षितोज्ञः स्वगृहेभिसंस्थः ॥ ३ ॥

वह्वर्थसामर्थ्यविराजमानं सद्राजमानाप्तपदाधिकारम् ॥
सुतं प्रकुर्यान्निजमन्दिरस्थः सौम्यः प्रदृष्टः सुरपूजितेन ॥ ४ ॥

अपने घर (३।६) में बैठे बुधको यदि मङ्गल देखता होवे तब वह मनुष्य प्रसन्न अङ्ग, कुटिल कलाओंका जानने वाला, राजकृत्य में अत्यन्त कुशल, और सब मनुष्योंको प्रिय होता है ॥३॥ अपने घर(३।६)में बुध बैठा होवे और उसे बृहस्पति देखता होवे तब वह पुरुष बड़ा धनी, सामर्थ्यसे विराजमान, मानसहित राजासे दिये पदको अधिकारी और अनेक विद्याओंका जानने वाला होता है॥४॥

नरेन्द्रदूतो विजितारिवर्गः संधिक्रियामार्गविधिप्रगल्भः ॥
वारांगनासक्तमनोभिलाषः शुक्रे क्षितज्ञे निजभे नरः स्यात् ॥५॥
प्रारम्भसिद्धिं विनयं विशेषात्सद्वस्त्रभूमादिसमृद्धिमुच्चैः ॥
कुर्यान्नराणाममृतांशुजन्मास्वमन्दिरस्थोरविसूनुदृष्टः ॥ ६ ॥

जिसके जन्मपत्रमें अपने घर(३।६)में बैठे बुधको शुक्र देखता होवे तब वह पुरुष राजाका दूत, शत्रुओंको जीतनेवाला, मिलाप कराने की क्रियामें कुशल और वैश्याओंमें अभिलाषयुक्त होता है ॥ ५ ॥ जब अपने घर (३।६) में बैठे बुधको शनि देखता होवे तब प्रारम्भ किये कामकी सिद्धि करने वाला, विनययुक्त और उत्तम वस्त्र भूषणादिकोंकी अतिशय समृद्धिसे युक्त उस मनुष्यको करता है॥ ६ ॥
इति स्वक्षेत्रस्थबुधंप्रति ग्रहदृष्टयः ।

अथ कर्कगामिनि बुधे ग्रहदृष्टयः ।

वस्त्रादिशुद्धौ मणिसंग्रहे च गृहादिनिर्माणविधौ प्रवीणः ॥
प्रसूनमालाग्रथनेऽपि मर्त्यः कुलीरगे ज्ञे शशिना प्रदृष्टे ॥ १ ॥
कान्तानिमित्ताप्तमहाव्यलीको द्रव्यव्ययात्यन्तकृशांगयष्टिः ॥ २ ॥
वहूपसर्गोऽपि भवेन्मनुष्यः कुलीरगे ज्ञे नलिनीशदृष्टे ॥ २ ॥

जब कर्क राशिमें बुध स्थित होवे और उसे सूर्य देखता होवे तब वह पुरुष वस्त्रादिकी शुद्धिमें, मणिके संग्रहमें, गृह आदिकोंके निर्माण करनेकी विधिमें और पुष्पों मालाके गुहने में बड़ा प्रवीण होताहै ॥ १ ॥ कर्क राशिमें बुध बैठा हो और उसे चन्द्रमा देखता होवे तब वह पुरुष स्त्रीके निमित्तसे दुःखी, द्रव्यके खरच होने से अति दुर्बल अङ्गयुक्त और अनेक उपसर्गों से युक्त होता है ॥ २ ॥

स्वल्पश्रुतं चार्थरतं च शूरं प्रियंवदं कूटविधौ प्रवीणम् ॥
कुर्यान्नरं शीतकरस्य सूनुः कुलीरसंस्थोऽवनिसूनुदृष्टः ॥ ३ ॥
प्राज्ञो विधिज्ञो विधिनातिशाली सद्वाग्विलासोऽवनिपालमान्यः॥
स्यान्मानवो जन्मनि सोमसूनौ कुलीरगामिन्यमरेज्यदृष्टे ॥ ४ ॥

कर्कराशिमें स्थित बुधको मङ्गल देखता होवे तब वह मनुष्य अत्यल्प विद्या युक्त, अपने मतलबमें चतुर, शूरवीर, प्रिय वाक्य बोलनेवाला और कपटमें प्रवीण होता है ॥ ३ ॥ जब कर्क राशिमें चन्द्रमा स्थित होवे और उसे बृहस्पति देखता होवे तब वह पुरुष बड़ा प्राज्ञ, विधिको जाननेवाला, प्रारब्धसे सुशोभित, उत्तम वाणीका कहनेवाला और राजाओं को मान्य होता है ॥ ४ ॥

प्रियंवदश्चारुशरीरभाक्च सद्गीतवाद्यादिविधौ प्रवीणः ॥
स्यान्मानवो दानववन्द्यदृष्टे कर्कटकस्थेऽमृतभानुसूनौ ॥ ५ ॥
गुणैर्विहीनं स्वजनैर्वियुक्तमलीकदम्भानुरतं कृतघ्नम् ॥
करोति मर्त्यं परिसूतिकाले कुलीरगो ज्ञो रविसूनुदृष्टः ॥ ६ ॥

बुध कर्क राशिमें स्थित हो और उसे शुक्र देखता हो तब वह मनुष्य प्रिय वाक्य कहनेवाला, दिव्य देह और सङ्गीतवाद्योंमें कुशल होता है ॥ ५ ॥ जब कर्क राशिमें बैठे बुधको शनि देखता होवे तब वह मनुष्य गुणों से रहित, अपने लोगों से न्यारा रहने वाला कपट और दम्भमें निरत और अत्यन्त कृतघ्नी होताहै ॥६॥
इति कुलीरगामिनि बुधे ग्रहदृष्टयः ।

अथ सिंहगते बुधे ग्रहदृष्टयः ।

कृपाविहीनं च चलत्स्वभावं सेर्ष्यं च हिंसाभिरतं च रौद्रम्
क्षुद्रं प्रकुर्यान्मनुजं प्रसूतौ बुधर्कदृष्टो मृगराजसंस्थः ॥ १ ॥
रूपान्वितं चारुमतिं विनीतं संगीतनृत्याभिरतं नितांतम् ॥
सद्वृत्तवृत्तं कुरुते हि मर्त्यं चंद्रेक्षितः सिंहगतो बुधाख्यः ॥ २ ॥

जब सिंह राशिमें बुध बैठा हो और उसे सूर्य देखता हो तब वह पुरुष कृपासे रहित, चंचल स्वभाववाला सबसे ईर्षा सहित, हिंसा करने में निरत, भयंकर और

अत्यन्त क्षुद्र होता है ॥ १ ॥ सिंह राशिमें बुध बैठा होवे और उसे चन्द्रमा देखता होवे तब वह पुरुष रूपवान् पवित्र बुद्धियुक्त, बड़ा नम्र, गानविद्या और नृत्यमें कुशल और निरन्तर सज्जनोंके आचरणसे चलने वाला होता है ॥ २ ॥

कन्दर्पसत्वोज्झितमुक्तवृत्तं क्षताङ्कितं हीनमतिं विचित्रम् ॥
सुदुःखितं संजनयेत्पुमांसं भौमेक्षितः सिंहगतः शशीजः ॥ ३ ॥
कोमलामलरुचिः कुलवर्यश्चारुलोचनयुतश्च समर्थः ॥
वाहनोत्तमधनो मनुजः स्यादिन्दुजे हरिगते गुरुदृष्टे ॥ ४ ॥

जब सिंहराशिस्थित बुधको मङ्गल देखता होवे तब कामदेव के बलसे रहित शुभ आचरणसे युक्त, अङ्गमें घावोंसे युक्त, बुद्धिसे हीन, बड़ा विचित्र और अत्यन्त दुःखी वह पुरुष होता है ॥ ३ ॥ यदि सिंहराशिस्थित बुधको बृहस्पति देखता होवे तब वह पुरुष कोमल निर्मल कान्तियुक्त, अपने कुलमें शिरोमणि, सुन्दर जिसके नेत्र, सब काम करने में समर्थ और उत्तम वाहनरूप धनसे परिपूर्ण होता है ॥४॥

सद्रूपशाली प्रियवाग्विलासो नृपाश्रितो वाहनवित्तयुक्तः ॥
भवेन्नरः सोमसूते प्रसूतौ सिंहस्थिते दानववन्द्यदृष्टे ॥ ५ ॥
स्वेदोद्गमोद्भूतमहोग्रगन्धविस्तीर्णगात्रं च कुरूपमुग्रम् ॥
सुखेन हीनं मनुजं प्रकुर्यान्मन्देक्षितः सिंहगतो यदि ज्ञः ॥ ६ ॥

जिसके जन्म समयमें सिंहराशिका बुध होवे और उसे शुक्र देखता होवे तब वह मनुष्य उत्तम रूपसे संपन्न, प्रिय वाणीका कहनेवाला, राजाका आश्रित और वाहन और धनसे परिपूर्ण होता है ॥ ५ ॥ यदि सिंहराशिमें स्थित बुधको शनि देखता होवे तब उस पुरुषका पसीना उग्र गंधयुक्त होताहै और वह विस्तीर्ण अंग कुरूप, बडो उग्र और सुखहीन होता है ॥ ६ ॥ इति सिंहगते बुधे ग्रहदृष्टयः ॥

अथ गुरुभवनस्थे बुधे ग्रहदृष्टयः ।

शूलाश्मरीमेहनिपीडिताङ्गो भंगोज्झितः शान्तिमुपागतश्च ॥
स्यात्पूरुषो गीष्पतिवेश्मसंस्थो निशाथिनीस्वामिसुतेऽर्कदृष्टे ॥१॥
लेखाक्रियायां सुतरां प्रवीणः सुसंगतः साधु सुहृज्जनानाम् ॥
नरःसुखी शीत मयूखपुत्रे चन्द्रेक्षिते जीवगृहं प्रयाते ॥ २ ॥

जो बुध कदाचित बृहस्पति के स्थान ९।१२ में बैठा होवे और उसे सूर्य देखता होवे तब वह मनुष्य शूल पथरा और प्रमेहके रोगसे पीडितांग, सीधे शरीरवाला और शांत होताहै॥१॥ बृहस्पतिके स्थान ९।१२ में यदि बुध बैठा होवे औरउसे चन्द्रमा देखता होवे तौ वह पुरुष लिखनेकी क्रियामें अति कुशल, साधु और सुजनोंके सं रहने वाला और सदा सुखी होता है ॥ २ ॥

परम्पराचोरखनास्थितानां स्युर्लेखका धान्यधनैर्विहीनाः ॥
नरास्तु नीहारकरप्रसूतौ जीवालये मङ्गलदृष्टदेहे ॥ ३ ॥
विज्ञानशाली स्वकुलावतंसो नृपालकोशालयलेखकर्ता ॥
भर्त्ता बहूनां मनुजस्तु सौम्ये जीवेक्षिते जीवगृहं प्रयाते ॥४॥

बृहस्पति के स्थान ९।१२ में बैठे बुधको मङ्गल देखताहोवे तो वह मनुष्य परम्परासे चोरोंके समूहोंको लिख२ कर बतानेवाला और धनधान्यसे रहित होता है ॥३॥ जब बृहस्पति के घर ९।१२ में बैठे बुधको बृहस्पति ही देखता होवे तब वह पुरुष बड़ा विज्ञानी अपने कुलका मुकटमणि, राजाके खजानेमें हिसाबकालिखने वाला और बहुतोंका पालन करने वाला होता है ॥ ४ ॥

भूपामात्यापत्यलेखाधिकारं चौर्यासक्तं सौकुमार्येण युक्तम् ॥
द्रव्योपेतं मानवं सोमसूनुर्जीवर्क्षस्थः शुक्रदृष्टः करोति ॥ ५ ॥
बह्वन्नभोक्ता मलिनः कुवृत्तः कान्तारदुर्गाचलवासशीलः ॥
कार्यायुक्तो न भवेन्मनुष्यो जीवर्क्षगे ज्ञेऽर्कसुतेन दृष्टः॥६॥

जब बृहस्पतिके घरमें बैठे बुध को शुक्र देखता होवे तब वह पुरुष को राजा के मंत्री पुत्रों के लिखनेके अधिकारीसे युक्त, चोरी करने में आसक्त, सुकुमार और बड़ा धनवान् होता है ॥५॥ बृहस्पति के घरमें बुध बैठा होवे और उसे शनिदेखता होवे तब वह पुरुष बहुत अन्न खाने वाला, मलिन दुष्ट आचरणवाला, वन पर्वत दुर्ग स्थानों में रहने वाला और काम करनेसे अयोग्य होता है ॥ ६ ॥

अथ शन्यालयगेज्ञे ग्रहदृष्टयः ।

प्रारब्धकार्यकलितप्रतापं सन्मल्लविद्याकुशलं कुशीलम् ॥
कुटुम्बिनं संजनयेन्मनुष्यं बुधः शनिक्षेत्रगतोऽर्कदृष्टः॥१॥

जलोपजीवी धनवांश्च भीरुः प्रसूनकन्दोद्यतमत्परश्च ॥
पुमान्भवेद्भानुसुतालयस्थे बुधे सुधारश्मिनिरीक्ष्यमाणे ॥ २ ॥

शनिके घरमें बुध बैठा होवे और उसे सूर्य देखता होवे तब वह पुरुष अपने प्रारब्ध कार्यमें विख्यात प्रतापवाला, उत्तम मल्लों की विद्या में कुशल, दुष्ट स्वभाव और कुटुम्बी होताहै ॥ १ ॥ शनिके घरमें बुध बैठा होवे और उसे चन्द्रमा देखता होवे तब वह मनुष्य जलसे जीविका करनेवाला, वड़ा धनवान, वड़ा डरपोक और पुष्प और कन्दके उद्यममें तत्पर होताहै ॥ २ ॥

व्रीडालसः स्तब्धतरस्वभावः सौम्यः सुखी वाक्चपलोऽर्थयुक्तः ॥
स्यान्मानवो भानुसुतर्क्षसंस्थे दृष्टेऽब्जसूनौ क्षितिनन्दनेन ॥ ३ ॥
धान्यवाहनधनान्वितः सुखी ग्रामपत्तनपतिर्महामतिः ॥
भानुसूनुभवनेऽब्जनन्दने देवदेवसचिवेक्षिते नरः ॥ ४ ॥

शनिके घरमें बैठे बुध को मङ्गल देखता होवे तब वह मनुष्य लज्जा और आलस्यसे युक्त, अत्यन्त अनम्र स्वभाव वाला, बड़ा सौम्य, सदा सुखी, बोलने में बड़ा चपल और धनसे युक्त होताहै ॥ ३ ॥ शनिके घरमें बैठे बुधको बृहस्पति देखता होवे तब वह पुरुष धनधान्य सवारियोंसे युक्त, सदा सुखी, ग्राम वा नगर का पति और बड़ा बुद्धिमान् होताहै ॥ ४ ॥

बहुप्रजासंजनकं कुरूपं प्राज्ञोज्झितं नीचजनानुयातम् ॥
कामाधिकं संजनयेन्मनुष्यं शुक्रेक्षितो ज्ञः शनिगेहसंस्थः ॥ ५ ॥
सुखोज्झितं पापरतं च दीनमाकिंचनं हीनजनानुयातम् ॥
करोति मर्त्यं शनिधामगामी सौम्यस्तमोहन्तृसुतेन दृष्टः ॥ ६॥

शनिके घर १०।११ में बैठे बुधको शुक्र देखता होवे तब वह मनुष्य बहुत सन्तति उत्पन्न करनेवाला, बड़ा कुरूप, बुद्धिमानोंसे त्यक्त, नीच मनुष्यों के सङ्ग रहने वाला और अति कामी होता है ॥ ५ ॥ शनि के घर में बैठे बुधको शनिही यदि देखता होवे तब वह मनुष्य सदा सुखसे रहित, पाप करनेमें निरत, बड़ा दीन कुछ भी जिसके पास नहीं और दुष्टोंका सङ्ग करनेवाला होताहै ॥ ६ ॥

अथ भौमक्षेत्रे गुरौ ग्रहदृष्टयः ।

असत्यभीरुर्बहुधर्मकर्त्ता ख्यातश्च सद्भाग्ययुतो विनीतः ॥
भवेन्नरो देवगुरौ प्रयाते भौमस्य गेहे रविदृष्टदेहे ॥ १ ॥

ख्यातो विनीतो वनितानुयातः सतां मतो धर्मरतः प्रशान्तः ॥
जातो भवेद्भूमिसुतर्क्षयाते वाचां पतौ शीतकरेण दृष्टे ॥ २ ॥

जव मङ्गलके घरमें १।८ में वृहस्पति विराजमान हो और उसे सूर्य देखता होवे तव वह पुरुष झूंठ वोलनेसे डरनेवाला, वहुत धर्मों का करनेवाला, विख्यात, वड़ा भाग्यवान और वड़ा नम्र होता है ॥ १ ॥ मङ्गलके घरमें वर्तमान वृहस्पतिको यदि चन्द्रमा देखता होवे तव वह पुरुष विख्यात; वड़ा नम्र, स्त्रीके वश, सज्जनोंको अनुमत, धर्म काम करनेवाला और वड़ा शान्त होता है ॥ २॥

क्रूरोतिधूर्तः परगर्वहर्त्ता नृपाश्रयाज्जीवनवृत्तिकर्त्ता ॥
भर्ता वहूनां ननु मानवः स्यात् जीवे कुजर्क्षे च कुजेन दृष्टे ॥३॥
सद्वृत्तसत्योत्तमवाग्विहीनश्छिद्रप्रतीक्षी प्रणतानुयातः ॥
मर्त्यो भवेत्कैतवसंप्रयुक्तो वाचस्पतौ भौमगृहे ज्ञदृष्टे ॥ ४ ॥

मङ्गल के घरमें गुरु वैठा हो और उसे मङ्गल ही देखता हो तौ वह पुरुष वड़ा क्रूर, अत्यन्त धूर्त - दूसरे के घमंड का नाश करने वाला, राजाके आश्रयसे अपनी जीविका करनेवाला और वहुतों का भरण पोषण करनेवाला होता है ॥३॥ मङ्गलके घरमें वैठे वृहस्पतिको यदि वुध देखताहोतौ वह मनुष्य सत्पुरुषोंकी वृत्ति सत्य और उत्तम वोलनेसेहीन होता है, सवोंके छिद्रोंका देखनेवाला, शरणागतका सङ्ग देने वाला और वड़ा कपटी होता है ॥ ४ ॥

गन्धमाल्यशयनासनभूषायोषिदम्बरनिकेतनसौख्यम् ॥
संप्रयच्छति नृणां भृगुणा चेद्वीक्षितः सुरगुरुः कुजसंस्थः॥५॥
लुब्धं रौद्रं साहसैः संयुतं च मित्रापत्योद्भूतसौख्योज्झितं च ॥
कुर्यान्मन्त्रे निष्ठुरं देवमन्त्री धात्रीपुत्रक्षेत्रगो मन्ददृष्टः॥ ६ ॥

मङ्गलके घरमें वैठे वृहस्पति को यदि शुक्र देखताहोतौ वह उस पुरुष को गंध माल्य, शय्या, आसन, भूषण, स्त्री, वस्त्र और घर, इन सवोंके सुखका देनेवाला होता है ॥५॥ यदि मङ्गल के घर में वैठे वृहस्पति को शनि देखताहो तौ वह मनुष्य वड़ा लोभी वड़ा क्रूर, साहस कर्मों का करने वाला, पुत्र मित्रों के सुखसे रहित और सलाह देने में वड़ा निष्ठुर होता है ॥ ६ ॥ इति भौमर्क्षगे गुरौ ग्रहदृष्टयः ॥

अथ शुक्रागारस्थे गुरौ ग्रहदृष्टयः ।

संगताप्तविजयं क्षतगात्रं सामयं च बहुवाहनभृत्यम् ॥
मन्त्रिणां हि कुरुते सुरमन्त्रीदैत्यमन्त्रिगृहगो रविदृष्टः॥१।
सत्येन युक्तं सततं बिनीतं परोपकाराभिरतं सुचित्तम् ॥
सद्भाग्यभाजं कुरुते मनुष्यं जीवः सितर्क्षेऽमृतरश्मिदृष्टः ॥२॥

जिसके जन्म समय में शुक्र के घर २।७ में बृहस्पति स्थित हो और उसे सूर्य देखताहो तोवह पुरुष मिलने मात्र में शत्रुओंका जीतनेवाला, शरीरमें अनेक घावोंसे युक्त रोगी, बहुत वाहन भृत्योंसे युक्त और राजा का मन्त्री होता है ॥१॥ शुक्रकी राशिमें स्थित बृहस्पतिको यदि चन्द्रमा देखता होतौ वह पुरुष को सत्यसे युक्त, निरन्तर नम्र, परोपकार करनेमें निरत, सुन्दर चित्तवाला और उत्तम भाग्य से युक्त करता है ॥ २ ॥

भाग्योपपन्नं सुतसौख्यभाजं प्रियंवदं भूपतिलब्धमानम् ॥
नरं सदाचारपरं करोति भौमे क्षिते ज्यो भृगुजालयस्थः॥३॥
सन्मन्त्रविद्यानिरतं नितान्तं भाग्यान्वितं भूपतिलब्धवित्तम् ॥
चञ्चत्कलाज्ञं पुरुषं प्रकुर्याद्गुरुर्भृगुक्षेत्रगतोज्ञदृष्टः ॥ ४ ॥

मङ्गल जिसे देखता हो ऐसा बृहस्पति यदि शुक्र के घर में स्थित हो तौ वह उस मनुष्य को भाग्यसे युक्त,पुत्रोंके सुखसे युक्त, प्रिय वक्ता राजा से मान पाने वाला और सदाचारमें परायण करता है ॥३॥ शुक्रके घरमें बृहस्पति बैठे और उसे बुध देखता हो तौ वह उस पुरुषको सन्मत्र विद्या में निरन्तर निरत, भाग्य सेयुक्त राजासे धनका प्राप्त करनेवाला और अनेक कलाओंका जाननेवाला करताहै॥४॥

धनान्वितं चारुविभूषणाढ्यं सद्वृत्तचित्तं विभवैः समेतम् ॥
करोति मर्त्यं सुरराजमंत्री शुक्रालयस्थो भृगुसूनुदृष्टः ॥५॥
सत्पुत्रदारादिसुखैरुपेतं प्राज्ञं पुरग्रामभवोत्सवाढ्यम् ॥
नरं प्रकुर्याच्चतुरं सुरेज्यो दैत्येज्यभस्थोऽर्कसुतेन दृष्टः ॥ ६ ॥

शत्रु के घरमें बृहस्पति बैठा हो और उसे शुक्र देखता हो तौ वह उसपुरुषको धनसे युक्त,दिव्य भूषणोंका पहिरनेवाला, सुंदर बरतावनाला औरबहुत विभवोंसेयुक्त

करताहै ॥५॥ शुक्रके घरमें बृहस्पति बैठा हो और उसे शनि देखता होतौ वह उस पुरुषको उत्तम पुत्र स्त्री आदिकोंके सुखसे युक्त बड़ा ज्ञानी, पुर ग्राममें होनेवाले उत्सवोंमें अग्रसर और चतुर करताहै ॥ ६ ॥ इति शुक्रागारे गुरौ ग्रहदृष्टयः ।

अथ बुधवेश्मसंस्थे गुरौ ग्रहदृष्टयः ।

सत्पुत्रदारं धनमित्रसौख्यं श्रेष्ठप्रतिष्ठाप्तविराजमानम् ॥
नरं प्रकुर्यात्सुरराजमन्त्री रविप्रदृष्टो बुधवेश्मनिस्थः ॥ १ ॥
गुणान्वितं ग्रामपुरोपकारं विराजमानं बहुगौरवेण ॥
कुर्यान्नरं देवगुरुर्बुधर्क्षे संस्थो निशानाथनिरीक्ष्यमाणः ॥ २ ॥

यदि बृहस्पति बुधके घर ३।६ में बैठा हो और उसे सूर्य देखता हो तौ वह उस पुरुषको उत्तम पुत्र स्त्रीसे युक्त, धन और मित्रोंके सुखसे युक्त, श्रेष्ठ जनोंसे प्राप्त हुई प्रतिष्ठासे विराजमान करता है ॥ जब बुधकी राशि ३।६ में बैठे बृहस्पति को चन्द्रमा देखता हो तौ वह उस पुरुषको सब गुणोंसे युक्त, ग्राम और पुरका उपकार करनेवाला, और बड़े गौरवसे विराजमान करता है ॥ २ ॥

संग्रामसंप्राप्तजयं क्षतांगं धनेन सारेण समन्वितं च ॥
करोति जातं विबुधेन्द्रमन्त्री बुधालयस्थः क्षितिसूनुदृष्टः ॥ ३ ॥
सन्मित्रदारात्मजवित्तसौख्यो दक्षो भवेज्ज्योतिषशिल्पवेत्ता ॥
स्याच्चारुभाषी पुरुषः प्रकामं जीवे बुधर्क्षे च बुधेन दृष्टे ॥ ४ ॥

जब बुधकी राशि ३।६ में स्थित हुए बृहस्पति को मङ्गल देखता हो तौ वह मनुष्यको संग्राममें जय पाने वाला, घावयुक्त अङ्गवाला, धनसे और बलसे युक्त करता है ॥३॥ जब बृहस्पति बुधके घरमें बैठाहो और उसे बुधही देखता हो तौ वह परुष उत्तम मित्र स्त्री पुत्र और धन से सुखी, बड़ा चतुर, ज्योतिषशास्त्र और शिल्पविद्याका जानने वाला और मनोहर वाक्यका बोलनेवाला होताहै ॥ ४ ॥

धनाङ्गनासूनुसुखैरुपेतः प्रासादवापीकृषिकर्मचित्तः ॥
भवेत्प्रसन्नः पुरुषः सुरेज्ये दैत्येज्यदृष्टे बुधवेश्मसंस्थे ॥ ५ ॥
नरेन्द्रसद्गौरवसंप्रयुक्तं नित्योत्सवं पूर्णगुणाभिरामम् ॥
नरं पुरग्रामपतिं करोति गुरुर्ज्ञगेहे शनिना प्रदृष्टे ॥ ६ ॥

जब बुधके घर ३।६ में बैठे बृहस्पतिको शुक्र देखता हो तौ वह पुरुष धन पुत्र और स्त्रीके सुखसे युक्त, महल बावड़ी और खेती करने में चित्त रखने वाला और सदा प्रसन्नतासे रहनेवाला होता है ॥ ५ ॥ जब बुधके घरमें बैठे बृहस्पतिको यदि शनि देखता हो तब वह पुरुष राजा से महत्व पानेवाला, नित्य उत्सव से युक्त पूर्ण गुणोंसे आनन्दका भोगनेवाला और पुर तथा ग्रामका स्वामी होताहै ॥ ६ ॥ इति बुधवेश्मसंस्थे गुरौ ग्रहदृष्टयः ।

अथ कर्कस्थे गुरौ ग्रहदृष्टयः ।

दारात्मजार्थोद्भवसौख्यहानिः पूर्वं च पश्चात्खलु तत्सुखानि ॥
कुर्यान्नराणां हि गुरुः सुराणां कुलीरसंस्थे रविणा प्रदृष्टः ॥ १ ॥
नरेन्द्रकोशाधिकृतिं सुकान्तिं सद्वाहनार्थादिसुखोपपन्नम् ॥
सद्वृत्तचित्तं जनयेन्मनुष्यं कर्कस्थितेज्यो शशिना प्रदृष्टः ॥ २ ॥

जब कर्क राशि में गुरु हो और उसे सूर्य देखता हो तब पहले तौ स्त्री पुत्र से उत्पन्न हुये सुखकी हानि फिर पीछे इनके सुख से संपन्न करता है ॥ १ ॥ जब कर्क राशिमें स्थित वृहस्पतिको चन्द्रमा देखता हो तब वह मनुष्यको राजकोषका अधिकारी, सुन्दर कांतिवाला, उत्तम सवारी आदि के सुख से युक्त और सद्वृत्तिमें चित्त रखने वाला करता है ॥ २ ॥

मित्राश्रयोत्पादितसर्वसिद्धिः सद्वृत्तबुद्धिर्विलसत्प्रताप ॥
मन्त्री नरः कर्कटराशिसंस्थे गीर्वाणवन्द्ये शशिसूनुदृष्टे ॥ ३ ॥
बह्वङ्गनावैभवसंगनानां नाना सुखानामुपलब्धयः स्युः ॥
कुलीरयाते वचसामधीशे निरीक्षिते दैत्यपुरोहितेन ॥ ४ ॥

कर्क राशिमें बैठे वृहस्पतिको बुध देखता हो तब वह पुरुष मित्रके आश्रयसे उत्पन्न हुई सब सिद्धियोंसे युक्त. सज्जनोंके बरतावमें बुद्धि युक्त बड़ा प्रतापी और राजाका मंत्री होता है ॥ ३ ॥ जब कर्क राशिमें बैठे वृहस्पतिको शुक्र देखता हो तब उस पुरुषको स्त्री विषयक बहुतसे वैभवोंकी और स्त्रियोंके अनेक प्रकारके सुख की प्राप्ति होती है ॥ ४ ॥

सन्मानभूषागुणचारुशीलः सेनापुरग्रामपतिर्नरः स्यात् ।
अनल्पजल्पः खलु कर्कटस्थे वाचस्पतौ सूर्यसुतेन दृष्टे ॥ ५ ॥

कुभार्यदाराम्बरचारुभूषाविशेषभाजं गुणिनं च शूरम् ॥
प्राज्ञं क्षतांगं कुरुते मनुष्यं कर्कस्थितेज्योऽवनिजेन दृष्टः ॥ ६ ॥

जब कर्क राशिमें बैठे बृहस्पतिको शनि देखताहो तब वह पुरुष सन्मान, भूषण और गुणोंसे युक्त, अच्छे स्वभाववाला, सेना, नगर और ग्रामका स्वामी और बहुत बोलनेवाला होताहै ॥ ५ ॥ जब कर्कराशिमें बैठे बृहस्पतिको मङ्गल देखताहो तब उस पुरुषको पुत्र स्त्री वस्त्र और उत्तम २ अनेक भूषणोंका भोगनेवाला, गुणों से युक्त, शूरवीर; बड़ा बुद्धिमान और अङ्गमें घावोंसे युक्त करताहै॥६॥इतिकर्केगु०

अथ सिंहयातेज्ये ग्रहदृष्टयः ।

व्ययान्वितं ख्यातमतीवधूर्तं नृपाप्तवित्तं शुभकर्मचित्तम् ॥
नरं प्रकुर्यात्सुरराजपूज्यः सूर्येण दृष्टो मृगराजसंस्थः ॥ १ ॥
प्रसन्नमूर्तिं गतचित्तशुद्धिं स्त्रीहेतुसंप्राप्तधनं वदान्यम् ॥
कुर्यात्पुमांसं वचसामधीशः शशाङ्कदृष्टः करिवैरिसंस्थः ॥ २ ॥

जब बृहस्पति सिंह राशिमें बैठा हो और उसे सूर्य देखताहो तब उस पुरुषको खरच करनेमें युक्त, विख्यात, अत्यन्त धूर्त और राजासे धन प्राप्ति करने वाला और शुभकर्मोंमें चित्त रखनेवाला करताहै ॥ १ ॥ जो बृहस्पति सिंहराशि में स्थित हो और उसे चन्द्रमा देखताहो तौ उस मनुष्य को सदा प्रसन्न रहने वाला, चित्त शुद्धिसे रहित, स्त्रीके हेतुसे धनका प्राप्त करनेवाला और दाता करताहै ॥ २ ॥

मान्यो गुरूणां गुरुगौरवेण सत्कर्मनिर्माणविधौ प्रवीणः ॥
प्राणी भवेत्केसरिणि स्थितेऽस्मिन् गीर्वाणवन्द्येऽवनिजेन दृष्टे॥३॥
गृहादिनिर्माणविधौ प्रवीणो गुणाग्रणीः स्यात्सचिवो नृपाणाम् ॥
वाणीविलासे चतुरो नरः स्यात्सिंहस्थिते देवगुरौ ज्ञदृष्टे ॥ ४ ॥

जो बृहस्पति सिंहराशि का हो और उसे मङ्गल देखता हो तौ वह पुरुष बड़े गौरव के होनेसे गुरुओं को भी मान्य, और सत्कर्म करनेके विधिमें कुशल होता है॥३॥जब सिंह राशिमें स्थित बृहस्पतिको बुध देखता हो तब वह पुरुष गृह आदिकोंके बनानेकी विधिमें बड़ा कुशल, गुणवानोंमें अग्रगण्य, राजाओंका मंत्री और बोलनेमें चतुर होताहै ॥ ४ ॥

बृहस्पति बैठा हो और उसे बुध देखता हो तब वह मनुष्य राजाके आश्रय में महान् अधिकार को प्राप्त होने वाला, स्त्री धन ऐश्वर्य सुखसे युक्त और परोपकार करने में आदरयुक्त चित्त वाला होता है ॥ ४ ॥

सुखोपपन्नं निधनं प्रसन्नं प्राज्ञं सदैश्वर्यविराजमानम् ॥
नूनं प्रकुर्यान्मनुजं सुरेज्यो दैत्येज्यदृष्टो निजमन्दिरस्थः ॥५॥
पदच्युतं सौख्यसुतैर्विहीनं संग्रामसंजातपराभवं च ॥
करोति दीनं स्वगृहे सुरेज्यः सूर्यात्मजेन प्रविलोक्यमानः ॥६॥

अपने घर में बैठे बृहस्पतिको शुक्र देखताहो तौ वह मनुष्य को सुखसे युक्त धन से रहित,सदाप्रसन्न,बुद्धिमान् और सदा ऐश्वर्योंसे विराजमान करता है॥५॥ जब अपने घर (९।१२) में विराजमान गुरु को शनि देखता हो तब वह मनुष्य को स्थानसे भृष्ट, सुखसे और पुत्रों से रहित संग्राममें पराजययुक्त और दीन करता है ॥ ६ ॥ इति स्वगृहगे गुरौ ग्रहदृष्टयः ।

अथ मंदस्थानप्रयाते गुरौ ग्रहदृष्टयः ।

प्रसन्नकान्तिं शुभवाग्विलासं परोपकारादरतासमेतम् ॥
कुले नृपालं कुरुते सुरेज्यो मन्दालयस्थो यदि भानुदृष्टः ॥१॥
कुलोद्वहस्तीव्रमतिः सुशीलो धर्मक्रियायां सुतरामुदारः ॥
नरोभिमानी पितृमातृभक्तो जीवे शनिक्षेत्रगतेन्दुदृष्टे ॥ २ ॥

जब बृहस्पति शनिके घरमें बैठाहो और उसे सूर्यदेखै तबवह मनुष्यको प्रसन्न कांति से युक्त सुन्दर भाषण करने वाला, परोपकार करनेमें आदर करनेवाला और अपने कुलमें राजा के समान करता है ॥ १ ॥ यदि शनिके घर (१०।११) में बैठे बृहस्पति को चन्द्रमा देखता हो तौ वह पुरुष अपने कुल का बढ़ाने वाला, तीव्र बुद्धिसे युक्त,सुशील, धर्म काम करनेमें अतिशय उदार, बड़ा अभिमानी और माता पिताका भक्त होता है ॥ २ ॥

स्यादर्थसिद्धिर्नृपतेः प्रसादात्कीर्तिः सुखानामुपलब्धिरेव ॥
सूतौ सुरेज्ये शनिमन्दिरस्थे निरीक्ष्यमाणे धरणीसुतेन ॥ ३ ॥
शान्तं नितान्तं वनितानुकूलं धर्मक्रियार्थे निरतं नितान्तम् ॥
करोति मर्त्यं मरुतां पुरोधा बुधेन दृष्टः शनिमन्दिरस्थ॥ ४ ॥

भूमीपति प्राप्तमहापदस्थः कान्ताजनप्रीतिकरो गुणज्ञः ॥
भवेन्नरोदेवगुरौ हरिस्थे निरीक्षिते चासुरपूजितेन ॥ ५ ॥
सुखेन हीनं मलिनं सुवाचं कृशाङ्गयष्टिं विगतोत्सवं च ॥
करोति मर्त्यं मरुताममात्यः सिंहस्थितः सूर्यसुतेन दृष्टः ॥

जब बृहस्पति सिंह राशिमें स्थित हो और उसे शुक्र देखता हो तब वह पुरुष राजासे प्राप्त किसी उत्तम पदमें स्थित होताहै, स्त्री जनोंसे प्रीति करनेवाला और गुणोंका जानने वाला होताहै ॥ ५ ॥ जब सिंह राशिमें स्थित गुरुको शनि देखता है तब वह मनुष्यको सुखसे रहित, मैला, सुन्दर वाक्यों का कहने वाला, दुर्बल और उत्सवोंसे रहित करताहै ॥ ६ ॥ इति सिंहगते गुरौ ग्रहदृष्टयः ॥

अथ स्वगृहं प्रयाते गुरौ ग्रहदृष्टयः ।

राज्ञाविरुद्धत्वमतीव नूनं सुहृज्जनेनापि च वैमनस्यम् ।
शत्रूद्गमः स्यान्नियतं नराणां जीवेऽर्कदृष्टे स्वगृहं प्रयाते ॥ १ ॥
सुगर्वितं भाग्यधनाभिवृद्ध्या प्रियाप्रियत्वाभिमतं विशेषात् ॥
करोति जातं सुखिनं विनीतं चन्द्रेक्षितो देवगुरुः स्वभस्थः॥ २ ॥

जब बृहस्पति अपने घर ९।१२ में हो और उसे सूर्य देखताहो तौ उस पुरुष का राजाके साथ अत्यन्त विरोध और अपने सुहृज्जनों से वैमनस्य होता है और निश्चय शत्रुओंकी उत्पत्ति होतीहै ॥ १ ॥ जब बृहस्पति अपने घरमें हो और उसे चन्द्रमा देखता हो तौ वह मनुष्य को भाग्य की और धनकी वृद्धिसे गर्वित, विशेष करके प्रिया (स्त्री) के अभिमत प्रिय करनेवाला,सदा सुखी और बड़ा नम्र करताहै

व्रणाङ्कितं सङ्गरकर्मदक्षं हिंसापरं क्रूरतरस्वभावम् ॥
परोपकाराभिरतं प्रकुर्याद्गुरुः स्वभस्थः क्षितिजेन दृष्टः ॥ ३ ॥
नृपाश्रयप्राप्तमहाधिकारो दाराधनैश्वर्यसुखोपपन्नः ॥
परोपकारादरतै कवित्तो नरो गुरौ स्वर्क्षगते ज्ञदृष्टे ॥ ४ ॥

जब अपने घरमें बृहस्पति स्थितहो और उसे मङ्गल देखताहो तौ वह पुरुषको घावोंके चिन्हसे चिन्हत, संग्राम के कर्ममें चतुर, हिंसा करने में तत्पर, अत्यन्त क्रूरस्वभावसे संयुक्त और परोपकार करनेमें निरत करताहै ॥३॥ जब अपने घर में

गुणाभिरामं सुभगं प्रकामं सौम्यं सुसत्त्वं धृतिसंयुतं च ॥
क्षेत्रगोदैत्यगुरुः प्रकुयान्नरं तुषारांशुसुतेन दृष्टः ॥ ४ ॥

अपने घर में शुक्र वैठा होवे और उसे मङ्गल देखता होवे तब उस मनुष्यको गृहादिकोंके सुखसे रहित और निरन्तर कलहकी प्रीतिसे युक्त करताहै ॥३॥ अपने घर (२।७)में वैठे शुक्रको बुध देखताहोवे तब वह पुरुष सर्व गुणोंसे युक्त,रूपवान्, बड़ा सौम्य, सुन्दर पराक्रम से और धैर्यसे युक्त होता है ॥ ४ ॥

सद्वहनानां गृहिणीगुणानां सुमित्रपुत्रद्रविणादिकानाम् ॥
करोति लब्धिं निजवेश्मयातः सितः सुराचार्यनिरीक्षितश्चेत ॥५॥
गदाभिभूतोहतसाधुवृत्तः सौख्यार्थहीनो मनुजोतिहीनः ॥
भवेत्प्रसूतौ निजवेश्मयाते भृगोः सुतेभानुसुतेन दृष्टे ॥ ६ ॥

अपने घर (२।७) में शुक्र वैठा होवे उसे वृहस्पति देखता होवे तब उस पुरुष को उत्तम वाहन स्त्री और गुण मित्र पुत्र और द्रव्यादिकों की प्राप्ति कराने वाला होता है ॥५॥ अपने घर (२।७) में वैठे शुक्र को यदि शनि देखता होवे तब वह पुरुष अनेक रोगोंसे युक्त, साधुवरतावसे रहित,सुखसे और धनसे हीन और नीच होता है ॥ ६ ॥ इति निजगृहगे शुक्रे ग्रहदृष्टयः ।

अथ बुधर्क्षसंस्थे शुक्रे ग्रहदृष्टयः ॥

नृपावरोधाधिकृतं विनीतं गुणान्वितं शास्त्रकृतप्रवेशम् ॥
कुर्यान्नरं दैत्यगुरुः प्रसूतौ सौम्यर्क्षसंस्थोरविणा प्रदृष्टः ॥१॥
सदन्नवस्त्रादिसुखोपपन्नं नीलोत्पलश्यामलचारुनेत्रम् ॥
सुकेशपाशंमनुजं प्रकुर्यात्सौम्यर्क्षसंस्थो भृगुरिन्दुदृष्टः ।२।

जिसके जन्म समय में बुधके घरमेंशुक्र स्थितहोवे और उसे सूर्य देखता होवे तब उस मनुष्य को राजा के रणवास के अधिकारसे युक्त,बड़ा नम्र, गुणोंसे युक्त और शास्त्र में प्रवेश युक्त करता है ॥ १ ॥ बुधके घरमें वैठे शुक्रको यदि चन्द्रमा देखता होवे तब उत्तम अन्न वस्त्रादिकों के सुखसे युक्त,नील कमल दलके सदृश श्याम शरीरवाला, दिव्य जिसके नेत्र और सुन्दर जिसका केशपाश ऐसा उस पुरुष को करता है ॥ २ ॥

भाग्यान्वितः कामविधिप्रवीणः कान्तानिमित्तं द्रविणव्ययःस्यात् ।
नरोहि नोहारकरात्मजर्क्षे स्थिते सिते भूमिसुतेन दृष्टे ॥
प्रज्ञामहावाहनवित्तवृद्धिं सेनापतित्वं परिवारसौख्यम् ॥
कुर्यान्नराणामुशना प्रकामं बुधर्क्षसंस्थश्च बुधेन दृष्टः ॥ ४ ॥

बुधके घरमें बैठे शुक्रको यदि मङ्गल देखता होवे तब वो मनुष्य भाग्यसे युक्त, काम विधिमें बड़ा कुशल और स्त्री निमित्तमें धनका खरच करनेवाला होताहै ॥३॥ बुध जिसे देखता होवे ऐसा शुक्र यदि बुधके घर (३।६) में बैठा होवे तब उस पुरुषको बुद्धि उत्तम वाहन धनकी वृद्धि और सेनापतिके अधिकारसे युक्त और परिवारके सुखसे सम्पन्न करता है ॥ ४ ॥

सद्बुद्धिवृद्धिर्बहुवैभवाढ्यः प्रसन्नचेताः सुतरां विनीतः ॥
मर्त्यो भवेत्सौम्यगृहोपयाते दृष्टे सिते देवपुरोहितेन ॥ ५ ॥
पराभिभूतं चपलं विविक्तं सुदुःखितं सर्वजनोज्झितं च ॥
मर्त्यं करोत्येव भृगोस्तनूजः सोमात्मजर्क्षे रविजेन दृष्टः ॥ ६ ॥

बुधके घरमें बैठे शुक्रको बृहस्पति देखता होवे तब वो पुरुष उत्तम बुद्धिकी वृद्धिसे युक्त और अनेक वैभवोंसे पूर्ण, प्रसन्न जिसका चित्त और अत्यन्त नम्र होताहै॥५॥शुक्र यदि बुधके घर (३।६) में बैठा हो और उसे शनि देखता हो तब वो पुरुष दूसरेसे तिरस्कार पानेवाला, बड़ा चपल, एकान्तमें रहनेवाला, अत्यन्त दुःखी और सबोंसे अलग रहनेवाला ऐसा होताहै॥६॥इति बुधर्क्षसंस्थे शुक्रेग्रहदृष्टयः॥

अथ कर्कटगे शुक्रे ग्रहदृष्टयः ।

सरोपयोपाकृतहर्षनाशः स्यात्पूरुषः शत्रुजनाभिभूतः ॥
दैत्यार्चिते कर्कटराशियाते निरीक्षितेऽहर्पतिना प्रसूतौ ॥ १ ॥
कन्याप्रजापूर्वकपुत्रलाभमम्बां सपत्नीं बहुगौरवाणि ॥
कुर्यान्नराणां हरिणाङ्कदृष्टः कुलीरगो भार्गवनामधेयः ॥ २ ॥

जो कर्कराशिमें शुक्र बैठा होय और उसे सूर्य देखता होवे तो वो पुरुष क्रोध युक्त स्त्रीके निमित्त दुःख पानेवाला और शत्रुजनोंसे पराभूत होता है ॥ १ ॥ कर्कराशिमें बैठे शुक्रको यदि चन्द्रमा देखता होवे तब वो पुरुष पहले कन्या सन्तति को प्राप्त होकर पीछेसे पुत्र सन्ततिको और सौत माताको और अनेक तरहके गौरवों को प्राप्त होताहै ॥ २ ॥

कलासु दक्षोहतशत्रुपक्षो बुद्ध्या च सौख्येन युतो मनुष्यः ॥
परंतु कान्ताकृतचिन्तयार्तो भौमेक्षिते कर्कटगे सिते स्यात ॥ ३ ॥
विद्याप्रवीणं गुणिनं गुणज्ञं कलत्रपुत्रोद्भवदुःखतप्तम् ॥
जनोज्झितं चापि करोति मर्त्यं काव्यः कुलीरोपगतो ज्ञदृष्टः ॥४

कर्क राशिमें स्थित शुक्रको मङ्गल देखता होवे तब वो पुरुष अनेक कलाओं से कुशल, शत्रुओंके पक्षका नाश करनेवाला, बुद्धिसे और सुखसे युक्त होता है परन्तु कांता (स्त्री) निमित्त चिंतासे आर्त होता है ॥ ३ ॥ कर्क राशि में बैठे शुक्रको बुध देखता होवे तब उस पुरुषको अनेक विद्याओं का ज्ञाता, गुण संपन्न, गुणोंका जानने वाला और स्त्री पुत्रोंके निमित्त हुए दुःखसे तप्त और सब जनोंसे अलग रहनेवाला करता है ॥ ४ ॥

अतिचतुरमुदारं चारुवृत्तिं विनीतं
मतिविभवसमेतं कामिनीसूनुसौख्यम् ॥
प्रियवचनविलासं मानुषं संविधत्ते
सुरपतिगुरुदृष्टो भार्गवः कर्कसंस्थः ॥५॥
सद्वृत्तसौख्योपहृतं गतार्थं व्यर्थप्रयत्नं वनिताजितं च ॥
स्थानच्युतं संजनयेन्मनुष्यं मन्देक्षितः कर्कगतः सिताख्यः॥६॥

कर्क राशि में बैठे शुक्रको यदि बृहस्पति देखता होवे तब उस पुरुष को अति चतुर, उदार, उत्तम जीविकासे युक्त, बड़ा नम्र, बुद्धि वैभवसे युक्त, स्त्री पुत्रों के सुखसे सम्पन्न और प्रिय वचन कहनेवाला करता है ॥५॥ यदि कर्क राशिमें शुक्र बैठा होवे और उसे शनि देखता होवे तब उस मनुष्यको उत्तम बरताव से और सुखसे रहित, धनसे हीन, व्यर्थ परिश्रमोंका करनेवाला, स्त्रीसे जित और स्थानसे भ्रष्ट करता है ॥ ६ इति कर्कराशिस्थिते शुक्रे ग्रहदृष्टयः ॥

अथ सिंहगे सिते ग्रहदृष्टयः ॥

स्पर्धातिसंवर्द्धितचित्तवृत्तिः कान्ताश्रयोत्पन्नधनो मनुष्यः ॥
क्रमेलकाद्यैर्यदि वा युतः स्यादर्कक्षिते सिंहगते सिताख्ये ॥१॥
नूनं जनन्याश्च भवेत्सपत्नीपत्नीविरोधो विभवोद्भवश्च ॥
यस्य प्रसूतौ दनुजेन्द्रमन्त्री चन्द्रेक्षितः सिंहगतो यदि स्यात॥२॥

सिंह राशिस्थ शुक्रको सूर्य देखता होवे तव वो पुरुष स्पर्धासे युक्त चित्तवृत्तिवाला, स्त्रीके आश्रयसे धनकी प्राप्ति करनेवाला और उष्ट्र आदिकोंसे युक्त होताहै ॥ १ ॥ सिंह राशिमें स्थित शुक्र को यदि चन्द्रमा देखता होवे तव उस पुरुष की सौत माता अवश्य होवे और पत्नीसे विरोध भी अवश्य ही होवे और विभव भी उसको अवश्य होताहै ॥ २ ॥

नृपप्रियं धान्यधनैरुपेतं कन्दर्पजातव्यसनाभिभूतम् ॥
करोति मर्त्यं मृगराजसंस्थो भृगोस्तनूजोऽनविजेन दृष्टः ॥ ३ ॥
धनान्वितं संग्रहचित्तवृत्तिं लुब्धं स्मराधिक्यविकारनिन्द्यम् ॥
दैत्येन्द्रमन्त्री कुरुते मनुष्यं सिंहस्थितः सोमसुतेन दृष्टः ॥ ४ ॥

मङ्गल जिसे देखता होवे ऐसा शुक्र यदि सिंहराशिमें बैठा होवे तव उस पुरुषको राजाका प्यारा, धन धान्यसे युक्त और कामदेवसे उत्पन्न हुये अनेक क्लेशोंसे युक्त करता है ॥ ३ ॥ चंद्रमाके पुत्र बुधसे दृष्ट शुक्र यदि सिंहराशिमें बैठा होवे तव उस पुरुषको धनसे युक्त, संग्रहमें चित्तकी वृत्ति रखनेवाला, बड़ा लोभी और कामदेवके अधिक होनेसे अनेक विकारोंसे निंदा करनेके लायक करताहै ॥ ४ ॥

नरेन्द्रमन्त्री धनवाहनाढ्यो बह्वङ्गनानन्दनभृत्यसौख्यः ॥
विख्यातकर्मा च भृगोस्तनूजे जीवेक्षिते सिंहगते नरः स्यात् ॥५॥
नृपोपमं सर्वसमृद्धिभाजं दण्डाधिकारेऽप्यथवा नियुक्तम् ॥
करोति मर्त्यं मृगराजवर्ती दैत्यार्चितः सूर्यसुतेन दृष्टः ॥ ६ ॥

बृहस्पति जिसे देखता होवे ऐसा शुक्र यदि सिंहराशिमें बैठा होवे तव वह पुरुष राजाका मंत्री, धनसे और सवारियोंसे परिपूर्ण, बहुत स्त्री पुत्र और भृत्योंके सुखोंसे सम्पन्न और विख्यात जिसके कर्म ऐसा होताहै ॥५ ॥ शुक्र सिंहराशिमें स्थितहोवे और उसे देखताहोवे तवउस मनुष्यको राजाके समान,सब समृद्धिओंवाला अथवा दण्ड देने के अधिकारमें नियुक्त करताहै।६।इति सिंहराशिगेहे सिते ग्रहदृष्टयः ।

अथ जीवभवने शुक्रे ग्रहदृष्टयः ।

रौद्रं प्राज्ञं भाग्यसौभाग्यभाजं सत्त्वोपेतं वित्तवन्तं विशेषात् ॥
नानादेशप्राप्तयानं मनुष्यं कुर्याच्छुक्रो जीवभे भानुदृष्टः ॥ १ ॥

सद्राजमानेन विराजमानं ख्यातं विनीतं बहुभोगयुक्तम् ॥
धीरं ससारं हि नरं करोति भृगुर्गुरुक्षेत्रगतोऽब्जदृष्टः ॥ २ ॥

बृहस्पति की राशि (९।१२) में शुक्र बैठा होवे और उसे सूर्य देखता होवे तब उस पुरुषको बड़ा रौद्र (भयङ्कर), बुद्धिमान्, भाग्यसे हुये सौभाग्य का भागी, बलसे युक्त, विशेषसे धनवान् और अनेक देशोंसे सवारियोंकी प्राप्ति करने वाला करता है ॥ १ ॥ और चन्द्रमा जिसे देखता होवे ऐसा शुक्र जिसके जन्म समय में बृहस्पति की राशि (९।१२) में बैठा होवे तब उस पुरुषको उत्तम राजा के किये सन्मानसे युक्त, सब जगे विख्यात, बड़ा नम्र अनेक भोगोंसे युक्त, धीर और बलसे संयुक्त करता है ॥ २ ॥

द्विषामसह्यं धनिनं प्रसन्नं कान्ताकृतप्रेमभरं सुपुण्यम् ॥
सद्वाहनाढ्यं कुरुते मनुष्यं भौमेक्षितेज्यालयगामिशुक्रः ॥ ३ ॥
सद्वाहनार्थाम्बरभूषणानां लाभं सदन्नानि सुखानि नूनम् ॥
कुर्यान्नराणां गुरुमन्दिरस्थोदैत्यार्चितः सौमसुतेन दृष्टः ॥ १४ ॥

मङ्गल जिसे देखता होवे ऐसा शुक्र यदि बृहस्पतिके घर (९।१२) में बैठा होवे तब उस पुरुष को शत्रुओंको असह्य, धनसे संपन्न, सदा प्रसन्न, स्त्रीसे अत्यन्त स्नेह युक्त, पुण्यकर्म करनेवाला और उत्तम वाहनों से सम्पन्न करता है ॥ ३ ॥ बुध जिसे देखता होवे ऐसा शुक्र बृहस्पतिके घर (९।१२) में बैठा होवे तब उस पुरुषको उत्तम वाहन धन वस्त्र और भूषणोंका लाभ करनेवाला, उत्तम अन्न और सुखोंसे युक्त करताहै ॥ ४ ॥

तुरंगहेमाम्बरभूषणानां महागजानां वनितासुखानाम् ॥
करोत्यवाप्तिं भृगुजः प्रसूतौ जीवेक्षितो जीवगृहाश्रितश्च ॥ ५ ॥
सद्भोगसौख्योत्तमकर्म [illegible] वोत्कर्षयुतं सुवित्तम् ॥
करोति मर्त्यं गुरु [illegible] नुसुतेक्षितश्च ॥ ६ ॥

बृहस्पति जि [illegible] घर (९।१२) में बैठा [illegible] त हाथी और स्त्री इन सबोंके [illegible] य में शनि जिसे देखता होवे ऐसा [illegible] तब उस पुरुषको सत्कर्मों का और

कमलकाद्य [illegible]
नूनं जनन्या [illegible]
यस्य प्रसूतौ दु [illegible]

उत्तम भोग सुखोंको भोगनेवाला और नित्य प्रति उत्सवों के उत्कर्षसे युक्त और उत्तम धन से युक्त करता है ॥ ६ ॥

अथ शनिक्षेत्रगतशुक्रे ग्रहदृष्टयः ॥

स्थिरस्वभावं विभवोपपन्नं महाधनं सारविराजमानम् ॥
कान्ताविलासैः सहितं प्रकुर्याद्भृगुः शनिक्षेत्रगतोऽर्कदृष्टः ॥१॥
ओजस्विनं चारुशरीरयष्टिं प्रकृष्टसत्वं धनवाहनाढ्यम् ॥
करोतिमर्त्यं शनिगेहयातो भृगोः सुतः शीतकरेण दृष्टः ॥ २ ॥

जिसके जन्म समयमें शनिके घर (१०।११) में बैठे शुक्र को सूर्य देखताहोवे तब उस पुरुष को स्थिर स्वभाव वाला, विभवों से युक्त, बड़ा धनवान्, बल से विराजमान और स्त्री निमित्त विलासले युक्त उस पुरुष को करता है ॥१॥ शनि के घर (१०।११) में बैठे शुक्रको चन्द्रमा देखताहोवे तब बलवान,सुन्दर शरीरवाला बड़ा बलवान धन और वाहनों से युक्त करता है ॥ २ ॥

श्रमामयाभ्यामतितप्तमूर्तिमनर्थतोर्थक्षतिसंयुत च ॥
कुर्यान्नरं दानवराजपूज्यः कुजेक्षितः सूर्यसुतालयस्थः ॥ ३ ॥
विद्वद्विधिज्ञं धनिनं सुतुष्टं प्राज्ञं सुसत्वं बहुलप्रपञ्चम् ॥
सद्वाग्विलासं मनुजं प्रकुर्याद्भृगुः शनिक्षेत्रगतोज्ञदृष्टः ॥ ४ ॥

जिसके जन्मसमयमें मङ्गल जिसे देखताहोवे ऐसा शुक्र शनिके घर (१०।११) में बैठा होवे तब उस पुरुष को श्रम और रोगसे अत्यन्त तापयुक्त, अनर्थ से अर्थ की क्षतिसे संयुत करता है ॥ ३ ॥ बुध जिसे देखता होवे ऐसा शुक्र यदि शनिके घर से बैठा होवे तब उस पुरुष को विद्वान पुरुषों की विधि का जानने वाला, धन में युक्त, सब तरह से सन्तुष्ट; बुद्धिवान, बलवान,बड़ा प्रपंची उत्तम भाषण करने वाला करता है ॥ ४ ॥

सद्गन्धमालाम्बरचारुवाद्यसंजातसङ्गीतरुचिः शुचिश्च ॥
स्यान्मानवो दानवराजपूज्य सुरेज्यदृष्टे शनिमन्दिरस्थे ॥ ५ ॥
प्रसन्नगात्रं च विचित्रलाभं धनाङ्गनावाहनसूनुसौख्यम् ॥
कुर्यान्नरं दानववृन्ददेवो मन्देक्षितो मन्दग्रेहेधिसंस्थ ॥ ६ ॥

बृहस्पति जिसे देखता होवे ऐसा शुक्र यदि शनिके घर में बैठा होवे तब वह मनुष्य उत्तम गन्ध माल्य वस्त्र उत्तम बाजेओं से युक्त, गान विद्या में रुचि रखने वाला और परम पवित्र होता है ॥ ५ ॥ शनि जिसे देखता होवे ऐसा शुक्र यदि शनिके घर (१०।११) में बैठा होवे तब उस मनुष्यको प्रसन्नांग, विचित्र लाभोंसे युक्त और धन पुत्र स्त्री और सवारियोंके सुखसेसंपन्न करताहै॥६॥ इतिशुक्रे ग्रहदृष्टयः॥

अथ भौमालयस्थे शनौ ग्रहदृष्टयः ।

लुलायगोजाविसमृद्धिभाजं कृषिक्रियायां निरतं सदैव ॥
सत्कर्मसक्तं जनयेन्मनुष्यं भौमालयस्थः शनिरर्कदृष्टः ॥ १ ॥
नीचानुयातं चपलं कुशीलं खलं सुकार्थैः परिवर्जितं च ।
कुर्यादवश्यं रविजो मनुष्यं शशीक्षितो भूसुतवेश्मसंस्थः ॥२॥

जिसके जन्म समय में सूर्य जिसे देखता होवे ऐसा शनि मङ्गल के घरमें बैठा होवे तब उस पुरुष को महिष गऊ बकरा भेड़ इनकी समृद्धि खेती करनेमें सदा निरत, और सत्कर्म करनेमें आसक्त करताहै ॥१॥ चन्द्रमा जिसे देखता होवे ऐसा शनि यदि मङ्गल के घर में बैठाहोवे तब उस मनुष्य का नीचों के सङ्ग रहने वाला चपल, दुष्ट स्वभाव वाला, खल, सुख और धनसेरहित अवश्यही करता है ॥२॥

अनल्पजल्पं गतसत्परार्थं कार्यक्षतिं जातविशेषवित्तम् ॥
करोति जातं ननु भानुसूनुः कुजेन दृष्टः कुजवेश्मसंस्थः ॥३॥
चौर्यकर्मकलहादितत्परं कामिनीजनगतोत्सवं नरम् ॥
ज्ञेक्षितोहि कुरुतेऽर्कनन्दनो भूमिसूनुभवनाधिसंस्थितः ॥४॥

मङ्गल जिसे देखता होवे ऐसा शनि मङ्गलकेही घरमें बैठा होवे तव उस पुरुष को बहुत बकवाद करने वाला, परोपकारके लिये झूठ कहने वाला, काम को बिगाड़ने वाला, और यदि (परार्थकार्यक्षतिं) ऐसा पाठ होय तौ यह अर्थ करना कि झूठ बोलने वाला और परोपकारार्थ जो काम उसका बिगाड़ने वाला, और धन से रहित करताहै ॥३॥ बुध जिसे देखता होवे ऐसा शनि यदि मङ्गलके घर (१।८) में बैठा होवे तब उस मनुष्यको चौर्य कर्म और कलहादि में तत्पर और कामिनीयों के हेतुसे उत्सव रहित करता है ॥ ४ ॥

सुखधनैः सहितं नृपमन्त्रिणं नृपसमाश्रितमुख्यतयान्वितम् ॥
सुरपुरोहितवीक्षितभानुजोऽवनिजवेश्मगतः कुरुते नरम् ॥ ५ ॥
बहुप्रयाणाभिरतं विकान्तिं पापांगनासक्तमतिं विचित्तम् ॥
करोति मर्त्यं क्षितिजालयस्थो भानोस्तनूजो भृगुजेन दृष्टः॥६॥

बृहस्पति जिसे देखता होवे ऐसा शनि यदि मङ्गलके घरमें बैठा होवे तब उस मनुष्यको सुखसे और धनसे पूर्ण, राजाका मंत्री, राजाके आश्रय से मुख्यता से युक्त करताहै ॥ ५ ॥ शुक्र जिसे देखता होवे ऐसा शनि यदि मङ्गल के घर में बैठा होवे तब उस पुरुषको सब समय प्रयाण (यात्रा) करनेमें अभिरत, कान्ति रहित दुष्ट स्त्रियोंमें आसक्त जिसकी बुद्धि और ज्ञानरहित करताहै ॥ ६ ॥

अथ शुक्रवेश्मगे शनौ ग्रहदृष्टयः ।

विद्याविचारे प्रचुरोऽतिवक्ता परान्नभोक्ता विधनश्च शान्तः ॥
भवेन्नरस्तिग्मकरेण दृष्टे सूर्यात्मजे भार्गववेश्मसंस्थे ॥ १ ॥
नृपप्रसादाप्तमहाधिकारं योषाविभूषाम्बरजातसौख्यम् ॥
बलान्वितं सञ्जनयेन्मनुष्यं मन्दः सितर्क्षे हरिणाङ्कदृष्टः ॥२॥

सूर्य जिसे देखता होवे ऐसा शनि यदि शुक्र के घर (२।७) में बैठा होवे तब वह पुरुष विद्याके विचारमें प्रचुर (प्रवृत्त), अत्यन्त वक्ता, परान्नका भोजन करने वाला, धनसे रहित और बड़ा शान्त होताहै ॥ १ ॥ चन्द्रमा जिसे देखता होवे ऐसा शनि यदि शुक्रके घरमें बैठा होवे तब उस पुरुष को राजा के अनुग्रहसे प्राप्त हुये महाधिकारसे युक्त, स्त्री भूषण वस्त्रोंके सुखसे संयुक्त और बलसे युक्त करताहै।२॥

संग्रामकार्याभिरतं नितान्तमनल्पजल्पं च महत्प्रसादम् ॥
कुर्यान्नरं तिग्मकरस्य सूनुर्भूसूनुदृष्टो भृगुजालयस्थः ॥ ३ ॥
कान्तारतोनीचजनानुयातो विनोदहास्याभिरतोगतार्थः ॥
क्लीबादिसख्यश्च भवेन्मनुष्यः शनौ सितर्क्षे शशिसूनुदृष्टे ॥४ ॥

मङ्गल जिसे देखता होवे ऐसा शनि यदि शुक्र के घर में बैठा होवे तब उस मनुष्यको संग्रामके कार्यमें निरत, निरंतर बहुत बोलने वाला और महा प्रसन्नतासे सदायुक्त करताहै ॥ ३ ॥ बुध जिसे देखता होवे ऐसा शनि यदि शुक्रके घरमें बैठा

होवे तब वा पुरुष स्त्रीमें रत, नीच मनुष्योंका सङ्ग करनेवाला, विनोदमें तथा हास्य में अभिरत; धनसे रहित और नपुंसक मनुष्योंसे मित्रता करनेवाला होताहै॥४॥

परोपकारं कृतचित्तवृत्ति परस्य दुःखेन सुदुःखितश्च ॥
दातोद्यमी सर्वजनप्रियश्च मन्दे सितर्क्षे गुरुणा प्रदृष्टे ॥ ५ ॥
रत्नादिलाभं वनिताविलासं बलाधिकत्वं नृपगौरवाप्तिम् ॥
कुर्यान्नराणां तरणेस्तनूजः शुक्रेक्षितः शुक्रगृहं प्रयातः ॥ ६ ॥

यदि शनि शुक्रके घरमें बैठा होवे और उसे बृहस्पति देखता होवे तब वो मनुष्य परोपकारमें अपनी चित्तवृत्ति रखने वाला, दूसरेके दुखसे दुःखी, देने वाला, उद्यम करनेमें प्रवृत्त और सब जनोंको प्रिय होताहै ॥ ५ ॥ शुक्र जिसे देखता होवे ऐसा शनि यदि शुक्रके ही घरमें बैठा होवे तब उस मनुष्यको रत्नादिकोंका लाभ, स्त्रियों के साथ भोगविलास, बलका अधिक्य और राजासे गौरवकी प्राप्ति करताहै ॥६॥

अथ बुधमन्दिरे शनौ खेटदृष्टयः ।

सुखोज्झितं नीचरतं सकोपमधार्मिकं द्रोहकरं सुधीरम् ॥
कुर्यान्नरं तिग्मकरस्य सूनुर्भानुप्रदृष्टो बुधमन्दिरस्थः ॥ १ ॥
प्रसन्नमूर्तिर्नृपतिप्रसादप्राप्ताधिकारोन्नतिकार्यवृत्तिः ॥
कान्ताधिकारो यदि वा नरः स्यान्मन्दे ज्ञभस्थेमृतरश्मिदृष्टे ॥२॥

जिसके जन्म समय में सूर्य जिसे देखता होवे ऐसा शनि यदि बुध के घरमें बैठा होवे तब उस पुरुषको सुखसे रहित; नीचों के सङ्ग में निरत, क्रोधसे युक्त; अधर्म करनेवाला, द्रोह करनेवाला और बड़ा धीर करता है ॥ १ ॥ चन्द्रमा जिसे देखता होवे ऐसा शनि यदि बुधके घरमें बैठा होवे तब वो पुरुष सदा प्रसन्न मूर्ति, राजाके अनुग्रहसे अधिकार प्राप्त करनेसे उन्नति के कामोंमें वर्तनेवाला, स्त्रियों के अधिकारसे युक्त अथवा अभिलषित अधिकार युक्त होताहै ॥ २ ॥

प्रकृष्टबुद्धिं सुतरां विधिज्ञं ख्यातं गभीरं च नरं करोति ॥
सोमात्मजक्षेत्रगतोर्कसूनुर्भूसूनुदृष्टः परिसूतिकाले ॥ ३ ॥
धनान्वितं चारुमतिं विनीतं गीतप्रियं सङ्गरकर्मदक्षम् ॥
शिल्पेष्वभिज्ञं मनुजं प्रकुर्यात्सौम्येक्षितः सौम्यगृहस्थमन्दः॥ ४ ॥

जिसके जन्म समयमें मङ्गल जिसे देखता होवे ऐसा शनि यदि बुधके घरमें बैठा होवे तब वह पुरुष बड़ा बुद्धिमान, अत्यन्त विधियोंका जानने वाला, सर्वत्र विख्यात और अत्यन्त गंभीर होताहै ॥३॥बुध जिसे देखता होवे ऐसा शनि यदि बुधके घरमें बैठा होवे तव वो मनुष्य धनसे सम्पन्न, पवित्र जिसकी बुद्धि, अत्यन्त नम्र,गान विद्या जिसे प्रिय,संग्राम करनेमें चतुर और शिल्पविद्याका जाननेवालाहोताहै

राजाश्रितश्चारुगुणैः समेतः प्रियः सतां गुप्तधनो मनस्वी ॥
भवेन्नरो मन्दचरो यदि स्याज्ज्ञराशिसंस्थः सुरपूज्यदृष्टः ॥ ५ ॥
योषाविभूषाकरणे प्रवीणं सत्कर्मधर्मानुरतं नितान्तम् ॥
स्त्री सक्तचित्तं प्रकरोति मर्त्यं सितेक्षितो भानुसुतोज्ञगेहे ॥ ६ ॥

बृहस्पति जिसे देखता होवे ऐसा शनि यदि बुधकी राशिमें स्थित होवे तव वो पुरुष राजाका आश्रित, उत्तम गुणोंसे सम्पन्न, सज्जनोंको प्रिय, गुप्त धन रखने वाला और विद्वान होता है॥५॥शुक्र जिसे देखता होवे ऐसा शनि यदि बुधके घरमें बैठा होवे तव वो पुरुष स्त्रियोंके शृङ्गार करनेमें अति कुशल, सत्कर्म धर्ममें निरन्तर निरत और स्त्रियोंमें आसक्त चित्त होताहै॥६॥इति बुधगेहे शनौ ग्रहदृष्टयः॥

अथ कुलीरगतमन्दंप्रति ग्रहदृष्टयः ।

आनन्ददारद्रविणैर्विहीनः सदान्नभोगैरपि वोज्झितश्च ॥
मातुर्महाक्लेशकरोनरः स्यान्मन्दे कुलीरोपगतेऽर्कदृष्टे ॥ १ ॥
निपीडनं बन्धुजनैर्जनन्यां नूनं धनानामभिवर्द्धनं च ॥
कुर्यान्नराणां द्युमणेस्तनूजः कुलीरसंस्थो द्विजराजदृष्टः ॥ २ ॥

सूर्य जिसे देखता होवे ऐसा शनि यदि कर्क राशिमें बैठा होवे तव वो पुरुष आनन्दसे स्त्रीसे और धनसे विहीन, अन्नसे और भोगोंसे रहित और माताके लिये महान् क्लेशका करनेवाला होताहै॥१॥चन्द्रमा जिसे देखता होवे ऐसा शनि यदि कर्क राशिका होवे तव वो पुरुष अपने बंधुजनोंसे पीड़ा पानेवाला और माताके हेतुसे धनकी वृद्धि पानेवाला होता है ॥ २ ॥

गलद्बलक्षीणकलेवरश्च नृपार्पितार्थोत्तमवैभवोऽपि ॥
स्यान्मानुषोभानुसुते प्रसूतौ कर्कस्थिते क्षोणिसुतेन दृष्टे ॥ ३ ॥

वाग्विलासकठिनोऽटनबुद्धिश्चेष्टितैर्बहुविधैरपि युक्तः ॥
दम्भवृत्तिचतुरोऽपि नरः स्यात्कर्कगामिनि शनौ बुधदृष्टे ॥ ४ ॥

जिसके जन्म समयमें मङ्गल जिसे देखता होवे ऐसा शनि यदि कर्क राशि में स्थित होवे तब वो पुरुष गलनेसे बलहीन जिसका शरीर और राजाके दिये धनसे उत्तम वैभवसे युक्त होताहै ॥ ३ कर्क राशिमें बैठे शनिको यदि बुध देखता होवे तब वो पुरुष अति कठोर वाणी बोलनेवाला, फिरने में बुद्धि रखनेवाला, अनेक तरहके बरतावोंसे युक्त और चतुर होय तब भी बड़ा दम्भी होता है ॥ ४ ॥

क्षेत्रपुत्रगृहगेहिनीधनैरत्नवाहनविभूषणैरपि ॥
संयुतो भवति मानवोजनौ जीवदृष्टियुजि कर्कगे शनौ ॥ ५ ॥
उदारतागौरव चारुमानैः सौन्दर्यवर्यामलवाग्विलासैः ॥
नूनं विहीना मनुजा भवेयुः शुक्रेक्षिते कर्कगतेर्कसूनौ ॥ ६ ॥

जिस मनुष्यके जन्म समयमें बृहस्पति जिसे देखता होवे ऐसा शनि कर्क राशिमें बैठा होवे तब वह पुरुष खेत घर पुत्र स्त्री धन रत्न सवारी और भूषणोंसे युक्त होता है ॥५॥ जिसके जन्म समयमें शुक्रकी दृष्टिसे युत शनि कर्क राशि में बैठा होवे तब वह पुरुष उदारता, बड़प्पन, उत्तम मान, सुन्दरता, श्रेष्ठता और निर्मल अच्छे भाषणोंसे अवश्यही रहित होता है ॥ ६ ॥ इति कर्कोपगते शनौ ग्रहदृष्टयः ।

अथ सिंहोपयाते शनौ ग्रहदृष्टयः ।

धनेन धान्येन च वाहनेन सद्वृत्तसत्योत्तमचेष्टितैश्च ।
भवेद्विहीनोमनुजः प्रसूतौ सिंहस्थिते भानुसुतेऽर्कदृष्टे ॥ १ ॥
सद्रत्नभूषाम्बरचारुकीर्ति कलत्रमित्रात्मजसौख्यपूर्तिम् ॥
प्रसन्नमूर्तिं कुरुतेर्कसूनुर्नरं हरिस्थो हरिणाङ्कदृष्टः ॥ २ ॥

जिसके जन्म समयमें सूर्यसे दृष्ट शनि सिंहराशिमें बैठा होवे तब वह पुरुष धन धान्य, सवारी, सज्जनोंके बरताव, सत्य और उत्तम चेष्टित इन सबोंसे रहित होताहै॥१॥चन्द्रमा जिसे देखता होवे ऐसा शनि यदि सिंहराशिमें बैठा होवे तब वह पुरुष सद्रत्न, भूषण, वस्त्र, उत्तम कीर्ति, स्त्री, मित्र, पुत्र इन सबोंके सुखसे पूर्ण और सदा प्रसन्नमूर्ति होता है ॥ २ ॥

संग्रामकर्मण्यतिनैपुणः स्यात्कारुण्यहीनोमनुजः सकोपः ॥
क्रूरस्वभावो ननु भानुसूनौ पञ्चाननस्थेऽवनिसूनुदृष्टे ॥३॥
धनाङ्गनासूनसुखेन हीनं दीनं च नीचव्यसनाभिभूतम् ॥
करोति जातं तपनस्य सूनुः सिंहस्थितः सोमसुतेक्षितश्च ॥४॥

मङ्गल जिसे देखता होवे ऐसा शनि यदि सिंहराशिमें बैठा होवे तब वह पुरुष संग्रामकर्म में अति निपुण, बड़ा निर्दयी,बड़ा क्रोधी और क्रूर स्वभावयुक्त होता है ॥३॥ बुध जिसको देखताहोवे ऐसा शनि यदि सिंहराशिमें बैठा होवे तब वह पुरुष धन और स्त्रीके सुखसे रहित, दीनतायुक्त और नीच पुरुषों के व्यसनों से पराभूत होता है ॥ ४ ॥

सन्मित्रपुत्रादिगुणैरुपेतं ख्यातम् सुवृत्तम् सुतरां विनीतम् ।
नरंपुरग्रामपतिं करोति सौरिर्हरिस्थो गुरुणा प्रदृष्टः ॥ ५ ॥
धनैश्च धान्यैरपि वाहनैश्च सुखैरुपेतं वनिताप्रतप्तम् ॥
कुर्यान्मनुष्यं तपनस्य सूनुः पञ्चाननस्थो भृगुसूनदृष्टः ॥६॥

बृहस्पति जिसे देखता होवे ऐसा शनि यदि सिंह राशि में बैठा होवे तब वह पुरुष उत्तम मित्र पुत्र आदि गुणों से युक्त, सर्वत्र विख्यात उत्तम वरतावयुक्त अत्यन्त नम्र और पुर ग्राम का पति होता है ॥५॥ शुक्र जिसे देखता होवे ऐसा शनि यदि सिंहराशिमें स्थित होवे तब वह पुरुष धनधान्य सवारी सुख इनसे युक्त और स्त्रीके निमित्त से दुःखी होता है ॥६॥ इति सिंहयाते शनौ ग्रहदृष्टयः ॥

अथ गुर्वगारे शनौ ग्रहाणां दृष्टयः ॥

ख्यातिं धनाप्तिं बहुगौरवाणि स्नेहप्रवृत्तिं परनन्दनेषु ॥
लभेन्नरोदेवगुरोरगारे शनैश्चरे पद्मिनिनाथदृष्टे । १ ॥
सद्वृत्तशाली जननीवियुक्तो नामद्वयालंकरणप्रयातः ॥
सुखार्थभार्यासुखभाङ्नरः स्यात्सौरे सुरेज्यालयगेऽब्जदृष्टे ॥ २ ॥

यदि बृहस्पतिकी राशि (९।१२) में शनि स्थित होवे और उसे सूर्य देखता होवे इस योगमें जिसने जन्म लिया है ऐसामनुष्य सर्वत्र ख्यातिको,धनकी प्राप्ति को,अनेक गौरवों को, परपुत्रोंमें प्रवृत्तिको प्राप्तहोता है ॥१॥ चन्द्रमा जिसे देखता

होवे ऐसा शनि गुरुके घर (९।१२) में बैठे तब वह पुरुष सज्जनोंके बरताव का बरतनेवाला. मातासे रहित, दोनापोंके गहनेको धारण करने वाला, सुख और भार्याके सुखसे और धनसे सम्पन्न होता है ॥ २ ॥

वातान्वितं लोकविरुद्धचेष्टं प्रवासिनं दानतरं करोति ॥
नरं धरासूनुनिरीक्ष्यमाणो मार्तण्डपुत्रः सुरमन्त्रिणोभे ॥ ३ ॥
गुणाभिरामोधनवान्प्रकामं नराधिराजाप्तमहाधिकारः ॥
नरः सदाचारविराजमानः शनौ ज्ञदृष्टे गुरुमन्दिरस्थे ॥ ४ ॥

मङ्गल जिसे देखता होवे ऐसा शनि यदि गुरुकी राशि (९।१२) का होवे तब वह पुरुष वायुके रोगसे युक्त, लोक से विरुद्ध चेष्टावाला, परदेशमें रहनेवाला और अतिशय दीन होता है ॥३॥ जिसके जन्म समयमें बुध जिसे देखता होवे ऐसा शनि बृहस्पतिकी राशि (९।१२) का होवे वह पुरुष गुणोंका निवास स्थान, धनवान् और राजासे यथेच्छ महाधिकारका प्राप्त होनेवाला होता है ॥ ४ ॥

नृपप्रधानः पृतनापतिर्वा सर्वाधिशाली बलवान्सुशीलः ॥
स्यान्मानवो भानुसुते प्रसूतौ जीवेक्षिते जीवगृहं प्रयाते ॥४॥
बिदेशवासी बहुकार्यसक्तो द्विमात्रपुत्रः सुतरां पवित्रः ॥
स्यान्मानवो दानवमन्त्रिदृष्टे मन्देऽमराचार्यगृहं प्रयाते ॥ ६ ॥

बृहस्पति जिसको देखता होवे ऐसा शनि यदि बृहस्पति की ही राशि (९।१२) में बैठा होवै तब वह पुरुष राजाका मंत्री अथवा सेना का पति,सर्वप्रकार मानसी व्यथाओंसे युक्त, बड़े बलवान और बड़ा सुशील होता है ॥ ५ ॥ शुक्र जिसे देखता होवे ऐसा शनि यदि बृहस्पतिके घरमें वैठा होवे तब वह पुरुष बिदेश में रहने वाला, अनेक कार्योंमें आसक्त, दो माता और दोही जिसके पुत्र और अत्यन्त पवित्र होता है ॥ ६ ॥ इति गुर्वगारे शनैश्वरे ग्रहाणां दृष्टयः ॥

अथ निजागारगतमन्दं प्रति ग्रहदृष्टयः ।

कुरूपभार्यश्च परान्नभोक्ता नानाप्रयासामयसंयुतश्च ॥
विदेशवासी प्रभवे मनुष्योमन्दे निजागारगतेर्कदृष्टे ॥ १ ॥
धनांगनाढ्यं वृजिनानुयातं चलत्स्वभावं जननीविरुद्धम् ॥
कामातुरं चापि नरं प्रकुर्यान्मन्दः स्वभस्थोऽमृतरश्मिदृष्टः ॥२॥

सूर्य जिसे देखता होवे ऐसा शनि यदि अपनी राशि (१०।११) का होवे तब वो पुरुष कुरूप भार्यासे युक्त, परान्नका खानेवाला, अनेक रोगोंसे और अनेक तरहके परिश्रमोंसे युक्त और सब समय प्रदेशमें रहनेवाला होताहै ॥ १ ॥ चन्द्रमा जिसे देखता होवे ऐसा शनि यदि अपनी राशि (१०।११) का होवे तब वह मनुष्य धन स्त्रीसे पूर्ण, पापकर्म करनेवालेओंका अनुयायी, चञ्चल स्वभाव वाला, मातासे विरोध रखनेवाला और कामसे आतुर होताहै ॥ २ ॥

शूरः क्रूरः साहसी सद्गुणाढ्यः सर्वोत्कृष्टः सर्वदाहृष्टचित्तः ॥
ख्यातोमर्त्यश्चात्मजस्थेऽर्कपुत्रे धात्रीपुत्रप्रेक्षणत्वं प्रयाते ॥ ३ ॥
सद्वाहनान्साहसिकान्ससत्त्वान्धीरांश्च नानाविधकार्यसक्तान् ॥
करोति मर्त्यान्ननु भानुपुत्रः स्वक्षेत्रसंस्थः शशिपुत्रदृष्टः ॥ ४ ॥

शनि स्वक्षेत्र (१०।११) में होवे और उसे मङ्गल देखता होवे तो वह पुरुष बड़ा शूरवीर, क्रूर, साहस कर्म करनेवाला, उत्तम गुणोंसे परिपूर्ण, सबोंसे उत्कृष्ट, सब समय प्रसन्नचित्त और सर्वत्र विख्यात होताहै॥३॥जिनोंके जन्म पत्रमें स्वक्षेत्र (१०।११) में शनि होवे उसे बुध देखता होवे तब वह मनुष्य बड़ा साहसी, उत्तम वाहनोंसे युक्त,बड़े पराक्रमी,बड़े धीर और अनेक प्रकारके कामोंमें आसक्त होतेहैं।४

गुणान्वितं क्षोणिपतिप्रधानं निरामयं चारुशरीरयष्टिम् ॥
कुर्यान्नरं देवगुरुप्रदृष्टश्चण्डांशुसूनुर्निजवेश्मसंस्थः ॥ ५ ॥
कामातुरं सन्नियमेन हीनं भाग्योपपन्नं सुखिनं धनाढ्यम् ॥
भोक्तारमीशं कुरुते स्वभस्थोरवेः सुतोभार्गवसूनुदृष्टः ॥ ६ ॥

गुरु जिसे देखता होवे ऐसा शनि यदि अपने घरमें बैठा होवे तब वह पुरुष गुणोंसे युक्त, राजाका मंत्री, रोगोंसे रहित और दिव्य शरीरवाला होताहै ॥ ५ ॥ शुक्र जिसे देखता होवे ऐसा शनि यदि अपने घरका होवे तब वह पुरुष काम से आतुर अर्थात् अत्यन्त कामी, उत्तम मनुष्यके नियमसे रहित, भाग्यसे युक्त,सुखसंपन्न धनसे परिपूर्ण, भोगोंका भोगने वाला और सर्व प्रकारसे समर्थ होताहै॥ ६ ॥ इति निजागारगमंदं प्रति ग्रहदृष्टयः ॥

इति श्रीढुण्ढिराजविरचितजातकाभरणस्य भाषानुवादकृतमार्जनी-
नाम्नीटीकायां ग्रहदृष्टिफलाध्यायोनवमः समाप्तः ॥

अथ राशिफलाध्यायः ।

भवति साहसकर्मकरोनरोरुधिरपित्तविकारकलेवरः ॥
क्षितिपतिर्मतिमान्सहितस्तदासुमहसामहसामधिपे क्रिये ॥ १ ॥
परिमलैर्विमलैः कुसुमाशनैः सुवसनैः पशुभिः सुखमद्भुतम् ॥
गविगतोहि रविर्जलभीरुतां विहितमाहितमादिशते नृणाम् ॥ २ ॥

तेजोंका और दिनोंका स्वामी सूर्य जिसके जन्मपत्रमें मेषराशिका होकर बैठे चाहे किसी स्थानमें हो वह पुरुष भूमिका पति, बड़ा बुद्धिमान्, हित करने वाला, साहसकर्मका करनेवाला और रुधिरके विकारसे युक्त और पित्तके विकारसे युक्त शरीरवाला होताहै ॥ १ ॥ और जिस मनुष्यके जन्मपत्रमें वृषराशि का होकर सूर्य बैठा होवे उसको सुगन्धित निर्मल पुष्पोंसे, अनेक प्रकारके उत्तम भोजन करने के पदार्थोंसे, सुन्दर वस्त्रोंसे और पशुओंसे अद्भुत सुखको देताहै और जलसे डरने वाला और पक्षियोंके हित करनेमें प्रवृत करताहै ॥ २ ॥

गणितशास्त्रकलामलशीलतासुललिताद्भुतवाक् प्रथितोभवेत् ॥
दिनपतौ मिथुने ननु मानवोविनयतानयतातिशयान्वितः ॥ ३ ॥
सुजनतारहितः किल कालविज्जनकवाक्यविलोपकरोनरः ॥
दिनकरे हि कुलीरगते भवेत्सधनताधनतासहिताधिकः ॥ ४ ॥

जिसके जन्म समयमें सूर्य मिथुन राशि का होकर बैठताहै वह पुरुष गणित शास्त्रकी कलाओंके विचारमें कुशल और मनोहर अद्भुत वाणी बोलनेमें विख्यात और अति विनय युक्त नीतिका जाननेवाला होता है ॥ ३ ॥ जिस मनुष्यके जन्म समयमें कर्कराशि में सूर्य बैठा होवे तब वह पुरुष सुजनतासे रहित, निश्चय करके कालके जाननेवाला, पिताका कहना नहीं माननेवाला और कुबेर से अधिक धनवान् होता है ॥ ४ ॥

स्थिरमतिश्च पराक्रमताधिकोविभुतयाद्भुतकीर्तिसमन्वितः ॥
दिनकरे करिवैरिगते नरोनृपरतोपरतोषकरोभवेत् ॥ ५ ॥
दिनपतौ युवतौ समवस्थिते नरपतेर्द्रविणं हि नरोभवेत् ॥
मृदुवचाः श्रुतगेयपरायणः सुमहिमामहिमाप हिताहितः ॥ ६ ॥

जिसकी जन्म पत्रीमें सिंहराशिका होकर सूर्य बैठे वो मनुष्य स्थिर बुद्धिसे युक्त, पराक्रमतासे अधिक, विभुता और अद्भुतकीर्तिसे समन्वित, राजासे प्रीति करनेवाला और शत्रुओंकाभी तोष करनेवाला होता है ॥ ५ ॥ जिसके जन्म समय में सूर्य कन्याराशि में स्थित होवे उस मनुष्यको राजा से धन प्राप्ति होवे और मृदु बचन कहनेवाला, शास्त्रके गान करने में तत्पर, वड़ी महिमासे युक्त और सबसे प्यार रखनेवाला वह पुरुष होता है ॥ ६ ॥

नरपतेरतिभीरुरहर्निशं जनविरोधविधानमघं दिशेत ॥
कलिमनाःपरकर्मरतिर्घटे दिनमणिर्न मणिद्रविणादिकम् ॥ ७ ॥
कृपणता कलहं च भृशं रुषं विषहुताशनशस्त्रभयं दिशेत् ॥
अलिगतः पितृमातृविरोधितां दिनकरो न करोति समुन्नतिम् ॥८॥

जिसके जन्म समयमें तुला राशिका सूर्य होवे वो मनुष्य अहर्निश राजासे भययुक्त, मनुष्योंको विरोधके विधिका सिखानेवाला, कलह करनेमें मन रखनेवाला अन्य मनुष्योंके कामोंमें मन रखनेवाला, मणि और अनेक प्रकारके धनोंसे रहित होताहै ॥७॥ जिस मनुष्यके जन्मसमयमें सूर्य वृश्चिक राशिका होवे तव वो मनुष्य कृपणपनसे और कलहसे युक्त होता है, अत्यन्त क्रोधी, विष अग्नि और शस्त्रके भयसे संयुक्त, माता पितासे विरोध करनेवाला और उन्नतिरहित होता है ॥ ८ ॥

स्वजनकोपमतीव महान्वितं वहुधनं हि धनुर्धरगोरविः ॥
सुजनपूजनमादिशते नृणां सुमतितोमतितोषविवर्द्धनम् ॥ ९ ॥
अटनतां निजपक्षविपक्षतामधनतां कुरुते सततं नृणाम् ॥
मकरराशिगतोविगतोत्सवं दिनविभुर्न विभुत्वसुखं दिशेत ॥१०॥

जिस मनुष्यके जन्म समयमें धनुराशिका सूर्य होता है वो स्वजनोंसे कोपयुक्त वड़े लोगोंसे युक्त, वहुत द्रव्यवाला, सुजनोंके पूजनमें युक्त और सुमतिसे बुद्धिका सन्तोष वढ़ानेवाला होताहै ॥९॥ जिस मनुष्यके जन्मसमयमें मकर राशिमें सूर्य होताहै उस मनुष्यको देशोंके भ्रमणको, अपने पक्षके मनुष्यों से शत्रुभावको धन से हीन होना, उत्सवोंसे रहित, वैभवोंसे हीन और सुखसे रहित करता है ॥१०॥

कलशगामिनि पङ्कजिनीपतौ शठतरोहि नरोगतसौहृदः ॥
मलिनताकलितोरहितः सदा करुणयारुणयात्तसुखो भवेत् ॥११॥

बहुधनं क्रयविक्रयतः सुखं निजजनादपि गृह्यमहाभयम् ॥
दिनपतौ गुरुभेऽभिमतोभवेत्सजनताजनतोषदसन्मतिः ॥ १२ ॥

जब सूर्य कुम्भ राशि का होता है तब वो मनुष्य अत्यन्त शठ, सबोंसे स्नेह रहित,अति मलीन रहनेवाला,बड़ा निर्दयी और सुखसे रहित होताहै॥११॥जबसूर्य मीनराशिका होता है तब बहुत धनों से युक्त, क्रयविक्रयसे और अपने मनुष्यांसे सुख और गृह सम्बन्ध से भययुक्त और अपने जनोंको सन्तोष देनेवाला होता है ॥ १२ ॥ इति राशिस्थितरविफलम् ॥

अथ राशिस्थतचंद्रफलम् ॥

स्थिरधनोरहितः सुजनैर्नरः सुतयुतःप्रमदाविजितोभवेत् ॥
अजगतोद्विजराजइतीरितं विभुतयाद्भुतयास्वसुकीर्तिभाक् ॥ १ ॥
स्थिरगतिं सुमतिं कमनीयतां कुशलतां हि नृणामुपभोगताम् ॥
वृषगतोहिमगुर्भृशमादिशेत्सुकृतितः कृतितश्च सुखानि च ॥ २ ॥

जिसके जन्मसमयमें मेषराशिमें चन्द्रमावैठा होवेवो मनुष्य सदा धनसे संयुक्त, सुजनों से रहित, पुत्रवाला अपनी स्त्रीसे हारमें रहनेवाला, अद्भुत वैभवयुक्त और अपनी उत्तम कीर्तियुक्त होताहै ॥१॥ जिसके जन्म समय में वृषराशिका चन्द्रमा हाता है तब चन्द्रमा वो मनुष्यके वास्ते स्थिरगतिको,सुन्दर बुद्धिको सुन्दरताको,चतुराईको, अनेक भोगोंको भोगनेको और सुकृति मनुष्यांके द्वारा सुखको देताहै॥२

प्रियकरःकरमत्स्ययुतोनरः सुरतसौख्यभरोयुवतिप्रियः ॥
मिथुनराशिगतोहिमगौ भवेत्सुजनताजनताकृतगौरवः । ३ ॥
श्रुतकलाबलनिर्मलवृत्तयः कुसुमगन्धजलाशयकेलयः ॥
किलनरास्तु कुलीरगते विधौ वसुमतीसुमतीप्सितलब्धयः॥४॥

जिसके जन्म समय में मिथुन राशिका चन्द्रमा होवे वह पुरुष सबों का प्रिय करनेवाला,हाथमें मछलीकी रेखासे संयुक्त, रतिके सुखसे पूर्ण, स्त्रियोंकोप्रिय और सुजन जनोंसे बड़प्पन पानेवाला होताहै ॥ ३ ॥ जिसके कर्कराशिमें चन्द्रमा होता है वो मनुष्य शास्त्रकलाओं सेयुक्त;बलवान, निर्मलवृत्तियुक्त,पुष्प अतर और जल स्थानोंमें क्रीड़ा करनेवाला और पृथ्वीसे बुद्धिसे वांछित मनोरथोंको प्राप्त होनेवाला होता है ॥ ४ ॥

अचलकाननयानमनोरथं गृहकलिं च गलोदरपीडनम् ।
द्विजपतिर्मृगराजगतोनृणांवितनुते तनुतेजविहीनताम् ॥ ५ ॥
युवतिगे शशिनि प्रमदाजनप्रबलकेलिविलासकुतूहलैः ।
विमलशीलसुताजननोत्सवैः सुविधिना विधिना सहितःपुमान् ॥६

यदि चन्द्रमा सिंह राशिका जन्म समयमें होवे तब वह पुरुष पर्वत वनमें जाने का मनोरथ करनेवाला, घरमें कलह करनेवाला, गले में और पेटमें पीड़ायुक्त और शरीर में तेज से रहित होता है ॥५॥ जिसके जन्म समय में चन्द्रमा कन्याका होता है तब वो मनुष्य स्त्रियोंके साथ अत्यन्त क्रीड़ा करने में प्रवृत्त, उत्तम स्वभाव युक्त; कन्यासंतति युक्त, अनेकोत्सव युक्त और अपनेसेसुख भोगनेवाला होताहै॥६

वृषतुरङ्गक्रमविक्रमद्विजसुरार्चनदानमनाः पुमान् ॥
शशिनि तौलिगते बहुदारभाग्विभवसंभवसंचितविक्रमः ॥ ७ ॥
शशधरे हि सरीसृपगे नरोनृपदुरोदरजातधनक्षयः ॥
कलिरुचिर्विबलः खलमानसः कृशमनाः शमनापहतोभवेत् ॥८॥

जिसके जन्मसमयमें चन्द्रमा तुलाराशिमें होताहै वह मनुष्य वृष और घोड़ाओं के नचाने में कुशल, ब्राह्मण देवताओंके पूजनमें, दान करने में मन रखने वाला, और विभवसे धन बल संचय करने में कुशल होता है ॥७॥ जिसके जन्म समय में वृश्चिक राशिका चंद्रमा बैठा होताहै वह मनुष्य चौपर आदि जुआ में धन का नाश करनेवाला, कलह करने में रुचि रखनेवाला, बलसे हीन,दुष्ट मनयुक्त, ओछा जिसका मन और यमलोक जानेवाला होता है ॥८॥

बहुकलाकुशलः प्रबलोमहाविमलताकलितः सरलोक्तिभाक् ॥
शशधरे तु धनुर्धरगे नरोधनकरोन करोति बहुव्ययम् ॥९॥
कलितशीतभयः किलगीतवित्तनुरुषोसहितोमदनातुरः ॥
निज कलोत्तमवृत्तिकरः परं हिमकरे मकरे पुरुषोभवेत् ॥ १० ॥

जिसके जन्म समय चन्द्रमा धन राशिका बैठा होता है वह पुरुष अनेक कलाओं में कुशल, बड़ा प्रबल. निर्मलतायुक्त, सरल (सीधी) वाणी बोलनेवाला और धनवान् होकरभी बड़ा सूम होता है ॥९॥ जिसके जन्म समय में चंद्रमा मकर का

होकर बैठता है वह मनुष्य शीतसे भीरु, गानविद्या का जाननेवाला, किंचित क्रोध युक्त, कामदेवसे सदा आतुर और अपनी सीखीभई कला कौशलसे जीविका करने वाला होता है ॥ १० ॥

अलसतासहितोऽन्यसुतप्रियः कुशलताकलितोतिविचक्षणः ॥
कलशगामिनि शीतकरे नरः प्रशमितोशमितोरुरिपुव्रजः ॥११॥
शशिनि मीनगते विजितेन्द्रियोबहुगुणः कुशलोजललालसः ॥
विमलधीः किल शास्त्रकलादरस्त्वबलताबलताकलितोनरः ॥१२॥

जिसके जन्म समय में कुम्भ राशि का चन्द्रमा बैठा होवे वह पुरुष अत्यन्त आलसी गैरों के पुत्र से स्नेह करने वाला, बड़ा कुशल, बड़ा चतुर और हजारों शत्रुओंका मारने वाला होता है ॥११॥ जिसके जन्मसमयमें चन्द्रमा मीनराशिका होकर बैठा होवे वो मनुष्य इन्द्रियोंको विशेष करके जीतने वाला; बहुगुणसम्पन्न, जलके कामोंमें लालसा रखने वाला, निर्मल बुद्धिसे युक्त, शास्त्रकलाओं में आदर रखनेवाला और बलहीन शरीरवाला होताहै ॥ १२ ॥ इति चंद्रफलम् ॥

अथ राशिगत भौमफलम् ।

क्षितिपतेः क्षितिमानधनागमैः सुवचसामहसाबहुसाहसैः ॥
अवनिजः कुरुते सततं युतं स्वजगतोजगतोऽभिमतं नरम् ॥१॥
गृहधनाल्पसुखं च रिपूदयं परगृहस्थितिमादिशते नृणाम् ॥
अवनयाग्निरुजौ वृषभास्थितः क्षितिसुतोऽतिसुतोद्भवपीडनम् ॥२॥

जिस मनुष्यके जन्म समयमें मङ्गल मेषराशि का होकर बैठता है वह पुरुष राजासे प्राप्त हुये मान धनसे युक्त, सुन्दर वाणीसे तेजसे और अनेक प्रकार के साहसोंसे युक्त होताहै और वो मनुष्य सबोंको सम्मतभी होताहै ॥ १ ॥ जिसके जन्म समय मङ्गल वृषराशिका होकर बैठे वो मनुष्य घरका धनका अल्प सुख पाने वाला, प्रबल जिसके शत्रु, गैरोंके घरमें रहनेवाला, नीतिसे भ्रष्ट, अग्निसे भययुक्त सदा रोगोंसे ग्रस्त और बहुत कन्यासंतति होनेसे पीड़ित होताहै ॥ २ ॥

बहुकलाकलनं कुलजोत्कलिं प्रचलनाप्रियतां च निजस्थलात् ॥
ननु नृणां कुरुते मिथुनास्थितः कुतनयस्तनयप्रमुखासुखम् ॥३॥
परगृहस्थिरतामतिदीनतां विमतितां शमितां च रिपूदयम् ॥
हिमकरालयगे किल मङ्गले प्रबलया बलया कलहं व्रजेत ॥४॥

जिसके जन्म समयमें मङ्गल मिथुनका होकर बैठताहै वो पुरुष अनेक कला-ओंका जाननेवाला, कुलोत्पन्न कलहसे युक्त, भ्रमण करना जिसको प्रिय और पुत्र आदिकोंके सुखसे रहित होताहै ॥३॥ जिस पुरुषके जन्म समयमें मङ्गल कर्क-राशिका होकर बैठताहै वो पुरुष गेरोंके घरमें रहनेवाला, अति दीन, बुद्धि से रहित, प्रबल जिसके शत्रु और प्रबल स्त्रीके होनेसे उसीके साथ प्रतिदिन कलह युक्त होता है ॥ ४ ॥

अतितरां सुतदारसुखान्वितोहतरिपुर्वितताद्यमसाहसः ॥
अवनिजे मृगराजगते पुमाननयतानयताभियुतोभवेत् ॥ ५ ॥
सुजनपूजनताजनताधिकोयजनयाजनकर्मरतोभवेत ॥
क्षितिसुते सति कन्यकयान्विते स्ववनितावनि तोत्सवतः सुखी ॥ ६ ॥

जिसके जन्म समयमें मङ्गल सिंहराशिका होकर बैठा होवे वो पुरुष अतिशयकर पुत्र स्त्रीके सुखसे युक्त, वैरिओंका नाश करनेवाला, निरर्थ उद्यम करनेवाला, बड़ा साहसी और नीतिसे भ्रष्ट अन्याय कर्म करनेवाला होता है ॥ ५ ॥ जिसके जन्मसमयमें मङ्गल कन्याराशिका होकर बैठता है वो पुरुष पुरुषोंमें सत्कार जनोंमें आधिक्य, यज्ञ करने कराने में तत्पर, स्त्री निमित्तसे और भूमि से सदा सुखी होता है ॥ ६ ॥

बहुधनव्ययताङ्गविहीनतागतगुरुप्रियतापरितापितः ॥
वणिजिभूमिसुते विकलः पुमानवनितोद्भवदुःखितः ॥ ७ ॥
विषहुताशनशस्त्रभयान्वितः सुतसुतावनितादिमहासुखः ॥
वसुमतीसुतभाजि सरीसृपे नृपरतः परतश्च जयं व्रजेत् ॥ ८ ॥

जिसके जन्मसमयमें मङ्गल तुलाराशिका होता है वो पुरुष बहुत धनके खरच से, किसी अङ्गके हीन होने से और बड़ोंके स्नेह से रहित होनेसे तापयुक्त होता है और भूमिके हेतुसे और स्त्रीके हेतुसे सब समय दुःखी होताहै ॥ ७ ॥ जिसके जन्म समयमें मङ्गल वृश्चिक राशिका होकर बैठता है वो पुरुष विष अग्नि और शस्त्र इनके भयसे युक्त, पुत्र कन्या स्त्री आदिकोंके महासुखसे युक्त, राजासे स्नेह करनेवाला और सब शत्रुओंसे जय करने वाला होता है ॥ ८ ॥

रथतुरंगमगौरवसंयुतः परमरातितनुक्षतिदुःखित ॥
भवति नावनिजे धनुषि स्थिते सुवनितावनिताभ्रमणप्रियः ॥९॥

रणपराक्रमतावनितासुखं निजजनप्रतिकूलतयाश्रमः ॥
विभवतामनुजस्य धरात्मजे मकरगे करगे वरमा भवेत् ॥ १० ॥

जिस मनुष्यके जन्म समयमें मङ्गल धनुराशिमें स्थित होता है वो पुरुष रथ घोड़ाओंके महत्वसे युक्त होताहै परन्तु शत्रुओंके निमित्तसे और शरीरकी दुर्बलतासे दुखित होताहै और उत्तम स्त्रीसे स्नेह करनेवाला और भूमिमें भ्रमण करनेमें स्नेह करनेवाला होताहै ॥९॥ जिस मनुष्यके जन्म समयमें मङ्गल मकर राशिमें बैठता है वो मनुष्य संग्राममें पराक्रम करनेसे और स्त्रीके निमित्तसे सुख पानेवाला और अपने मनुष्यके प्रतिकूल होनेसे श्रमयुक्त, अनेक वैभवोंसे युक्त होताहै और उस मनुष्यके हस्तगत की तरह लक्ष्मी होतीहै ॥१०॥

बिनयतारहितं सहितं रुजा निजजनप्रतिकूलमलं खलम् ॥
प्रकुरुते मनुजं कलशाश्रितः क्षितिसुतोऽति सुतोद्भवदुःखितम् ॥११॥
व्यसनतां खलतामदयालुतां विकलतां चलनं च निजालयात् ॥
क्षितिसुतस्तिमिना सुसमन्वितोविमतिना मतिनाशनमादिशेत् १२

जिस मनुष्यके जन्म समयमें कुम्भराशिका होकर मङ्गल बैठता है वो विनयता से रहित, रोगके सहित, अपने आदमियोंसे प्रतिकूल, अत्यन्त खल और अनेक पुत्रोंके कारणसे दुःखी होताहै ॥ ११ ॥ जिस मनुष्यके जन्मसमयमें मङ्गल मीन राशिका होकर बैठताहै वो मनुष्य अनेक दुर्व्यसनोंसे दुष्टतासे निर्दयीपन से और विकलतासे युक्त होता है और देशांतरमें निवास करनेवाला और दुष्ट मनुष्योंके सङ्गसे बुद्धिसे रहित होता है ॥ १२ ॥ इति भौमफलम् ॥

अथ बुधफलम् ।

खलमतिः किल चञ्चलमानसो बहुलभुक्कलहाकुलितो नरः ॥
अकरुणोऽनृणवांश्च बुधे भवेदाविगते विगतेक्षितसाधनः ॥ १ ॥
वितरणप्रणयं गुणिनं दिशेद्बहुकलाकुशलं रतिलालसम् ॥
धनिनमिन्दुसुतो वृषभस्थितस्तनुजतानुजताऽतिसुखं नरम् ॥ २ ॥

जिसके जन्मसमयमें बुध मेषराशिका होकर बैठताहै वो पुरुष दुष्टबुद्धि, चंचल जिसका मन, बहु भोजन करनेवाला, सब समय कलह करनेवाला, बड़ा निर्दयी, ऋणसे रहित और सब साधनोंसे रहित होताहै ॥१॥ जिसके जन्मसमयमें बुध वृष भराशिका होकर बैठताहै वो पुरुष दान करनेवाला. बड़ा गुणी, अनेक कलाओं में कुशल, रति करनेमें लालसा रखनेवाला, धनसेयुक्त और पुत्र भाइयों की तरफसे सदा सुखी होताहै ॥ २ ॥

प्रियवचोरचनासु विचक्षणोद्विजननीतनयः शुभवेषभाक् ॥
मिथुनगे जनने शशिनन्दने सदनतोऽदनतोपि सुखी नरः॥ ३॥
कुचरितानि च गीतकथादरोनृपरुचिः परदेशगतिर्नृणाम् ॥
किलकुलीरगते शशभृत्सुते सुरततारतता नितरां भवेत् ॥४॥

जिस पुरुषके जन्म समयमें बुध मिथुन राशिका होकर बैठताहै वो पुरुष प्रिय बोलनेवाला, अनेक रचनाओंमें कुशल, दो माताओंका पुत्र, शुभ शृङ्गार करनेवाला और घरकी तरफसे भोजनकी तरफसे सदा सुखी होताहै ॥ ३ ॥ जिसके जन्म समयमें बुध कर्क राशिका होकर बैठताहै वो पुरुष खोटे वरतावेमें और गाने की चर्चाओंमें आदर रखनेवाला, राजाओंमें स्नेह रखनेवाला, परदेशमें रहनेवाला और रति करनेमें निरत होताहै ॥ ४ ॥

अनृततासहितं विमतिं परं सहजवैरकरं कुरुते नरम् ॥
युवतिहर्षपरं शशिनः सुतोहरिगतोरिगतोन्नतिदुःखितम् ॥ ५ ॥
सुवचनानुरतश्चतुरोनरोलिखनकर्मपरोहि वरोन्नतिः ।
शशिसुते युवतौ च गते सुखी सुनयनानयनाञ्चलचेष्टितैः॥ ६ ॥

जिसके जन्म समयमें बुध सिंहका होकर बैठताहै वो पुरुष झूठ बोलनेवाला, दुष्टबुद्धि, निष्प्रयोजन सबोंसे वैर करनेवाला, स्त्रीयोंमें आसक्त और शत्रुओं की उन्नतिके हेतुसे दुःखी होताहै ॥५॥जिसके जन्म समयमें बुध कन्याराशिका होकर बैठताहै वो पुरुष प्रियवचन कहनेवाला, बड़ा चतुर, लिखनेके काममें तत्पर, वरके निमित्तसे उन्नति पानेवाला और स्त्रीके कटाक्ष चेष्टितोंसे सदा सुख पानेवाला होताहै

अनृतवाग्व्ययभाक् खलु शिल्पवित्कुचरिताभिरतिर्बहुजल्पकः ॥
व्यसनयुङ्मनुजः सहिते बुधेऽत्र तुलयातुलयात्वसतायुतः ॥७ ॥

कृपणतातिरतिप्रणयश्रमोविहितकर्मसुखोपहतिर्भवेत् ॥
धवलभानुसुतेऽलिगतेक्षतिस्त्वलसतोलसतोपि च वास्तुनः ॥८॥

जिस पुरुषके जन्म समयमें बुध तुलाका होकर बैठताहै वो झूठ बोलनेवाला, खरच करनेमें मन रखनेवाला, कारीगरी का जानने वाला, खोटे वरतावमें प्रीति रखने वाला, बहुत निरर्थक बकवाद करने वाला, अनेक दुर्व्यसनो से युक्त, दुष्ट पुरुषोंसे प्रीति रखनेवाला होताहै॥ ७॥ जिस मनुष्यके जन्म समयमें बुध वृश्चिक राशिका होकर बैठताहै वो मनुष्य अत्यन्त कृपण, अत्यन्त रतिके स्नेहसे श्रमयुक्त, विहित कर्म और सुखसे रहित, आलस्यके कारणसे सब समय नुकसान पानेवाला और वांछित वस्तुकी प्राप्तिसे रहित होताहै ॥ ८ ॥

वितरणप्रणयोबहुवैभवः कुलपतिश्च कलाकुशलोभवेत् ॥
शशिसुतेत्र शराशनसंस्थिते विहितयाहितयारमयान्वितः॥ ९॥
रिपुभयेन युतः कुमतिर्नरः स्मरविहीनतरः परकर्मकृत् ॥
मकरगे सति शीतकरात्मजे व्यसनतः सनतः पुरुषोभवेत॥ १०॥

जिसके जन्म समयमें बुध धनराशिका होकर बैठताहै वह पुरुष दान करनेमें प्यार रखनेवाला, अनेक वैभवोंसे युक्त, कुलभरेका स्वामी, कलाओं में कुशल और सब तरहसे योग्य हित करनेवाली, लक्ष्मी सदृश्य स्त्रीसे युक्त होताहै ॥९॥ जिसके जन्म समयमें बुध मकरराशिका होकर बैठताहै वो पुरुष शत्रुभयसे युक्त, खोटी बुद्धि वाला, नपुंसक, नोकरी कर्म करनेवाला और व्यसनोंसे अवनति पानेवाला होताहै।

गृहकलिं कलशे शशिनन्दनोवितनुते तनुतां ननु दीनताम् ॥
धनपराक्रमधर्मविहीनतां विमतितामतितापितशत्रुभिः ॥ ११ ॥
परधनादिकरक्षणतत्परोद्विजसुरानुचरोहि नरोभवेत् ॥
शशिसुतोपृथुरोमसमाश्रिते सुवदनावदनानुविलोकनः ॥ १२ ॥

जिसके जन्मसमयमें कुम्भराशिका होकर बुध बैठताहै वो पुरुष घरमें सब समय कलहयुक्त, देहसे दुर्बल, दीनतासे युक्त, धन पराक्रम और धर्मसे रहित, बुद्धिहीन और शत्रुओंसे दुःख पानेवाला होता है ॥ ११ ॥ जिसके जन्म समयमें बुध मीन राशिका होकर बैठता है वो पुरुष दूसरों के धन आदिकों की रक्षा करनेमें तत्पर, ब्राह्मण और देवतोंका सेवक और सब समय स्त्रीओंके मुखको देखनेवाला होता है ॥ १२ ॥ इति बुधफलम् ॥

अथ गुरुफलम्।

बहुतरां कुरुते समुदारतां सुरचितां निजवैरिसमुन्नतिम् ॥
विभवतां च मरुत्पतिपूजितः क्रियगतोयगतोरुमतिप्रदः ॥ १ ॥
द्विजसुरार्चनभक्तिविभूतयोद्रविणवाहनगौरवलब्धयः ॥
सुरगुरौवृषभे बहुवैरिणश्चरणगारणगाढपराक्रमैः ॥ २ ॥

जिसके जन्म समयमें गुरु मेषराशिका होकर बैठताहै वो पुरुष अत्यन्त उदारतायुक्त, देवोंके अनुग्रहसे अपने वैरियोंमें समुन्नति पानेवाला, अनेक वैभवोंसे युक्त और बड़ा बुद्धिमान् होताहै ॥ १ ॥ जिसके जन्म समयमें गुरु वृशराशिका होकर बैठताहै वो पुरुष ब्राह्मण देवताओंकी भक्तिसे, अनेक विभूतियों से युक्त, और धन सवारी इत्यादि महत्वको प्राप्त होनेवाला होताहै और संग्राम में बड़े पराक्रमोंसे उसके वैरिकुल उसके पावोंमें परनेवाले होते हैं ॥ २ ॥

कवियता सहितः प्रियवाक् शुचिर्विमलशीलरुचिर्निपुणः पुमान् ॥
मिथुनगे सति देवपुरोहिते सहितताहितितासहितैर्भवेत् ॥ ३ ॥
बहुधनागमनोमदनोन्नतिर्विविधिशास्त्रकलाकुशलोनरः ॥
प्रियवचाश्च कुलीरगते गुरौ चतुरगैस्तुरगैः करिभिर्युतः ॥४॥

जिसके जन्मसमयमें बृहस्पति मिथुन राशिमें बैठताहै वो पुरुष कविता करनेमें कुशल, प्रिय वचनोंका कहनेवाला, बड़ा पवित्र, निर्मल जिसका स्वभाव, बड़ा निपुण, और हित अहितका जानने वाला होताहै ॥ ३ ॥ जिसके जन्म समयमें बृहस्पति कर्कका होकर बैठताहै वो मनुष्य अनेक प्रकारके धनके आगमसे युक्त, कामदेवकी उन्नतियुक्त, अनेक शास्त्रकलाओं में कुशल, प्रियवाक्योंका कहनेवाला, चतुरगतिके चलनेवाले घोड़े और हाथियोंसे युक्त होताहै ॥ ४ ॥

अचलदुर्गवनप्रभुतोऽर्जितोदृढतनुर्ननु दानपरोभवेत् ॥
अरिविभूतिहरोहि नरोयुतः सुवचसा वचसामधिपे गुरौ ॥५॥
कुसुमगन्धसदम्बरशालिताविमलताधनदानमतिर्भृशम् ॥
सुरगरौ सुतया सति संयुते रुचिरता चिरतापितशत्रुता ॥ ६ ॥

जिसके जन्म समयमें बृहस्पति सिंहराशि का होकर बैठता है वो पुरुष पर्वत दुर्गस्थान अथवा किला और वन इनसे वृद्धिपाने वाला, दृढ़ जिसका अङ्ग, दान करनेमें तत्पर और शत्रुओंकी विभूतियोंका हरनेवाला होताहै ॥ ५ ॥ जिसके जन्म समयमें गुरु कन्याराशिका होकर बैठताहै वो पुरुष पुष्प गंध उत्तम वस्त्रोंसे परिपूर्ण, निर्मलतासे युक्त, धन देनेवाला, रुचिरतासे युक्त और बहुत दिनतक अपने शत्रुओं को ताप देनेवाला होता है ॥ ६ ॥

श्रुततपोजपहोममहोत्सवे द्विजसुरार्चनदानमतिर्भवेत् ॥
वणिजि जन्मनि त्रिशिखण्डिजे चतुरतातुरतासहितारिता ॥७॥
धनविनाशनदोषसमुद्भवैः कृशतरोबहुदम्भपरोनरः ॥
अलिगते सति देवपुरोहिते भवनतोवनतोऽपि च दुःखभाक् ॥८॥

जिसके जन्मसमयमें गुरु तुलाराशिका होकर बैठता है वो पुरुष शास्त्र में तपमें जपमें होम करनेमें आर अनेक महोत्सवोंमें देवब्राह्मणोंके पूजनमें बुद्धि रखने वाला होताहै और चतुराई, आतुरपना, असह्यता और वैरभाव से युक्त होताहै ॥ ७ ॥ जिसके जन्म समयमें गुरु वृश्चिकराशिका होकर बैठताहै वो मनुष्य धनके नाशके कारणसे उत्पन्न हुए अनेक दोषोंसे अतिदुर्बलांग, बड़ा दम्भी और घरकी तरफ़से और बनकी तरफसे जहां जाय तहां दुःख पानेवाला होताहै । ८ ॥

वितरणप्रणयोबहुवैभवं ननु धनान्यथ वाहनसंचय ॥
धनुषिदेवगुरौ हि मतिर्भवेत्सुरुचिरारुचिराभरणानि च ॥ ९ ॥
हतमतिः परकर्मकरोनरः स्मरविहीनतरोमयरोषभाक् ॥
सुरगुरौ मकरे विदधाति नोजनमनोन मनोरथसाधनम् ॥ १० ॥

जिसके जन्मसमयमें बृहस्पति धनराशिका होकर बैठताहै वो मनुष्य दान करने में मन रखनेवाला, अनेक वैभवोंसे युक्त, अनेक धनोंका और सवारियोंका सञ्चय करनेवाला उत्तम बुद्धिवाला और मनोहर आभूषणोंको धारण करनेवाला होता है ॥९॥ जिसके जन्मसमयमें बृहस्पति मकरराशिका होकर बैठताहै वो पुरुष बुद्धिहीन, दूसरों की नौकरी करनेवाला, नपुंसकरोगोंसे युक्त, रोग और क्रोधसे युक्त होता है और उसके मनके मनोरथ कभी सिद्ध नहीं होते है ॥ १० ॥

गदयुतः कुमतिर्द्रविणोज्झितः कृपणतानिरतः कृतकिल्बिषः ॥
घटगते सति देवपुरोहिते कदशनोदशनोदरपीडितः ॥ ११ ॥

नृपकृपाप्तधनोमदनोन्नतिः सदनसाधनदानपरोनरः ॥
सुरगुरौ तिमिनामहिते सतामनुमतोनुमतोत्सवदोभवेत् ॥ १२ ॥

जिस मनुष्यके जन्म समयमें बृहस्पति कुम्भराशिका होकर बैठताहै वो पुरुष रोगोंसे युक्त, खोटी बुद्धिवाला, धनसे हीन, कृपणतामें निरत, सदा दूषित कर्म करनेवाला, कुत्सित जिसके दन्त और दंतोंकी और उदरकी व्यथासे युक्त होताहै ॥११॥जिस पुरुषके जन्म समयमें बृहस्पति मीन राशिका होकर बैठताहै वो पुरुष राजानुग्रहसे धन पानेवाला, बड़ा कामी, घरवनानेमें और दान करनेमें तत्पर सज्जनोंमें जिसकी गिनती और वांछित उत्सवोंका देनेवाला होता है ॥ १२ ॥
इति गुरुफलम् ॥

अथ शुक्रफलम् ।

भवनवाहनवृन्दपुरोधिपः प्रचलनप्रियताविहितादरः ॥
यदि च संजनने हि भवेद्भविः कवियुतोवियुतोरिपुनिर्भरः ॥१॥
बहुकलत्रयुतोत्सवगौरवं कुसुमगन्धरुचिः कृषिनिर्मितिः ॥
वृषगते भृगुजे कमला भवेदविरलाविरला रिपुमण्डली ॥ २ ॥

जिसके जन्मसमयमें शुक्र मेष राशिका होकर बैठताहै वो पुरुष घर वाहनों (सवारियों) के समूह और पुरका स्वामी होता है, फिरनेमें मन रखनेवाला और शत्रुओंसे रहित होताहै ॥१॥ जिसके जन्मसमयमें बृहस्पति वृषराशिमें बैठताहै वो पुरुष बहुत भार्याओंसे युक्त, उत्सव और गौरव युक्त, पुष्पोंके गंध में रुचि रखनेवाला, खेती करनेवाला, निरंतर लक्ष्मीसे युक्त और शत्रुमण्डलीसे रहित होताहै२॥

भृगुसुते जनने मिथुनस्थिते सकलशास्त्रकलामलकौशलम् ॥
सरलताललिता किल भारती सुमधुरा मधुरान्नरुचिर्भवेत्॥३॥
द्विजपतेः सदने भृगुनन्दने विमलकर्ममतिर्गुणसंयुतः ॥
जनमनं सकलं कुरुते वशं सुकलया कलयापि गिरा नरः ॥ ४ ॥

जिसके जन्म समय में शुक्र मिथुन राशिका होकर बैठता है वो पुरुष समग्र शास्त्रकलाओंसे सम्पन्न, सरल स्वभाववाला, मनोहरवाणी बोलनेवाला और मिष्टान्न खानेमें रुचि रखनेवाला होताहै ॥ ३ ॥ जिसके जन्मसमयमें शुक्र कर्कराशिका होकर बैठता है वो पुरुष निर्मल कर्म करनेमें बुद्धि रखनेवाला, गुणोंसे सम्पन्न,सब

जनोंका वश करनेवाला, अनेक कलाओंका जाननेवाला और बड़ा विद्वान् होताहै ॥ ४ ॥

हरिगते सुरवैरिपुरोहिते युवतितोधनमानसुखानि च ॥
निजजनव्यसनान्यपि मानवस्त्वहिततो हिततोषयनुव्रजेत् ॥५॥
भृगुसुते सति कन्यकयान्वित बहुधनी खलु तीर्थमनोरथः ॥
कमलया पुरुषोतिविभूषितस्त्वमितयामितयापि गिरान्वितः॥६॥

जब सिंहराशिका होकर शुक्र बैठता है तब वो मनुष्य स्त्री के निमित्तसे धन मान और सुखका प्राप्त होनेवाला, अपने व्यसनोंसे युक्त और शत्रुओंसे भी हितका और तोषका पानेवाला होता है ॥ ५ ॥ जिस मनुष्यके जन्म समयमें कन्या राशिका होकर शुक्र बैठता है वो मनुष्य बहुत धनोंसे युक्त, निश्चय करके तीर्थोंमें मनोरथ रखनेवाला, अमितलक्ष्मीसे और अमित सरस्वतीसे युक्त होता है ॥ ६ ॥

कुसुमवस्त्रविचित्रधनान्वितोबहुगमागमनोननु मानवः ॥
जननकालतुलाकलनं यदा सुकविना कविनायकतां व्रजेत् ॥७॥
कलहघातमतिं जननिन्द्यतां प्रजननामयतां नियतं नृणाम् ॥
व्यसनतां जननेऽलिसमाश्रितः कविरलं विरलं कुरुते धनम् ॥

जिस मनुष्यके जन्मसमयमें तुलाराशिका होकर शुक्र बैठता है वो पुरुष पुष्प वस्त्र विचित्रधनोंसे युक्त वारम्वार देशांतरोंके आने जानेसे युक्त और उत्तम कविता से कवियोंकी श्रेष्ठताका प्राप्त होनेवाला होता है ॥ ७ ॥ जिसके जन्मसमयमें वृश्चिक राशिका होकर शुक्र बैठताहै वो मनुष्य कलह करनेमें और मारनेमें बुद्धि रखने वाला, मनुष्योंमें निंदा करनेलायक, जन्मसे रोगी, अनेक व्यसनोंमें प्रवृत्त और धनसे हीन होता है ॥ ८ ॥

युवतिसूनुधनागमनोत्सवं सचिवतां नियतं शुभशीलताम् ॥
जनुषि कार्मुकगः कुरुते कविः कविरतिं विरतिं चिरतोनृणाम् ॥९
अभिरतिस्तु जराङ्गनया नृणां व्ययभयं कृशतामतिचिन्तया ॥
भृगुसुते मृगराजगते सदा कविजने विजनेपि मनोभवेत् ॥१०॥

जिसके जन्म समयमें शुक्र धन राशिका होकर बैठता है वो मनुष्य स्त्री पुत्र धनके उत्सवोंसे युक्त, राजाका मन्त्री, उत्तम स्वभावयुक्त,कविओंसे प्रीति रखनेवाला और मनमें वैराग्य रखनेवाला होताहै॥९॥जिसके जन्मसमयमें शुक्र मकर राशिका होकर बैठताहै वो मनुष्य वृद्ध स्त्रीसे प्रीति करनेवाला, खरचकी चिंतासे अत्यन्त दुर्बल और कवि पुरुषोंके संग रहनेमें यां निर्जनवनमें मन रखनेवाला होताहै॥१०॥

उशनसः कलशे जनुषि स्थितौ वसनभूषणभोगविहीनता ।

विमलकर्ममहालसता नृणामुपगतापगतापि रमा भवेत ॥११॥

भृगुसुते सति मीनसमन्विते नरपतेर्विभुताविनतो भवेत् ॥

रिपुसमाक्रमणं द्रविणागमो वितरणे तरणे प्रणयो नृणाम् ॥

जिसके जन्मसमयमें शुक्रकुम्भराशिमें स्थित होता है वो मनुष्य वस्त्र भूषण और भोगोंसे रहित होताहै और निर्मल कर्मोंमें आलस्य युक्त और प्राप्त हुई लक्ष्मी से भी रहित होता है ॥११॥ जिसके जन्म समयमें शुक्र मीनराशिका होकर होताहै वो मनुष्य राजासे प्राप्त हुए वैभवोंसे युक्त होता है, राजासे दयावयुक्त होता है और उस मनुष्यकी सदा देनेमेंहो रुचि रहती है ॥ १२ ॥ इति शुक्रफलम् ॥

अथ शनिफलम् ।

धनविहीनतया तनुता तनौ जनविरोधतयेप्सितनाशनम् ॥ १२ ॥

क्रियगतेर्कसुते स्वजनैर्नृणां विषमताशमताशमनं भवेत् ॥ १ ॥

युवतिसौख्यविनाशनतां भृशं पिशुनसङ्गरुचिं मतिविच्युतिम् ॥

तनुभृतां जनने वृषभास्थितो रविसुतो विसुतोत्सवमादिशेत ॥२॥

जिसके जन्म समयमें शनि मेषराशिका होकर बैठा होवे वो मनुष्य धनसे विहीन देहसे दुर्बल,मनुष्य मात्रसे विरोध करनेवाला, वांछित मनोरथ प्राप्ति से रहित,अपने स्वजनोंसे विषमभावसे रहनेवाला और शांतिसे रहित होता है ॥१॥ जिसके जन्म समयमें शनि वृषराशिका होकर बैठताहै वो स्त्री सुखसे रहित, चुगलखोरोंके सङ्गमें रुचि रखने वाला, बुद्धिसे रहित और पुत्रोंके सुखसे रहित होता है ॥ २ ॥

प्रचलनं विमलत्वविहीनतां भवनबाह्यविलासकुतूहलम् ॥

व्रजति ना मिथुनोपगते सुते दिनविभोर्न विभो लभते सुखम् ॥३

शशिनिकेतनगामिनि भानुजे तनुभृतां कृशता भृशमम्बया ॥
वरविलासकरा कमला भवेदविकलं विकलं रिपुमण्डलम् ॥ ४ ॥

जिसके जन्मसमयमें शनि मिथुन राशिका होकर बैठताहै वो मनुष्य देशोंमें भ्रमण करनेवाला, बड़ा अपवित्र, घरसे बाहिर खेलक्रीड़ा करनेवाला होताहै और अपने विभवोंसे वो पुरुष कभी भी सुख नहीं पाता है ॥ ३ ॥ जिसके जन्मसमयमें शनि कर्कराशिका होकर बैठता है वो पुरुष अङ्गसे दुर्बल होताहै और उस पुरुषको माताजी से सुख, श्रेष्ठ विलासको देनेवाली सतत लक्ष्मी होती है और उसके शत्रु विकल होते हैं ॥ ४ ॥

लिपिकलाकुशलश्च कलिप्रियोविमलशीलविहीनतरोनरः ॥
रविसुते रवि वेश्मनि संस्थिते हतनयस्तनयप्रमदार्तिभाक् ॥५॥
विहितकर्मणि शर्म कदापिनो विनयतोपहतिश्चलसौहृदम् ॥
रविसुते सति कन्यकयान्विते विबलताबलनासहितो भवेत् ॥६॥

जिसके जन्म समयमें सिंहराशिमें शनि बैठता है वो पुरुष लिखनेकी कलामें कुशल, कलह जिसको प्रिय, विमलशीलसे रहित, नीतिसे रहित और स्त्रीपुत्रोंकेतरफसे दुःखका भागी होता है ॥ ५ ॥ जिसके जन्म समय में शनि कन्या राशिका होकर बैठता है वो मनुष्य विहित कर्ममें सुख रहित, विनयहीन, चंचलसुहृदतावाला और निर्बलतासे युक्त होताहै ॥ ६ ॥

निजकुलेऽवनिपालबलान्वितः स्मरबलाकुलितोबहुदानदः ॥
जलजिनीशसुते हि तुलान्वितेऽनुपकृतोपकृतोहि नरो भवेत् ॥७॥
विषहुताशनशस्त्रभयान्वितोधनविनाशनवैरिगदार्दितः ॥
विकलताकलिना च समन्विते रविसुते विसुतेऽष्टसुखोनरः ॥८॥

जिसके जन्मसमयमें शनि तुलाराशिका होकर बैठता है वो पुरुष अपने कुलमें राजबलसे युक्त; कामदेवके बलसे आकुल, बहुत दानोंका देनेवाला अनुपकार करनेवालेका उपकार करनेवाला होता है ॥ ७ ॥ जिस मनुष्यके जन्म समय में वृश्चिक राशिमें शनि बैठताहै वो मनुष्य विष अग्नि और शस्त्रके भयसे युक्त, धनका नाश करनेवाला वैरि और अनेक रोगोंसे पीड़ित, सदा विकल रहनेवाला और पुत्र और वांछित सुखोंसे रहित होताहै ॥ ८ ॥

रविसुतेन युते सति कार्मुके सतगुणैः परिपूर्णमनोरथः ॥
प्रथितकीर्तिसुवृत्तपरोनरोविभवतोभवतोप्ययुतोभवेत् ॥ ९ ॥
नरपतेरिव गौरवतां व्रजेद्रविसुते मृगराशिगते नरः ॥
अगुरुणा कुसुमैर्मृगजातया विमलया मलयाचलजैः सुखम् ॥१०॥

जिस मनुष्यके जन्म समयमें शनि धनुराशिका होकर बैठताहै वो पुरुष पुत्रोंसे परिपूर्ण मनोरथ होनेवाला, उत्तमवरतावसे जगतमें विख्यात जिसकी कीर्ति और अपने संपादन किये विभवोंसे सबतरहसे संतुष्ट होताहै॥९॥ जिस मनुष्यके जन्म समय में शनि मकरका होकर बैठताहै वो पुरुष राजाके तुल्य गौरवसे युक्त होता है और अगरु, पुष्प, कस्तूरी और मलयचन्दनादिकोंके सुखसे युक्त होता है ॥ १० ॥

ननु जितोरिपुभिर्व्यसनानृतोविहितकर्मपराङ्मुखनान्वितः ॥
रविसुते कलशेन समन्विते सुसहितः सहितप्रचयैर्नरः ॥११॥
विनयताव्यवहारसुशीलतासकललोकगृहीतगुणोनरः ॥
उपकृतोनिपुणास्तिमिसंश्रिते रविभवे विभवेन समन्वितः ॥१२॥
बलान्विते राशिपता च राशौ खेटेथवा राशिफलं समग्रम् ॥
नीचोच्चगेहास्तमयादि भावैर्न्यूनाधिकत्वं परिकल्पनीयम् ॥१३॥

जिस मनुष्यके जन्मसमयमें शनि कुम्भराशिका होता है वो पुरुष शत्रुओं से पराजित, अनेक व्यसनोंसे और झूंठ बोलनेवाला, विहित कर्मोंके करनेसे बहिर्मुख और अपने परिचय किये (जानेपूछे) मनुष्यों के संग रहनेवाला होताहै ॥ ११ ॥ जिस मनुष्यके जन्मसमयमें शनि मीनराशिका होकर बैठताहै वो मनुष्य विनयसेयुक्त व्यवहार करनेमें सुशील, सब लोगोंने लियाहै गुण जिसका ऐसा, उपकार करनेमेंबड़ा चतुर और अनेक विभवोंसे परिपूर्ण होताहै॥१२॥ राशिपति बली होय या राशि बलवती होवे अथवा राशिमें स्थित जो ग्रहहैं वो बलवान होवें तब राशिका समग्र फल होताहै इसमें नीचका उच्चका अस्त या उदित इन सबोंका अच्छीतरहसेविचारकर के फलका न्यून होना अधिक होना कल्पना करना चाहिये॥१३॥ इति राशिफलानि

इति जातकाभरणे मार्जन्यां टीकायां वनमालिचतुर्वेदकृतायां राशिस्थितानां ग्रहाणां पृथक् २ फलकथने दशमोध्यायः ॥ १० ॥

अथ शुभाशुभज्ञानार्थं शनिचक्रं लिख्यते ।

नराकारं लिखेच्चक्रं शनिचक्रं तदुच्यते ॥
वेदितव्यं फलं तस्मान्मानवानां शुभाशुभम् ॥ १ ॥

जन्मर्क्षतोयत्र च कुत्र संस्थं मित्रस्य पुत्रं प्रथमं विदित्वा ॥
चक्रेनराख्ये खलु जन्मधिष्ण्याद्विन्यस्य भानि प्रवदेत्फलानि॥२॥

मनुष्यके आकारका एक चक्र लिखे उसीको शनि चक्र कहतेहैं, उससे मनुष्यों के शुभाशुभ फलों का विचार करना चाहिये ॥ १ ॥ इस चक्रकी यह रीति है कि मनुष्य के जन्म नक्षत्रसे जिस नक्षत्र पर शनि होवे तहांतक गणना करै,प्रथम इसको जानकर फिर उस मनुष्याकारचक्रसे जन्मनक्षत्रसे लेकर क्रमसे नक्षत्रोंको वक्ष्यमाण रीतिसे (अगारी कही रोतिसे) स्थापन करै, फिर यह देखेंकि शनिका नक्षत्र किस अङ्गमें स्थितहै जिस अङ्गमें स्थित शन्यधिष्ठित नक्षत्रहोवे उसे देखकर जो फल पावै उसी फलको कहै ॥ २ ॥

नक्षत्रमेकं च शिरोविभागे मुखे लिखेत्त्रीणि युगं च गुह्ये ॥
नेत्रे च नक्षत्रयुगं हृदिस्थे भपञ्चकं वामकरे चतुष्कम् ॥ ३ ॥
वामे च पादे त्रितयं हि भानां भानां त्रयं दक्षिणपादसंस्थम् ॥
चत्वारि ऋक्षाणि च दक्षिणाख्ये पाणौ प्रणीतं मुनिनारदेन ४॥
रोगोलाभोहानिराप्तिश्च सौख्यं बन्धः पीडा सत्प्रयाणं च लाभः॥
मन्दे वक्रे मार्गगे कल्पनीयं तद्वैलोम्याच्छीघ्रगे स्युः फलानि॥ ५॥

प्रथम एक नक्षत्र शिरमें लिखे, तीन नक्षत्रोंको मुखमें, चार नक्षत्रोंको गुदामें दो नक्षत्रों को नेत्रमें, पांच नक्षत्रोंको हृदयमें चार नक्षत्रोंको वामहाथमें,तीन नक्षत्रोंको वामपादमें, तीन नक्षत्रोंको दक्षिणपादमें; चार नक्षत्रोंको दक्षिणहाथमें लिखे ये चक्र नारदमुनिजोने कहाहै ॥३॥ ४ ॥ फिर क्रमसे प्रत्यंगोंमेंसे अङ्गअङ्गोंमें रोग लाभ हानि प्राप्ति सौख्य बन्धन पीड़ा प्रयाण लाभ यह फल होताहै जैसे शिरमें शन्यधिष्ठित नक्षत्रहोवे तो रोग, मुखमें होयतो लाभ, गुदामें होय तो हानि नेत्रमें होय तो प्राप्ति, हृदय में होय तौ सौख्य, वाम हाथमें होय तौ बन्धन,वामपादमें होय तौ पीड़ा, दक्षिणपादमें होय तौ उत्तमयात्रा और दक्षिणहाथमें शन्यधिष्ठित नक्षत्र आवे तौ लाभ होताहै, परन्तु इसमें इतना विचार करना चाहिये, यदि वर्तमान में शनि मार्गी होवे तब तौ जो फल कहाहै सोही फल समझना और यदि वक्रीहोवे या शीघ्रगतिसे चलता होवे तब विपरीत रीतिसे फल समझना, जैसे कि दक्षिण हस्तमें रोग, दक्षिणपादमें लाभ, वामपादमें हानि इत्यादिक समझना चाहिये ॥५॥

शिरे	मुखे	गुदे	नेत्रे	हृदि	वा.हृ.	वा.पा.	द.पा.	द.हृ.	शनि
१	३	४	२	३	४	३	३	४	चक्रम्
रोगः	लाभः	हानिः	प्राप्तिः	सौख्यं	बंधनं	पीड़ा	यात्रा	लाभ	फलं

अथ सर्वतोभद्रम्

अथातः संप्रवक्ष्यामि चक्रं त्रैलोक्यदीपकम् ॥
विख्यातं सर्वतो भद्रं सद्यः प्रत्ययकारकम् ॥ १ ॥
याम्योत्तराः प्रागपराश्च कोष्ठा नवात्र चक्रे सुधिया विधेयाः ॥
स्वरर्क्षवर्णादिकमत्र लेख्यं प्रसिद्धभावाच्च मया निरुक्तम् ॥ २ ॥

अब अगाड़ी सर्वतोभद्र नाम चक्रको कहते हैं जो चक्र तीनों लोकों में दीपकके समान प्रकाश करनेवाला विख्यात है और जो चक्र देखनेमेंही प्रतीत करानेवालाहै ॥ १ ॥ इस सर्वतोभद्र चक्र लिखनेकी रीतिको बतातेहैं, दक्षिण से उत्तर और पूर्वसे पश्चिम नव नव कोष्टक लिखे जे गणना करने से सब कोष्टक इक्कासी होतेहै उन कोष्टोंमें सोलह स्वर और सत्ताईसो नक्षत्रादि वर्णोंको लिखे ये प्रसिद्ध भावसे हमने कहा है ॥ २ ॥

अथ सर्वतोभद्रचक्रम् ।

अ	कृ	रो	मृ	आ	पु	पु	आ	आ
भ	उ	अ	व	क	ह	ड	ए	म
अ	ल	ऌ	२	३	४	ॡ	प्र	पू
रे	च	१	ओ	नं	औ	५	ट	उ
उ	द	१२	रि	पू	भ	६	प	ह
पू	स	११	अः	ज	अं	७	र	चि
श	ग	ऐ	१०	६	८	ए	त	स्वा
ध	श्र	ख	ज	भ	य	न	ऋ	वि
ई	श्र	अ	उ	पू	मू	ज्ये	अ	इ

भ्रमोभवेद्वेऽक्षरजे च हानिर्व्याधिः स्वरे भीश्च तिथौ निरुक्ता ॥
राशौ च वेधे सति विघ्नमेव जन्तुः कथं जीवति पञ्चवेधे ॥३॥
भरण्यकारौ वृषभं च नन्दां भद्रान्तकारं श्रवणं विशाखाम् ॥
तुलां च विध्येदनलर्क्षसंस्थोग्रहोत्र चक्रे गदितं स्वरज्ञैः ॥४॥

फिर उनके वेधका विचार करै; यदि जन्म नक्षत्रको पापग्रह वेधे तव उस पुरुषके चित्तको भ्रम होताहै, वर्णस्वरको पापग्रह वेधे तब उस पुरुषको हानि, जन्मके स्वरको ग्रह वेधे ता व्याधि, जन्मतिथिको पापग्रहोंका वेध होवे तब उस पुरुषको भय, जन्मराशिको पापग्रह वेधे तब उस पुरुषको किसी न किसी तरह से विघ्न होता है और इस चक्रमें जिस मनुष्यके नक्षत्रादि पांचौं विध जावें तब फिर कहो वो पुरुष किस तरह जी सक्ता है अर्थात् पाँचौंके वेध होने से मृत्यु होतीहै ॥ ३ ॥ भरणी नक्षत्रको, अकार स्वरको, वृषराशिको, नन्दा १।६।११ तिथिको और भद्रा २।७।१२ तिथिको, तकार अक्षरको, श्रवणविशाखानक्षत्र को और तुलाराशिको इन सवोंको कृत्तिकानक्षत्रपर जो ग्रह स्थित है वो ग्रह इस चक्र के क्रमसे वेध करता है ऐसा स्वरशास्त्रोंके जानने वाले विद्वानोंने कहा है॥४॥

वकारमौकारमुकारदास्रे स्वातीं रकारं मिथुनं च कन्याम् ॥ ५ ॥
तथाभिजिज्ज्ञं ज्ञकभं च विध्येद्ब्रह्मर्क्षसंस्थोहि नभश्चरेन्द्रः ॥
कर्कं कक्कारं च हरिं पकारं चित्रां च पौष्णं च तथा लकारम् ॥
अकारकं वैश्वभमत्र विध्येदलं नभोमण्डलगोमृगस्थः ॥ ६ ॥

अश्विनीनक्षत्रपर स्थित जो ग्रह है वो ग्रह वकार अक्षरको, औकार उकार स्वरको वेध करताहै और रोहिणीनक्षत्रपर स्थित जो ग्रहहै वो ग्रह स्वातिनक्षत्रको रेफ अक्षरको, मिथुनकन्याराशिको और अभिजित् नाम नक्षत्रकोभी वेध करताहै॥५ जो ग्रह मृगशिरनक्षत्र पर स्थित होताहै वो ग्रह कर्कराशिको कक्कार अक्षरको श्रवण नक्षत्रको, पकार अक्षरको, चित्रानक्षत्रको और रेवतीनक्षत्र को लकार अक्षर को अकार स्वरको और पूर्वाषाढा नक्षत्रको इन सवोंको वेध करता है ॥ ६ ॥

एवं वेधः सर्वतोभद्रचक्रे सर्वर्क्षेभ्यश्चिन्तनीयः सुधीभिः ॥
दद्याद्वेधः सत्फलं सौम्यजातोऽत्यन्तं कष्टं दुष्टवेधः करोति ॥७॥

यस्मिन्नृक्षे संस्थितो वेधकर्त्ता पापःखेटःसोऽन्यभं याति यस्मिन्॥
काले तस्मिन् मङ्गलं पीडितानां प्रोक्तं सद्भिर्नान्यथा स्यात्कदाचित्८
इस प्रकार इस सर्वतोभद्रनाम चक्रमें बुद्धिमानों को सब नक्षत्रों से वेधका चितवन करना चाहिये, सौम्य शुभ ग्रहके वेध होनेसे उत्तम फल और दुष्ट (पाप) ग्रहोंके वेध होनेसे अत्यन्त बुरा भला कष्टादि होता है ॥७॥ वेध करनेवाला पापग्रह जिस नक्षत्रपर स्थित होताहै वो जिसमें अन्य नक्षत्र जाता है उस कालमें पीड़ितों को मङ्गल करनेवाला कहाहै, संतजन ऐसा कहतेहैं कि वो कभीभी अन्यथा नहीं होताहै ॥८॥ इति जा० वनमालिकृतायां मार्जन्यां टीकायामेकादशोध्यायः समाप्तः॥

अथ सूर्यकालानलचक्रकथनम् ।

सूर्यकालानलं चक्रं स्वरशास्त्रोदितं हि यत ॥
तदहं विशदं वक्ष्ये चमत्कृतिकरं परम् ॥ १ ॥
त्रिशूलकाग्राः सरलाश्च तिस्रः किलोर्ध्वरेखाः परिकल्पनीयाः ॥
रेखात्रयं मध्यगतं च तत्र द्वे द्वे च कोणोपरिगे विधेये ॥ २ ॥

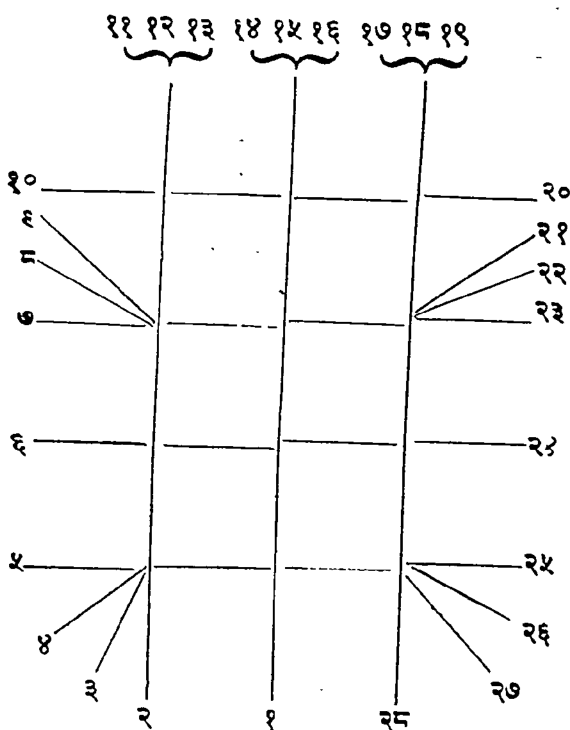
जो अत्यन्त चमत्कार करनेवाला,स्वरशास्त्रमें कहा,सूर्यकालानलनामका चक्रहै उस चक्रको मैं यथार्थ रीतिसे कहता हूं ॥ इस चक्रको लिखने की यह रीतिहै कि त्रिशूलके समान अग्रभाग जिनका होवे ऐसी खड़ी रेखा तीन लिखे वे रेखा सीधी होवें, फिर तीन रेखा तिरछी मध्यमें करै, फिर दो दो रेखा चारौं कोणमें उन रेखाओंके मध्यमें करै ॥ २ ॥

त्रिशूलकोणान्तरगान्यरेखा तदग्रयोः शृंगयुगं विधेयम् ॥
मध्ये त्रिशूलस्य च दण्डमूलात्सव्येन भान्यर्कभतोऽभिजिच्च ॥३॥
स्वनामभं यत्र गतं च तत्र प्रकल्पनीयं सदसत्फलं हि ॥
तलस्थऋक्षत्रितये क्रमेण चिन्तावधश्च प्रतिबन्धनानि ॥ ४ ॥

फिर त्रिशूलके कोणोंके बीच में और एक रेखा करै फिर उनके अग्रभागमें दोशृङ्ग बनावे फिर मध्यके त्रिशूलकेरेखा दण्डके नीचे सूर्याधिष्ठित नक्षत्र को स्थापन करै फिर उसके विपरीतक्रममें अभिजित सहित अट्ठाइसो नक्षत्रों को प्रत्येक रेखाग्रमें

स्थापन करै इस तरह अपने नामका नक्षत्र जिस रेखापर आवे उसीजगह सत् असत् फलकी कल्पना करै, नीचे स्थित तीन नक्षत्रों में क्रमसे चिन्ता बध, और बन्धन ये फल होते हैं ॥४॥

इदं सूर्यकालानचक्रम् ।



भृंगद्वये रुक् च भवेद्धि भङ्गं शूलेषु मूलं परिकल्पनीयम् ॥
शेषेषु धिष्ण्येषु जयश्च लाभोऽभीष्टार्थसिद्धिर्बहुधा नराणाम् ॥
श्रीसूर्यकालानलचक्रमेतद्गदे च वादे च रणे प्रयाणे ।
प्रयत्नपूर्वं ननु चिन्तनीयं पुरातनानां वचनं प्रमाणम् ॥ ६ ॥

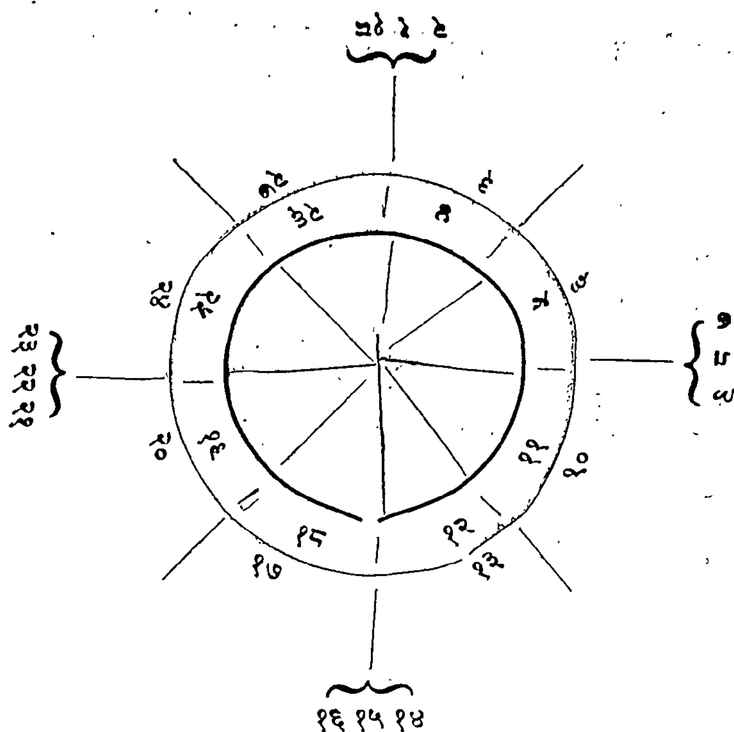
दोनों शृङ्गोंके नक्षत्रोंमें यदि जन्म नक्षत्र आय जावे तौ उस मनुष्यकेताँई रोग और भङ्ग होताहै और त्रिशूलों केऊपर जो नव नक्षत्रहैं उनमेंसे किसी स्थानपर यदि

जन्मनक्षत्र आवे तब उनका फल मृत्यु होताहै, वाको मध्यके जेष्ठा नक्षत्र है उनमें से किसी स्थानपर जन्मनक्षत्र आवें तौ उनका फल जय लाभ और अभीष्ट (वांछित) अर्थकी सिद्धि होना फल होताहै ॥ ५ ॥ यह सूर्यकालनल नाम चक्र जिस समय रोग होवे उस समय, विवाद के समय, संग्राममें जाने के समय और यात्रा करनेके समयमें प्रयत्नपूर्वक चिंतन करनेलायकहै इसमें पुरातन ऋषियोंने जो कहाहै वोही प्रमाण मानना चाहिये ॥ ६ ॥ इतिसूर्यकालानलनामचक्रम् ॥

अथ चन्द्रकालानलचक्रम् ।

ककर्टकेन प्रविधाय वृत्तं तस्मिंश्च पूर्वां परयाम्यसौम्ये ॥
वृत्ताद्बहिः सञ्चलिते विधेयेः रेखे त्रिशुलाश्च तदग्रकेषु ॥ १ ॥
कोणाश्च रेखाद्वितयेन साध्याः पूर्वत्रिशूले किल मध्यसंस्थम् ॥
चान्द्रं लिखेद्भं तदनुक्रमेण सव्येन धिष्ण्यानि बहिस्तदन्ते ॥ २ ॥
कालानलं चक्रमिदं हि चान्द्रं रणप्रयाणादिषु जन्मभं चेत् ॥
त्रिशूलसंस्थं निधनाय नूनमन्तर्बहिःस्थं त्वशुभप्रदं हि ॥ ३ ॥

इस चन्द्रकालानलचक्रके लिखनेका उद्धार (लिखनेकी रीति) कहतेहैं प्रथम तो वीचमें परकालसे एक वृत्त (गोलाकार) बनावें उस गोलाकारमें पूर्वसे पश्चिम तक उस गोलाकारके वाहिर निकलती एक खड़ी रेखा लिखे, इसी तरह दक्षिणसे उत्तरपर्यंत गोलाकारसे वाहिर निकलती एक दूसरी आड़ी रेखा लिखे, फिर उन रेखाओंके अग्रभागमें त्रिशूलका आकार लिखे, फिर कोणसाधन करने के लिये अग्निकोणसे वायव्यतक और नैऋत्यको ईशानकोणतक दो रेखा गोलाकारसे वाहिर निकलती और लिखे, फिर उस पूर्वगोलाकारके भीतर एक दूसरा वृत्त (गोलाकार) और लिखे, फिर पूर्वदिशाके त्रिशूलके मध्यमें चन्द्राधिष्ठित नक्षत्रको स्थापन करै फिर क्रमसे रीतरीतिमे अभिजित् सहित अट्ठाईस नक्षत्रों को लिखे उसको चंद्रकालानलचक्र कहतेहैं, ये संग्राममें जानेके समय आदि में देखना चाहिये, यदि जन्म नक्षत्र त्रिशूल ऊपर आजावे तबतो संग्रामादिकोंमें जानेवालेका अवश्यही मरण होता है और जे आठ नक्षत्रहैं उनसे किसीस्थानपर जन्म नक्षत्रके आनेसे जानेवालेका अशुभ होताहै और गोलाकारके भीतरवाले नक्षत्रोंमें जन्म नक्षत्र आनेसे यात्रा करनेमें शुभ होताहै॥१॥२॥३॥इति जा० वनमालिकृतायां माजन्यां टीकायां द्वादशोऽध्यायः॥१२॥



१६ १५ १४

अथगोचरफलम् ।

नृजन्मराशेः खचरप्रचारैर्यद्गोचरे सांहितिकैः प्रणीतम् ॥
स्थूलं फलं तत्किल संप्रवच्मि बालावबोधप्रदमभ्रभानाम् ॥ १ ॥
गतिर्भयं श्रीर्व्यसनं च दैन्यं शत्रुक्षयोयानमतीव पीडा ॥
कान्तिक्षयोऽभीष्टवरिष्ठसिद्धिर्लाभोव्ययोर्कस्य फलं क्रमेण ॥२॥

पुरुष की जन्मराशिसे गोचरमें ग्रहों के चलने से संहिताके जाननेवालोंने जो कुछ स्थूल रीतिसे ग्रहोंका फल कहा है उस फलको ग्रहण धारण करने वाला पुरुषोंके जाननेके अर्थ अब मैं कहता हूं ॥ १ ॥ जब गोचरमें जन्मका सूर्य आवै तब उस पुरुष को गमन, दूसरा सूर्य होय तो भय, तीसरा होय तो लक्ष्मी, चौथा सूर्य होय तौ व्यसन (कुछ दुःख) पांचवां सूर्य होय तौ दीनता, छठा सूर्य होवेतौ वैरियोंका नाश, सातवां सूर्य होय तौ यात्रा, आठवां सूर्य होवे तौ अत्यन्त पीड़ा, नवा सूर्य होवे तौ तेजका नाश दशवा सूर्य होवे तब उत्तम अभीष्टकी सिद्धि, ग्यारहवां सूर्य होवे तौ लाभ और बारहवां सूर्य होवे तौ खरच होताहै इस तरहसे क्रमसे गोचरमें सूर्यका फल होताहै ॥ २ ॥

सदन्नमर्थक्षयमर्थलाभं कुक्षिव्यथां कार्यविघातलाभम् ॥
वित्तं रुजं राजभयं सुखं च लाभं च शोकं कुरुते मृगाङ्कः ॥३॥
पुत्रधर्मधनस्थस्य चन्द्रस्योक्तमसत्फलम् ॥
कालाक्षये परिज्ञेयं कालावृद्धौ तु साधु तत ॥ ४ ॥

जब गोचरमें चन्द्रमा जन्मका होवे तब उस मनुष्य को उत्तम अन्नका प्राप्ति, दूसरा चन्द्रमा होवे तौ धनका नाश तीसरा चन्द्रमा होवे तब धनका लाभ, चौथा चन्द्रमा होवे तब कूखमें व्यथा, पांचवां चन्द्रमा होवे तो कार्यका नाश, छटा चन्द्रमा होवे तौ लाभ, सातवां चन्द्रमा होवे तौ धनप्राप्ति, आठवां चन्द्रमा हो तब रोग, नवां चन्द्रमा होवे तब राजभय, दशवां चन्द्रमा होवे तौ सुख, ग्यारहवां चंद्रमा होवे तौ लाभ और बारहवां चंद्रमा होवे तौ उस मनुष्यके तांई शोकका करनेवाला होताहै ॥ ३ ॥ इस गोचरगत चंद्रमाका इतना सूक्ष्मरीति से विचार और भी है कि जो पञ्चम नवम और द्वितीय इनका अशुभ फल कहाहै सो यदि चंद्रमा क्षीण होवे तब तौ ऐसा ही समझना और यदि पूर्ण और चंद्रमा होवे तौ द्वितीय नवम पञ्चमका भी फल अच्छा समझना चाहिये ॥ ४ ॥

भीतिं क्षतिं वित्तमरिप्रवृद्धिमर्थप्रणाशं धनकार्यनाशम् ॥
शस्त्रोपघातं च रुजं च शोकं लाभं व्ययं भूतनयस्तनोति॥ ५ ॥
बन्धुं धनं वैरिभयं धनाप्तिं पीडां स्थितिं पीडनमर्थलाभम् ॥
खेदं सुखं लाभमथार्थनाशं क्रमात्फलं यच्छाति सोमसूनुः ॥६ ॥

इसी तरहसे गोचरमें जब जन्मका मङ्गल होवे तब उस मनुष्यके वास्ते भय, दूसरा मङ्गल होवे तौ नुकसान, तीसरा मङ्गल होवे तब धनप्राप्ति, चौथा मङ्गल होवे तो शत्रुवृद्धि, पञ्चम मङ्गल होवे तब धनका नाश, छठा मङ्गल होवे तौ धनका और कार्यका नाश, सातवां मङ्गल होवे तो शस्त्रकी चोट, आठवां मङ्गल होवे तब रोग, नववां मङ्गल होवे तौ शोक, दशम या ग्यारहवें मङ्गल होवे तब लाभ और जब बारहवें मङ्गल होताहै तब खरच कराना, इन फलोंको मङ्गल देताहै ॥ ५॥ जब गोचरमें जन्मका बुध होवे तब बन्धुसे मिलना, दूसरा बुध होवे तौ धनप्राप्ति, तीसरा बुध होवे तौ शत्रुभय, चौथा बुध होवे तौ धनप्राप्ति, पञ्चम बुध होवे तब पीड़ा, छटा बुध होवे तब स्थिति, सातवां बुध होवे तब पीड़ा, अष्टम बुध होवे तब धनका लाभ, नवम बुध होवे

तौ खेद, दशम बुध होवे तौ सुख, ग्यारहवें बुध होवे तौ लाभ और जब गोचरमें बुध बारहवें होताहै तब धनका नाश यह फल देता है ॥ ६ ॥

भीतिं वित्तं पीडनं वैरिवृद्धिं सौख्यं शोकं राजमानं च रोगम् ॥
सौख्यं दैन्यं मानवित्तं च पीडां दत्ते जीवो जन्मराशेः सकाशात् ।
रिपुक्षयं वित्तमतीव सौख्यं वित्तं सुतप्रीतिमरातिवृद्धिम् ॥
शोकं धनाप्तिं वरवस्त्रलाभं पीडां स्वमर्थं च ददाति शुक्रः ॥ ८ ॥

इसी तरह जब गोचरमें जन्मका बृहस्पति होताहै तब भय और दूसरा बृहस्पति होताहै तब धन, तीसरा जब बृहस्पति होताहै तब पीड़ा, चौथे बृहस्पतिमें शत्रुवृद्धि, पञ्चम बृहस्पति होवे तब सुखप्राप्ति, छठा बृहस्पति होवै तौ शोक, सप्तम बृहस्पति होवे तब राजसन्मान, अष्टम बृहस्पति होवे तौ रोग, नवम बृहस्पति होवे तो सुख प्राप्ति, दशम बृहस्पति होवे तो दीनता, ग्यारहवें बृहस्पति होवे तौ सन्मान सहित धन और यदि गोचर में बारहवें बृहस्पति होवें तब पीड़ा को देता है ॥ ७ ॥ जब जन्मराशिसे जन्मका शुक्र गोचरमें होताहै तब उस पुरुषको शत्रुनाश, दूसरा शुक्र होवे तब धन, तीसरा शुक्र होवे तौ अत्यन्त सुख, चौथा शुक्र होवे तब धन, पञ्चम शुक्र होवे तब पुत्रसे प्रीति, छठा शुक्र होवे तब शत्रुवृद्धि, सातवां शुक्र होवे तौ शोक, अष्टम शुक्र होवे तब धनकी प्राप्ति, नवम शुक्र होवे तब उत्तम वस्त्रका लाभ, ग्यारहमें शुक्र होवे तौ पीड़ा और गोचरमें यदि शुक्र बारहवें होवे तब धनका लाभ करताहै।

भ्रंशं क्लेशं शं च शत्रुप्रवृद्धिं पुत्रात्सौख्यं सौख्यवृद्धिं च दोषम् ।
पीडां सौख्यं निर्धनत्वं धनाप्तिं नानानर्थं भानुसूनुस्तनोति ॥
हानिं नैःस्व्यं स्वं च वैरं च शोकं वित्तं वादं पीडनं चापि पापम्।
वैरं सौख्यं द्रव्यहानिं प्रकुर्याद्राहुः पुंसां गोचरे केतुरेवम् ॥ १०॥

इसी प्रकार गोचरमें यदि शनिका जन्म होवे तौ स्थानसे भ्रष्ट करता है और शनि दूसरा होवे तौ क्लेश, तीसरा शनि होवे तब सुख, चौथा शनि होवे तब शत्रुओंकी वृद्धि, पञ्चम शनि होवे तौ पुत्रसे सुख, छठा शनि होवे तौ सुखकी वृद्धि सातवे शनि होवे तब दोष, अष्टम शनि होवे तौ पीड़ा, नवम शनि होवे तौ

सुखप्राप्ति, दशम शनि होवे तौ धनसे रहित और यदि जिसके गोचर में ग्यारहवें शनि होताहै तब धनकी प्राप्ति और जब बारहवें शनि होताहै तब अनेक अनर्थोंकी प्राप्ति उस पुरुषके तांई करता है॥९॥ इसी तरहसे जब गोचरमें राहु जन्मका होताहै तब नुकसान, दूसरे राहु होवे तब धनसे हीन, तीसरा राहु होवे तौ धनकी प्राप्ति चौथा राहु होवे तौ वैर, पञ्चम राहु होवे तौ शोक, छठा राहु होवै तब, धनकी प्राप्ति, सातवां राहु होवे तब विवाद, अष्टम राहु होवे तौ पीड़ा, नवम राहु होवे तब पाप कराना, दशम राहु होवे तौ वैर, ग्यारहवां राहु होवे तौ सुख, और जब गोचरमें जन्मराशिसे बारहवां राहु होताहै तब द्रव्यकी हानि करता है और इसी तरहसे जो राहुका फल कहाहै सोही केतुका फल समझ लेना चाहिये ॥१०॥

राशौ राशौ गोचरे खेचराणामुक्तं पूर्वैर्यत्फलं जन्मराशेः ॥
तन्मर्त्यानामेकभोत्पत्तिकानां भिन्नंभिन्नं दृश्यतेवश्यमेव ॥ ११ ॥
यस्मिन्राशौ शीतरश्मिः प्रसूतौ संस्थः प्रोक्तो जन्मराशिः सएव॥
एवं लग्नेनान्विताःसप्त खेटास्ते किं न स्युःप्राणिनां जन्मभानि१२॥

पूर्वाचार्योंने गोचरमें ग्रहोंके जन्माराशिसे राशिराशिके जे फल कहेहैं वे फल एक नक्षत्रमें जन्म लेनेवाले मनुष्योंके अवश्य भिन्नभिन्न दिखाई पड़ते हैं ॥११॥ और देखिये मनुष्योंके जन्मसमयमें जिस राशिका चन्द्रमा होताहै उस मनुष्यकी जन्मराशि वोही होतीहै इसी तरह सूर्यादिग्रह जन्मसमयमें जिस राशिके होवे वो राशि भी मनुष्योंकी जन्मराशि क्यों न कही जावै ए दो संदेह हुए ॥ १२ ॥

पुंसामतोऽष्टौ किल राशयः स्युः शुभाशुभान्यत्र फलानि तेभ्यः ॥
ततश्च रेखामिलनान्तरालात् स्पष्टं फलं चाष्टकवर्गयुक्तम्॥१३॥
स्यान्मन्दात्कुजतोरविर्मृतितपोलाभार्थकेन्द्रस्थितः
शुक्रादस्तारिपुव्ययेषु च गुरोधर्मारिपुत्राप्तिषु ॥
चन्द्रात्प्राप्तिररि पुत्रिखेषु शशिजाप्तं च त्रिनन्दव्यया
रिप्राप्त्यभ्रगतस्तनोस्त्रिषसखोपान्त्यारिरिःफे शुभः॥१४॥

तहां कहते हैं कि देखिये मनुष्योंकी एकएकराशिके अवांतर आठ आठ भेद होतेहैं उन्हीं राशियोंसे इस विषयमें शुभाशुभ फल होतेहैं तदनंतर रेखाओंके मिलनेके अन्तरालसे अष्टकवर्गसे स्पष्ट फल होताहै॥१३॥अब रेखाओंके मिलनेसे फलकी रीति कहतेहैं, कि शनिसे और मङ्गलसे अष्टम नवम एकादश द्वितीय और केन्द्र (१।४।७।१०) इन स्थानोंमें स्थित हुआ सूर्य शुभ होता है अर्थात् रेखा पाताहै और शुक्रसे सप्तम षष्ठ और बारहवें स्थानमें स्थित हुआ सूर्य शुभ होता है अर्थात् रेखा पाताहै और बृहस्पतिसे नवम, छठे पंचम और लाभ (११) इन स्थानोंमें स्थित हुआ सूर्य शुभ होता है अर्थात् रेखा पाता है चन्द्रमासे लाभ (११), छठे तीसरे और दशम इन स्थानोंमें बैठा सूर्य शुभ होता है नाम रेखा पाता है और बुधसे पंचम, तीसरे,नंद (९), बारहवे, छठे, लाभ (११)और दशम इन स्थानोंमें स्थित हुआ सूर्य शुभ होताहै अर्थात् रेखा पाता है और लग्नसे तीसरे, चौथे, छटे, ग्यारहवे और बारहवे स्थानमें बैठा सूर्य शुभ होता है अर्थात् रेखा पाता है ॥१४॥

अथरवेरष्टवर्गांकाः ४८

र	चं	म	बु	गु	शु	श	ल
१	३	१	३	५	६	१	३
२	६	२	५	६	७	२	४
४	१०	४	६	९	१२	४	६
७	११	७	९	११	०	७	१०
८	०	८	१०	०	०	८	११
९	०	९	११	०	०	९	१२
१०	०	१०	१२	०	०	१०	०
११	०	११	०	०	०	११	०
०	०	०	०	०	०	०	०

भौमाद्ग्लौर्नवधीधनोपचयगः षट्त्र्यासिधीस्थोऽर्कजा
ल्लग्नाच्चोप चयोरवेरुपचयाष्टास्तेषु शस्तो बुधात् ॥
धीरन्ध्रेषु चतुष्टयात्रिषु गुरोः केन्द्राष्टलाभव्यये
स्वादे कोपचयास्तगस्त्रिखभवास्ताम्बुत्रिकोणे भृगोः ॥ १५ ॥
स्वाद्भौमोष्टचतुष्टयायधनगोजीवात्षडायान्त्यखे
चन्द्रादायरिपुत्रिगोभृगुसुतादष्टान्त्यलाभारिगः ॥
ज्ञात्पाञ्चायरिपुत्रिगोर्कतनयात्केन्द्राष्टधर्मान्त्यगः
सूर्याच्चोपचयात्मजेषु तनुतस्त्र्यायारिखाद्ये शुभः ॥ १६ ॥

मङ्गलसे नवे, पांचवे,दूसरे और उपचय (३।६।१०।११) स्थानमें बैठा चंद्रमा शुभ होता है नाम रेखापाताहै और शनिसे ६।३।११।५ स्थानमें स्थितजो चन्द्रमा है वो शुभ होता है नाम रेखा पाताहै और लग्नसे ३।६।१०।११ चन्द्र रेखा पाता है और सूर्यसे उपचय (३।६।१०।११), अष्टम और सप्तम इन स्थानोंमें बैठा चंद्रमा शुभ होताहै नाम रेखा पाता है बुधसे पंचम,अष्टम,चौथे और तीसरे स्थानमें, स्थित चन्द्रमा शुभ होता है नाम रेखा पाताहै और बृहस्पति से केन्द्र (१।४।७।१०),अष्टम लाभ (११) और बारहे घर में बैठा चन्द्रमा शुभ होता है नाम रेखा पाता है और लग्नसे एक उपचय (३।६।१०।११),सप्तम स्थानमें बैठा चन्द्रमा शुभ होता है और शुक्र से तीसरे,दशवें,ग्यारहवें,सातवें,चौथे,नवें और पांचवे बैठा जो चन्द्रमा है वो शुभ होताहै नाम रेखा पाताहै ॥ १५ ॥ लग्नसे अष्टम, चतुर्थ, एकादश और द्वितीय इन स्थानों में बैठा मङ्गल शुभ होताहै नाम रेखा पाता है और बृहस्पति से छठे, ग्यारहे, बारहे और दशम इन स्थानोंमें बैठा मङ्गल शुभ होताहै नाम रेखा पाता है और चंद्रमा से ग्यारहे, छठे और तीसरे स्थान में बैठा मङ्गल रेखा पाताहै और शुक्र से अष्टम, द्वादश, ग्यारहे और छठे घरमें बैठा मङ्गल शुभ होता है नाम रेखा पाता है और बुधसे पंचम, ग्यारहे छठे और तीसरे स्थानमें बैठा मङ्गल शुभ होता है नाम रेखा पाता है और शनि से केन्द्र (१।४।७।१०), अष्टम, नवम और बारहवें स्थानमें स्थित हुआ मङ्गल शुभ होता है नाम रेखा पाता है और सूर्यसे ३।६।१० और पंचम स्थानमें स्थित हुआ मङ्गल रेखा पाता है और लग्नसे तीसरे, ग्यारहवें छठे, दशवें और पहले स्थानमें स्थित हुआ मङ्गल रेखा पाता है ॥ १६ ॥

चन्द्रस्याष्टवर्गाङ्काः ४९								अथ भौमस्याष्टवर्गाङ्काः ३९							
च	मं	बु	गु	शु	श	ल	र	मं	बु	गु	शु	श	ल	र	चं
१	२	१	१	३	३	३	३	१	३	६	६	१	१	३	३
३	३	३	४	४	५	६	६	२	५	१०	८	४	३	५	६
६	५	४	७	५	६	१०	७	४	६	११	११	७	६	६	११
७	६	५	=	७	११	११	८	७	१२	१२	१२	८	१०	१०	०
१०	९	७	१०	९	०	०	१०	८	०	०	०	९	११	११	०
११	१०	८	११	१०	०	०	११	१०	०	०	०	१०	०	०	०
०	११	१०	१२	११	०	०	०	११	०	०	०	११	०	०	०
०	०	११	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्रादासुतधर्मलाभमृतिगः सौम्यः कुजार्क्यौस्तपः
केन्द्रायाष्टधनेस्वतोप्युपचयान्त्यैकत्रिकोणे शुभः ॥
कोणान्त्यारिभवे खेरिपुभवाष्टान्त्ये गुरोरिन्दुतः
स्वायाष्टारिसुखार्थगः सुखभवाष्टैकोम्बुषट्सुदयात् ॥ १७ ॥
स्वात् स्वायाष्टत्रिकेन्द्रस्वनवदशभावारातिधीस्थश्च शुक्रा-
ल्लग्नात्केन्द्रायधीषट्स्वनवसु च कुजात् स्वाष्टकेन्द्राय ईज्यः ॥
इन्दोर्द्यूनोर्थकोणास्तिषु सहजनवाष्टाय केन्द्राष्टगोर्काज्ज्ञा-
त्कोणे द्व्यायखाद्याम्बुधिरिपुषु शनेस्त्र्यन्त्यधीषट्सु शस्तः ॥१८॥

शुक्रसे पंचम, नवम, ग्यारहवें और आठवें स्थानमें स्थित हुआ बुध शुभ होताहै नाम रेखा पाताहै और मङ्गलसे और शनिसे नवें, केन्द्र (१।४।७।१०), ११।८।२ इन स्थानोंमें स्थित बुध शुभ होता है नाम रेखा पाता है और अपने स्थानसे भी ३।६।१०।, बारहे, १।९।५ इन स्थानोंमेंवैठा बुध रेखा पाताहै और सूर्यसे ८।५ और बारहवें छठे और ग्यारहवें इन स्थानोंमें बैठा बुध शुभ होता है और बृहस्पतिसे छठे

ग्यारहे आठवें वारहवें इन स्थानोंमें वैठा बुध शुभ होताहै और चन्द्रमा से दशमें ग्यारहवें आठवें छठे चौथे और दूसरे इन स्थानोंमें वैठा हुआ बुध शुभ होताहै नाम रेखा पाताहै और लग्नसे ४।११।८।१।४।६ इन स्थानोंमें वैठा हुआ बुध शुभ होता है नाम रेखा पाताहै ॥ १७ ॥ बृहस्पति अपने स्थान से प्रथम, एकादश, अष्टम, तृतीय, केन्द्र (१।४।७।१०), २।९।१०।११।६ और पञ्चम इन स्थानोंमें स्थित जो बृहस्पतिहै वो शुभ होताहै नाम रेखा पाताहै शुक्रसे और लग्नसे केन्द्र (१।४।७। १०), ग्यारहवे, पंचम, छठे, और दूसरे नवम इन स्थानों में स्थित जो बृहस्पति वो शुभ होताहै नाम रेखा पाताहै और मङ्गलसे द्वितीय, अष्टम, केन्द्र (१।४।७।१०) और एकादश इन स्थानोंमें स्थित जो बृहस्पति है वो शुभ होताहै नाम रेखा पाताहै और चन्द्रमासे सप्तम, द्वितीय, नवम, पञ्चम और एकादश इन स्थानोंमें स्थित जो बृहस्पति है वो शुभ होताहै नाम रेखा पाता है और सूर्यसे तृतीय, नवम, अष्टम एकादश, केन्द्र (१।४।७।१०) और अष्टम इन स्थानोंमें स्थित गुरु शुभ होता है नाम रेखा पाताहै और बुधसे नवम, पञ्चम, द्वितीय, एकादश, दशम. प्रथम, छठे, और चतुर्थ इन स्थानोंमें वैठा बृहस्पति शुभ होताहै नाम रेखा पाताहै और शनिसे ३।१२।५।६ इन स्थानोंमें स्थित जो बृहस्पतिहै वो शुभ होताहै अर्थात् रेखा पाताहै ॥

अथबुधस्याष्टवर्गांका: ५४								अथ गुरोरष्टवर्गांका: ५६							
बु	गु	शु	श	ल	र	चं	मं	गु	शु	श	ल	र	चं	मं	बु
१	६	१	१	१	५	४	१	१	२	३	१	१	२	१	१
३	८	२	२	२	६	५	२	२	५	५	२	२	५	२	२
५	११	३	४	४	९	६	४	३	६	६	४	३	७	४	४
६	१२	४	७	६	११	८	७	४	९	१२	५	४	९	७	५
९	०	५	८	९	१२	१०	८	७	१०	०	६	७	११	८	६
१०	०	८	९	११	०	११	९	८	११	०	०	८	०	१०	९
११	०	९	१०	१२	०	०	१०	१०	०		०	९	०	११	१०
१२	०	११	११	०	०	०	११	११	०	०	०	१०	०	०	११
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	११	०	०	०

खास्तान्त्याहितवर्जितेषुतनुनः शुक्रोविनास्तारिखं
चन्द्रात्स्वान्मदनव्ययारिरहितेष्वर्काद्व्ययाष्टाप्तिषु ॥
मन्दाद्व्येकरिपुव्ययास्त्वरहितेष्वोज्यान्नवायाष्टधी
खेज्ञात्कोणभवात्रिषट्सु भवधीत्र्यन्त्यारिधर्मे कुजात्॥१९॥
स्वान्मन्दस्त्रिषडायधीषु रवितोष्टायाद्विकेन्द्रे शुभो
भौमात्खायषडन्त्यधीत्रिषु तनोः खायाम्बुषट्त्र्येकगः ॥
ज्ञादायारिनवान्त्यखाष्टसु भृगोरन्त्यायषट्संस्थित
श्चन्द्रादायरिपुत्रिगः सुरगुरोरन्त्यायधीशत्रुगः ॥२०॥

लग्नसे दशम, सप्तम, द्वादश और षष्ठ इन स्थानोंके विना चाहै किसी स्थान में शुक्र स्थित होवे तब सुख होताहै अर्थात् रेखा पाताहै अर्थात् लग्नसे १।२।३। ४।५।८।९।११।१२ इन स्थानोंमें स्थित शुक्र रेखा पाता है और अपने स्थानसे चन्द्रमासे सप्तम, द्वादश और षष्ठ इन स्थानोंके बिना चाहै कहीं बैठा होवे वो शुक्र शुभ होनेसे रेखा पाता है और सूर्य जहां स्थित होवे वहां से सप्तम द्वादश षष्ठ इन स्थानोंके सिवाय बारहे आठवे और ग्यारहे स्थानमें बैठा रेखा पाता है और शनी से द्वितीय,प्रथम,छठे,बारहवे और सप्तम इन स्थानोंके सिवाय चाहै कहीं बैठा हुआ शुक्र शुभ होनेके कारणसे रेखा पाताहै और बृहस्पति से नवम; ग्यारहे, अष्टम, पञ्चम और दशम इन स्थानोंमें स्थित शुक्र रेखा पाता है और बुधसे नवम, पञ्चम एकादश, तृतीय और षष्ठ इन स्थानोंमें स्थित शुक्रशुभ होनेसे रेखा पाते है और मङ्गलसे ग्यारहे पांचवे तीसरे बारहे छठे और नवे धरमें वैठा शुक्रशुभ होनेके कारण रेखा पाता है ॥१९॥ अपने स्थानसे शनि, तीसरे, छठे, ग्यारहवे और पांचवे स्थान में बैठा शुभ होनेके कारणसे रेखा पाताहै और सूर्यसे अष्टम, एकादश, द्वितीय और केन्द्र (१।४।७।१०) इन स्थानोंमें वैठा शनि, शुभ होनेसे रेखा पाता है और मङ्गलसे दशम, एकादश, षष्ठ, द्वादश, पञ्चम और तृतीय इन स्थानोंमें शुभ होता अर्थात् रेखा पाता है और लग्न से दशम, एकादश, चतुर्थ षट्, तृतीय और प्रथम इन स्थानोंमें शनि स्थित होनेसे शुभ होनेके कारण रेखा पाताहै और बुधसे एकादश, षष्ठ, नवम, द्वादश, दशम और इन स्थानोंमें वैठा शनि रेखा पाता है और शुक्रसे द्वादश, एकादश, षष्ठ, इन स्थानोंमें स्थित शनि शुभ होने से रेखा पाता है और चन्द्रमासे एकादश षष्ठ तृतीय इन स्थानोंमें शनि वैठा होवे तौ शुभ होनेसे रेखा पाता है और बृहस्पतिसे द्वादश एकादश पञ्चम और षष्ठ इन स्थानोंमें वैठा शनि शुभ होनेसे रेखा पाता है ॥२० ॥

अथ शुक्रस्याष्टवर्गांकाः ५२

शु	श	ल	र	चं	मं	बु	गु
१	३	१	८	१	३	३	५
२	४	२	११	२	५	५	८
३	५	३	१२	३	६	६	९
४	८	४	०	४	९	९	१०
५	९	५	०	५	११	११	११
८	१०	८	०	८	१२	०	०
९	११	९	०	९	०	०	०
१०	०	११	०	११	०	०	०
१०	०	०	०	१२	०	०	०

अथ शनेरष्टवर्गांकाः ३९

श	ल	र	चं	मं	बु	गु	शु
३	३	१	३	३	६	५	६
४	४	२	६	५	८	६	११
६	६	४	११	६	९	११	१२
११	९	७	०	१०	१०	१२	०
०	१०	८	०	११	११	०	०
०	११	१०	०	१२	१२	०	०
०	०	११	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०

इत्यष्टवर्गांकाः समाप्ताः

स्थानानि यानि प्रतिपादितानि शुभानि चान्यान्यशुभानिनूनम्॥
तयोर्वियोगादधिकं फलं यत्स्वराशितो यच्छति तद्ग्रहेन्द्रः ॥२१॥
भुजंगवेदानवसागराश्च नवाग्नयः सागरसायकाश्च ॥
रसेषवोयुग्मशरानवत्रितुल्याः क्रमेणाष्टकवर्गलेखाः ॥२२॥
विलग्ननाथाश्रिगराशितोत्र भवंति रेखाः खलु यत्र यत्र ॥
विलग्नतस्तत्र च तत्र राशौ संस्थापनीयाः सुधिया क्रमेण ॥२३॥

आचार्योंने जे शुभ अशुभ स्थान प्रतिपादन किये हैं निश्चय उनके वियोगसे जो कुछ अधिक हैं उसको गृहका स्वामी देता है ॥२१॥ सूर्यकी रेखा अड़तालीस होती है, चन्द्रमाकी रेखा४९ होती है, मङ्गलकी३९रेखा होतीहै, बुधकी ५४ रेखा होतीहै, बृहस्पतिकी ५६ रेखा होतीहै, शुक्रकी५२रेखा होती हैं, और शनिकी ३९ रेखा होतींहैं, उन रेखाओंको इसी क्रमसे अष्टवर्गमें लिखना चाहिये॥२२॥ लग्नका

स्वामी जिस राशिमें स्थित होवै उस राशिसे जिस जिस समय स्थानमें रेखा होवै लग्नसे उसी उसी राशिमें बुद्धिमान् मनुष्यको क्रमसे उन रेखाओंका स्थापन करना चाहिये ॥ २३ ॥

प्रत्येकरेखाफलम् ।

क्लेशोऽर्थहानिर्व्यसनं समत्वं शश्वत्सुखं नित्यधनागमश्च ॥
सम्पत्प्रवृद्धिर्विपुलामलश्रीः प्रत्येकरेखाफलमामनन्ति ॥२४॥

क्लेश, धनकी हानि, व्यसन, समता,निरन्तर सुख,धनका लाभ,,संपूर्ण सुख और विशेष करके धनका लाभ ये क्रम से एकएक रेखाका फल होताहै जैसे एक रेखामें क्लेश,दोमें धनहानि, तीनमें व्यसन,चारमें समता,पाँचमें निरन्तर सुख, छःमेंधनका लाभ,सातमें संपूर्णसुख और आठ रेखामें विशेषकरके धनका लाभ होताहै इसतरहसे हरएक रेखाओंका फल विद्वान् पुरुष कहते हैं वो यथायोग्य जानना चाहिये॥२४॥

इत्येकखेटस्य हि संप्रदिष्टा रेखायुतिश्चाखिलखेटरेखाः ॥
अष्टद्विसंख्यास्तु समास्ततोपि यथाधिकोनाः सदसत्फलास्ताः२५

इसप्रकार एकएक ग्रहका रेखाओंसे योग कहा इनमें सब ग्रहोंमें से किसी ग्रहका दो रेखाओंमेंसे दो रेखासे लेकर आठ रेखापर्यंत जिसकी रेखा आई होवै तब समफल समझना और दोसे भी कम रेखा जिस ग्रहकी आई होवे तब उस ग्रह का अशुभ फल कहना चाहिये और यदि आठ रेखाओंसे अधिक रेखा आई होवे तब फिर उस ग्रहका उत्तम फल कहना चाहिये तिसमें यह है कि जितनी अधिक रेखा होवें उतनाही उत्तम फल होताहै ॥ २५ ॥

कोग्रहः कदा फलदातेत्याह ।

कः कदा फलदातेत्यासङ्क्याह ॥
इलातनूजश्च पतिर्नलिन्याः प्रवेशकाले फलदः किल स्यात् ॥
राश्यर्धभोगे भृगुजामरेज्यो प्रान्ते शनीन्दू च सदेन्दुसूनुः ॥२५॥

मङ्गल और रवि राशिके प्रवेशके समयही फल देतेहैं और शुक्र बृहस्पति राशि के अर्ध भोगके समय फल देतेहैं और शनैश्वर तथा चन्द्रमा राशिके उतरनेके समय फल देते हैं और बुध जबसे राशिपर आता है तबसे लेकर जबतक रहताहै तबतक सदा एकसा फल देताहै ॥ २६ ॥

ग्रहाणामङ्ग भेदात्फल दातृत्वम् ।

शिरःप्रदेशे वदने दिनेशो वक्षःस्थले चापि गले कलावान् ।।
पृष्ठोदरे भूतनयः प्रभुत्वं करोति सौम्यश्चरणे च पाणौ ।। २७ ।।
कटिप्रदेशे जघने च जीवः कविस्सुगुह्ये स्थलमुष्कयुग्मे ।।
जानूरुदेशे नलिनीशसुनुश्चारेण वा जन्मनि चिन्तनीयम् ।। २८ ।
यदा यदा स्यात्प्रतिकूलवर्ती स्वांगे स्वदोषेण करोति पीडाम् ।।
इदं तु पूर्वं प्रविचार्य सर्वं प्रश्नप्रसूत्यादिषु कल्पनीयम् ।। २९ ।।

शिर से लेकर मुखपर्यंत अङ्ग का अधिष्ठाता सूर्य, वक्षस्थल और गले का अधिष्ठाता चन्द्रमा, पीठका और पेटका अधिष्ठाता मङ्गल, हाथ तथा पावोंका अधिष्ठाता बुध, कमरका और चूतरोंका अधिष्ठाता बृहस्पति, विषयेंद्रिय और वृषण (अण्डकोश) का अधिष्ठाता शुक्र, और जंघा घोटू पिंढरीओं का अधिष्ठाता बुध होताहै ग्रहोंके सञ्चारमें अथवा जन्म समय में इस प्रकार ग्रहों के फल का चिंतवन करना चाहिये ।। २७ ।। २८ ।। जो ग्रह जिस समय अशुभ फल देनेवाला होताहै तब वो ग्रह जिस अङ्गका अधिष्ठाताहै वो ग्रह उसी २ अङ्गमें पीड़ा करता है प्रथम इन सबको खूब विचारकर फिर प्रश्न समयमें और जन्मसमयमें फल कहना चाहिये ।। २९ ।। इत्यष्टकवर्गाध्यायः ।।

अथ द्विग्रहयोगाध्यायः ।

पाषाणयन्त्रक्रयविक्रयेषु कूटक्रियायां च विचक्षणः स्यात् ।।
कामी प्रकामी पुरुषः सगर्वः सर्वौषधीशेन रवौ समेते ।। १ ।।
भवेन्महौजा बलवान् विमूढो गाढोद्धतोसत्यवचो मनुष्यः ।।
सुसाहसः शूरतरोतिहिंस्रो दिवामणौ क्षोणिसुताभ्युपेते ।। २ ।।

जिस मनुष्यके जन्मसमयमें सूर्य चाहै किसी घरमें चन्द्रमा से संयुक्त बैठा होवे वो मनुष्य पत्थर और कोई यंत्रादिक इनके बेचने खरीदने में और कपटयुक्त काम करनेमें प्रवीण और अनेक कामोंकी कामना करने वाला बड़ा अहङ्कारी होता है ।। १ ।। जिसके जन्म समयमें मङ्गल संयुक्त सूर्य एक घरमें होता है वो पुरुष बड़ा पुरुषार्थी, मूर्ख, अत्यन्त उद्धत, झूठ बोलने वाला, बड़ा साहसी, अत्यन्त शूरवीर और जीवोंका हिंसक होताहै ।। २ ।।

प्रियवचाः सचिवो बहुसेवयार्जितधनश्च कलाकुशलो भवेत् ॥
श्रुतपटुर्हि नरो नलिनीपतौ कुमुदिनीपतिसूनुसमन्विते ॥ ३ ॥
आचारहीनः कुटिलः प्रतापी पण्यानुजीवी कलहप्रियश्च ॥
स्यान्मातृशत्रुर्मनुजोरुजार्तः शीतद्युतौ भूसुतसंयुते वै ॥ ४ ॥

जिस मनुष्यके जन्म समय में सूर्य बुधसे युक्त एक घर में बैठा होवे वो पुरुष प्रिय बचन बोलनेवाला, राजाका मन्त्री, सेवा करनेसे धनसञ्चय करनेवाला, अनेक कलाओंमें कुशल और शास्त्रविद्या में कुशल होता है ॥ ३ ॥ जिस मनुष्यके जन्म समय में चन्द्रमा और मङ्गल एक घरमें बैठे होते हैं वो पुरुष आचारसे रहित, बड़ा कुटिल, प्रतापी, दुकानदारी से जीविका करने वाला, कलह, करने वाला, माताहै विरोध रखने वाला और रोगी होताहै ॥ ४ ॥

पुरोहितत्वे निपुणोनृपाणां मन्त्री च मित्राप्तधनः समृद्धः ॥
परोपकारी चतुरो दिनेशे वाचामधीशेन युते नरः स्यात् ॥ ५ ॥
संगीतवाद्यायुधचारुबुद्धिर्भवेन्नरो नेत्रबलेन हीनः ॥
कान्तानिमित्ताप्तसुहृत्समाजः सितान्विते जन्मनि पद्मिनीशे॥६॥

जिस पुरुषके जन्म समयमें बृहस्पतिसे संयुक्त सूर्य होताहै वो मनुष्य पुरोहित का काम करनेमें कुशल, राजाओंका मंत्री, धन पाने वाला, सब प्रकार से संपन्न, परोपकार करनेवाला और बड़ा चतुर होताहै ॥ ५ ॥ जिस मनुष्यके जन्म समयमें शुक्र से संयुक्त सूर्य एक घरमें बैठताहै वो पुरुष गाने बजानेमें और आयुध (शस्त्र) विद्यामें प्रवीण, नेत्रोंके बलसे हीन और स्त्री के निमित्त से मित्रों के निमित्त से धन पाने वाला होताहै ॥ ६ ॥

धातुक्रियापण्यमतिर्गुणज्ञोधर्मप्रियः पुत्रकलत्रसौख्यः ॥
सदासमृद्धोतितरां नरः स्यात्प्रद्योतने भानुसुतेन युक्ते ॥ ७ ॥
सद्धाग्विलासोधनवान्सुरूपः कृपार्तचेताः पुरुषोविनीतः ॥
कान्तापरश्रीतिरतीव वक्ता चन्द्रे सचान्द्रौ बहुधर्मकृत्स्यात् ॥ ८ ॥

जिस मनुष्यके जन्म समय में शनैश्चर संयुक्त सूर्य एक घरमें बैठा होवे वो मनुष्य धातु क्रिया और दुकानदारीमें मन रखने वाला, गुणोंका जाननेवाला, धर्म

करनेमें प्यार रखने वाला, पुत्रके और स्त्रीके सुखसे सम्पन्न और सदा धनसे संपन्न होताहै ॥७॥ जिस मनुष्यके जन्मसमयमें बुधसे संयुक्त चंद्रमा एक घरमें बैठाहोवे वो मनुष्य उत्तम वाणीका कहनेवाला, धनसे सम्पन्न, रूपसे सुन्दर, बड़ा दयालु बड़ानम्र, कांता (स्त्री) से अत्यन्त स्नेह करनेवाला और अत्यन्त भक्त होताहै ॥८॥

सदा विनीतो दृढगूढमन्त्रः स्वधर्मकर्माभिरतो नरः स्यात् ॥
परोपकारादृतैकचित्तः शीतद्युता वाक्पतिना समेते ॥ ९ ॥
वस्त्रादिकानां क्रयविक्रयेषु दक्षो नरः स्याद्व्यसनी विधिज्ञः ।
सुगन्धपुष्पोत्तमवस्त्रचित्तो द्विजाधिराजे भृगुजेन युक्ते ॥ १ ॥

जिस मनुष्यके जन्म समय बृहस्पतिसे संयुक्त चंद्रमा एक घर में बैठताहै वो मनुष्य सदा नम्रता युक्त, बड़ा दृढ़ और गुप्त सलाह करने वाला, अपने धर्म कर्ममें निरत, परोपकार करनेमें आदरयुक्त चित्त रखनेवाला होताहै ॥ ९ ॥ जिसके जन्म समयमें शुक्रसे युक्त चन्द्रमा एकही घरमें स्थित होवे वो मनुष्य वस्त्रादिकोंके बेचने में खरीदनेमें चतुर, अनेक तरहके व्यसन करनेवाला, विधिका जाननेवाला, सुगंधित पुष्प और उत्तम वस्त्रोंके पहिरने में चित्त रखनेवाला होता है ॥ १० ॥

नानाङ्गनानां परिसेवनेच्छो वेश्यानुवृत्तिर्गतसाधुशीलः ॥
परात्मजः स्यात्पुरुषार्थहीन इन्दौ समन्दे प्रवदन्ति सन्तः ॥११॥
बाहुयुद्धकुशलो विपुलस्त्रीलालसो विविधभेषजपण्यः ॥
हेमलोहविधिबुद्धिविभावः संभवे यदि कुजेन्दुजयोगः ॥ १२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मसमयमें शनैश्चर संयुक्त चन्द्रमा एकही घरमें बैठतेहैं वो पुरुष अनेक स्त्रियोंके सेवन करनेमें इच्छा रखनेवाला, वैश्योंकी सेवा करनेवाला अच्छे स्वभावसे रहित, किसी अन्य पुरुषका उत्पन्न हुआ और पराक्रम रहित होता है॥११॥ जिस मनुष्यके जन्म समयमें बुध संयुक्त मङ्गल एक घरमें बैठता है वो मनुष्य कुस्ती लड़ने में कुशल (पहलवान), अनेक स्त्रियोंमें लालसा रखनेवाला, अनेक औषधियों की दुकानसे जीविका करनेवाला और स्वर्णसे लेकर लोह तक धातुओंके बेचने खरीदने से बुद्धिपूर्व व्यापार करनेवाला होता है ॥ १२ ॥

मन्त्रार्थशास्त्रार्थकलाकलापे विवेकशीलो मनुजः किल स्यात् ॥
चमूपतिर्वा नृपतिः पुरेशो ग्रामेश्वरो वा सकुजे सुरेज्ये ॥१३॥

नानाङ्गनाभोगविधानचित्तोद्भूतानृतप्रीतिरतिप्रपंचः ॥
नरः सगर्वः कृतसर्ववैरो भृगोः सुते भूसुतसंयुते स्यात् ॥ १४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मसमयमें मङ्गल संयुक्त बृहस्पति जी एक घर में बैठते हैं वो पुरुष मन्त्रोंके अर्थमें और शास्त्रार्थ कलाओं के समूह में विवेक रखने वाला होता है और सेनाका पति अथवा राजा अथवा किसी नगरका स्वामी अथवा ग्रामका स्वामी होताहै ॥१३॥ और जिसके जन्म समयमें शुक्र मङ्गल दोनों एक घरमें बैठते हैं वो पुरुष नाना स्त्रियोंके भोग करनेमें चित्त रखनेवाला,जुआ खेलनेमें तथा झूठबोलने में प्रीति रखनेवाला,बड़ा प्रपंची,बड़ा गर्वीला और सबसे वैरकरनेवाला होताहै॥१४॥

शस्त्रास्त्रवित्संगरकर्मकर्त्ता स्तेयानृतप्रीतिकरः प्रकामम् ॥
सौख्येन हीनोतितरां नरः स्याद्धरासुते मन्दयुतेऽतिनिन्द्यः॥१५॥
संगीतविन्नीतिपतिर्विनीतः सौख्यान्वितोऽत्यन्तमनोभिरामः ॥
धीरो नरः स्यात्सुतरामुदारः सुगन्धभाग्वाग्पतिसौम्ययोगे ॥१६॥

जिस मनुष्यके जन्मसमयमें शनैश्चरसे युक्त मङ्गल एक घरमें बैठताहै वो पुरुष शस्त्रास्त्रविद्या के जानने वाला, संग्राम को करने वाला, चोरीमें और झूठ बोलनेमें प्रीति करनेवाला, सुखसे अत्यन्त हीन होताहै ॥१५॥ जिस मनुष्यके जन्मसमयमें बुध और बृहस्पति दोनों एकही घरमें बैठते हैं वो मनुष्य सङ्गीत विद्या का जानने वाला, नीतिका पालनेवाला, बड़ा नम्र सुखसे युक्त, अत्यन्त मनमें सदा प्रसन्नता युक्त, बड़ा धीर, अत्यन्त उदारता युक्त और सुगन्धका भोगनेवाला होताहै ॥१६॥

कुलाधिशाली शुभवाग्विलासः सदा सहर्षः पुरुषः सुवेषः ॥
भर्त्ता बहूनां गुणवान्विवेकी सभार्गवे जन्मनि सोमसूनौ ॥१७॥
चलस्वभावश्च कलिप्रियोपि कलाकलापे कुशलः सुशीलः ॥
पुमान् बहूनां प्रतिपालकश्चेद्भवेत्प्रसूतौ मिलन शशन्योः ॥१८॥

जिसके जन्मसमयमें शुक्रसहित बुध एक घरमें बैठताहै वो पुरुष बड़ा कुलवान शुभ वचनों का कहनेवाला, सदा प्रसन्न मूर्ति, सुन्दर वस्त्र भूषणों से सदा अपना शृङ्गार करनेवाला, बहुतों का पालन करनेवाला, बड़ा गुणवान और बड़ा विवेकी होताहै ॥१७॥ जिस मनुष्यके जन्मसमयमें बुध और शनि दोनों एक घरमें बैठते

हैं वो पुरुष चञ्चल स्वभावसे युक्त, कलहप्रिय, अनेक कलाओंका जाननेवाला, बड़ा सुशील और बहुतोंका पालन करनेवाला होताहै ॥ १८ ॥

विद्यया भवति पण्डितः सदा पण्डितैरपि करोति विवादम् ॥
पुत्रमित्रधनसौख्यसंयुतो मानवः सुरगुरौ भृगुयुक्ते ॥ १९ ॥
शूरोर्थवान् ग्रामपुराधिनाथो भवेद्यशस्वी कुशलः कलासु ॥
स्त्रीसंश्रयप्राप्तमनोरथश्च नरः सुरेज्ये रविजेन युक्ते ॥ २० ॥
शिल्पलेख्यविधिजातकौतुको दारुणो रणकरो नरो भवेत् ॥
अश्मकर्मकुशलश्च जन्मनि भार्गवे रविसुतेन संयुते ॥ २१ ॥

जिस पुरुषके जन्म समयमें शुक्र बृहस्पति एक ही घरमें बैठे होवें वो पुरुष विद्या करके युक्त पण्डित और पण्डितोंसे विवाद करने वाला पुत्र मित्र और धन के सुखसे संयुक्त होता है ॥ १९ ॥ जिस पुरुष के जन्म समय में शनिसे युक्त बृहस्पति एक ही घरमें बैठे होवें वो पुरुष शूरवीर, धनवान्, गामका या पुरका स्वामी, बड़ा यशस्वी, कलाओं में कुशल, स्त्री के सम्बन्ध से मनोरथोंको प्राप्त होने वाला होताहै ॥ २० ॥ जिस पुरुष के जन्म समय में शनिसे युक्त मङ्गल एक घर में बैठते हैं वो पुरुष कारीगरीके काम में और लेख्यविधिमें कौतुकयुक्त बड़ा दारुण संग्राम करनेवाला और पत्थरके काम करनेमें कुशल होताहै ॥२१॥ इति जातका० द्विग्रहयोग कथने पञ्चदशोऽध्यायः ॥

अथ त्रिग्रहयोगाध्यायः ॥

शूराश्च यंत्राश्वविधिप्रवीणास्त्रपाकृपाभ्यां सुतरां विहीनाः ॥
नक्षत्रनाथक्षितिपुत्रमित्रैरेकत्र संस्थैर्मनुजा भवन्ति ॥ १ ॥
भवेन्महौजा नृपकार्यकर्त्ता वार्त्ताविधौ शास्त्रकलासु दक्षः ॥
दिवामणिज्ञामृतरश्मिसंस्थैः प्राणी भवेदेकगृहप्रयातैः ॥२॥

जिन मनुष्यों के जन्मसमयमें चंद्रमा सूर्य और मङ्गल तीनों ग्रह एकही घरमें बैठे होवें वे पुरुष बड़े शूरवीर, यंत्रविद्यामें और घोड़ों की विद्या (चाबोखरी) में बड़े प्रवीण, लज्जासे और दयासे सर्वथा विहीन होते हैं ॥ १ ॥ जिस मनुष्यके जन्म समयमें सूर्य बुध और चन्द्रमा तीनों ग्रह एकही राशिस्थित होवें वो पुरुष बड़ा

पुरुषार्थी, राजा के काम का करने वाला, जीविका करने की विधिमें और शास्त्र कलाओंमें दक्ष (चतुर) होता है ॥ २ ॥

सेवाविधिज्ञश्च विदेशगामी प्राज्ञः प्रवीणश्चपलोतिधूर्त्तः ॥
नरो भवेच्चन्द्रसुरेन्द्रवन्द्यप्रद्योतनानां मिलने प्रसूतौ ॥ ३ ॥
परस्वहर्त्ता व्यसनानुरक्तो विमुक्तसत्कर्मरुचिर्नरः स्यात ॥
मृगाङ्कपङ्केरुहबन्धुशुक्राश्चैकत्र भावे यदि संयुताः स्युः ॥ ४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मसमय में चन्द्रमा बृहस्पति और सूर्य ए तीनों ग्रह एक घर में बैठे होवें तब सेवाविधिका जाननेवाला, विदेश को जानेवाला, बड़ा बुद्धिमान, बड़ा चतुर बड़ा चपल और अत्यन्त धूर्त होताहै ॥३॥ जिसके जन्मसमयमें चंद्रमा सूर्य और शुक्र यह तीनों ग्रह एक ही घरमें बैठेहोवें तब वो मनुष्य दूसरेके धनका हरनेवाला, अनेक व्यसनों में अनुराग रखनेवाला और सत्कर्म करने में रुचिरहित होता है ॥ ४ ॥

परेङ्गितज्ञो विधनश्च मन्दोधातुक्रियायां निरतो नितान्तम् ॥
व्यर्थप्रयासप्रकरो नरः स्यात्क्षेत्रे यदैकत्र रवीन्दुमन्दाः ॥ ५ ॥
ख्यातो भवेन्मन्त्रविधिप्रवीणः सुसाहसो निष्ठुरचित्तवृत्तिः ॥
लज्जार्थजायात्मजमित्रयुक्तो युक्तैर्बुधार्कक्षितिजैर्नरः स्यात् ॥६॥

जिस मनुष्यके जन्मसमयमें सूर्य चन्द्रमा शनि ए तीनोंग्रह एकत्र होकर एक घरमें बैठे होवें तब वो मनुष्य दूसरे के मनकी बातका जाननेवाला, धनसे रहित, बड़ा मन्द, धातुक्रियामें निपुण और निरंतर व्यर्थ परिश्रम करनेवाला होताहैं ॥५॥ जिस मनुष्यके जन्मसमयमें बुध शनि मङ्गल ए तीनों ग्रह एकत्रित होकर बैठते हैं वो मनुष्य सर्वत्र विख्यात, मंत्र विधिमें बड़ा प्रवीण, बड़ा साहसी, निष्ठुर चित्तवाला और लज्जा स्त्री पुत्र धन और मित्र इन सबों करके सम्पन्न होता है ॥ ६ ॥

वक्तार्थयुक्तः क्षितिपालमन्त्री सेनापतिर्नीतिविधानदक्षः ॥
महामनाः सत्यवचोविलासः सूर्यारजीवैः सहितैर्नरः स्यात् ॥७॥
भाग्यान्वितोत्यन्तमतिर्विनीतः कुलीनवान् शीलविराजमानः ॥
स्यादल्पजल्पश्चतुरोनरश्चेद्भौमास्फुजित्सूर्ययुतिः प्रसूतौ ॥ ८ ॥

जिसके जन्मसमयमें सूर्य मङ्गल और बृहस्पति ये तीनों एक घरमें बैठतेहैं वो पुरुष वक्ता, धनसे संपन्न, राजाका मंत्री, सेनाका पालन करनेवाला, नीति शास्त्रके विधानमें बड़ा चतुर, बड़े मनका और सत्य वचनका कहनेवाला होता है ॥७॥ जिसके जन्मसमयमें सूर्य मङ्गल शुक्र यह तीनों ग्रह एक घरमें बैठतेहैं वो मनुष्य बड़ा भाग्यवान्, बड़ा बुद्धिवान्, अत्यन्त नम्र, बड़े कुलमें जन्म लेनेवाला, शीलसे विराजमान, थोड़ा बोलनेवाला और बड़ा चतुर होताहै ॥ ८ ॥

धनेन हीनः कलहान्वितश्च त्यागी वियोगी पितृबन्धुवर्गैः ॥
विवेकहीनो मनुजः प्रसूतौ योगो यदार्कारशनैश्चराणाम् ॥९॥
विचक्षणः शास्त्रकलाकलापे सुसंग्रहार्थः प्रबलः सुशीलः ॥
दिवाकरज्ञामरपूजितानां योगे भवेन्ना नयनामयार्त्तः ॥ १० ॥

जिसके जन्म समयमें सूर्य मङ्गल शनि इन तीनों ग्रहोंका एक घरमें योग होताहै वो मनुष्य धनसे हीन, कलहसे युक्त, दान करनेवाला, पिता और बंधुवर्गसे रहित और विवेकसे रहित होता है ॥९॥ जिस मनुष्यके जन्म समयमें सूर्य बुध और बृहस्पति इन तीनोंका एक घरमें योग होता है वो मनुष्य शास्त्रकलाओंके समूहमें बड़ा चतुर, धनका संग्रह करने वाला, बड़ा बलवान्, सुशील और नेत्रोंके रोगसे पीड़ित होता है ॥ १० ॥

साधुद्वेषी निन्दितोऽत्यन्ततप्तः कान्ताहेतोर्मानवः संयुताश्चेत् ॥
दैत्यामात्यादित्यसौम्याख्यखेटा वाचालः स्यादन्यदेशाटनश्च ॥११॥
तिरस्कृतः स्वीयजनैश्च हीनोऽप्यन्यैर्महाद्वेषकरो नरः स्यात ॥
पण्ढाकृतिर्हीनतरानुयातश्चादित्यमन्देन्दुसुतैः समेतैः ॥ १२ ॥

जिस मनुष्य के जन्म समयमें शुक्र सूर्य बुध इन तीनोंका एकही घरमें योग होताहै वो मनुष्य साधु मनुष्योंसे द्वेष करनेवाला, सर्वत्र निंदित, स्त्रीके हेतुसे अत्यन्त दुःखी और बड़ा कुत्सित वाणी बोलनेवाला और देशांतरोंमें फिरनेवाला होता है॥११॥जिस मनुष्यके जन्मसमयमें आदित्य मङ्गल और बुध यह तीनों ग्रह एक घरमें बैठतेहैं वो मनुष्य अपने कुलके मनुष्योंसे तिरस्कार पानेवाला, अपनेओं को छोड़कर इकला रहनेवाला, सबोंसे द्वेष करने वाला, नपुंसककीसी जिसकी आकृती और नीच मनुष्योंके संग रहनेवाला होता है ॥ १२ ॥

अप्रगल्भवचनो धनहीनोप्याश्रितोवनिपतेर्मनुजः स्यात् ॥
शूरताप्रियतरः परकार्ये सादरोर्कगुरुभार्गवयोगे ॥ १३ ॥
नृपप्रियो मित्रकलत्रपुत्रैर्नित्यं युतः कान्तवपुर्नरः स्यात् ॥
शनैश्चराचार्यदिवामणीनां योगे सुनीत्या व्ययकृत्प्रगल्भः॥१४॥

जिस मनुष्यके जन्म समयमें सूर्य वृहस्पति शुक्र वह तीनों ग्रह एक घरमें वैठते हैं वो मनुष्य अप्रौढ वचन वोलनेवाला, धनसे हीन होकरभी राजाका आश्रित, शूरवीरताके कारण अत्यन्त प्रिय, और दूसरेके कामोंको आदरसे करनेवाला होता है ॥१३॥जिस मनुष्यके जन्मसमयमें शनैश्चर गुरु सूर्य इन तीनों ग्रहोंका एक घरमें योग होताहै वो मनुष्य राजाका प्रिय, मित्र स्त्री पुत्र इनसे युक्त, वड़ा रूपवान् नीतिसे खरच करनेवाला और वड़ा प्रगल्भ होता है ॥ १४ ॥

रिपुभयरियुक्तः सत्कथाकाव्यमुक्तः
कुचरितरुचिरेवात्यन्तकण्डूयनार्तः ॥
निजजनधनहीनो मानवः सर्वदास्या
त्कविरविरविजानां संयुतिश्चेत्प्रसूतौ ॥ १५॥
भवन्ति दीना धनधान्यहीना नानाविधानात्मजनापमानाः
स्युर्मानवा हीनजनानुयाताश्चेत्संयुताः क्षोणिसुतेन्दुसौम्याः॥१६॥

जिस मनुष्यके जन्म समयमें शनि शुक्र सूर्य तीनों ग्रह एक घरमें योग कर वैठते हैं वो मनुष्य सवसमय शत्रुभयसे युक्त, सत्कथा और सत्काव्योंमें मन रखनेवाला; खोटे वरतावमें रुचि रखनेवाला, खुजली या दाद के रोग से पीड़ित, और अपने कुटुम्बी और धन इनसे रहित होता है ॥ १५ ॥ जिनके जन्म समयमें मङ्गल चन्द्रमा बुध इन तीनों ग्रहोंका योग होताहै वे मनुष्य वड़े दीन, धनधान्यसे हीन, अनेक तरहके अपने जनांसे अपमान पानेवाले और नीचोंका संग करनेवाले होते हैं ॥ १६ ॥

व्रणाङ्कितः कोपयुतश्च हर्त्ता कान्तारतः कान्तवपुर्नरः स्यात् ॥
प्रसूतिकाले मिलिता भवन्ति चेदारनोहारकरामरेज्याः ॥ १७॥
दुःशीलकान्तापतिरस्थिरः स्याद्दुःशीलकान्तातनुजोल्पशीलः॥
नरो भवेज्जन्मनिचैकभावा भौमास्फुजिच्चन्द्रमसो यदि स्युः॥१८॥

जिसके जन्मसमयमें मङ्गल चंद्रमा और बृहस्पति यह तीनों एक घर में स्थित होतेहैं वो पुरुष शरीरमें घावोंके चिन्हसे युक्त, क्रोध करनेवाला, वड़ा घोर, बड़ा कामी और सुन्दरस्वरूप होताहै ॥ १७ ॥ जिस पुरुषके जन्म समयमें मङ्गल शुक्र चन्द्रमा एक घरमें बैठे होतेहैं वो पुरुष दुःशील स्त्रीका पति, स्थिरता रहित, दुष्ट स्त्री पुत्र युक्त और शीलसे रहित होता है ॥ १८ ॥

शैशवे हि जननीमृतिप्रदः सर्वदापि कलहान्वितो भवेत् ॥
संभवे रविभवेन्दुभूसुताः संयुता यदि नरोऽतिगर्हितः ॥ १९ ॥
विख्यातकीर्तिर्मतिमान्महौजाविचित्रमित्रो बहुभाग्ययुक्तः ॥
सद्वृत्तविद्योऽतितरां नरः स्यादेकत्रसंस्थैर्गुरुसोमसौम्यैः ॥ २० ॥

जिसके जन्मसमयमें शनि चन्द्र मङ्गल ये तीनों ग्रह एक स्थानमें स्थित होतेहैं वो पुरुष बालकपनमें माताको मृत्यु देनेवाला, सब समय कलह युक्त और अत्यन्त निंदित होताहै ॥ १९ ॥ जिस पुरुषके जन्म समय में बृहस्पति चन्द्रमा और बुध इनका एक घरमें योग होता है वो पुरुष जगतमें विख्यात जिसकी कीर्ति, वड़ा बुद्धिमान्, वड़ा पुरुषार्थी, अनेक तरहके मित्रोंसे युक्त, बड़ा भाग्यवान और उत्तम बरताव और विद्यासे युक्त होताहै ॥ २० ॥

विद्याप्रवीणोपि च नीचवृत्तः स्पर्धाऽभिवृद्ध्या च रुचिर्विशेषात् ॥
स्यादर्थलुब्धो हि नरः प्रसूतौ मृगाङ्कसौम्यास्फुजितांयुतिश्चेत् ॥ २१
कलाकलापामलबुद्धिशाली ख्यातः क्षितीशाभिमतोनितान्तम् ॥
नरः पुनर्ग्रामपतिर्विनीतो बुधेन्दुमन्दाः सहिता यदि स्युः ॥ २२ ॥

जिसके जन्मसमयमें चन्द्रमा बुध शुक्र इन तीनों ग्रहोंका एकत्र योग होताहै वो पुरुष विद्यामें कुशल होने पर भी नीच बरताव से युक्त, सबोंसे स्पर्द्धा करने में रुचि रखनेवाला और अत्यन्त धनका लोभी होताहै ॥ २१ ॥ जिसके जन्म समय में बुध चन्द्रमा शनि यह तीनों ग्रह एक घरमें बैठे होवें वो पुरुष अनेक कलाओंके जाननेसे निर्मल, बुद्धिसे युक्त, सब जगे विख्यात, राजा का अत्यन्त प्रिय, ग्रामका पालन करने वाला और नम्रता युक्त होता है ॥ २२ ॥

भाग्यभाग्भवति मानवः सदा चारुकीर्तिमतिवृत्तिसंयुतः ॥
भार्गवेन्दुसुरराजपूजिताः संयुता यदि भवन्ति संभवे ॥ २३ ॥
विचक्षणः क्षोणिपतिप्रियश्च सन्मन्त्रशास्त्राधिकृतो नितान्तम् ॥
भवेत्सवेषो मनुजो महौजाः संयुक्तमन्देन्दुसुरेन्द्रवन्द्यैः ॥ २४ ॥

जिसके जन्मसमयमें शुक्र चन्द्रमा बृहस्पति वह तीनों एकजगे बैठे होवें वो पुरुष बड़ा भाग्यवान्, सदा उत्तम कीर्ति बुद्धि और वर्तने से युक्त होताहै ॥ २३ ॥ जिस पुरुष के जन्म समयमें शनि चन्द्रमा बृहस्पति तीनों एक घरमें बैंठे होवें वो पुरुष बड़ा चतुर, राजाका प्रिय, उत्तम मन्त्रशास्त्रमें अधिकार रखने वाला, सब समय शृङ्गार करके शरीरका रखने वाला और पुरुषार्थी होता है ॥ २४ ॥

पुरोधसो वेदविदां वरेण्याः स्युः प्राणिनः पुण्यपरायणाश्च ॥
सत्पुस्तकालोकनलेखनेच्छाःकवीन्दुमन्दामिलिता यदि स्युः॥२५
क्ष्मापालकः स्वीयकुले नरः स्यात्कवित्वसङ्गीतकलाप्रवीणः ॥
परार्थसंसाधकतैकचित्तो वाचस्पतिज्ञावनिसूनुयोगे ॥ २६ ॥

जिसके जन्म समय में शुक्र चंद्रमा शनि एक घरमें बैंठ होवें तब वे पुरुष पुरोहित, वेद के जानने वालेओं में श्रेष्ठ, पुण्य करने वाले और उत्तम पुंस्तकों के देखने लिखने में इच्छा रखने वाले होते हैं ॥ २५ ॥ जिस पुरुष के जन्म समयमें बृहस्पति बुध मङ्गल तीनों ग्रहोंका एक घरमें योग होवे वो अपने कुलमें पृथिवी का पालन करनेवाला, कविता करने में और सङ्गीत विद्याकी कलाओं में कुशल और परोपकार करने में मन रखनेवाला होताहै ॥ २६ ॥

वित्तान्वितः क्षीणकलेवरश्च वाचालताचञ्चलतासमेतः ॥
धृष्टः सदोत्साहपरो नरः स्यादेकत्र यातैः कविभौमसौम्यैः॥२७॥
कुलोचनः क्षीणतनुर्वनस्थः प्रेष्यः प्रवासी बहुहास्ययुक्तः ॥
स्यान्नो सहिष्णुश्च नरोपराधी मन्दारसौम्यैः सहितैः प्रसूतौ॥२८॥

जिसके जन्म समयमें शुक्र मङ्गल बुध एक घरमें बैठते हैं वो पुरुष धन संपन्न, शरीरसे दुर्वल, बड़ा वाचाल, चंचलतासे युक्त, बड़ा ढीठ और सदा उत्साहको मनमें

रखने वाला होता है ॥ २७ ॥ जिसके जन्म समयमें शनि मङ्गल बुध तीनों ग्रह एक घरमें बैठते हैं वो मनुष्य बुरे जिसके नेत्र, दुर्बल जिसका शरीर, वनमें रहने वाला, दूतपनेका काम करनेवाला, परदेशमें रहनेवाला, अत्यन्त हासी करनेवाला, सहन सीलतारहित और अपराध करनेवाला होताहै ॥ २८॥

सत्पुत्रदारादिसुखैरुपेतः क्ष्मापालमान्यः सुजनानुयातः ॥
वाचस्पतिक्षोणिसुतास्फुजिद्भिः क्षेत्रे यदैकत्रगतैर्नरः स्यात ॥२९॥
नृपात्समानं कृपया विहीनं कृशं कुवृत्तं गतमित्रसख्यम् ॥
जन्यां च शान्याङ्गिरसावनीजाः संयोगभाजो मनुजं प्रकुर्युः ३०॥

जिसके जन्मसमयमें बृहस्पति मङ्गल शुक्र तीनों एक घरमें बैठे होय वो मनुष्य सत्पुत्र स्त्री आदिकोंके सुखसे संपन्न,राजाको मान्य, और भले पुरुषोंके संग रहने वाला होताहै॥२९॥जिसके जन्मसमयमें शनि बृहस्पति मङ्गल तीनों एक घरमें होवें तब राजासे मान पानेवालाः दयासे रहित, दुर्बल शरीर, कुत्सित बरतावसे बरतने वाला और मित्रोंसे मित्रता रहित होता है ॥ ३० ॥

वासो विदेशे जननो त्वनार्या भार्या तथैवोपहतिः सुखानाम् ॥
दैत्येन्द्रपूज्यावनिजार्कजानां योगे भवेज्जन्म नरस्य यस्य ॥३१॥
नृपानुकम्प्यो बहुगीतकीर्तिः प्रसन्नमूर्तिर्विजितारिवर्गः ॥
सौम्यामरेज्यस्फुजितांप्रसूतौ चेत्संयुतिः सत्त्वपरोनरः स्यात् ॥३२॥

जिसके जन्मसमयमें शुक्र मङ्गल शनि तीनों एक घरमें बैठे होवें वो मनुष्य परदेशमें रहनेवाला, दुष्ट माता और दुष्ट भार्यासे युक्त और सब समय दुःखी होताहै ॥३१॥जिसके जन्मसमयमें बुध बृहस्पति शुक्र एक घरमें बैठे होवें तौ वह मनुष्य राजाका कृपापात्र, विख्यात जिसकी कीर्ति, प्रसन्नमूर्तिसे रहनेवाला, शत्रुमंडलको जीतनेवाला और बड़ा पराक्रमी होता है ३२ ॥

स्थानार्थसद्भवसंयुतः स्यादनल्पजल्पोधृतिमान्सुवृत्तः ॥
शनैश्चराचार्यशशाङ्कपुत्राः क्षेत्रे यदैकत्र गता भवन्ति ॥३३॥
साधुशीलरहितोनृतवक्तानल्पजल्पनरुचिः खलु धूर्त्तः ॥
दूरयाननिरतश्च कलाज्ञो भार्गवज्ञशनिसंयुतिजन्मा ॥ ३४ ॥

जिसके जन्मसमयमें शनैश्चर बृहस्पति और बुध तीनों ग्रह एक घरमें बैठे होवें तौ वह मनुष्य घर धन उत्तम वैभवोंसे युक्त, बहुत बोलनेवाला, धीरजयुक्त और शुभ बरतावसे रहनेवाला होताहै ॥३३॥ जिसके जन्म सययमें शुक्र बुधशनि तीनों एक स्थानमें बैठे होवें वो मनुष्य साधुओंके स्वभावसे रहित, झूठ बोलने वाला, बहुत बोलनेमें रुचि रखनेवाला, बड़ा धूर्त, दूर जानेमें निरत और कलाओंका जाननेवाला होता है ॥ ३४ ॥

नीचान्वये यद्यपि जातजन्मा नरः सुकीर्तिः पृथिवीपतिःस्यात् ॥
सद्वृत्तिशाली परिसूतिकाले मन्देज्यशुक्रा मिलिता यदि स्युः३५
पापान्वित शीतरुचौ जनन्या नून भवेन्नैधनमामनन्ति ॥
तादृग्दिनेशः पितृनाशकर्ता मिश्रो विमिश्रं फलमत्र कल्प्यम्३६॥

जिस मनुष्यके जन्मसमयमें शनि बृहस्पति शुक्र तीनों एक घरमें बैठे होंय वो मनुष्य जो नीच कुलमें भी जन्मा होवे तबभी कीर्तियुक्त, पृथिवी का पति और उत्तम वृत्ति (जीविका) करनेवाला होताहै ॥ ३५ ॥ जिसके जन्म समयमें यदि चन्द्रमा पापग्रहयुक्त होवे तब उस पुरुषकी माताका मरण होता है ऐसे आचार्यलोग कहते हैं और जिसके सूर्य पापग्रहयुक्त होवें उस पुरुषके पिताका मरण होता है और चन्द्रमा सूर्य दोनों पापयुक्त होवें तब दोनोंका मरण होता है अथवा पापग्रह और शुभग्रह दोनोंसे युक्त सूर्य चन्द्रमा होवे तब दोनों माता पिताकेतांई शुभाशुभ फल देनेवाला होताहै ॥ ३६ ॥

शुभान्वितो जन्मनि शीतरश्मिर्यशोर्थभूकीर्तिविवृद्धिलब्धिम् ॥
करोति जातं सकलप्रदीपं श्रेष्ठप्रतिष्ठं नृपगौरवेण ।३७॥
एकालये चेत्खलखेचराणां त्रयं करोत्येव नरं कुरूपम् ॥
दारिद्र्यदुःखैः परितप्तदेहं कदापि गेहं न समाश्रयेत्सः । ३८॥

जिसके जन्मसमयमें चन्द्रमा शुभग्रहसेही केवल युक्त होताहै उस पुरुषको यश धन पृथिवी और यशकी वृद्धि करताहै और वो पुरुष अपने कुलका दीपक, श्रेष्ठ पुरुषोंमें प्रतिष्ठा पानेवाला और राजासे महत्व पानेवाला होता है ॥ ३७ ॥ यदि तीन पापग्रह एक स्थानमें बैठे होवें तब उस पुरुषको कुरूपयुक्त करते हैं और उस पुरुषके देहको दरिद्रतासे और दुःखोंसे तापित करते हैं और वो पुरुष कभी भी

घरमें नहीं रहताहै ॥ ३८ ॥ इति जातकाभरणे त्रिग्रहयोगाध्याये मार्जनीटीकायां वनमालिचतुर्वेदिकृतायां भाषानुवादितायां षोडशोऽध्यायः समाप्तः ॥ १६ ॥

एषां योगानां न्यासः

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८
र	र	र	र	र	र	र	र	र	र	र	र	र	र	र	चं	चं	चं
चं	चं	चं	चं	चं	बु	मं	मं	मं	बु	शु	बु	शु	गु	शु	मं	मं	मं
मं	बु	बृ	शु	श	मं	बृ	शु	श	गु	बु	श	गु	शु	श	बु	बृ	शु
१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६
चं	चं	चं	चं	चं	चं	चं	मं	मं	मं	मं	मं	मं	बु	बु	बु	बृ	०
मं	बु	शु	बु	बृ	गु	शु	बृ	बु	बु	बृ	बृ	शु	बृ	बृ	शु	शु	०
श	गु	बु	श	शु	श	श	बृ	शु	श	शु	श	श	शु	श	श	श	०

—:०:—

॥ अथ राजयोगा लिख्यन्ते ॥

सद्विलासकलगर्जनशीलः शुण्डिकावलयकृत्प्रतिवेलम् ॥
अस्तु वः कलितभालतलेन्दुर्मङ्गलाय किल मङ्गलमूर्तिः ॥१॥
भाग्यादिभावप्रतिपादितंयद्भाग्यं भवेत्तत्खलु राजयोगैः॥
तान्विस्तरेण प्रवदामि सम्यक् तैःसार्थकं जन्म यतो नराणाम् ॥२॥

अब प्रथम यहां गणेशजीको नमस्कार करते हैं ॥ कि उत्तम क्रीड़ा करने में मनोहर गर्जना करनेका जिनका स्वभाव और सब समय अपनी शूण्डाको गोलमण्डल करके घुमाने वाले, मस्तकमें अर्धचन्द्र जिनके विराजमान ऐसे मंगलमूर्ति श्री गणेश जी महाराज सदा तुम्हारे मङ्गल करनेवाले होओ ॥१॥ जो भाग्यसे आदि लेकर जेभाव प्रतिपादन कियेहैं वो भाग्य निश्चय राजयोगोंके होनेसे होताहै,जिनके होनेसे मनुष्योंका जन्म सार्थक (सफल) गिना जाताहै,अबमैं उन राजयोगों को विस्तार से भली प्रकार से कहता हूं ॥ २ ॥

नभश्चराः पञ्च निजोच्चसंस्था यस्य प्रसूतौ स तु सार्वभौमः॥
त्रयः स्वतुंगादिगताः स राजात्मजोऽन्यस्य सुतोऽत्रमन्त्री॥३॥
तुंगोपगा यस्य चतुर्नभोगा महापगासंतरणे बलानाम् ॥
दन्तावलानां किल सेतुबन्धाः कीर्तिप्रबन्धावसुधातले ते ॥ ४ ॥

जिस मनुष्यके जन्म समयमें पांच ग्रह अपने उच्चके होकर स्थित होते हैं वो मनुष्य समग्र भूमण्डल का चक्रवर्ती राजा होताहै और जिस मनुष्यके तीन ग्रह उच्चके होकर बैठते हैं वो मनुष्य चाहे राजकुल में जन्मा होवै चाहे किसी अन्यकुल में भी जन्माहोवे तबभी वो मनुष्य राजा अथवा राजाकामंत्री अवश्यही होताहै॥४॥ जिस मनुष्य की जन्मकुण्डलीमें चार ग्रह उच्चके होकर बैठे होवें वो मनुष्य बड़ी नदियोंके सेतुको बांधनेमें समर्थ होवे और बड़े मत्त हाथीकी सेनासे युक्त होवे और उस मनुष्यकी कीर्तिके भूमण्डलमें निश्चय सेतु बंधै ॥ ४ ॥

स्वोच्चे सूर्यशनीज्यभूमितनयैर्यद्वा त्रिभिर्लग्नगै
स्तेषामन्यतमे हि षोडशमिताः श्रीराजयोगाः स्मृताः ॥
तन्मध्ये निजतुंगगे ग्रहयुगे यद्वैकखेटे विधौ
स्वर्क्षे तुंगसमाश्रितैकखचरे लग्ने परे षोडश ॥ ५ ॥
वर्गोत्तमेमृतकरे यदि वा शरीरे मवीक्षिते च चतुरादिभिरिन्दुहीनैः॥
द्वाविंशतिप्रमितयःखलु संभवन्ति योगो समुद्रवलयक्षितिपालकानाम्॥६

जिसके जन्मकुण्डलीमें सूर्य शनि बृहस्पति और मङ्गल अपने अपने उच्चके होकर बैठेहोवें अथवा इन चारोंमेंसे कोईसा भी ग्रह बलीहोकर उच्चका लग्नमें बैठा होवे अथवा तीनग्रह बलीहोकर लग्नमें बैठे होवें इस प्रकार षोड़श १६ राजयोग होतेहैं उनमेंसे दोग्रह उच्चके होकर लग्नमें बैठेहोवें अथवा एकग्रह उच्चका होकरबैठे या चन्द्रमा अपनेक्षेत्र(४) का होवे अथवा उच्चका होवे और उसकेसाथ कोई और भी एकदो ग्रह बैठेहोवें इस प्रकार शोडश राजयोग होते हैं ॥५॥ अब और भी कहतेहैं कि चन्द्रमा अपने वर्गोत्तम का अथवा लग्नमें होवे और उसे चन्द्रमाके विना चार ग्रह देखतेहोवें अथवा चन्द्रमाको चारग्रह देखतेहोवें इस प्रकारसे समुद्रमेखला भूपति राजाके बाईस राजयोग होते हैं ॥ ६ ॥

उदग्वसिष्ठोभृगुजश्च पश्चात्प्राग्वाक्पतिर्दक्षिणतस्त्वगस्त्यः ।
प्रसूतिकाले स भवेदिलाया नाथो हि पाथोनिधिमेखलायाः ॥७॥
स्वोच्चे मूर्तिगतेऽमृतांशुतनये नक्रे सवक्रे शनौ
चापे वागधिपेन्दुभार्गवयुते स्याज्जन्म भूमीपतः ॥
स्वस्थाने ननुयस्य भूमितुरगोमत्तेभमालामिल
त्सेनान्दोलितभूमिगोलकलनन्दिग्दन्तिनः कुर्वते ॥८॥

उत्तर में स्थित वशिष्ठ और पश्चिम में स्थित शुक्र, पूर्वमें स्थित बृहस्पति और दक्षिण में स्थित अगस्त्य होवे ऐसे योगमें जिसका जन्म होवे वो पुरुष समुद्रमेखला भूमका पालन करनेवाला सार्व भौमराजा, होता है ॥ ७ ॥ अपने उच्चका बुध जिसके लग्नमें होवे और मकरके मङ्गल शनि होवे, धनका बृहस्पति चन्द्र शुक्र से युक्त होवे इस योगमें जिसका जन्म हुआ होवे तौ भी राजयोग होताहै जिसके जन्म समयमें यह योग होताहै उस पुरुषके दरवाजेपर घोड़े होतेहैं और मत्तहाथिओं के मण्डल युक्त सेनासे व्याप्त उसका मन्दिर होताहै और वो दिग्गजसदृश हाथियों के ऊपर बैठनेवाला राजा होता है ॥ ८ ॥

दिनाधिराजेमृगराजसंस्थे नक्रे सवक्रे कलशेऽर्कसूना ।।
पाठीनलग्ने शशिना समेतं महीपतेर्जन्म महौजसः स्यात॥९॥
महीसुते मेषगते तनुस्थे बृहस्पतौ वा तनुगे स्वतङ्गे ॥
योगद्वयेस्मिन्नृपती भवेतां जितारिपक्षौ नृपनीतदक्षा ॥ १० ॥

जिस मनुष्य की कुण्डली में सूर्य सिंहका, मकर का मङ्गल कुम्भका शनि और मीनका चन्द्रमा होवे इस योगमें जिसका जन्म होता है वो बड़ा प्रतापी राजा होता है॥९॥ जिस मनुष्य के जन्म समयमें मङ्गल मेषका होकर लग्नमें बैठा होवे अथवा बृहस्पति उच्चका होकर लग्नमें बैठा होवे इन दोनों योगों में जिसका जन्म हुआ है वो भी अपने शत्रुओं को जीतने वाला राजनीति में कुशल राजा होताहै ॥१०॥

वाचस्पतिः स्वोच्चगतो विलग्ने मेषे दिनेशः शनिशुक्रसौम्याः॥
लाभालयस्थाः किल भूमिपालं तं भूतलस्याभरणं गृणन्ति ॥११॥
मन्दो यदा नक्रविलग्नवर्ती मृगेन्द्रयुग्माजतुलाकुलीराः ॥
स्वस्वामियुक्ता जनयन्ति नाथं पाथोनिधिप्रान्तमहीतलस्य ॥१२॥

बृहस्पति अपने उच्चका होकर लग्नमें होवे मेषका सूर्य होवे शनि शुक्र बुध वह तीनों ग्रह लाभ (११) स्थानमें बैठे होवे वो मनुष्य भूमि के आभूषणके समान राजा होता है ॥ ११ ॥ शनि मकरका होकर लग्नमें स्थित होवे और सिंह मिथुन मेष तुला कर्क अपने अपने स्वामिओंसे युक्त होवे उसका अखिल समुद्र मेखला भूमिका राजा कहना चाहिये ॥ १२ ॥

द्वन्द्वे दैत्यगुरो निशाकरसुते मूर्तौ स्वतुङ्गे स्थिते
नक्रे वक्रशनैश्चरे च शफरे चन्द्रामरेज्यौ स्थितौ ॥
योगोयं प्रभवेत्प्रसूतिसमये यस्यावनीशोमहान्
वैरिव्रातमहोद्धतेभदलने पञ्चाननः केवलम् ॥ १३ ॥
सिंहोदयेर्कस्त्वजगो मृगाङ्कः शनैश्चरः कुम्भधरे सुरेज्यः ॥
धनुर्धरे चेन्मकरे महीजो राजाधिराजो मनुजो भवेत्सः ॥ १४ ॥

जिसके जन्म कुण्डलीमें मिथुनके तौ शुक्र होवे और बुध अपने उच्चका होकर लग्नमें बैठा होवे और मकर का वक्र शनैश्चर बैठा होवे और मीन राशिके होकर चन्द्रमा बृहस्पति बैठे होवें वो पुरुष अपने वैरीरूप अत्यंत उन्मत्त हाथियोंके मारने वाले सिंह के समान बड़ा प्रतापी चक्रवर्ती राजा होता है ॥१३॥ सूर्य सिंह लग्न में होवे, चन्द्रमा मेष लग्नमें होवे, शनि कुम्भका होवे, बृहस्पति धनका होकर बैठाहोवे और मङ्गल मकर का होकर बैठा होवे इस योग में जिसका जन्म हुआ होवे वो मनुष्य राजाधिराज होता है ॥ १४ ॥

मेषे गतो मूर्तिगतः प्रसूतौ बृहस्पतिश्चास्तगतः कलावान् ॥
रसातले व्योमगते सितश्चेन्महीपतिर्गीतदिगन्तकीर्तिः ॥१५॥
गुरुः कुलीरोपगतः प्रसूतौ स्माराम्बुखस्था भृगुमन्दभौमाः ॥
तद्यानकाले जलधेर्जलानि भेरीनिनादोच्छलनं प्रयान्ति ॥ १६ ॥

जिसके जन्म समयमें बृहस्पति मेषराशिका होकर लग्न में बैठा होवे, चन्द्रमा सप्तम घर में बैठा होवे अथवा चौथे घरमें चन्द्रमा होय और शुक्र दशम स्थानमें होवे वो पुरुष दिगंतपर्यंत विख्यात कीर्ति से युक्त राजा होवे ॥१५॥ बृहस्पति तौ जिसके कर्क राशिका होकर बैठा होवे और सप्तम चतुर्थ और दशम इन घरोंमें क्रमसे शुक्र शनि मङ्गल बैठे होवें वो पुरुष ऐसा प्रतापी होता है कि जिसके प्रयाण समय में भेरियोंके बजनेके शब्दसे समुद्रसे जल भी क्षोभ को प्राप्त होने लगते हैं अर्थात् उछलने लगते हैं ॥ १६ ॥

प्रसूतिकाले स्फुरदंशुजालः षड्वर्गशुद्धोदितेभ स्वभे वा ॥
तुङ्गे त्रिकोणे स नभश्चरेन्द्रो नरं प्रकुर्यात्खलु सार्वभौमम् ॥१७॥

षड्वर्गशुद्धौ खचरद्वयं चेद्यथोक्तरीत्या जनने नरस्य ॥
तस्याधिपत्यं खलु किन्नरेषु द्वीपान्तरे चात्र न किंधरायाम् ॥१८॥

जिस मनुष्यके जन्मसमय कुण्डलीमें पूर्ण चन्द्रमा षड्वर्गसे शुद्ध स्वक्षेत्र में होवे अथवा अपने उच्चका होकर किसी शुभ ग्रहके साथ बैंठा होवे या त्रिकोण ९।५में होवे तब उस पुरुषको सार्वभौम (समग्र भूमण्डलका चक्रवर्ती) राजा करता है ॥ १७ ॥ इसीतरह षड्वर्गसे शुद्ध दो ग्रह उक्तरीतिसे अर्थात् स्वक्षेत्री या उच्चके होकर नवम पञ्चम घरमें बैठे होवें उस मनुष्यका किन्नरों में और द्वीपांतरों में आधिपत्य होता है फिर पृथ्वीमें आधिपत्य होना क्या बड़ी बात है ॥ १८ ॥

तुङ्गत्रिकोणाद्यधिकारहीनैः षड्वर्गशुद्धैस्त्रिभिरेव मन्त्री ॥
राजाचतुर्भिः खलु सार्वभौमः पञ्चादिभिर्वाक्यतिनैकेन॥ १९॥
वृषे शशी लग्नगतोम्बुसप्तखस्था रवीज्यार्कसुता भवन्ति ॥
तद्दण्डयात्रा सुरजोन्धकाराद्दिनेऽपि रात्रिः कुरुते प्रवेशम् ॥ २० ॥

जिस मनुष्यके चाहै कोईभी ग्रह उच्चका न होवे और त्रिकोणका भी ग्रह कोई न होवै परन्तु जिसके केवल षड्वर्गसे शुद्ध तीन ग्रह होवें वो मनुष्य राजाका मन्त्री होताहै और जिसके षड्वर्गसे शुद्ध चार ग्रह होवें वो समग्र भूमण्डलका चक्रवर्ती राजा होताहै और जिसके केवल बृहस्पति षड्वर्ग शुद्ध होकर बली होकर पांच ग्रहोंके साथ बैठा होवे तौभी वह पुरुष राज्यका पालन करने वाला होताहै ॥ १९ ॥ जिसके जन्म समयमें चन्द्रमा वृषका होकर लग्नमें बैठा होवे और चतुर्थ सप्तम दशम इन स्थानोंमें सूर्य बृहस्पति शनि बैंठे होवें वो पुरुष ऐसा प्रतापी होताहै कि जिसके चढ़ाई करनेके समयमें हाथी घोडे आदिकी पावोंकी उडी रजसे दिनमेंभी रात्रि प्रवेश करती है ॥ २० ॥

गुर्विन्दुसौम्यास्फुजितश्च यस्य मूर्तित्रिधर्मायगता भवन्ति ॥
मृगेऽर्कसूनुस्तनुगोऽत्र नूनमेकातपत्रां स भुनक्ति धात्रीम् ॥२१॥
तुंगस्थितौ शुक्रबुधौ विलग्ने नक्रे च वक्रो धनुषीज्यचन्द्रौ ॥
प्रसूतिकाले किल तौ भवेतामाखण्डलौ भूमितलेऽपि संस्थौ ॥२२

जिस मनुष्यके जन्मकुण्डलीमें बृहस्पति चन्द्रमा बुध और शुक्र ए चारों ग्रह लग्न तृतीय नवम एकादश इन स्थानोंमें बैठे होवें और मकरका होकर शनि लग्नमें

होवे वो मनुष्य एकक्षत्रा भूमिका राज्य करनेवाला होता है ॥२१॥ जिस मनुष्यके जन्म समयमें उच्चके हुए शुक्र या बुध इनमेंसे कोई लग्नमें बैठा होवै और मकर का होकर मङ्गल बैठा होवे और धनके होकर बृहस्पति और चन्द्रमा बैठे होवें इन दोनों योगोंके होनेसे भूमिमें वर्तमान भी पुरुष इन्द्रके तुल्य होते हैं ॥ २२ ॥

कर्केऽर्कचन्द्रौ सुरराजमन्त्री शत्रस्थितश्चापि बुधः स्वतुङ्गे ॥
कश्चिद्बली लग्नतः सराजा राजाधिराजाभिधया समेतः ॥ २३ ॥
गुरुर्निजोच्चे यदि केन्द्रशाली राज्यालय दानवराजपूज्यः ॥
प्रसूतिकाले किल तस्य मुद्रा चतुः समुद्रावधिगामिनी स्यात् २४

कर्कराशिमें तौ सूर्य चन्द्रमा होवै बृहस्पति छठे स्थानमें बैठे और बुध अपने उच्चका होवे और कोई एक बली होकर ग्रह लग्नमें बैठा होवै वो पुरुष राजाधिराज संज्ञासे युक्त राजा होता है ॥ २३ ॥ बृहस्पति अपने उच्चका होकर यदि केन्द्र में बैठा होवे और राज्यस्थानमें (१०) यदि शुक्र बैठा होवे जिसके जन्म समय में यह योग होताहै वो चतुःसमुद्रपर्यंत भूमिका राजा होता है ॥ २४ ॥

देवाचार्यदिने श्वरौ क्रियगतौ मेषूरणे क्षोणिजः
पुण्ये भार्गवसौम्यशीतकिरणा यस्य प्रसूतौ स्थिताः॥
नूनं दिग्विजयप्रयाणसमये सैन्यैरिलाव्याकुला
चिन्तामुद्वहतीति का गतिरहो सर्वसहाख्यास्थितैः॥२५
नीचारातिलवोज्झिताबलयुताः सन्त्यक्तवैराः परं
स्फारस्कान्तिधरा भवन्ति खचराः संस्थो वृषे भार्गवः ॥
मातॄणां यदि मण्डले समुदितो जीवो भवेत्संभवे
देवैस्तुल्यपराक्रमः स च नृपः कोपप्रमृष्टाहितः ॥ २६ ॥

बृहस्पति सूर्य मेषके होकर बैठे होवें और लग्नसे दशम मङ्गल बैठा होवे और बुध शुक्र चन्द्रमा नवम घरमें बैठे होवे जिसके जन्मसमयमें यह योग होवे वो मनुष्य ऐसा प्रतापी होताहैकि जिसके प्रयाणसमयमें दिग्विजयार्थ सेनासे व्याकुल हुई भूमि चिन्ता करनेवाली होतीहै फिर भूमिगत उसके शत्रु चिंता करनेवाले होवें इसमें क्या कहनाहै॥२५॥नीचके शत्रुके नवांशके अस्तङ्गत इत्यादि दोषोंसे युक्तनो जिसके कोई ग्रह होवे नहीं और वृषराशिका शुक्र होवे और बृहस्पति उदय हुआ यदि

उच्चका बैठा होवे इस योगमें जिसने जन्म लिया है वो मनुष्य देवताओं के समान पराक्रमी और अपने क्रोधसे शत्रुमण्डलका पराभव करनेवालाहोताहै। २६॥

मेषोदयेऽर्कश्च गुरुः कुलीरे तुलाधरे मन्दविधू भवेताम् ॥
भवेन्नृपालोऽमलकीर्तिशाली भूपालमालापरिपालिताङ्गः ॥ २७॥

मीने निशाकरः पूर्णः सर्वग्रहनिरीक्षितः ॥
सार्वभौम नरं कुर्यादिन्द्रतुल्यपराक्रमम् ॥ २८ ॥

मेषमें सूर्य, कर्कका गुरु, तुलामें शनि और चन्द्रमा होवै इस योग में जिसका जन्म हुआहै वो मनुष्य अमल यशसे युक्त; राज मण्डलको हुकम देने वाला राजा होताहै ॥ २७ ॥ जिसके जन्मसमयमें पूर्ण चंद्रमा मीनराशिका होकर बैठा होवे और सब शुभ ग्रह उसे देखते होवे वो पुरुष इन्द्रके समान पराक्रमी राजा होताहै॥२८॥

धने दिनेशाद्भृगुजीवसौम्या नास्तं गता नो रिपुदृष्टियुक्ताः ॥
स्यात्सङ्कटं मत्कटकं रिपूणां यशः पटो दिग्वसनाय नूनम् ॥२९॥

सत्त्वोपेतः शुभजननपः पूर्णचन्द्रं प्रपश्ये-
द्यस्योत्पत्तौ भवति नृपतिर्निर्जितारातिपक्षः ॥
यात्राकाले गजहयरथात्यन्ततूर्यस्वनानां
ब्रह्माण्डं नोऽखिलमपि भवेत्पूरणार्थे समर्थम् ॥ ३० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकुण्डलीमें सूर्यसे द्वितीयस्थान में शुक्र बृहस्पति बुध बैठे होवे वे कैसे होवे कि अस्तङ्गत न होवे और शत्रुओंसे दृष्ट न होवे इसयोगमें जन्म लेनेवाले पुरुषका कटक (सेना) शत्रुओंको सङ्कटतुल्य होताहै और उस मनुष्यका यश दशोंदिशा नायकाओंका वस्त्र होताहै अर्थात् दशदिग्वर्ती उसका यश होता है ॥२९॥ जिस पुरुष का लग्नेश शुभग्रह वली होकर पूर्ण चंद्रमाको देखता होवे वो पुरुष शत्रुपक्षको जीतनेवाला राजा होताहै और उसके दिग्विजयार्थ यात्रा समयमें हाथी घोड़े रथ और नगाड़ेओं का शब्द अखिल ब्रह्माण्ड के पूरण करनेमें समर्थ होता है ॥ ३० ॥

स्वोच्चेषु वाचस्पतिसूर्यशुक्राः शिनीक्षितः शीतरुचिर्निजोच्चे ॥
यद्यानकाले रजसो वितानं रुणद्धि सूर्याश्वविलोचनानि ॥ ३१ ॥

नास्तं याताः सुतगृहगताः सौम्यशुक्रामरेज्या
नक्रे वक्रो रविरहितगो धर्मगो यस्य मन्दः ॥
यात्राकाले किल कमलिनीपुष्पसंकोचकर्त्ता
श्रीसूर्योपि प्रचलितदलोद्धूपधूलीकृतास्तः ॥ ३२ ॥

अपने उच्चके बृहस्पति सूर्य और शुक्र होवें और शनि जिसको देखता होवे ऐसा चन्द्रमा अपने उच्चका होकर स्थित होवे इस योगमें जिसका जन्म हुआ होवे वो पुरुष ऐसा प्रतापी होताहै कि जिसके दिग्जयार्थ यात्रासमय में रजका वितान (चांदनी) सूर्यके घोड़ेके नेत्रों को आच्छादन करने वाला होताहै अर्थात् अखिल जगतमें यश विख्यात होताहै ॥ ३१॥ अस्त न होवे ऐसे बुध शुक्र बृहस्पति पञ्चम स्थानमें जिसकी कुण्डलीमें होवें और मकरका मङ्गल होवे और छठे घरमें सूर्य होवे और नवम स्थानमें जिसके शनि होवें वो ऐसा प्रतापी राजा होताहै कि जिसके दिग्जयार्थ यात्राके समय उड़ी हुई सैन्यकी धूलीसे अस्त किया सूर्य होताहै॥३२॥

कन्यालग्नगते बुधे च विबुधामात्ये च जायास्थिते
भौमार्कौ सहजेऽर्कजोऽरिभवनेम्बुस्थे भृगोर्नन्दने ॥
योगेस्मिन्मनुजस्य यस्य जननं तच्छासनं सर्वदा
राजानः प्रवहन्त्यलं सुविमलामालम्बमौलिस्थले ॥ ३३॥

मीनोदये दानवराजपूज्यश्चन्द्रामरेज्यौ भवतः कुलीरे ॥
मेषेर्कभौमौ नृपतिः किलः स्यादाखण्डलेनापि तुलां प्रयाति॥३४

जिसकी कुण्डलीमें बुध तो कन्या राशिका होकर बैठा होवे और लग्नसे सप्तम बृहस्पति, तृतीय स्थानमें मङ्गल सूर्य और छठे घरमें शनि और चतुर्थ घरमें शुक्र बैठे होवें इस योगमें जिसका जन्म होताहै वो ऐसा प्रतापी पुरुष होताहै कि जिसके हुकुमको सम्पूर्ण भूमण्डलवर्ती राजा अपने शिरसे अङ्गीकार करते हैं ॥ ३३ ॥ जिसकी कुण्डलीमें मीन राशिमें शुक्र होवे चन्द्रमा बृहस्पति दोनों कर्कराशिके होवें और सूर्य मङ्गल मेषराशिके होवें इस योगमें जिसका जन्म हुआ है वो पुरुष इन्द्र के तुल्य प्रतापी राजा होताहै ॥ ३४ ॥

इति निगदितयोगैर्नीचवंशोद्भवोऽपि
सभवति पतिरुर्व्याः किं पुना राजसूनुः ॥
नरपतिकुलजातो वक्ष्यमाणैश्च योगै-
र्भवति नृपतिरेवं तत्समोऽन्यस्य सूनुः ॥ ३५ ॥

छायासुतोनक्र विलग्न यातश्चास्ते प्रसूतौ यदि पुष्पवन्तौ ॥
लाभे कुजे वै भृगुजोष्टमस्थः स्याद्भूपातिर्भूपकुलप्रसूतः॥३६॥

जो ये चौतीश योग कहे हैं इन योगोंमेंसे किसी योगमें जिसका जन्म हुआ होवे वो पुरुष यदि नीच कुलका भी जन्मा होवे तब भी वह भूमिका पति होताहै और यदि राजकुलोत्पन्न हुए मनुष्यका इन योगोंमें से किसी योगमें जन्म हुआ होवे वो पुरुष राजा होवे तब क्या कहना है और जे राजयोग अगाड़ी कहेंगे उन योगोंमें से किसी राजयोगमें यदि किसी राजकुलोत्पन्नका जन्म हुआ होवे तब तौ वह राजा होवे और यदि किसी हीन कुलोत्पन्न मनुष्य का इन वक्ष्यमाण योगोंमें किसी योगमें जन्म होवे तौ वहभी राजाओंके समानही ऐश्वर्यवान् होता है ॥३५॥ जिसके जन्म समयमें मकरका होकर शनि लग्नमें बैठाहोवे और सूर्य चन्द्रमा दोनों सप्तम स्थानमें स्थितहोवें और लग्न से ग्यारहवें घरमें मङ्गल होवे और अष्टम स्थान में स्थित शुक्र होवे इसयोगमें जिस मनुष्यका जन्म हुआ होवे वो मनुष्य राजकुलोत्पन्न राजा होता है ॥ ३६ ॥

सुरासुरेज्यो भवतश्चतुर्थेऽत्यर्थं समर्थः पृथिवीपतिः स्यात् ॥
कर्कस्थितो देवगुरुः सचन्द्रः काश्मीरदेशाधिपतिं करोति ॥३७॥
सुरासुरेज्यस्थितदृष्टिरिन्दुः स्वोच्चे स्थितो भूमिपतिं करोति ॥
विलोकयन्तः परिपूर्णचन्द्रं शुक्रज्ञजीवा जनयन्ति भूपम् ॥

शुक्र बृहस्पति जिस मनुष्यके लग्नसे चौथे घरमें बैठे होवें इस योगमें जिस मनुष्य का जन्महोवे यह अत्यन्त समर्थ राजा होताहै और जिस मनुष्यके बृहस्पति कर्कका होकर स्थित हुआ होवे और चन्द्रमा उसके सङ्ग बैठा होवे वह काश्मीरदेश में राज्य करता है ॥३७॥ शुक्र बृहस्पति दोनों जिसे देखते होवें ऐसा चन्द्रमा यदि अपने उच्च का होकर बैठा होवे अथवा पूर्ण चन्द्रमा को शुक्र बुध बृहस्पति देखते होवें इन दोनों योगोंमें जिसका जन्म होवे वोभी राजा होता है ॥ ३८ ॥

पश्येन्मृगाङ्कात्मजमिन्द्रमन्त्री विचित्रसंपन्नृपतिं करोति ॥
एकोपि खेटो यदि पञ्चमांशे प्रसूतिकाले कुरुते नृपालम् ॥३९॥
नक्षत्रनाथोऽप्यधिमित्रभागे शुक्रेण दृष्टो नृपतिं करोति ॥
स्वांशाधिमित्रांशगतोथवा स्याज्जीवेन दृष्टः कुरुते नृपालम्॥४०॥

जिसके जन्म समयमें बृहस्पति बुध को देखता होवे वो विचित्र संपतिवाला राजा होता है और एकभी ग्रह पंचमांशमें स्थित होवे तबभी राजा होता है ॥३९॥ जिसकी कुण्डली में अधिमित्र के घर में बैठे चन्द्रमा को शुक्र देखता होवे तो भी राजयोग होताहै अथवा जिस कुण्डली में चन्द्रमा अपने नवांशमें स्थित होवे अथवा अपने अधिमित्रके नवांशमें स्थित होवे और उसे बृहस्पति देखता होवे तब भी राज योग होता है ॥ ४० ॥

दिनाधिनाथोऽप्यधिमित्रभावे चन्द्रेण सम्यक् प्रविलोकितो वा ॥
स्यात्तस्कराणां निचये नृपालः सच्छीलशाली सुतरामुदारः॥४१॥
स्वोच्चे स्थितः सोमसुतः ससोमः कुर्यान्नरं मागधदेशराजम् ॥
कलाधिशाली बलवान्कलावान्करोति भूपं शुभधामसंस्थः॥४२॥

जिसकी कुंडलीमें सूर्य अधिमित्रके घर में बैठा होवे और उसे चन्द्रमा पूर्ण दृष्टि से देखता होवे वो मनुष्य तस्करोंके समुदायका राजा बड़ा शीलवान् और अत्यन्त उदार होता है ॥ ४१ ॥ अपने उच्चका स्थित बुधहोवे और चन्द्रमा उसके संग होवे इस योग में उत्पन्न हुआ मनुष्य अथवा जिसके पूर्ण चंद्रमा बली होकर शुभ ग्रह की राशि का होकर बैठा होवे वह मनुष्य राजा होता है ॥ ४२ ॥

जन्मेश्वरो जन्मविलग्नपो वा केन्द्रे बली नीचकुलेऽपि भूपम् ॥
कुर्यादुदारं सुतरां पवित्रं किमत्रचित्रं क्षितिपालपुत्रम् ॥ ४३ ॥
मेषे दिनेशः शशिना समेतो यस्य प्रसूतौ सतु भूपतिः स्यात्॥
कर्णाटकद्राविडकेरलान्ध्रदेशाधिपानामनुकूलवर्ती ॥ ४४ ॥

जन्मलग्नका स्वामी ग्रह अथवा राशिका स्वामी ग्रहबली होकर केन्द्र में बैठा होवे तब जो नीच कुलमेंभी उत्पन्न हुआ है वो भी उदार और अत्यंत पवित्र राजा होताहै यदि राजकुलोत्पन्न मनुष्य इन योगोंसे किसी योगमें उत्पन्न हुआ होवे वह यदि राजा होवेतो क्या आश्चर्य है ॥४३॥ जिसकी जन्म कुण्डलीमें सूर्य मेषमें होवे और चन्द्रमो साथहोवे जिसके जन्मसमयमें यहयोग होवे वो मनुष्य कर्नाटक द्रविड़ केरल और अंध्र इन देशोंके राजाओंके अनुकूल वरताव रखनेवाला होताहै ॥४४॥

स्वतुङ्गगेहोपगतौ सितेज्यौ केन्द्रत्रिकोणेषु गतौ भवेताम् ॥
प्रसूतिकाले कुरुते नृपालं नृपालजातं सचिवेन्द्रमान्यम् ॥ ४५॥

प्रसूतिकाले मदने धने च व्यये विलग्ने यदि सन्ति खेटाः॥
ते छत्रयोगं जनयन्ति तस्य प्राक्पुण्यपाकाभ्युदयो हि यस्य।४६

जिसके जन्मसमयमें शुक्र बृहस्पति अपने उच्चके अथवा स्वक्षेत्री होकर केन्द्र में अथवा त्रिकोणमें बैठे होवें तब जो राजकुलोत्पन्न होवे तौ मन्त्रिश्रेष्ठोंको मान्य राजा होताहै ॥ ४५ ॥ जिस पुरुषके जन्मसमयमें सप्तम द्वितीय और द्वादश इन स्थानोंमें और लग्नमें यदि ग्रह विद्यमान होवे तब वे ग्रह उस पुरुषके वास्ते छत्र योग को उत्पन्न करते हैं परन्तु जिसके पूर्व किये पुण्यके परिपाकका उदय होता है उसका यह योग होताहै ॥ ४६ ॥

पापो विलग्ने यदि यस्य सूतौ दृष्टो भवेच्चित्रशिखण्डिजेन॥
कर्के गुरुर्ब्राह्मणदेवभक्तः प्रासादवापीपुरकृन्नरः स्यात् ॥४७॥
एकोपि शस्तः शुभदः स्वतुंङ्गे केन्द्रे पतंगो बलवान्प्रदृष्टः ॥
सुतस्थितेनामरपूजितेन चेन्मानवो मानवनायकः स्यात्॥ ४८

जिसके जन्मसमयमें पापग्रह लग्नमें होवे और बृहस्पति उसे देखता होवे और बृहस्पति कर्कराशिमें स्थित होवे तौ वो पुरुष देवताओं का और ब्राह्मणों का भक्त होताहै और बड़े बड़े महल वापी और नगरोंका बनाने वाला होताहै ॥ ४७ ॥एक भी शुभ ग्रह यदि अपने उच्चका होकर बैठा होवे तब वह शुभ होताहै और केंद्र (१।४।७।१०) में बलवान् होकर सूर्य स्थित होवे उसे यदि पञ्चम घरमें बैठा बृहस्पित देखता होवे तब वो पुरुष मनुष्योंका पालन करनेवाला राजा होताहै ॥४८ ॥

मृगराशिं परित्यज्य स्थितो लग्ने बृहस्पतिः ॥
करोति पृथिवीनाथं मत्तेभपरिवारितम् ॥ ४९ ।
कलाकलापाधिकृताधिशाली चन्द्रो भवेज्जन्मनि केन्द्रवर्त्ती ॥
विवर्ज्य लग्नं कुरुते नृपाललीलाविलासाकलितारिवृन्दम् ॥५० ॥

जिस पुरुष के जन्मसमयमें मकरराशिको छोड़कर चाहै किसी राशिका होकर गुरु लग्नमें बैठा होवे तौ वह उस पुरुषको मत्त गजराजोंसे रक्षित राजाकरताहै॥४९। जिस पुरुषके जन्म समयमें पूर्ण चन्द्रमा लग्नको छोड़कर चाहै किसी केन्द्रमें होवे वो पुरुष राजलीलाके विलाससे शत्रुमंडलका पराजय करनेवाला होता है ॥५०॥

केन्द्रगः सुरगुरुः सशशाङ्को यस्य जन्मनि च भार्गवदृष्टः॥
भूपतिर्भवति सोतुलकीर्तिर्नीचगो न यदि कश्चिदिह स्यात्॥५१॥
धनस्थिताः सौम्यसितामरेज्या मन्दारिचन्द्रा यदि सप्तमस्थाः॥
यस्य प्रसूतौ स तु भूपतिः स्यादरातिदन्तिक्षतिसिंह एव॥५२॥

जिसके जन्म समयमें चन्द्रमासहित बृहस्पति केन्द्र में बैठा होवे और शुक्र उसे देखता होवे परन्तु यदि कोई पापग्रह समीप न बैठा होवे तब वो मनुष्य विख्यात कीर्ति राजा होताहै ॥ ५१ ॥ धन (२) में बुध बृहस्पति होवे और शनि मङ्गल चन्द्रमा सप्तम होवे इस योगमें जिसका जन्म हुआ होवे वो मनुष्य शत्रुरूपगजों को मारनेमें सिंहसमान प्रतापी राजा होता है ॥ ५२ ॥

कुम्भाष्टमांशे शशिनि त्रिकोणे मेषेऽद्रिभागे धरणीसुते वा॥
द्वन्द्वैकविंशांशगतेऽथवा ज्ञे यस्य प्रसूतौ स तु भूपतिः स्यात्॥५३
कुंभस्य चेत्पञ्चदशे विभागे कर्के दशांशोपगतो विधुश्चेत ॥
तृतीयभागे धनुषीन्द्रवन्द्यः सिंहे शशाङ्केप्यथवापि भूपः॥५४॥

कुम्भराशिके अष्टमांशमें चन्द्रमा नवम या पञ्चम स्थित होवे या और मेष के सप्तमांशमें मङ्गल बैठा होवे अथवा उक्तराशियोंके बयालीसवें भागमें बुध बैठे होवें इस योगमें जिसका जन्म हुआ होवे वो भी राजा होता है ॥ ५३ ॥ कुम्भराशि के पन्द्रहवे अंशमें अथवा कर्कराशिके दशम अंशमें तौ बुध बैठा होवै और धन तृतीयांशमें बृहस्पति होवे अथवा चन्द्रमा सिंहका होकर बैठा होवे वोभी राजा होताहै ॥

पुष्येश्विभे वाप्यथ कृत्तिकासु वर्गोत्तमे पूर्णतनुः कलावान्॥
करोति जातं खलु सार्वभौमं त्रिपुष्करोत्पन्ननरोऽपि भूपः॥५५॥
तिथिः समुद्रा विषमाङ्घ्रिभे चेद्वारे गुरुक्ष्मातनयार्कजानाम्॥
त्रिपुष्करोयोग इति प्रदिष्टो वृद्धौ च हानौ त्रिगुणाधिकर्त्ता॥५६॥

पुष्यनक्षत्रमें या कृतिकानक्षत्र में अथवा अश्विनीनक्षत्रमें अथवा अपने वर्गोत्तमका चन्द्रमा होवे इस योगमें जिसका जन्म भया है वो मनुष्य और जो त्रिपुष्कर योगमें जन्म लेताहै वो मनुष्य सब भूमण्डलका राजा होता है ॥ ५५ ॥ भद्रानामतिथि २।७।१२और वक्ष्यमाण नक्षत्रोंके प्रथम तृतीयचरण,बृहस्पति मङ्गल शनिवार इनमेंसे किसीदिन जब तीनोंका योग होवे उसे त्रिपुष्करनाम योग कहते हैं वो ऐसा है इसमें जो कुछ लाभ हानि जन्म मरणहोवे सो सब त्रिगुण होता है वे नक्षत्र

विशाखा उत्तराफाल्गुनी पूर्वाभाद्रपदा कृत्तिका पुनर्वसु उत्तराषाढा ये हैं ॥५६॥

मैत्रे च दास्रेऽप्यथवात्मतुंगे वर्गोत्तमे भूमिसुतः करोति ॥
महीपतिं पार्थिववंशजातं चान्यं प्रधानं धनिनं समृद्धम् ॥५७॥
चेद्भार्गवो जन्मनि यस्य पुण्ये मेषूरणे पूर्णतनुः शशाङ्कः ॥
अन्ये ग्रहालाभगता भवेयुः पृथ्वीपतिः पार्थिववंशजातः ॥५८॥

जिसके जन्मसमयमें मङ्गल अनुराधा अश्विनी नक्षत्रका होवे अथवा अपने उच्च का या वर्गोत्तमका होवे तौ वो मनुष्य यदि राजकुलोपत्न्न होवे तौ राजा होता है यदि कोई अन्य होवे तब वो मंत्री अथवा धनवान् होता है ॥ ५७ ॥ जिसके जन्म समयमें नवमस्थानमें तौ शुक्र और दशम घरमें पूर्ण चन्द्रमा और इनसे व्यतिरिक्त अन्यग्रह लाभ (११) में बैठे होवें वो मनुष्य यदि राजकुल में उत्पन्न हुआ होवे तो राजा होता है ॥ ५८ ॥

उपचयभवनस्थाः सर्वखेटाः शशाङ्का
द्रविगुरुशशिनश्चेद्भूमिसूनोर्भवन्ति ॥
त्रितनयनवमस्थाः कुर्वते ते नरेन्द्रं
गजतुरगरथानां संपदाराजमानम् ॥५९॥
सुखे सितज्ञौ सहजेम्बुजेशस्तिष्ठन्ति खेटाः सुतधाम्नि चान्ये ॥
निजारिराशौ नहि कश्चिदत्र धात्रीपतिश्चैककृतातपत्रः ॥६०॥

जिस मनुष्य के जन्म समय में चन्द्रमा से ३।६।११ इन घरोंमें ही सब ग्रह होवें अथवा मङ्गलसे तृतीय पंचम नवम इन घरोंमें रवि गुरु और चन्द्र ये ग्रह स्थित होवें तौ उस मनुष्यको राजा करतेहैं अथवा हाथी घोड़े रथ आदि संपत्ति से युक्त राजा से मान पाने वाला उसे करते हैं ॥ ५९ ॥ जिसके लग्नसे चतुर्थ स्थानमें शुक्र बुध बैठे होवें और तृतीय घरमें सूर्य बैठा होवे, पंचम घरमें दूसरे ग्रहहोवें और शत्रुक्षेत्री कोई ग्रह होवे नहीं इस योगमें जन्म लेनेवाला एकछत्र राज करनेवाला होताहै॥६०

सिंहे कमलिनीभर्त्ता कुलीरस्थो निशाकरः ॥
दृष्टौ द्वावपि जीवेन पार्थिवं कुरुतस्तदा ॥ ६१ ॥
बुधः कर्कटमारूढो वाक्पतिश्च धनुर्धरे ॥
रविभूसुतदृष्टौ तौ कुरुतः पृथवीपतिम् ॥ ६२ ॥

जिस मनुष्य की कुण्डलीमें सिंहका सूर्य होवे, कर्कका चन्द्रमा होवे और इन दोनोंको बृहस्पति देखता होवे तो वह मनुष्य राजा होता है ॥६१॥ बुध कर्क का बैठा होवे और बृहस्पति धनराशि का बैठा होवे उनको क्रमसे सूर्य और मङ्गल देखते होवें तब इस योगमें जन्म लेने वाला राजा होता है ॥ ६१ ॥

शफरीयुगुले चन्द्रः कर्कटे च वृहस्पतिः ॥
शुक्रः कुम्भे भवेद्राजा गजवाजिसमृद्धिभाक् ॥ ६३ ॥
सितदृष्टः शनिः कुम्भे पद्मिनी नायकोदये ॥
चन्द्रे जलचरे राशौ यदि राजा तदा भवेत ॥ ६४ ॥

जिसके जन्म समयमें मीन या मेष में चन्द्रमा. कर्कमें बृहस्पति और कुम्भ राशि में शुक्र बैठा होवे तो हाथी घोड़ोंकी समृद्धियुक्त राजा होताहै ॥६३॥ शुक्र जिसे देखता हो ऐसा शनि कुम्भराशि का बैठा होवे, लग्न में सूर्य बैठा होवे, चन्द्रमा मीन राशिका होवे इस योग में जन्मा मनुष्य राजा होता है ॥ ६४ ॥

चेत्खेचरो नीचगृहं प्रयातस्तदीश्वरश्चापि तदुच्चनाथः ॥
केन्द्रस्थितो तौ भवतः प्रसूतौ प्रकीर्तितौ भूपतिसंभवाय ॥६५॥
कृत्तिकारेवतीस्वातीपुष्यस्थायी भृगोः सुतः ॥
करोति भूभुजां नाथमश्विन्यामपि संस्थितः ॥ ६६ ॥
राज्योपलब्धिर्दशमास्थितस्य विलग्नगस्याप्यथवा दशायाम् ॥
तयोरभावे बलशालिनो वा सद्राजयोगो यदि जन्मकाले ॥६७॥

जो ग्रह अपने नीच का होकर बैठा हो उसके राशि का स्वामी ग्रह अथवा उस ग्रहके उच्च का स्वामी ग्रह वे दोनों केन्द्र में बैठे होवें इस योग में जन्म लेने वाला राजा होताहै ॥ ६५ ॥ कृत्तिका रेवती स्वाती पुष्य और अश्विनी इन नक्षत्रों में से किसी नक्षत्रपर जब शुक्र होवे तब जिसका जन्म हुआ होवे वो मनुष्य भी राजा होताहै॥६६॥ इन योगोंमेंसे कोई राजयोग जिस मनुष्य के जन्मसमयमें पड़ा होवे उसकाफल जब दशम स्थान या लग्नमें बैठे ग्रहकी दशा आती है तब होताहै यदि उक्त दोनें स्थानोंमें कोई ग्रह नहीं बैठा होवे तो जो कोई उसका बली ग्रह होवे उसकी दशांतर्दशा में फल होताहै ॥६७॥ इति जातकाभरणे राजयोगाऽध्याये वनमालिकृतायां मार्जनीटीकायां भाषानुवादितायां सप्तदशोऽध्यायः ॥१७॥

अथ राजयोगसंगतिकाय सामुद्रिकाध्यायः ।

प्रसूतिकाले प्रबला यदि स्युर्नृपालयोगाः पुरुषस्य यस्य ॥
सद्राजचिह्नानि पदे तदीये भवन्ति वा पाणितलेऽमलानि॥१॥
अनामिकामूलगता प्रशस्ता सा कीर्तिता पुण्यविधानरेखा ॥
मध्यांगुलेर्या मणिबन्धमाप्ता राज्याप्तये सा च किलोर्ध्वरेखा ॥२॥

जिस मनुष्यके जन्मसमयमें राजयोग होवे उसके हाथमें या पावमें राजचिन्ह होते हैं ॥ १ ॥ जिस मनुष्यके अनामिका मूलमें जो उत्तम रेखा होतीहै वो रेखा पुण्यविधान रेखा होती है और जो बिचली अङ्गुलीकी जड़से लेकर पोहोंचेतक जो खड़ी रेखा होतीहै वो ऊर्ध्वरेखा कही जातीहै वो ऊर्द्धरेखा जिसके हाथमें होती है वो राज्यप्राप्तिके अर्थ होती है ॥ २ ॥

विराजमानं प्रवलाञ्छनं चेदंगुष्ठमध्ये पुरुषस्य यस्य ॥
भवेद्यशस्वी निजवंशभूषा भूषाविशेषैः सहितो विनीतः ॥ ३ ॥
चेद्वारणो वातपवारणो वा वैसारिणः पुष्करिणीसृणिर्वा ॥
वीणा च पाणौ चरणे नराणां ते स्युर्नराणामधिपौ वरेण्याः ॥४॥

जिस मनुष्यके अंगुष्ठमध्यमें यवका चिन्ह विराजमान होताहै वो मनुष्य बड़ा यशस्वी, अपने कुलका आभूषण, अनेक भूषणों से सुशोभित और बड़ा नम्र होता है॥३॥हाथी छत्र मोन पुष्करिणी और वीणा इनमेंसे कोई लक्षण जिन मनुष्यों की पगतलो अथवा हथेलीमें होवे वे मनुष्य मनुष्योंके श्रेष्ठ स्वामी होते हैं ॥ ४ ॥

आदर्शमालाकरवालशलहलाश्च तत्पाणितले मिलन्ति ॥
स्यान्माण्डलीकोवनिपालको वा कुले नृपालः कुलतारतम्यात्॥५
चेद्यस्य पाणौ चरणे च चक्रं धनुर्ध्वजाब्जाव्यजनासनानि ॥
रथाश्वदोलाकमलाविलासात्तस्यालये स्युर्गजवाजिशालाः॥६॥

दर्पण माला खड्ग पर्वत हल इनमेसे कोई जिस मनुष्यके हाथमें या पावमें कोई चिन्ह होवे वो माण्डलिकराजा (खण्डमंडलेश्वर),सब भूमिका राजा अथवा अपने कुलके तारतम्यसे कुलमें श्रेष्ठ होताहै ॥५॥ जिस मनुष्यके हाथमें या पावमें चक्र,

मनुष, ध्वजा, कमल, पंखा सिंहासन रथ, घोड़ा, और दोला इनमेंसे कोई चिन्ह होताहै उस मनुष्यके घरमें लक्ष्मीके विलाससे हाथी घोड़ोकी शाला होतीहै ॥६॥

स्तम्भस्तु कुम्भस्तु तरुस्तुरंगो गदामृदंगोऽङ्घ्रिकरप्रदेशे ॥
दण्डोऽथवाऽखण्डितराज्यलक्ष्म्या स्यान्मण्डितः पण्डितशौण्डकोवा
सुवृत्तमौलिस्तु विशालभालश्चाकर्णनीलोत्पलपत्त्रनेत्रः ॥
आजानुबाहुं पुरुषं मताहुर्भूमण्डलाखण्डलमार्यवर्याः । ८ ॥

जिस मनुष्यके हाथमें घड़ा, वृक्ष, घोड़ा, गदा मृदङ्ग अथवा दंड इनमेंसे कोई होता है वो मनुष्य अखण्डित राजलक्ष्मीसे युक्त होताहै या पण्डितोंमें शौंडक (बड़ा धृष्ट) होता है॥७॥जिस मनुष्यका शिर गोल, बड़ा भाला और कानतक लम्बे नीलकमलदलके समान नेत्र होतेहैं और घुटनेतक लंबे भुज होतेहैं उस मनुष्य को सामुद्रिकशास्त्र जाननेवाले श्रेष्ठ मनुष्य, भूमंडलका इन्द्रकहते हैं ॥ ८ ॥

नरस्य नासा सरला च यस्य वक्षःस्थलं चापि शिलातलाभम् ॥
नाभिर्गभीरातिमृदू भवेतामारक्तवर्णौ चरणौ स भूपः ॥ ९ ॥
प्रसन्नमूर्तिःसमुदारचेता वंशाभिमानःशुभवाग्विलासः ॥
अनीतिभीरुर्गुरुसाधुनम्रः साम्राज्यलक्ष्मीं लभते मनुष्यः ॥

जिस मनुष्यकी सरल (सीधी) नासिका और शिला समान दृढ़ वक्षस्थल गंभीर नाभि (औंडी) और अत्यन्त कोमल (नरम) लाल पगतली युक्त चरण होतेहैं वो अवश्य राजा होता है॥९॥जो लक्षण हमने कहेहैं इन लक्षणोंसे युक्त जो मनुष्य होताहै वो मनुष्य सदा प्रसन्न रहनेवाला, उत्तम उदार अन्तःकरणसे युक्त, कुलाभिमानी, शुभ वचन कहनेवाला, अन्यायसे डरनेवाला, साधुओंको तथा गुरुओंको प्रणाम करनेवाला और चक्रवर्ती राज्यलक्ष्मीका पानेवाला होता है ॥ १०॥

करतले यदि यस्य तिलो भवेदविरलः किल तस्य धनागमः ॥
पदतले च तिलेन समन्विते नृपतिवाहनचिह्नसमन्वितः ॥११॥
एतत्फलं राजकुलोद्भवानां स्यान्मानवानां मुनयो वदन्ति ॥
प्रकल्पयेदन्यकुलोद्भवानां नूनं तदूनं स्वकुलानुमानात् ॥ १२॥

चिह्नानि यानि प्रतिपादितानि व्यक्तानि संपूर्णफलप्रदानि ॥
वामेतरेङ्घ्रौ च करे नराणां धन्यानि वामे खलु कामिनीनाम्॥

जिस मनुष्यके हथेलीके बीचमें तिल होवे उसको सदा धन मिलता है और जिसकी पगतलीके बीचमें तिल होवे वो राजाके समान सवारियों के सुखसे युक्त होताहै ॥ ११ ॥ जे फल कहे हैं वे समग्रफल राजकुलमें उत्पन्न हुए पुरुषोंको तो यथावत् (कहेके समान) होतेहैं और यदि किसी हीन कुलोत्पन्न पुरुषके वे लक्षण होवें तब उसके कुलानुरूप किंचित् न्यून फल देते हैं ॥१२॥ जे चिन्ह हमने कहे हैं वे सब पुरुषके दक्षिणांग होने से अपना संपूर्ण देते हैं और स्त्रीके वामांगमें होने से संपूर्ण फल देते हैं इति दैवज्ञ ढुंडिराजकृते जातकाभरणे भाषामार्जनीटीकायां वनमालिचतुर्वेदकृतायां राजयोगसङ्गतिकसामुद्रिकाध्यायोष्टादशः ॥ १८ ॥

अथ राजयोगाध्यायः ।

शत्रुक्षेत्रगतैः सर्वैर्वर्गोत्तमयुतैरपि ॥
राजयोगा विनश्यन्ति बहुभिर्नीचगैर्ग्रहैः ॥ १ ॥
चन्द्रं वा यदि वा लग्नं ग्रहो नैकोपि वीक्षते ॥
तथापि राजयोगानां भंगमाह पराशरः ॥ २ ॥

जिसके जन्मसमयमें राजयोगभी होवे परन्तु यदि राजयोगकारक ग्रहोंके सिवाय बाकी और ग्रह अपने वर्गोत्तमके भी होवे परन्तु वे अपने शत्रुक्षेत्री होकर बैठे होवें तब वे राजयोगके नाश करने वाले होतेहैं अथवा नीचके होकर बैठे होवें तब भी राजयोगोंका नाश करतेहैं ॥ १ ॥ जिसके जन्मसमयमें राजयोग होवे परन्तु उसकी कुण्डलीगत चन्द्रमाको ग्रह अथवा लग्नको एकभी कोई ग्रह न देखता होवे तब भी राजयोगका भङ्ग होताहै ये पराशरनाम ऋषिने कहाहै ॥ २ ॥

स्वांशे रवौ शीतकरे विनष्टे दृष्टे च पापैः शुभदृष्टिहीने ॥
कृत्वापि राज्यं च्यवते मनुष्यः पश्चात्सुदुःखं लभते हताशः ॥३॥
उल्काव्यतीपातदिने तथैव नैर्घातिके केतुसमुद्भवे वा ॥
चेद्राजयोगेपि च यस्य सूतिर्नरो दरिद्रोतितरां भवेत्सः ॥ ४ ॥

जिस पुरुषके जन्म कुण्डलीमें रवि अपने नवांश में होवे उसे पापग्रह देखते होवे और क्षीण चन्द्रमाभी अपने नवांशमें होवे उसे पापग्रह देखते होवे शुभग्रह कोई देखता न होवे वो पुरुष राज्य करता होवे तवभी राज्य से भ्रष्ट होजाताहै और फिर वह मनुष्य हताश होकर अत्यन्त दुःख पाताहै ॥३॥ जिस मनुष्यके कुंडलीमें राज योग भी होवे परन्तु यदि जन्मके समयमें उल्कापात हुआ होवै या व्यतीपातमें जन्म

होवे या जन्मदिनके दिन वज्रपात हुआ होवे या उन दिनोंमें केतु उदित होवे तव वो मनुष्य राजयोगको नही भोगता है किन्तु वो मनुष्य अत्यन्त दरिद्री होताहै॥४

तुलायां नलिनीनाथः परमं नीचमाश्रितः
निर्दिष्टराजयोगानां दलनाय भवेद्ध्रुवम् ॥ ५ ॥
मृगलग्ने सुराचार्यः परमं नीचमाश्रितः ॥
राजयोगोद्भवस्यापि कुरुतेतिदरिद्रताम् ॥ ६ ॥

जिस पुरुषके कुण्डलीमें राजयोग विद्यमान होवे परन्तु सूर्य परमनीचका होकर बैठा होवे तौ वह विद्यमान राजयोगका अवश्यही नाश करनेवाला होता है॥५॥जिस पुरुषके कुण्डलीमें बृहस्पति परमनीच (मकर) का होकर बैठा होवे तव राजयोग को नाश करके उस पुरुषको अति दरिद्री करताहै ॥ ६ ॥

वाचस्पतावस्तगते ग्रहेन्द्रास्त्रयोऽपि नीचेषु घटोविलग्ने ॥
एकोपि नीच दशमेपि पापो भूपालयोगा विलयं प्रयान्ति ॥७॥
प्रसूतौ दानवामात्यः परमं नीचमाश्रितः ॥
करोति पतनं नूनं मानवानां महापदात ॥ ८ ॥

जिस कुण्डली में बृहस्पति तौ अस्तङ्गत होवे और तीनग्रह नीचके होकर बैठे होवें और कुम्भलग्न उसका लग्न होवै और एकभी कोई पाप ग्रह नीचका होकर दशम घरमें बैठा होवे तव उस पुरुषके समग्र राजयोग नाश होतेहैं।७। और जिस पुरुषकी जन्म कुण्डलीमें शुक्र परमनीच (कन्या) का होकर बैठा होवे तव वो पुरुष अवश्यही पदसे भ्रष्ट होताहै ॥ ८ ॥

यदि तनुभवनस्थोराहुरिन्दुप्रदृष्टः
सहजरिपुभवस्था भानुमन्दावनेयाः ॥
शुभविरहितकेन्द्रैरस्तगैर्वापि सौम्यै-
र्भवति नृपतियोगो व्यर्थ एवेति चिन्त्यम्॥९॥
केन्द्रेषु शून्येषु शुभैर्नभोगैरस्तंगतैर्नीचगृहस्थितैर्वा ॥
चतुर्ग्रहैर्वाप्यरिमन्दिरस्थैर्नृपालयोगा, प्रलयं प्रयान्ति ॥ १० ॥
सर्वेपि पापा यदि कण्टकेषु नीचारिगा नो शुभदृष्टियुक्ताः ॥
नीचारिरिःफेषु च सौम्यसंज्ञा राज्ञां हि योगाविलयं प्रयान्ति॥११

जिस मनुष्यके जन्मसमयमें चन्द्रमा जिसको देखताहोवे ऐसा राहु लग्नमें बैठा होवे और तृतीय षष्ठस्थानमें सूर्य शनि और मङ्गल ये तीनों ग्रह बैठे होवें और शुभ ग्रह अस्तङ्गत होवे और केंद्रमें कोई शुभ ग्रह नहीं होवे तब राजयोगभी व्यर्थ होता है॥९॥ चारों केन्द्रोंमें कोई ग्रह न होवे और शुभ ग्रह अस्तङ्गत होवै अथवा नीचके घरमें बैठे होवें अथवा चार ग्रह शत्रु गृहमें बैठे होवें तब समग्र राजयोग नष्ट होजाते हैं ॥१०॥ पापग्रहतौ केन्द्रमें बैठे होवें अथवा नीच ग्रह की राशिके होवें या अपने शत्रुक्षेत्री होवें और कोई शुभग्रह उनको देखते न होवें और शुभ ग्रह या तौ नीच के होकर बैठे होवें अथवा शत्रुक्षेत्री होकर बैठे होवें अथवा बारहे घर में बैठे होवें तब समग्र राजयोग नष्ट होजाते हैं ॥११॥ इति दै० दु० कृते जातकाभरणे भाषानुवादितायां मार्जनीनाम्नीटीकायां राजयोगभंगोनामैकोनविंशोध्यायः ॥ १९ ॥

अथ पंचमहापुरुषलक्षणानि निरूप्यंते ।

ये महापुरुषसंज्ञका नृपाः पञ्च पूर्वमुनिभिः प्रकीर्तिताः ॥
वच्मि तान्सुसरलान्महोक्तिभीराजयोगविधिदर्शनेच्छया ॥१॥
स्वगेहतुङ्गाश्रयकेन्द्रसंस्थैरुच्चोपगैर्वावनिसूनुमुख्यैः ॥
क्रमेण योगा रुचकाख्यभद्रहंसाख्यमालव्यशशाभिधानाः ॥

जे पूर्वाचार्योंने महापुरुष नामके पांच योग कहे हैं उनको सरल रीतिसे राजयोगोंकी विधि दिखाने के अर्थ रुचक,भद्रक,हंसक; मालव और शशक नामकों को मैं अब कहता हूं ॥१॥ स्वक्षेत्री या अपने उच्च के केन्द्रमें स्थित मङ्गल आदि पांच ग्रहोंके होनेसे क्रमसे रुचक, भद्र, हंस, मालव, शशनामसे प्रसिद्ध पांच योग होते हैं। उदाहरण–जो मङ्गल अपने घरका या अपने उच्च का १।८।१०। होकर केन्द्र में बैठा होवे तौ रुचक नामका योग होता है और बुध स्वक्षेत्री या उच्चका ३।६ होकर केन्द्रमें बैठा होवे तौ भद्रकनामका योग होताहै और बृहस्पति यदि स्वक्षेत्री या अपने उच्चका ४।९।१२ होकर बैठा होवे तब हंस नामका योग होताहै और शुक्र यदि स्वक्षेत्री या उच्चका २।७।१२ होकर बैठा होवे तब मालव नामका योग होताहै और शनि अपने क्षेत्र का अथवा अपने उच्च का १०।११।७ होकर बैठा होवे तब शशनामका योग होता है इस तरह ये पांच योग होतेहैं इनका पृथक् २ फल कहते हैं ॥ २ ॥

तन्मध्ये रुचकफलम् ॥

दीर्घायुः स्वच्छकान्तिर्बहुरुधिरबलः साहसावाप्तसिद्धि-
श्चारुभ्रूर्नीलकेशः समकरचरणो मन्त्रविच्चारुकीर्तिः ॥
रक्तश्यामोतिशूरोरिपुबलमथनः कम्बुकण्ठो महौजाः
क्रूरो भक्तोऽमराणां द्विजगुरुविनतः क्षामजानूरुजङ्घः ॥३॥
खट्वांगपाशवृषकार्मुकचक्रवीणावज्राङ्कहस्तचरणःसरलांगुलःस्यात्
मन्त्राभिचारकुशलस्तुलयेत्सहस्रमध्यं च तस्य गदितं मुखदैर्घ्यतुल्यम्॥४
सह्यस्य विन्ध्यस्य तथोज्जयिन्याः प्रभुः शरत्सप्ततिजीवितोसौ ॥
शस्त्राग्निचिह्नोरुचकाभिधाने देवालये तन्निधनं प्रयाति ॥५॥

जिस मनुष्य का रुचक नाम योग में जन्म होताहै वो मनुष्य दीर्घायु, निर्मल कांति रुधिरकी देहमें बुद्धिसे बलवान, साहस कर्मकरनेसे सिद्धिको प्राप्त होनेवाला सुन्दर जिसकी भ्रकुटि,नील जिसकेकेश,समान हाथ पांव वाला,मन्त्रका जाननेवाला उत्तम कीर्तिसे युक्त, रक्ततासे मिला श्याम जिसका वर्ण, बड़ा शूरवीर,शत्रुसेनाका मारने वाला, शङ्खकी सी जिसकी ग्रीवा (नार) बड़ा पुरुषार्थी, क्रूर स्वभाववाला, देवताओं का भक्त, ब्राह्मण गुरुओं को नमस्कार करनेवाला पतले २ घुटने पिंडरी जंघावाला, खट्वांग पाश (फासी) वृष धनुष चक्र वीणा वज्र इनके चिन्होंसे युक्त जिसके हाथ पांव,सीधी जिसकी अंगुली,मंत्र विद्यामें और अभिचारविद्यामें बड़ा कुशल,मुखकी दीर्घताके समान कटिवाला और हजारोंका तोलनेवाला और सह्यपर्वत विन्ध्याचल और उज्जयिनी का पालन करनेवाला,सत्तर वर्षकी आयु से युक्त और शस्त्रके निमित्त और अग्निके निमित्त का जिसके शरीरमें चिन्ह, इन लक्षणोंसे युक्त मनुष्य रुचकनाम योगमें जन्म लेनेवाला होता है ॥ ३॥४॥५॥ इति रुचकफलम् ॥

अथ भद्रकयोगफलम् ।

शार्दूलप्रतिमाननो द्विपगतिः पीनोरुवक्षःस्थलो
लम्बापीनसुवृत्तबाहुयुगलस्तत्तुल्यमानाच्छ्रयः ॥
कामीकोमलसूक्ष्मरोमनिचयैः संरुद्धगण्डस्थलः
प्राज्ञः पङ्कजगर्भपाणिचरणः सत्वाधिको योगवित् ॥६॥

शङ्खासिकुञ्जरगदाकुसुमेषुकेतु-
चक्राब्जलाङ्गलविचिह्नितपाणिपादः॥
यात्रागजेन्द्रमदवारिकृतार्द्रभूमिः
सत्कुङ्कुमप्रतिमगन्धतनुः सुघोषः ॥७॥
सद्रूपगोतिमतिमान्खलु शास्त्रवेत्ता
मानोपभोगसहितोऽतिनिगूढगुह्यः ॥
सत्कुक्षिधर्मनिरतः सुललाटपट्टो-
धीरोभवेदसितकुञ्चितकेशपाशः ॥ ८ ॥
स्वतन्त्रः सर्वकार्येषु स्वजनं प्रति न क्षमी ॥
भुज्यते विभवस्तस्य नित्यमर्थिजनैः परैः ॥ ९ ॥
भालं तुलायां तु भवेत्सुरत्नैः श्रीकान्यकुब्जाधिपतिर्भवेत्सः ॥
भद्रोद्भवः पुत्रकलत्रसौख्यो जीवेन्नृपालः शरदामशीतिम् ॥ १० ॥

जिस मनुष्यका भद्रानामक योग में जन्म होताहै वो मनुष्य सिंहके समान मुखवाला हाथी की सी जिसकी चाल, पुष्ट और विस्तीर्ण वक्षस्थल, आजानुलंबित गोलाकार और पुष्ट भुजदण्डयुक्त, न अतिलम्बा न अतिगठना, अत्यन्त कामी, नरम पतले रोमांचोंसे युक्त कपोलवाला, वड़ा बुद्धिमान्, कमलके गर्भसमान अरुण पगतली तथा हथेलीवाला, वड़ा पुरुषार्थी, अनेक योगों का जानने वाला, शङ्ख खड्ग हाथी गदा पुष्प वाण ध्वजा चक्र कमल हल इनके चिन्होंसे चिन्हित जिसके हाथ पांव, यात्राके समयमें मत्त हाथियोंके मदजलसे भूमि को आर्द्र करने वाला (भिगोनेवाला), उत्तम केशरके रङ्ग समान शरीर की सुगन्धिसे युक्त, उत्तम जिसका शब्द, वड़ा रूपवान, वड़ा बुद्धिमान्, शास्त्रों का जानने वाला, मान और भोगसे युक्त, गोप्यवातका छिपाने वाला, मनोहर जिसकी कूख, धर्म में निरत सुन्दर जिसका ललाट, वड़ा धीर, कारे सटकारे घुंघराले केशवाला, सब काम करनेमें स्वतन्त्र, अपने स्वजनों में नहीं दवनेवाला और अनेक याचक मनुष्य जिसके विभवको भोगे, भाल में उत्तम रत्नाभूषण धारण करने वाला, कान्यकुब्जदेशका पालन करनेवाला पुत्र कलत्रके सुखसे सम्पन्न और असी वर्षतक आयु से जीवनेवाला, होताहै ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ इति भद्रयोगफलम् ॥

अथ हंसयोग फलम् ।

रक्तास्योन्नतनासिकः सुचरणो हंसो प्रसन्नेन्द्रियो
गौरः पीनकपोलरक्तकरजो हंसस्वनः श्लेष्मलः ॥

शंखाब्जाङ्कुशमत्स्यदामयुगुलैःखट्वाङ्गमालाघटै-
श्चञ्चत्पादकरस्थलो- मधुनिभे नेत्रे सुवृत्तं शिरः ।११।
जलाशयप्रीतिरतोव कामी न याति तृप्तिं वनितासु नूनम् ।
उच्चोङ्गुलैर्वै षडशीतितुल्यैरायुर्भवेत्षण्णवतिः समानम् ॥ १२ ॥
बाह्लीकदेशान्तरशूरसेनगान्धर्वगंगायमुनान्तरालान् ।
भुक्त्वा वनान्ते निधनं प्रयाति हंसोयमुक्तो मुनिभिः पुराणैः॥१३।

अरुणतायुक्त जिसका मुख, उन्नत जिसकी नासिका, सुन्दर जिसके चरण, सदा प्रसन्न रहनेवाला, गौरांग, पुष्टकपोल, रक्त नख, हंसकासा जिसका शब्द, कफप्रकृति और शङ्ख अब्ज (कमल) अंकुश मछली दामयुगल (दोरस्सी)खट्वाङ्ग माला और कलश इनसे युक्त जिसके हाथपांव, सहतके रङ्गके समान जिसके नेत्र, गोल शिर, जलाशयमें प्रीति रखनेवाला, अत्यन्त कामी, जो कभी भी स्त्रियोंमें नहीं सन्तोष पानेवाला, छयासी अंगुल ऊँचा और छयाणवमें वर्ष की आयुसे युक्त, वाल्हीकदेश शूरसेन गांधर्वदेश और गङ्गा यमुना का मध्यवर्ती देश इनको भोगकर बनमें देहत्याग करनेवाला वो मनुष्य होताहै ऐसा पुराने मुनियोंने यह हंसयोगका फल कहाहै ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ इतिहंसयोगफलम् ।

अथ मालव्ययोगफलम् ।

अस्थूलौष्ठोथ विषमवपुर्नैव रिक्तांसन्धि-
र्मध्ये क्षामः शशधररुचिर्हस्तिनासः सुगण्डः ।
सद्दीप्ताक्षः समसितरदो जानुदेशाप्तपाणि-
र्मालव्योयं विलसति नृपः सप्ततिर्वत्सराणाम्॥ १४ ॥
वक्त्रं त्रयोदशमितांगुलमस्य दीर्घं
तिर्यग्दशांगुलमितं श्रवणान्तरालम् ॥
मालव्यसंज्ञनृपतिः स भुनक्ति नूनं
लाटांश्च मालवकसिन्धुसुपारियात्रान् ॥ १५ ॥

मोटे जिसके ओष्ठ, विषम शरीरवाला, पुष्ट जिसकी अङ्गकी सन्धि, पतली जिसकी कमर, चन्द्रमाकी सी जिसकी कांति, हाथीकी सी जिसकी नाक, सुन्दर

जिसके कपोल, बड़े अच्छे दीप्त जिसके नेत्र, बराबर शुक्ल जिसके दन्त, घुटनेतक लम्बे जिसके भुज इस मालव्ययोगमें जन्म लेने वाला पुरुष सत्तरवर्षकी आयु पर्यंत जीताहै ॥१४॥ इस योगमें जन्म लेनेवाले पुरुषका तेरह अंगुल लम्बा तो मुख होताहै और दश अङ्गुल चौडाई कानोंपर्यंत होतो है और वो मनुष्य राजा होकर लाट नामक देशोंको मालवदेशों को सिन्धदेशों को और पारियात्र देशोंको भोगता है ॥ १५ ॥ इति मालव्ययोगफलम् ।

अथ शशकयोगफलम् ।

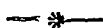
लघुद्विजास्यो द्रुतगः सकोपः शठोतिशूरो विजन प्रचारः ॥
वनाद्रिदुर्गेषु नदीषु सक्तः प्रियातिथिर्नाति लघुः प्रसिद्धः॥१६॥
नानासेनानिचयनिरतोदन्तुरश्चापि किंचि
द्धातोर्वादे भवति कुशलश्चञ्चलः कोलनेत्र ॥
स्त्रीसंसक्तः परधनहरो मातृभक्तः सुजङ्घो
मध्ये क्षामः सुललितमतीरन्ध्रवेधी परेषाम् ॥१७॥
पर्यङ्कशङ्खशरशस्त्रमृदंगमाला
वीणो पमाः खलु करे चरणे च रेखाः ॥
वर्षाणि सप्ततिमितानि करोति राज्यं
सम्यक् शशाख्यनृपतिः कथितो मुनीन्द्रैः । १८॥

छोटे २ जिसके दन्त, छोटा जिसका मुख, शीघ्रगतिसे चलनेवाला, वड़ा क्रोधी बड़ा शठ, वड़ा शूरवीर, निर्जन देशमें रहनेवाला, वन पर्वत दुर्ग स्थान और नदीके समीपमे विचरनेवाला, अतिथि जिसको प्रिय शरीर जिसका स्थूल, सर्वत्रप्रसिद्ध, अनेक सेनाके इकट्ठे करनेमें निरत, कुछ ऊंचे जिसके दन्त, धातुवादमें कुशल, बड़ा चंचल, शूकरकेसे जिसके नेत्र, स्त्रियोंमें अत्यन्त आसक्त, दूसरेके धनका हेरनेवाला, माताका भक्त, सुन्दर जिसकी जंघा, पतली जिसकी कमर, उत्तम चंचल जिसकी बुद्धि, सबोंके छिद्र कहनेवाला और शय्या शङ्ख वाण शस्त्र मृदङ्ग माला और वीणा इनके चिन्होंसे युक्त जिसके हाथ पाव, सत्तरवर्षपर्यंत राज करने वाला, इन लक्षणों से युक्त शशकयोगमें जन्म लेनेवाला पुरुष होताहै ॥१६॥१७॥१८॥ इति शशकयोगफलम् ॥

केन्द्रोच्चगा यद्यपि भूसुताद्या मार्तण्डशीतांशुयुता भवन्ति ॥
कुर्वन्ति नोर्वीपतिमात्मपाके यच्छन्ति ते केवलसत्फलानि ॥१९॥

ये जे पांच योग कहे हैं सो मङ्गलसे आदि पांच ग्रह भलेही उच्चके होकर केन्द्र में बैठ होवें परन्तु यदि सूर्य चन्द्रमा इनके संग बैठे होवें तब उस मनुष्यको राजयोग नहीं करते हैं किंतु वे केवल धनप्राप्ति आदि सत्फल देनेवाले ही होते हैं ॥ १९ ॥

इति जातकाभरणे मार्जन्यां भाषाटीकायां बनमालिचतुर्वेदकृतायांपंचमहापुरुषलक्षणे विंशोध्यायः समाप्तः ॥ २० ॥



अथ कारकयोगाध्यायः ।

मूलत्रिकोणस्वगृहोच्चसंस्था नभश्चराः केन्द्रगता मिथः स्युः ॥
ते कारकाख्याः कथिता मुनीन्द्रैर्विज्ञेय आज्ञाभवने विशेषः॥१॥
प्रालेयरश्मिर्यदि मूर्तिवर्ती स्वमन्दिरस्थो यदि तुङ्गयातः ॥
सूर्यार्किजारामरराज्यपूजाः परस्परं कारकसंज्ञका स्युः ॥ २ ॥

मूलत्रिकोणी स्वगेही अपने उच्च के ग्रह यदि केन्द्रमें बैठे होवें तब वे ग्रह परस्पर राजयोग करनेवाले कारक ग्रह कहलातेहैं ऐसा मुनींद्रोंने कहाहै इनमेंसे दशम घरको विशेषकरके कारक कहाहै॥१॥प्रालेयरश्मि (चन्द्रमा) यदि स्वक्षेत्री होकर चतुर्थ अथवा अपने उच्च (बृषभ) का होकर लग्नमें बैठा होवे तो कारक योग होताहै और इसी तरहसे सूर्य शनि मङ्गल और बृहस्पतिजीभी परस्परकारक संज्ञक होतेहैं॥२॥

शुक्रग्रहे नभगतेम्बरा१० म्बु ४ स्थितो ग्रहःकारकसंज्ञकः स्यात् ॥
तुंगत्रिकोणस्वगृहांशयातास्तेपीह माने तपने विशेषात् ॥३॥
नीचान्वये यद्यपि जातजन्मा मन्त्री भवेत्कारकखेचरेन्द्रैः ॥
राजान्वये यस्य यदि प्रसूतिर्भूमीपतित्वं स कथं न याति ॥ ४ ॥

शुक्रग्रह जिसके लग्नमें या दशम या चतुर्थ बैठा होवे तब वह कारक कहलाता है और जे ग्रह अपने उच्चके या मूलत्रिकोणी या स्वक्षेत्री ग्रहोंके नवांशके होकर

बैठते हैं वेभी कारक कहलातेहैं इन सबोंमेंसे सूर्यको विशेषकरके सबोंसे कारक समझना चाहिये ॥३॥ जिसको कुण्डली में कारक होकर ग्रह बैठे होवें वो पुरुष नीच कुलोत्पन्नभी होवे तबभी राजा नहीं तौ राजा कामंत्री होता है और जिस मनुष्यका राजकुल में जन्म हुआ होवे और यदि उसकी कुण्डली में कारक ग्रह होवे तब तौ वह अवश्य ही राजा होता है इसमें क्या संदेह है ॥४॥

वेशिस्थितो यस्य शुभो नभोगो लग्नं विलग्नं च लवे स्वकीये ॥
केन्द्राणि सर्वाणि शुभान्वितानि तस्यालये श्रीः कुरुते निवासम् ॥५॥
केन्द्रस्थिता गुरुविलग्नकजन्मनाथा
मध्ये वयस्यातितरां वितरन्ति भाग्यम् ॥
शीर्षोदयाङ्घ्रियुगमेषु गता भवेयु-
रारम्भ मध्यमविरामफलप्रदास्ते ॥ ६ ॥

जिस मनुष्यके शुभग्रह वेशिमें स्थित होवे और लग्न अपने नवांशमें होवे सब केंद्रोंमें शुभग्रह स्थित होवे उस मनुष्य के घरमें सदा लक्ष्मी निवास करतीहै ॥५॥ बृहस्पति और लग्नेश जिसके केंद्रमें बैठेहोवें तबवे ग्रह उस मनुष्यके मध्य अवस्थामें भाग्योदय करते हैं और यदि बृहस्पति या लग्नेश शीर्षोदयी लग्नके प्रथम द्वितीय चरणके होकर बैठेहोवें तब अवस्थाके प्रारम्भमें और द्वितीय चरणके होवेतो मध्यायु में और चतुर्थ चरणके होकर उक्त ग्रह बैठे तौ आयुकी समाप्तिमें फलदेते हैं ॥६॥
इति कारकाध्यायेमार्जन्यां टीकायां वनमालिचतुर्वेदकृतायां एकविंशोऽध्यायः ।

अथ नाभसयोगः ।

सर्वे चरस्था अपि वा स्थिरस्था द्विदेहसंस्था यदि वा भवन्ति ॥
क्रमेण रज्जुर्मुसलं नलश्च योगत्रयं स्यादिदमाश्रयाख्यम् ॥१॥
केन्द्रत्रये सौम्यखगैस्तु मालाखलग्रहैर्व्यालसमाह्वयः स्यात् ॥
इदं तु योगद्वितयं दलाख्यं पराशरेण प्रतिपादितं हि ॥२॥

समग्र ग्रह चरराशियों (१।४।७।१०) के ही होकर बैठे होवें अथवा स्थिर राशियों (२।५।८।११) के ही होकर बैठे होवें अथवा जन्म लग्न और चन्द्र लग्नमेंही समग्र ग्रह बैठे होवें तब क्रम से इन तीनों योगों को क्रमसे

रज्जुयोग मुसलयोग और नलयोग (१) कहते हैं इन तीनों योगों को आश्रयनाम करके योग कहते हैं ॥१॥ जब केंद्रत्रय (१।४।७) में ही सब शुभ ग्रह बैठे होवें और कहीं कोई शुभ ग्रह नहीं होवे तब उसे मालानाम योग कहते हैं और केंद्रत्रय (१।४।७) में ही समग्र पापग्रह बैठे होवें तब उसे व्यालयोग कहतेहैं इन दोनों योगों को दलयोग कहते हैं। ऐसा पराशरनाम ऋषिने प्रतिपादन कियाहै ॥२॥

आसन्नकेन्द्रद्वयगैर्गदाख्यो लग्नास्तसंस्थैः शकटः समस्तैः ॥
खबन्धुयातैर्विहगः प्रदिष्टः शृंगाटकं लग्ननवात्मजस्थैः ॥ ४ ॥
धनारिखस्थैस्त्रिमदायगैर्वा चतुर्थरन्ध्रव्ययसंस्थितैर्वा ॥
नभस्तलस्थैर्हलनामयोगः किलोदितोयं निखिलागमज्ञैः ॥४॥

दोनों केंद्रों के (१।४) के समीपवर्ति जे घर (१२।२।३।५) हैं उन्हीं घरों में यदि समस्त ग्रह होवें तब गदानाम योग होता है और यदि लग्नमें और सप्तम घर में ही सब ग्रह स्थित होवें तब शकटनाम योगहोता है और लग्न नवम पंचम इन्हीं घरों में सब ग्रह बैठे होवें तब शृङ्गाटकनाम योग होता है ॥३॥ द्वितीय छठे दशम घर में ही सब ग्रह बैठे होवें तब अथवा तीसरे सप्तम ग्यारहे अथवा चतुर्थ अष्टम बारहे सब ग्रह बैठेहोवें तब हलनाम योग होताहै ऐसा सब ज्योतिर्विद कहतेहैं॥४॥

लग्नस्मरस्थानगतैः शुभाख्यैः पापैश्च मेषूरणबन्धुयातैः ॥
वज्राभिधस्तैर्विपरीतसंस्थैर्यवश्च मिश्रैःकमलाभिधानः ॥ ५ ॥
सूर्याच्चतुर्थे भवने सितज्ञौ कथं भवेतामिति नैव युक्तौ ॥
यवाख्यवज्रौ त्विदमामनन्ति तत्रोपपत्तिं परिदर्शयामि ॥६॥

लग्न सप्तम स्थानमें तौ शुभ ग्रह होवे और पापग्रह दशम और तृतीय घरमें बैठे होवें तब बज्रनाम योग होता है और यदि लग्नमें और सप्तममें तौ पापग्रहहोवें और दशम तृतीय में शुभ ग्रहहोवें तब यवनाम योगहोता है और यदि उक्त स्थानों में शुभग्रह और पापग्रह मिलके बैठे होवें तब कमलनाम योग होताहै ॥५॥ सूर्यसे चौथे घरमें शुक्र और बुध बैठे होवें वे दोनों होवें अथवा एक ही होवे तब यवयोग और वज्रयोग दोयोग होते हैं इसके विषय में जो उपपत्ति है उसे मैं देखताहूं ॥६॥

(१) जो समग्र ग्रह चरराशिकेही बैठे होवेंतब तौ रज्जुयोग होताहै और स्थिरराशियों के ही समग्रग्रह होवेंतब मुसलयोग होताहै और जन्मलग्न चंद्रलग्नमेंही सबग्रह बैठेहोवें उसे मुसल योग कहते हैं ॥

विलग्नपार्श्वद्वयवर्तिनीने ज्ञशुक्रजीवान्यतमो विलग्ने ॥
कुजार्किचन्द्राः खजलस्मरस्था वज्रं विलोमाच्च यवो न किंवा॥७॥
सर्वैर्नभोगैर्यदि नाभसाख्यो व्यालाख्यमाले त्रिभिरेवखेटैः ॥
कथं भवेतामिति चिन्तयन्ति मुनिप्रणीतं कथमन्यथा स्यात् ॥८॥

लग्नके दोनों वगल नाम वारहवे दूसरे घरमें बुध शुक्र और बृहस्पति इन तीनों ग्रहोंमेंसे कोई एक ग्रह होवे और दशम घर में मङ्गल, चतुर्थ घरमें शनि और सप्तम घरमें चन्द्रमा बैठा होवे तव वज्रनामक योग होताहै और इसके विलोम क्रमसे यव नाम योग होताहै ॥ ७॥ इस प्रकार सब ग्रहों से नाभसनाम योग और तीन ग्रहों से व्यालयोग और मालायोग होतेहैं वे कैसेहैं ये विचार करते हैं मुनियों का कहा अन्यथा कैसे होवे ॥ ८ ॥

त्यक्त्वा केन्द्राणि चेत्खेटाः शेषस्थानेषु संस्थिताः ॥
वापीयोगो भवेदेवं गदितः पूर्वसूरिभिः ॥ ९ ॥
लग्नाच्चतुर्थात्स्मरतः खमध्याच्चतुर्ग्रहस्थैर्गगने चरेन्द्रैः ॥
क्रमेण यूपश्च शरश्च शक्तिर्दण्डः प्रदिष्टः खलु जातकज्ञैः ॥१०॥

जो केंद्रस्थानों को छोड़कर यदि संपूर्ण ग्रह बाकी और स्थानोंमें बैठे होवें तव वापीयोग होताहै ऐसा पूर्व पंडितों ने कहा है ॥९॥ लग्नसे, चतुर्थ स्थानसे, सप्तम स्थानसे और दशम स्थानसे यदि ४ ग्रह दशम घरमें बैठे होवें तव लग्नसे दशम घरमें ४ ग्रह होने से यूपयोग, चतुर्थ से दशम घरमें ४ ग्रह बैठें तो शरयोग, सप्तम से दशम ४ ग्रह होवें तव शक्ति योग और दशमसे दशम घरमें ४ ग्रह बैठें तब दण्ड योग होताहै ऐसा जातकशास्त्रके जाननेवालोंने कहाहै ॥ १० ॥

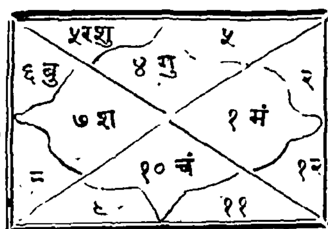
लग्नाच्चतुर्थात्स्मरतः खमध्यात्सप्तर्क्षगैर्नौरथकूटसंज्ञः ॥
छत्रं धनुश्चान्यगृहप्रवृत्तैर्नोपूर्वकैर्योग इहार्धचन्द्रः ॥ ११ ॥
तनोर्धनाच्चैकगृहान्तरेण स्युः स्थानषट्के गगनेचरेन्द्राः ॥
चक्राभिधानश्च समुद्रनामा योगा इतीहाकृतिजाश्च विंशत् ॥

लग्नसे चतुर्थसे सप्तमसे दशमसे यदि सप्तम घरमें ग्रह बैठे होवें तव क्रम से नौकायोग, कूटयोग, छत्रयोग और धनुषयोग होते हैं जैसे लग्नसे सप्तमघरमें ग्रह

होवे तौ नौकायोग, चतुर्थसे सप्तम घरमें ग्रह होवे तौ कूटयोग सप्तम से सप्तम में ग्रह होवे तौ छत्रयोग और दशम घरसे सप्तम में ग्रह होवे तौ धनुष योग ग्रह होते हैं, उक्त ग्रहों से यदि अन्य ग्रहों में कोई ग्रह होवे तब अर्द्धचन्द्रयोग होताहै॥ ११॥ लग्नसे और धनसे एकएक घरके अन्तरालसे यदि स त्र ग्रह बैठे होवें तब क्रमसे चक्रयोग और समुद्रयोगसे आदि लेकर बीस योग होतेहैं ॥ १२ ॥

ये योगाः कथिताः पुरा बहुतरास्तेषामभावे भवे-
द्गोलैश्चैकगतैर्युगं द्विगृहगैः शूलस्त्रिगेहोपगैः ॥
केदारश्च चतुर्षु सर्वखचरैः पाशस्तु पंचस्थितैः
षट्स्थैर्दामनिका च सप्तगृहगैर्वीणेति सङ्ख्या इमे ।१३।
नानाप्रकारैः किलकालविद्भिर्योगा महद्भिः परिकीर्तिता ये ॥
तत्कर्तृपाको हि फलं तदीयं बलानुमानेन विचिन्तनीयम् ॥१४॥

जे योग पहले कहे हैं उनमेंसे दो घरोंमें ही सबग्रह बैठे होवें तब युग योग होताहै और तीनही राशियोंमें समग्रग्रह बैठे होवें तब शूलयोग, चारघरों में ही सब ग्रह बैठे होवें तब केदारयोग, पांच घरोंमें सब ग्रह बैठे होवें तब पाशयोग, छः राशियोंमें सब ग्रह बैठे होवें तब दामयोग और यदि सातराशियों में सबग्रह बैठे होवें तब बीण योग होताहै ॥ १३ ॥ महात्माओंने जे नानाप्रकार के योग कहेहैं उनके बलाबल विचारसे उन्हींकी दशाओंके परिपाक समयमें फल होता है ॥ १४ ॥



चञ्चद्रूपेणान्विताः क्रौर्यभाजो जातोत्साहाः क्रूरकार्ये नितान्तम् ॥
रज्जूयोगोत्पन्नमर्त्याः स्वदेशे ह्यन्यस्मिन्वै संचरन्त्यर्थलब्ध्यै ॥१५॥
नानामान्यज्ञानधन्योपपन्नः पुत्रैर्लक्ष्म्या राजते राजतेजाः ॥
पृथ्वीपालस्याश्रितः स्यात्सहर्षो हर्षोत्कर्षावासिकृन्मौसलेयः ॥१६॥

जिन मनुष्योंका रज्जुयोगमें जन्म हुआ होवे वे मनुष्य बड़े रूपवान्, क्रूर और उत्साही होते हैं और धनकी प्राप्ति के अर्थ स्वदेशमें और विदेशमें सबसमय घूमने वाले होते हैं ॥ १५ ॥ जिस मनुष्यका मुसलयोग में जन्म होताहै वो मनुष्य नाना पुरुषों को मान्य, ज्ञानसे और धनसे युक्त, राजाओं कासा जिसका तेज, राजाओं के आश्रय से रहनेवाला, सदा प्रसन्नमुख, हर्षकी बृद्धिसे प्राप्ति करने वाला और धन पुत्रसे संपन्न होताहै ॥ १६ ॥

शश्वत्पूर्णाः पूर्णरत्नैः स्वगेहा राजस्नेहाः पुण्यदेहाश्च मर्त्याः ॥
कीर्त्या युक्ताः सर्वदा ते सदैवा दैवाद्येषां जन्मकाले नलश्चेत् ॥ १७ ॥
पुत्रैर्मित्रैश्चारुभूषाविशेषैर्नानायानैरन्वितास्ते भवन्ति ॥
येषां पुंसां सूतिकाले हि माला मालादोलाकामिनीकेलिशीलः ॥ १८ ॥

जिसके जन्मकालमें नलनाम योग होताहै वो मनुष्य अनेक तरहके रत्नों से परिपूर्ण, राजाका स्नेही, अपने घरका निवासी, पवित्र जिनों का देह और कीर्तिसे युक्त होताहै ॥ १७ ॥ जिसके जन्मसमयमें मालानाम योग होताहै वो पुरुष पुत्रोंसे और मित्रों से परिपूर्ण, अनेक आभूषण नानारत्नों से और सवारियोंसे परिपूर्ण और माला हिंडोला और स्त्रियोंके सङ्ग क्रीड़ा करनेवाला होता है ॥ १८ ॥

भोक्तान्यस्यान्नस्य रौद्रो दरिद्रो निद्रोत्साहो रुट्समुद्रोप्यभद्रः ॥
दुर्दर्पः स्याच्चापकाराय सार्पः सर्पः सूतौ यस्य मर्त्यस्य योगः ॥ १९ ॥
नानाशास्त्रानेकमन्त्रानुरक्तो गीते वाद्ये कोविदश्चापि यज्वा ॥
रौद्रो द्वेषी द्वेषिवर्गैर्वियुक्तो युक्तो योषाभूषणाद्यैर्गदायाम् ॥ २० ॥

जिस पुरुष के जन्म समय में सर्पनाम योग होता है वो पुरुष दूसरेके अन्नका खानेवाला बड़ा दरिद्री, बड़ा कठोर, सोवनेमें उत्साह रखने वाला, क्रोध का समुद्र बड़ा, अमङ्गल रूप, बड़ा घमण्डी और परोपकार करनेमें सर्पके समान होताहै ॥ १९ ॥ जिस मनुष्य के जन्मसमयमें गदानामक योग होता है वो पुरुष नानाशास्त्रोंमें प्रवीण अनेक मंत्रोंमें अनुराग रखने वाला, गाने बजानेमें कुशल, यज्ञ करनेवाला, भयङ्कर, सबों से द्वेष रखनेवाला, वैरियोंसे रहित और स्त्री भूषणों से युक्त होता है ॥ २० ॥

दीनो हीनो वैभवेनार्थमित्रैर्यस्योत्पत्त्या वासकार्श्योंप्यवश्यम् ॥
याति प्रीतिं प्राप्य मर्त्यः कुयोषां त्यक्त्वा योगे शाकटे यस्य जन्म ॥ २१

येषां सूतौ मानवानां वियोगो भोगो योगोत्पन्न सौख्यं न तेषाम्॥
याने प्रीतिर्नित्यमेव प्रवासे वासोऽर्थानामल्पता जल्पतार्यैः॥२२॥

जो मनुष्य शकटयोगमें जन्मता है वो मनुष्य बड़ा दीन, वैभवसे धनसे और मित्रोंसे हीन, जन्मसे ही दुर्वल और दुष्ट स्त्रीसे प्रीति करनेवाला होता है ॥ २१ ॥ जिसका वियोग नाम योग में जन्म होताहै वोमनुष्य भोगोंके निमित्तसे कभी सुख नहीं पाता है. परदेश जाने में रुचि रखनेवाला धनों की अल्पता और बड़ोंके साथ बोलाचाली से रहित होता है ॥ २२ ॥

भूयोत्कर्षः साहसीसङ्गरेच्छः सौख्यैर्युक्तोत्यन्तबुद्धिर्नरः स्यात् ॥
प्रीतिं गच्छेत्पूर्वपत्न्याः सपत्न्या द्रोहं चैवं शृंगपूर्वे सुखाटे ॥२३॥
प्रैष्यो मुक्तः साधुभिर्मित्रवर्गैः कृष्याजीवी दुःखितोत्यन्तभुक् स्यात्॥
उत्पत्तिं योलांगलाख्ये प्रयाति याति क्लेशं निर्धनत्वात्प्रकामम् । २४

जो शृङ्गाटकनामयोगमें जन्म लेता है वो मनुष्य सवोंमें उत्कर्ष पानेवाला, बड़ा साहसी, लड़ने को इच्छा रखनेवाला, सब तरह सुखोंसे युक्त, बड़ा बुद्धिमान और पहली स्त्रीसंप्रीति रखनेवाला और उसकीसोतसे द्रोह रखनेवाला होताहै॥ २३॥ जो मनुष्य लांगलनामक योगमें जन्म लेताहै वो मनुष्य राजाका नौकर भलेमानस और मित्रवर्गोंसे रहित,खेतीसे जीविका करनेवाला,अत्यन्त दुखी,बहुत भोजन करनेवाला और वो मनुष्य निर्धनताके हेतुसे क्लेश पाने वाला होताहै ॥ २४ ॥

आद्ये भागे जीवितस्यांतिमे च सौख्योपेतो भाग्यवान्मानवःस्यात्॥
मध्ये भागे भाग्यहीनः प्रकामं कामक्रोधैरन्वितो वज्र योगे ॥२५॥
मध्ये भागे धर्मकामार्थसम्पत्सौख्यैर्युक्तः स्याद्विनीतो वदान्य ॥
नित्योत्साहः सद्व्रते तु प्रशान्तः शान्तक्रोधो यः प्रसूतो यवाख्ये॥२६॥

जो मनुष्य वज्रयोग में जन्म लेताहै वो मनुष्य जीवित के आद्य भागमें और अन्तभागमें सुखसे युक्त, बड़ा भाग्यशाली होताहै परन्तु आयुके मध्यभागमें निर्भाग्य

और काम क्रोधसे युक्त होताहै ॥२५॥ जो यत्र नाम योगमें जन्मलेताहै वो मनुष्य आयुके मध्यभागमें धर्मकामधनसंपत्तिसे सुखसे युक्त, बड़ा नम्र, सत्यवक्ता, उत्तम व्रतमें नित्य उत्साह रखनेवाला, शांतप्रकृति और क्रोध रहित होता है ॥ २६ ॥

नित्यं हर्षोत्कर्षशाली बलीयांश्चञ्चत्कान्तिर्गीतकीर्तिर्मनुष्यः ॥
योगे सूतिश्चेत्सरोजे सराजा राज्ञोवंशे वा भवेद्दीर्घजीवी॥ २७॥
दीर्घायुः स्यादात्मवंशावतंसः सौख्योपेतोऽत्यन्तधीरो मनीषी॥
चञ्चद्वाक्यः सन्मनाः पुष्पवापो वापीयोगे यः प्रसूतः प्रतापी॥२८

जिसका कमलनामके योगमें जन्म होता है वो पुरुष सदा प्रसन्नता पूर्वक रहने वाला, बड़ा बलवान, बड़ा तेजस्वी, गान करीगई है कीर्ति जिसकी ऐसा राजाही होताहै अथवा राजकुलमें जन्म लेकर दीर्घजीवी होताहै ॥२७॥ जिसका वापीयोगमें जन्म होताहै वो पुरुष दीर्घायुः अपने कुलका शिरोभूषण(मुकुट),सुखसे युक्त, बड़ा धीर, बुद्धिमान, प्रियवाक्य कहनेवाला, उदार जिसका मन,फूलोंकी वाटिका बनाने वाला और बड़ा प्रतापी होताहै ॥२८॥

धीरोदारो यज्ञकर्मानुसारो नानाविद्यासद्विचारो नरो वै ।
यस्योत्पत्तौ वर्तते यूप योगो योगो लक्ष्म्या जायते तस्य नूनम्२९
हिंस्रोत्यन्तं शिल्पदुःखैः प्रतप्तः प्राप्तानन्दः काननान्ते शरज्ञः ।
मर्त्यो योगे यः शरे जातजन्मा जन्मारम्भात्तस्य न क्वापिसौख्यम्

जिसके जन्म समयमें यूपनाम योग होता है वो पुरुष धैर्यवान्, उदार, यज्ञकर्म करनेवाला, अनेक विद्याओंके उत्तम विचारोंसे युक्त और अवश्य धनवान् होता है ॥२९॥ जो पुरुष बाणनाम योगमें जन्म लेताहै वो पुरुष जीवोंकी हिंसा करनेवाला कारीगरीके दुःखोंसे दुखी, वनमें प्रसन्न रहने वाला, बाण विद्याका जानने वाला होताहै और उस पुरुषको जन्मसे लेकर कभी सुख नहीं मिलता है ॥३०॥

नीचैरुच्चैः प्रीतिकृत्मालसश्च सौख्यैरर्थैर्वर्जितो निर्बलश्च ॥
युद्धे तस्य बुद्धिर्विशाला शालासौख्यस्याल्पता शक्तियोगे ॥३१॥
दीनो हीनोन्मित्तसंजातसख्यः प्रेष्यद्वेषी गोत्रजैर्जातवैरः ॥
कान्तापुत्रैरर्थमित्रैर्विहीनो हीनो बुद्ध्या दण्डयोगाप्तजन्मा ॥३२॥

जिस पुरुषके जन्मसमयमें शक्तिनाम योग होताहै वो नीचोंसे और श्रेष्ठोंसे प्रीति करनेवाला, बड़ा आलसी, सुखसे धनसे रहित, निर्बल, वादविदादमें और युद्ध में बुद्धि रखनेवाला और शालासुखसे रहित होताहै ॥३१॥ जो दंडनाम योगमें जन्मलेताहै वो दीनहीन पुरुषोंसे मित्रता करनेवाला, सेवकोंसे द्वेष करनेवाला, अपने गोत्रके पुरुषोंसे वैर करनेवाला, कांता (स्त्री) पुत्र धन मित्रसे रहित, और बुद्धि रहित होता है ॥३२॥

ख्यातो लुब्धो भोगसौख्यैर्विहीनो यो नौयोगे लब्धजन्मा मनुष्यः॥
क्लेशी शश्वच्चञ्चलस्वान्तवृत्तिर्वृत्तिः स्तेयोभूतधान्येनतस्य ॥३३॥
दुर्गारण्यावासशीलश्च मल्लभिल्लप्रीतिर्निर्धनो निन्द्यकर्मा ॥
धर्माधर्मज्ञानहीनश्च कूटः कूटप्राप्तोत्पत्तिरेवं मनुष्यः॥३४॥

जो मनुष्य नौयोगमें जन्मलेताहै वो सर्वत्र विख्यात,बड़ा लोभी, भोगसे सुख से रहित, निरन्तर क्लेश भोगनेवाला, चंचल जिसकी मनोवृत्ति और चोरीके धनसे जीविका करनेवाला होताहै॥३३॥कूटनाम योगमें जो जन्म लेताहै वो मनुष्य दुर्गमें वनमें रहनेवाला, मल्ल और भीलोंसे प्रीति करनेवाला, धनसे रहित, निंदित कर्मों का करनेवाला, धर्मअधर्मके ज्ञानसे रहित, बड़ा कपटी और कपट की जीविका से जीनेवाला होताहै ॥ ३४ ॥

प्राज्ञो राज्ञां कार्यकर्ता दयालुः पूर्वं पश्चात्सर्वसौख्यैरुपेतः ॥
यस्योत्पत्तौ छत्त्रयोगोपलब्धिर्लब्धिस्तस्य छत्त्रसच्चामरादेः॥३५॥
आद्ये भागे चान्तिमे जीवितस्य सौख्योपेतः काननाद्रिप्रचारः॥
योगे जातः कार्मुके सोऽतिगर्वो गर्वोन्मत्तापत्तिकृत्कार्मुकास्त्रः॥३६॥

जिस मनुष्यके जन्मसमयमें छत्रयोग होताहै वो बड़ा बुद्धिमान् राजाओं के कामका करनेवाला, दयालु, जन्मसे लेकर मरणपर्यंत सुख भोगनेवाला और उत्तम छत्रचामरादिकोंसे युक्त होताहै ॥३५॥ जो मनुष्य धनुषयोगमें जन्म लेता है वो पुरुष जीवितके आदि भागके अन्तमें सुख पानेवाला, पर्वतमें वनमें विचरनेवाला गर्वीले बावले पुरुषोंको दुःख देनेवाला और हरसमय तीरकमान धारण करनेवाला होता है ॥३६॥

भूमीपालप्राप्तचञ्चत्प्रतिष्ठः श्रेष्ठः सेनाभूषणार्थाम्बराद्यैः ॥
चेदुत्पत्तौ यस्य योगोऽर्द्धचन्द्रश्चन्द्रः साक्षादुत्सवार्थे जनानाम् ॥
श्रीमद्रूपोऽत्यन्तजातप्रतापो भूयो भूपोपायनैरन्वितः स्यात् ॥
योगे जातः पूरुषो यस्तु चक्रे चक्रे पृथ्व्याः शालिनी तस्य कीर्तिः

जिसके जन्मसमयमें अर्द्धचन्द्र योग होताहै वो मनुष्य राजासे सन्मान प्रतिष्ठा पानेवाला, सेना भूषण धन वस्त्र इन सबोंसे सम्पन्न होता है और सब पुरुषों को चन्द्रमाके समान आनन्ददायक होताहै ॥ ३४ ॥ जो पुरुष चक्रनाम योगमें जन्म लेताहै वो बड़ा रूपवान्, बड़ा प्रतापी, राजाके दिये पारितोषिकोंसे संपन्न, होताहै और समग्र भूचक्रमें उसकी विख्यात कीर्ति होतीहै ॥ ३८ ॥

दानाधीरश्चारुशीलो दयालुः पृथ्वीपालप्राप्तसौख्यः प्रकामम् ॥
योगे जातोः यः समुद्रे सधन्यो धन्योवंशस्तेन नूनं नरेण ॥३९॥
विद्यासत्त्वौदार्यसामर्थ्यहीना नानायासान्नित्यजातप्रवासाः ॥
येषां योगेः सम्भवे गोलनामा नानासत्यप्रीतयोऽनीतयस्ते॥४०॥

जो समुद्र योग में जन्म लेता है वो पुरुष दान करने में अधीर, बड़ा सुन्दर जिसका स्वभाव, बड़ा दयालु, राजासे सुख पानेवाला, बड़ा धन्य होताहै और उस पुरुषका वंशभी धन्य होताहै ॥ ३९ ॥ जिस पुरुषके जन्मसमयमें गोलनाम योग होताहै वो पुरुष विद्यासत्व औदार्य और सामर्थ्यसे हीन, नानापरिश्रम करने से परदेशका निवासी, सबोंसे प्रीति करनेवाला और अनीतिमें निरत होताहै ॥ ४०॥

पाखण्डेनाखण्डितप्रीतिभाजो निर्लज्जाः स्युर्धर्मकर्मप्रमुक्ताः ॥
पुत्रैरर्थैः सर्वथा ते वियुक्ता युक्तायुक्तज्ञानशून्यायुगाख्ये ॥ ४१ ॥
युद्धे वादे तत्पराश्चातिशूराः क्रूराः स्वांते निष्ठुरा निर्धनाश्च ॥
योगे येषां सूतिकाले हि शूलः शूलप्रायास्ते जनानां भवन्ति॥४२॥

जिसका युगनाम योगमें जन्म होताहै वो पुरुष पाखण्डसे खण्डित, प्रीति करनेवाला, बड़ा निर्लज्ज, धर्मकर्म रहित, पुत्रसे धनसे सर्वप्रकाररहित और योग्यायोग्यके ज्ञानसे शून्य होताहै ॥ ४१ ॥ जिसके जन्मसमयमें शूलयोग होताहै वे

पुरुष युद्ध करनेमें और वाद विवाद करनेमें तत्पर, बड़े शूरवीर, अन्तः करण में क्रूर, बड़े निष्ठुर, दरिद्री और सब पुरुषोंको शूलके समान दुखदेने वाले होतेहैं॥४२

सत्योपेताश्चार्थवन्तो विनीताः कृष्यौत्सुक्याश्चोपकारादराश्च ।
योगे केदारे नरास्तेपि धीराधीराचाराश्चापि तेषां विशेषात् ॥ ४३।
दीनाकारास्तत्पराश्चापकारे बन्धेनार्ता भूरि तल्पाः सदम्भाः ॥
नानानर्थाः पाशयोगे प्रजाता जातारण्यप्रीतयःस्युर्मनुष्याः ।४४

जे पुरुष केदारयोगमें जन्म लेतेहैं वे पुरुष सत्यसे युक्त, धनवान, बड़े नम्र, खेती करनेमें उत्कण्ठा रखनेवाले, परोपकार करनेमें आदरयुक्त; बड़े धीर होतेहैं और विशेषकरके उनका धीरतायुक्त आचार होताहै ॥ ४३ ॥ जे पुरुष पाशयोगमें जन्म लेतेहैं वे पुरुष दीन जिनका आकार, अपकार करनेमें तत्पर, बन्धनसे आर्त, बहुत जिसके शय्या, दम्भसहित अनेक अनर्थोंका करनेवाला और बनके रहने में प्रीति रखनेवाला होताहै ॥ ४४ ॥

जातानन्दो नन्दनाद्यैः सुधीरो विद्वान्भूषाकोशसञ्जाततोषः ॥
चञ्चच्छीलोदारबुद्धिप्रशस्तः शस्तः सूतौ दामिनी यस्य योगः॥
अर्थोपेताः शास्त्रपारंगताश्च संगीतज्ञाः पोषकाः स्युर्बहुनाम् ॥
नानासौख्यैरन्वितास्तु प्रवीणावीणायोगे प्राणिनां जन्म येषाम् ॥

जिस पुरुषका दामिनी नामके योगमें जन्म होता है वो पुरुष पुत्रादिकों से आनन्द भोगनेवाला, बड़ा धीर, विद्वान्, भूषण खजानेसे संतोषयुक्त, बड़ा शील बान; उदारबुद्धि और प्रशस्त होताहै ॥ ४५ ॥ जो मनुष्य वीणायोगमें जन्म लेते हैं वे मनुष्य धनसे संपन्न, शास्त्रके पारङ्गत, गानविद्याके जाननेवाले, बहुतों के पोषण करनेवाले, अनेक सुखोंसे संपन्न और बड़े चतुर होते हैं ॥ ४६ ॥

प्रोक्तैरेतैर्नाभसाख्यैश्च योगैः स्यात्सर्वेषां प्राणिनां जन्म कामम्॥
तस्मादेतेत्यन्तयत्नादपूर्वाः पूर्वाचार्यैर्जातके संप्रदिष्टा ॥ ४७ ॥

एवं योगानां फलं शालिनीसद्वृत्तैर्व्यक्तं युक्तियुक्तं निरुक्तम्॥
तस्मात्प्राज्ञैःसत्कवीनामनूनं सौख्यं चैवं जातके कोमलोक्त्या ४८॥

जो ये नाभसनाम योग कहेहैं तिनकरके परमेश्वर सबोंका जन्म करै इसी हेतुसे पूर्वाचार्योंने अत्यन्त अपूर्व जे वह योगहैं वे जातकशास्त्रमें कहेहैं ॥४७॥ इसी तरहसे इन योगोंका फल युक्तिसे युक्त,शालिनीनामके छन्दोंसे कहाहै वे अत्यंत अपूर्व योग पूर्वाचार्योंने कोमल उक्तिसे कहेहैं ॥४८॥ इतिजातकाभरणे नाभसयोगाध्यायेभाषानुवादितायां मार्जनीटीकायां वनमालिकृतायांयोगाध्यायो नाम द्वाविंशः समाप्तः ॥

—※—

अथ रश्मिजातकाध्यायः।

येषा नराणां किरणाः प्रसूता एकादितः पञ्च भवेति यावत ॥
ते सर्वथा दुःखदारिद्रभाजो नीचप्रियानीचकुलाः खलाश्च ॥१॥
पञ्चादितः खेन्दुमिताश्च यावन्मरीचयस्ते जनयन्त्यवश्यम् ॥
नरान्विदेशाभिरतान्सुदीनान्भाग्येन हीनान्प्रतिपालितांश्च॥२॥

जिन पुरुषोंके एकसे लेकर पांच किरणतक किरण जन्मकालमें होते हैं वे पुरुष सर्वप्रकारसे दुःखभागी होतेहैं और नीचोंसे प्यार रखनेवाले, नीचकुलमें जन्म लेनेवाले और बड़े खल होते हैं॥ १ ॥ जिसके पांचसे लेकर दशतक किरण होतेहैं वे पुरुष अवश्यही विदेशके रहनेवाले, बड़े दीन, भाग्यसे हीन और दूसरे पुरुषोंसे प्रतिपालित होते हैं ॥२॥

परं दशभ्यस्तिथयस्तु यावत्ते भानवो मानवमल्पकार्थम् ॥
धर्मप्रियं संजनयन्ति नूनं कुलानुरूपं सुखिनं सुवेषम् ॥३॥
पञ्चेन्दुतोविंशतिरेव यावद्गभस्तयस्ते मनुजं सुशीलम् ॥
कुर्वंतिसत्कीर्तिकरं सुधीरं वंशावतंसं कुशलं कलासु ॥४॥

जिस पुरुषके दशसे उपरांत पन्द्रहतक किरणें होतींहैं उस पुरुषको अल्पधनयुक्त धर्म जिसको प्रिय, अपने कुलानुरूप सुख भोगनेवाला और सुवेष करतीं हैं ॥ ३ ॥ जिस पुरुषको पन्द्रहसे लेकर वीसतक किरण होते हैं तब वे किरण उस पुरुष के ताई बड़ा सुशील, सत्कीर्ति करनेवाला, बड़ा वीर, अपने कुलका मुकुटमणि और सब कलाओंमें कुशल, करते हैं ॥ ४ ॥

यस्य प्रसूतौ च नखा मयूखास्तद्भाग्यरेखा सुहृदां सुखाय ॥
पञ्चाधिका विंशतिरत्र यावत्तावत्फलाधिक्यमनुक्रमेण ॥५॥
यावत्त्रिंशत्संमिताः पञ्चवर्गाद् येषां सूतौ चेन्मयूखा नराणाम् ।
भूमीपालप्राप्तसौख्याः प्रधाना नानासंपत्संयुतास्ते भवन्ति॥६॥

जिस मनुष्यके प्रसूति कालमें वीस किरण होतेहैं उसकी भाग्य रेखा सुहृदोंके सुखके लिये होतीहै बीससे लेकर जहांतक पच्चीस किरण होते हैं तहांतक क्रमसे अधिकसे अधिक किरणोंका फल कहना चाहिये ॥५॥ जिस मनुष्यके जन्मसमय में पच्चीससे लेकर तीसतक किरण होतेहैं वे मनुष्य राजासे सुख पानेवाले अथवा राजाके प्रधान (मंत्री) और नानासंपत्तियोंसे संयुक्त होते हैं ॥ ६ ॥

येषां नूनं मानवानां प्रसूतावेकत्रिंशत्संख्यकाश्चेन्मयूखाः ॥
विख्यातास्ते राजतुल्याः प्रधाना नानासेनास्वामिनः संभवन्ति॥
प्रसूतिकाले किरणा नराणां द्वित्रिप्रमाणा यदि संभवन्ति ॥
नानापुराणामथवा गिराणां ते स्वामिनो ग्रामशताधिपा वा॥८॥

जिन पुरुषोंके जन्मसमयमें यदि इकतीस किरण होतेहैं वे पुरुष राजाके समान जगत में विख्यात अथवा मंत्री और अनेक सेनाओंके स्वामी होते हैं ॥ ७ ॥ सिस पुरुषके जन्म समयमें बत्तीस किरण होते हैं वो पुरुष अनेक नगरोंका और पर्वतोंका स्वामी सैंकड़ों ग्रामोंका अधिपती होता है ॥ ८ ॥

रामाग्निभिश्चापि युगाग्निभिर्वा करैर्नरस्य प्रसवो यदि स्यात् ॥
क्रमात्सहस्रं त्रिसहस्रकं च ग्रामान्स पातीति वदन्ति केचित्॥९॥
पञ्चत्रिसंख्यैः खलु यो मयूखैर्जातो भवेन्मण्डलनायकश्च ॥
विलाससत्त्वामलशीलशाली यशोविशेषाधिककोशयुक्तः॥१०॥

जिस पुरुषके जन्म समयमें तेतीस अथवा चौतीस किरण होतेहैं वो पुरुष क्रमसे तीन हजार और चार हजार ग्रामोंको पालन करता है ऐसा कहते हैं ॥९॥ जो पुरुष पैंतीस किरणोंमें जन्म लेता है वो मण्डलका स्वामी होता है और क्रीडा करनेवाला, वड़ा पुरुषार्थी, वड़ा सुन्दर जिसका शील, सब जगे जिसका यश और वड़े खजानेका पति होताहै ॥१०॥

रसाग्निसंख्यैश्च नगाग्निसंख्यैर्जातोमयूखैः खलु यः क्रमेण ॥
ग्रामान्मनुष्यः सतु सार्धलक्षं लक्षत्रयं पाति महाप्रतापात्॥११॥
यस्य प्रसूतौ किरणप्रमाणमष्टत्रिसंख्यं सभवेन्महौजाः ॥
भूमी पतिर्लक्षचतुष्टयं हि ग्रामान्प्रशास्तीन्द्रसमानसम्पत् ॥१२॥

जो मनुष्य छत्तीस या सैंतीस किरणों का जन्म लेनेवाला होता है वो क्रमसे डेढ़लाख ग्राम और तीन लाख ग्रामोंका पालन करनेवाला प्रतापी होता है ॥११॥ जिसके जन्मसमयमें अड़तीसकिरण होतेहैं वो मनुष्य बड़ा पुरुपार्थी पृथ्वीका पालन करनेवाला, चारलाख ग्रामोंका पालन करनेवाला, इन्द्रके समान संपत्तियुक्त होताहै॥१२

नवत्रिसंख्याजनने मयूखा विख्यातकीर्तिर्नृपतिर्भवेत्सः ॥
प्रौढप्रतापाद्गरुडस्वरूपोगवाद्धताराातिभुजंगमेषु ॥ १३ ॥
खाब्धिप्रमाणैः किरणैः प्रसूतः क्षोणीपतिस्तद्विजयप्रमाणे ॥
भवन्ति सेनागजगर्जितानां प्रतिस्वनाः खे धनगर्जितानि ॥१४॥

जिसके जन्मसमयमें उन्तालीस किरण होते हैं वो मनुष्य जगत्में विख्यात कीर्ति राजा होताहै और प्रौढ़ प्रतापसे गरुड़जी के समान जिसका स्वभाव, गर्वसे उद्धत जे शत्रु तिनको सर्पोंकी तरह से नाश करनेवाला होताहै ॥ १३ ॥ जो पुरुष चालीस किरणोंके समयमें जन्मलेताहै वो पुरुष पृथ्वी का पति होताहै और प्रतापी राजाओं का जीतने वाला, हाथियोंकी गर्जनायुक्त सेना जिसकी और जिनके प्रतिस्वनसे आकाश के मेघोंमें गर्जना मालूम होवे ऐसा प्रतापी होताहै ॥१४॥

मयूखजालं परिसूतिकाले यस्यैकवेदाह्वयकं नरस्य ॥
ह्यम्भोधिवेलामलमेखलाया भवेदिलायाः परिपालकः सः ॥१५॥

यमलजलधितुल्यो वा गुणाब्धिप्रमाणो
भवति किरणयोगश्चेन्नराणां प्रसूतौ
अतुलबलविलासत्रासितारातिवर्गा
स्त्रिजलधिवलयायाः पालकास्ते पृथिव्याः ॥१६॥

जिस पुरुषके जन्म समयमें इकतालीस किरण होते हैं या पैंतालीस किरण होते हैं वो पुरुष सोमुद्रमेखला भूमिका पालन करनेवाला होता है ॥ १५ ॥ जिस

मनुष्यके जन्मसमयमें तैतालीस किरण होते हैं वो मनुष्य अतुलित वलके विलासमें अपने शत्रुवर्गों को त्रास देने वाला और समुद्रों की मेखलायुक्त भूमी का पालन करनेवाला होता है ॥ १६ ॥

सूतौ वेदयुगप्रमाणकिरणाश्चेत्सार्वभौमः स ना
यत्सेनाजलधौ गलन्मदजलादन्तावलाः शैलताम् ॥
यान्ति च्छत्रविचित्रताः कमठतां मीनध्वजा मीनतां
नौकात्वं च रथास्तथायुधरुचिः कल्लोलमालातुलात ॥ १७ ॥
मश्चाब्धितश्चेत्तपरतो भवन्ति गभस्तयो जन्मनि मानवानाम्॥
ते देवतानामपि दुर्जयाः स्युर्द्वीपान्तरोद्गीतयशोविशेषाः ॥१८॥

जिस मनुष्यके जन्म समयमें चौवालीस किरणोंका वल होता है वो मनुष्य सार्वभौम राजा होताहै जिस मनुष्यकी सेना समुद्रके मत्त हाथी पर्वत होतेहैं और उन हाथियों के मदका जल होताहै और जिस सेना समुद्रमें छत्ररूप कच्छप और ध्वजा पताका मछली और रथ नहीं वेही जहाज और शस्त्र नहीं वे ही कल्लोल (हिलोर) होतीहैं ॥ १७ ॥ जिसके जन्मसमयमें पैंतालीस या पैंतालीससे अधिक किरणों का वल होता है वो मनुष्य देवताओं सेभी दुर्जय होताहै, और उस प्रतापी राजाका यशोविशेष द्वीपांतरोंमें गाते हैं ॥१८॥ इति जातकाभरणे मार्जन्यां टीकायां वनमालिकृतायां रश्मिजातकाध्याये त्रयोविंशोध्यायः ॥ २३ ॥

अथदीप्तादिग्रहफलम् ।

दीप्तस्तुगगतः स्वगो निजगृहे स्वस्थो हि ते हाषतः
शान्तः शोभनवर्गगश्च खचरः शक्तः स्फुरद्रश्मिभाक् ॥
लुप्तः स्याद्विकलः स्वनीचगृहगो दीनः खलः पापयुक्
खेटो य परिपीडितश्च खचरैः स प्रोच्यते पीडितः ॥ १ ॥
दीप्ते प्रतापादतितापितारिर्गलन्मदालंकृतकुञ्जरेशः ॥
नरो भवेत्तन्निलय सलीलं पद्मालयालंकुरुते विलासम् ॥२॥

सब ग्रहोंकी जितनी अवस्था होती हैं उन्हें कहतेहैं ॥ जो ग्रह अपने उच्चका होता है वो ग्रह दीप्त होता है यानी वो दीप्त अवस्थायुक्त कहाताहै और जो स्वक्षेत्री होताहै वो ग्रह स्वस्थ कहाताहै और जो ग्रह मित्रक्षेत्री होताहै वो ग्रह हर्षित कहाताहै और जो ग्रह शुभग्रहके षड्वर्गका होताहै वो ग्रह शांत कहता है और जो ग्रह पूर्ण उदित होताहै वो ग्रह शक्त (समर्थ) कहलाता है, जो ग्रह अस्तङ्गत होताहै वो ग्रह विकल कहलाता है, जो ग्रह अपने नीचका होताहै वो ग्रह दीन कहलाताहै, जो ग्रह पाप ग्रहसे युक्त होताहै वो ग्रह पीड़ित कहलाताहै इस तरहसे ग्रहों के ९ भेद होते हैं ॥ १ ॥ जिस मनुष्यके कुण्डलीमें दीप्त ग्रह होताहै वो मनुष्य अपने प्रतापसे अपने शत्रुओंको ताप देनेवाला होताहै और जिसके बहते मदजल से युक्त हाथी होते हैं उस मनुष्यके घरमें लीला करती लक्ष्मी सदा निवास करतीहै ॥ २ ॥

स्वस्थे महावाहनधान्यरत्नविशालशालाबहुलत्वयुक्तः ॥
सेनापतिः स्यान्मनुजो महौजा वैरिव्रजावाप्तजयाधिशाली॥ ३॥
हर्षिते भवति कामिनीजनोऽत्यन्तभूषणमणिव्रजावित्तः ।
धर्मकर्मकरणैकमानसो मानसोद्भवचयो हतशत्रुः ॥ ४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मसमयमें स्वस्थ ग्रह होताहै वो मनुष्य उत्तम वाहन धान्य रत्नोंकी विशाल शालाओंसे युक्त होताहै और बड़ा प्रतापी, सेनाका पालन करने वाला, वैरीसमूहोंका नाश करनेवाला और दिग्विजय करनेवाला होताहै ॥३॥ जिस मनुष्यके जन्म कुण्डलीमें हर्षित ग्रह होताहै वो कामिनी स्त्री उत्तम भूषण मणियोंके समूहसे युक्त होताहै, धर्मकर्म करनेमें जिसका मन; मनःसङ्कल्पित धनसमूहका प्राप्त होनेवाला और शत्रुओंका नाश करनेवाला होताहै ॥ ४ ॥

शान्तेतिशान्तो हि महीपतीनां मन्त्री स्वतन्त्रो बहुपुत्रमित्रः ।
शास्त्राधिकारी सुतरां नरः स्यात्परोपकारी सुकृतैकचित्तः ॥ ५॥
शक्तेतिशक्तः पुरुषो विशेषात्सुगन्धमाल्याभिरुचिः शुचिश्च ।
विख्यातकीर्तिः सुजनः प्रसन्नो जनोपकर्त्ताऽरिजनप्रहर्ता ॥ ६ ॥

जिस मनुष्यके जन्म कुण्डलीमें शांत ग्रह होताहै वो मनुष्य अत्यन्त शांत, राजओंका मन्त्री, स्वतन्त्र रहनेवाला, बहुत पुत्रमित्रोंसे सम्पन्न, शास्त्रमें अधिकार रखनेवाला, परोपकार करनेवाला और केवल सुकृत करनेमें ही मन रखने वाला

होताहै ॥ ५ ॥ जिस मनुष्यके कुण्डलीमें शक्त ग्रह होताहै वो पुरुष सब काम करने में शक्तिमान् और विशेषके सुगन्धित गन्धमाल्यमें रुचि रखने वाला, बड़ा पवित्र, जगतमें विख्यात् जिसकी कीर्ति, सबोंसे सौजन्य रखनेवाला, सदा प्रसन्न मूर्ति, मनुष्योंका उपकार करनेवाला और शत्रुजनोंका नाश करनेवाला होताहै ॥ ६ ॥

हतबलो विकलो मलिनः सदा रिपुकुलप्रबलश्च गलन्मतिः ॥
खलसखः स्थलसञ्चलितो नरः कृशतरः परकार्यगतादरः ॥७॥
दीनोऽतिदीनोपचयेन तप्तः संप्राप्तभूमीपतिशत्रुभीतिः ॥
संत्यक्तनीतिः खलु हीनकान्तिः स्वजातिवैरं हि नरः करोति॥८॥

जिस मनुष्यके कुण्डली में विकल मनुष्य होताहै वो मनुष्य निर्बल, विकल मलिन, शत्रुकुल, जिससे प्रबल, बुद्धिहीन, खल पुरुषोंसे स्नेह करनेवाला, स्थलमें विचरनेवाला, बड़ा दुर्बल और दूसरेका काम बिगाड़ने वाला होताहै ॥७॥ जिसके कुण्डलीमें दीनग्रह होताहै वो पुरुष अत्यन्त दीन खरचसे तप्त, राजासे और शत्रुसे भय पानेवाला, नीतिसे रहित, तेजहीन और अपने जातिसे शत्रुता रखने वाला होताहै ॥ ८ ॥

खलाभिधाने हि खलैः कलिः स्यात्कान्तातिचिन्तापरितप्तचित्तः।
विदेशयानं धनहीनतां च प्रकोपताल्लुप्तमतिप्रकाशः ॥ ९ ॥
पीडिते भवतिःपीडित सदा व्याधिभिर्व्यसनतोपि नितांतम् ।
याति संचलनतां गिजस्थलाद्व्यकुलत्वनिजबन्धुचिन्तया ॥ १०॥

जिसके कुण्डलीमें खल ग्रह होताहै वो पुरुष खल पुरुषों कलह करनेवाला, स्त्रीको चिंतासे तापयुक्त जिसका चित्त परदेशको जानेवाला, धनसे हीन, बड़ा क्रोधी और बुद्धिप्रकाशसे हीन होताहै ॥ ९ ॥ जिस मनुष्यके कुण्डलीमें पीडित ग्रह होताहै वो सब समय व्याधियोंसे पीडित और अनेक तरहके व्यसनोंसे भी निरन्तर पीड़ित और अपने स्थानसे सदा परदेशमें रहने वाला और अपने वन्धुजनोंकी ओर से निरन्तर व्याकुल होताहै ॥ १०॥ इति जातकाभरणे दीप्तादिग्रहफलवर्णने भाजन्यां टीकायां वनमालिचतुर्वेदिकृतायां चतुर्विंशोध्यायः ॥ २४ ॥

अथ स्थानादियुक्तग्रहफलानि ।

परां विभूतिं जनयन्त्यवश्यं बलाधिकत्वं महसः प्रवृद्धिम् ॥
नानाधनं कौशलगौरवादि कुर्याद्दलं स्थानबलोपपन्नः ॥ १ ॥
आशाबलं यस्य भवेत्प्रकृष्टं खेटः स्वकाष्ठां नियमन नीत्वा ॥
विशिष्टलाभं कुरुते दशायां पुंसां निजद्रव्यविमिश्रितं हि ॥२॥

जो ग्रह स्थानबलसे युक्त होताहै वह ग्रह अवश्य सर्वोत्कृष्ट विभूतिको देता है और बलके आधिक्य को, तेजकी वृद्धिको, नानाप्रकारके धनको और चतुराई गौरवादिकको, करता है ॥ १ ॥ जिस मनुष्यके कुण्डली के ग्रह दिशासे बल पाता है वो ग्रह नियमसे अपनी दिशाको प्राप्त करके अपनी दशामें उत्कृष्ट लाभको करताहै वो लाभ जो उस ग्रहका द्रव्य होता है उस वस्तुसे मिला लाभ करता है ॥२॥

शत्रुक्षयं भूगजवाजिवृद्धिं शौर्यं च रत्नाम्बरसम्पदं च ॥
लीलाविलासं विमलां च कीर्तिं कुर्याद्ग्रहः कालबलाधिशाली॥३॥
आचारशौचशुभसत्ययुताःसुरूपास्तेजस्विनः कृतविदो द्विजदेवभक्ताः
पुष्पाम्बरोत्तमविभूषणसादराश्च सौम्यग्रहैर्बलयुतैः पुरुषा भवन्ति॥४॥

जो ग्रह कालके बलसे युक्त होता है वो शत्रुओंका क्षय पृथिवी हाथी और घोड़े इनकी वृद्धि करता है शूरवीरता रत्नों की और वस्त्रों की संपत्ति करता है लीलाविलास और निर्मल कीर्तिका करनेवाला होता है॥ जिन मनुष्यों के कुण्डली में शुभ ग्रह बली होकर बैठते हैं वो मनुष्य आचार में शौचसे मङ्गलसे और सत्यसे युक्त होते हैं और बड़े रूपवान, तेजस्वी कृतज्ञ, देवताओं के ब्राह्मणों के भक्त और पुष्प वस्त्र और उत्तम भूषण इनमें आदर करने वाले होते हैं ॥ ४ ॥

लुब्धाः कुकर्मनिरता निजकार्यनिष्ठाः
साधुद्विषः स्वकुलहाश्च तमोगुणाढ्याः ॥
क्रूरस्वभावनिरता मलिनाः कृतघ्नाः
पापग्रहैर्बलयुतैः पुरुषा भवन्ति ॥ ५ ॥

द्वौ वा त्रयो वा वलिनो भवन्ति फलप्रदानत्वमिति प्रकल्प्यम्॥
मन्दारसौम्येज्यसितेन्दुसूर्या यथोत्तरं स्युर्बलिनो निसर्गात् ॥६॥

जिस मनुष्यके कुण्डलीमें पापग्रह बली होकर वैठते हैं वे पुरुष बड़े लोभी, खोटे कर्म करने में निरत, अपने काम करनेमें जिनकी निष्ठा, साधु मनुष्योंसे द्वेष करनेवाले, अपने कुल के नाश करनेवाले बड़े तमोगुणी, क्रूर जिनके स्वभाव बड़े मलिन और किये उपकार को नहीं जानने वाले होते हैं ॥ ५ ॥ दो अथवा तीन ग्रह जिसकी कुण्डलीमें बली होकर वैठे होवें तब पूरापूरा फल देते हैं परंतु शनि मङ्गल वुध बृहस्पति शुक्र और सूर्य ये ग्रह उत्तरोत्तर स्वभावसिद्ध फलके देनेवाले होतेहैं शनिके सिवाय मङ्गल,मङ्गल के सिवाय वुध,ये क्रम जानलेना चाहिये ॥६॥

क्वचिन्द्राज्यं क्वचित्पूजां क्वचिद्द्रव्यं क्वचिद्यशः ॥
ददाति खेचरश्चित्रं चेष्टवीर्यसमन्वितः ॥ ७ ॥
दुष्टप्रदः सौम्यनिरीक्षितश्चेद्दुष्टं फलं नो सकलं ददाति ॥
क्रूरेक्षितः सत्फलदोऽपि चैव विचारणेयं किल दृग्वलस्य ॥८॥

जब ग्रह अपने वांछित बलसे युक्त होता है तब कभी राज्य, कभी पूजा,कभा द्रव्यप्राप्ति, कभी यश, इत्यादि फलको देनेवाला होताहै ॥७॥ जो ग्रह किसी तरह रोगेश अष्टमेशादि दोषोंसेयुक्त भीहै परन्तु यदि किसी एकदो शुभग्रह उसे देखतेहोवें तब वो ग्रह उतना दुष्ट फल नहीं देता है इस तरह जो शुभ ग्रह उत्तम फलकाभी देनेवाला है परंतु कोई एक दो पापग्रहों से दृष्टहै तबवो अपना पूर्ण शुभ फल नहीं देताहै इस तरह इसका दृग्वलका विचार कर लेना चाहिये ॥८॥ इति जातकाभरणे मार्जन्यां टीकायां स्थानादियुक्तग्रहफलाध्यायः पंचविंशः समाप्तः ॥ २५ ॥

अथ सूर्ययोगाध्यायः ।

खेचरा दिनमणेर्विधुवर्ज्यं द्वादशे च धनभे ह्युभये वा ॥
वोशिवेश्युभयचर्यभिधानाः प्राक्तनैः समुदिता इति योगाः॥१॥
स्यान्मन्ददृष्टिर्बहुकर्मकर्ता पश्यत्यधश्चोन्नतपूर्वकायः ॥
असत्यवादी यदि वोशियोगः प्रसूतिकाले मनुजस्य यस्य ॥२॥

यदि चन्द्रविना सबग्रह सूर्य से वारहवें घरमें बैठे होवें तब बोशिनाम योग होताहै यदि चन्द्रमाविना सब ग्रह सूर्यसे दूसरे घरमें ही बैठे होवें तब वेशिनाम योग होताहै और यदि सूर्यसे दूसरे बारहवें दोनों घरोंमें ही चन्द्रमाके विना सब ग्रह बैठे होवें तब उभयचरीनाम योग होता है इस तरह से पूर्वाचार्यों ने निश्चय करके ये योग कहेहैं ॥१॥ इनमेंसे जिस पुरुषकी कुण्डलीमें वेशिनाम योग होताहै वो मनुष्य मन्ददृष्टिसे युक्त, अनेक कामोंका करनेवाला, नीचेको देखनेवाला, पूर्वकाय जिसका ऊंचा और झूठ बोलनेवाला होताहै ॥ २ ॥

चेत्संभवे यस्य च वेशियोगो भवेद्दयालुः पृथुपूर्वकायः ॥
स्याद्वाग्विलासी लसतासमेतस्तिर्यक्प्रचारः खलु तस्य दृष्टेः ॥ ३॥
सर्वसहः स्थिरतरोऽतितरां समृद्धः
सत्वाधिकः समशरीरविराजमानः ॥
नात्युच्चकः सरलदृक् प्रबलामलश्री
युक्तः किलोभयचरी प्रभवो नरः स्यात् ॥ ४॥
सूर्यस्य वीर्यात्सचरानुसाराद्राश्यंशयोगात्प्रविचार्य सर्वम् ॥
न्यूनं समं वा प्रबलं नराणां फलं सुधीभिः परिकल्पनीयम् ॥ ५ ॥

जिसके कुण्डलीमें जन्म समयमें वेशिनाम योग होताहै वो पुरुष बड़ा दयालु पूर्वकाय जिसका पुष्ठ, अनेक तरहके वाग्विलास से युक्त, आलकसी और नेत्रोंसे तिरछा देखनेवाला होता है ॥ ३ ॥ जो पुरुष उभयचरीनाम योगमें जन्म लेता है वो पुरुष सबोंका सहनेवाला, अत्यन्त स्थिर, अत्यन्य धनसमृद्ध, सत्वगुण के आधिक्यसे युक्त, न ऊंचा न लम्बा ऐसा जिसका शरीर, सूधी दृष्टिसे देखनेवाला अत्यन्त प्रबल और उत्तम लक्ष्मी से युक्त होता है ॥ ४ ॥ इन तीनों योगोंमें प्रथम सूर्यका बल देखना, फिर योगकारक ग्रहोंका बल देखना, फिर राशियोंके नवांशका योग देखना इन सबोंका विचार करके फिर बुद्धिमानोंको न्यून या सम या प्रबल जो कुछ फल दीखे वो कहना चाहिये ॥ ५ ॥ इति सूर्ययोगाध्यायः ॥

अथ चन्द्रयोगाध्यायः ॥

द्विजपतेर्धनगैः सुनफा भवेद्व्ययगतैरनफा रविवर्जितः ॥
दुरुधराः खचरैरुभयस्थितैर्मुनिवरैरुदितामहदादरात् ॥ १ ॥
निशाकराजन्मनि खेचरेन्द्रधनव्ययस्थानगता न चेत्स्युः ॥
वदन्ति केमद्रुमनामयोगं लक्ष्मीवियोगं कुरुते स नूनम् ॥ २ ॥

चन्द्रमासे सूर्यके बिना सब ग्रह द्वितीयस्थान में बैठे होवें तब सुनफानाम योग होताहै, और सूर्यके बिना समग्र ग्रह यदि बारहवें स्थानमें बैठे होवें तो अनफानाम योग होताहै, और चन्द्रमासे सूर्यके बिना समग्र ग्रह दूसरे घरमें और बारहवें घरमें बैठे होवें तो दुर्धरानाम योग होताहै, ये तीनों योग मुनिवरोंने बड़े आदरसे कहे हैं ॥ १ ॥ जिस पुरुषके जन्म समयमें चन्द्रमासे दूसरे बारहवें घरमें कोईभी ग्रह नहीं होवें तब केमद्रुमनाम योग होताहै वो केमद्रुम जिस पुरुषके होताहै तब उस पुरुष को दरिद्री करताहै ऐसा मुनि कहते हैं ॥ २ ॥

निजभुजार्जितमानसमुन्नतो विषदकीर्तियुतो मतिमान्सुखी ॥
ननु नरः सुनफाप्रभवो भवेन्नरपतेः सचिवः सुकृती कृती ॥ ३॥
उदारपूर्तिर्गुणकीर्तिशाली कन्दर्पकेलिः शुभवाग्विलासः ॥
सद्वृत्तयुक्तः सततं विनीतः प्रभुर्नरः स्यादनफाभिधाने ॥ ४ ॥

जिस मनुष्यका सुनफा योगमें जन्म होताहै वो मनुष्य अपने भुजबलसे, मान समुन्नतिका संपादन करनेवाला, विशदकीर्तिसे युक्त, बड़ा बुद्धिमान्, सदा सुखी राजाका मन्त्री, बड़ा पुण्यवान् और सत्यवक्ता होताहै ॥३॥ उदार जिसकी कीर्ति, कामी, शुभवाग्विलास करनेवाला, सत् वर्तावसे युक्त, निरन्तर विनीत और सब तरहसे समर्थ अनफा नाम योगमें जन्म लेनेवाला पुरुष होताहै ॥ ४॥

द्रविणवाहनवाहवसुंधरासुखयुतं सततं कुरुते नृपम् ॥
दुरुधरातितरां जितवैरिणं सुनयनानयनाचञ्चललालसम् ॥५॥
विरुद्धवृत्तिर्मलिनः कुवेषः प्रेष्यो मनुष्यो हि विदेशवासी ॥
कान्तासुहृत्सूनुधनैर्विहीनः केमद्रुमे भूमिपतेः सुतोऽपि ॥ ६ ॥

जो मनुष्य दुरुधरानामक योगमें जन्म लेताहै वो पुरुष धन सवारी पृथ्वी के सुखसे युक्त, वैरियोंका जीतनेवाला, स्त्रियोंके स्नेह भरे कटाक्षोंका पात्र होताहै॥५॥ जिसके जन्म समयमें केमद्रुम नाम योग होताहै वो मनुष्य विरोधसे जीविका करने वाला, बड़ा मलिन, बुरा जिसका वेष, नौकरी करनेवाला, परदेशमें रहने वाला, स्त्री मित्र पुत्र और धनसे रहित होताहै ॥ ६ ॥

केन्द्रादिगामी यदि यामिनीशः स्यात्पद्मिनीनायकतः करोति ॥
विज्ञानमानोन्नतिनैपुणानि कनिष्ठमध्योत्तमतायुतानि ॥ ७ ॥

प्रालेयरश्मिः परिसूतिकाले निरीक्ष्यमाणः सकलैर्नभोगैः ॥
नरं चिरंजिवितसार्वभौमं करोति केमद्रुममाशु हत्वा॥१८॥

जिस पुरुषके जन्म समयमें सूर्यसे केंद्रमें चन्द्रमा बैठा होवे तब विज्ञान मान उन्नति और चतुराईसे युक्त करताहै अर्थात् केमद्रुम नाम योगका भङ्ग करनेवाला होता है और कनिष्ठता मध्यमता उत्तमतासे युक्त करता है ॥ ७ ॥ जिस पुरुषके जन्म समयमें चन्द्रमाको यदि सब ग्रह देखते होवें तब वो पुरुष बहुत दिन चिरञ्जीवतायुक्त, चक्रवर्ती राज करता है और केमद्रुम योगका फल नहीं होता है ॥८॥

चतुर्षु केन्द्रेषु भवन्ति खेटा दुष्टोपि केमद्रुमयोग एषः ॥
विहाय केमद्रुमतां नितान्तं कल्पद्रुमः स्यात्किल सत्फलाप्त्यै॥९॥

क्षितिसुतयुतजीवे भूतिकाले तुलायां
विलसति नलिनीनां नायकः कन्यकायाम् ॥
विधुरपि यदि शेषैर्नेक्षितो मेषवर्ती
जनयति नृपतीन्द्रं हन्ति केमद्रुमं च ॥१०॥

जिस पुरुषके यदि चारों केंद्रोंमें ग्रह होवें तब यद्यपि केमद्रुम नाम योग अशुभ फलदायक है तथापि वो अपने फलको छोड़कर सत्फलका देनेवाला कल्प द्रुमनाम योग होजाताहै ॥९॥ जिस पुरुषके जन्मसमयमें तुलाराशिका मङ्गलबृहस्पति संयुक्त बैठा होवे और कन्याका होकर सूर्य बैठा होवे और मेषराशिका होकर चंद्रमा बैठा होवे उसे कोई ग्रह देखता न होवे तब यह योग केमद्रुम योगको नाश करके राजयोगको संपादन करताहै ॥ ॥ १० ॥ इति जातकाभरणेमार्जन्यां टीकायां भाषानुवादितायां सुनफादियोगानां फलवर्णने षड्विंशोऽध्यायः ॥२६॥

अथ प्रव्रज्यायोगाध्यायः ।

येषां सूतौ राजयोगा नराणां प्रव्रज्या चेत्तापसास्ते भवेयुः॥
वक्ष्ये संक्षेपेण तांस्तापसानां योगोत्पन्नान्संमतान्प्राक्तनानाम्॥१॥
ग्रहैश्चतुर्भिर्यदि पञ्चभिर्वा षड्भिस्तथैकालयसंस्थितैश्च ॥
नश्यन्ति सर्वे खलु राजयोगाः प्रव्राजिकायोगइति प्रदिष्टः ॥२॥

जिस मनुष्योंके जन्म समयमें राजयोग होवे वे संन्यास लेकर सब राजको छोड़कर तप करनेवाले होवें तिसके वास्ते पुराने आचार्योंकी संमतिसे जे तपस्वी

होनेको योग हैं उनको कहतेहैं॥१॥ चारया पांच या छः ग्रहोंके एक घरमें बैठनेसे सम्पूर्ण राजयोग नष्ट होजाते हैं और वे प्रव्राजिक योग होते हैं ॥ २ ॥

अन्यग्रहालोकनवर्जितश्चेज्जन्मेश्वरो नैव शनिं प्रपश्येत् ॥
मन्दोपि नो जन्मपतिं विसत्त्वं दीक्षाविचक्षाप्रचुरो नरःस्यात्॥३॥
जन्माधिराजो रविजत्रिभागे कुजार्कजांशेर्कजवीक्षितश्च ॥
करोति जातं कुटिलं कुशीलं पाखण्डिकं मण्डनतत्परं च ॥४॥

जन्म लग्नका स्वामी ग्रह शनिको न देखता होवे, और जन्म लग्नेशको कोई न देखता होवे और उस जन्मलग्नेशको शनिभी न देखता होवे वो मनुष्य तपस्वी होनेकी दीक्षा लेनेमें प्रवृत्त होता है ॥ ३ ॥ जो जन्मलग्नेश शनिके द्रेष्काणमें बैठा होवे अथवा मङ्गलके नवांशमें अथवा शनिके नवांशमें बैठा होवे और शनि पूर्ण दृष्टिसे देखता होवे इस योगमें जो मनुष्य जन्म लेवे वो बड़ा कुटिल, कुशील, पाखण्डि और शृङ्गार करने में तत्पर होता है ॥ ४ ॥

होराशीतकरामरेन्द्रसचिवाः सौरेण संवीक्षिताः
पुण्यस्थे सुरमन्त्रिणि प्रणयकृत्तीर्थाटनैर्मानवः॥
कोणे पुण्यग्रहाश्रितेऽप्यखचरैर्नैवाक्षिते दीक्षितः
स्यान्नूनं तदपि प्रसूतिसमयेसद्राजयोगोद्भवः ।५॥
प्राव्राजिकोर्कादिबलक्रमेण वैखानसः खर्परधृक् च लिङ्गी ॥
दण्डी यतिश्चक्रधरश्च नग्नस्तत्प्रच्युतो जन्मपतौ जिते स्यात्॥७॥

जिस पुरुषके कुण्डलीमें लग्नको या चन्द्रमाको बृहस्पतिको शनि देखता होवे और बृहस्पति नवम घरमें बैठा होवे वे तब वो पुरुष तीर्थोंके विचरनेमें प्रीति रखने वाला होताहै, और नवम पञ्चम घरमें शुभग्रह होवे उसे कोई ग्रह न देखता होवे तब वो पुरुष सन्यासकी दीक्षा लेनेवाला होता है इन दोनों योगोंमेंसे कोई योग होवे तब राजयोग नष्ट होजाताहै ॥५॥ सूर्यादिग्रहोंका बली होनेसे उक्त योगों में क्रमसे वैखानस, खप्पर धारण करनेवाला; लिङ्गी (संन्यासी),दण्डी, यति, चक्र धर और नग्न होता है जैसे सूर्य बली होवे तौ वैखानस, चन्द्रमा बली होवे तौ खप्पर धारण करनेवाला संन्यासी,और मङ्गल बली होवे तौ लिङ्गीनाम संन्यासी,

बुध बली होवे तौ दंडी संन्यासी, बृहस्पति बली होवे तौ यतिनाम संन्यासी, शुक्र बली होवे तौ चक्रधरसंन्यासी और शनि बली होवे तौ नग्नसंन्यासी होता है और जिसका जन्मसमयमें लग्नेश निर्बल होता होवे तब वो मनुष्य संन्यास लेकर भ्रष्ट होता है ॥ ६ ॥

एकस्थानस्थितैः खेटैः सर्वैश्च बलसंयुतः ॥
निरम्बरानिराहारा योगमार्गपरायणाः ॥ ७ ॥
एकस्थाने खेचराणां चतुर्णां योगश्चेत्स्यान्मानवानां प्रसूतौ ॥
ते स्युर्भूमीपालवंशेपि जाताः कान्तारान्तर्वासिनः सर्वथैव ॥ ८ ॥

जिनके जन्मसमय में सब ग्रह एकही स्थानमें बली होकर बैठे होवें वे मनुष्य नग्न रहने वाले, भोजन रहित और योगाभ्यास करने में परायण होते हैं ॥ ७ ॥ जिन मनुष्योंके जन्मसमयमें एक घरमें कोई चार ग्रह बैठे होवें वे मनुष्य यदि राजकुलके भी जन्मे होवें तब भी सर्वथा वनवासी होते हैं ॥ ८ ॥

पञ्च खेचरपतिर्यदि सूतौ भूपतेरपिः सुतः स च नित्यम् ॥
कन्दमूलफलभक्षणचित्तोत्यन्तशान्तिविजितेन्द्रियशत्रुः ॥ ९ ॥
एकत्र षण्णां गगनेचराणां प्रसूतिकाले मिलनं यदि स्यात् ॥
ते केवलं शैलशिलातलेषु तिष्ठन्ति भूपालकुलेषु जाताः ॥ १० ॥
प्रव्राजितानामथ भूपतीनां योगद्वयं चेत्प्रबलं प्रसूतौ ॥
फलं विरुद्धं ह्यनुभूय पूर्वं ततो व्रजेद्राजपदाधिकारम् ॥ ११ ॥

इसी तरह जिसके जन्म समयमें एक स्थानमें पांच ग्रहबैठे होवें वो राजकुलका भी जन्मा होवे तब भी कंदमूल फलके खाने में चित्त रखने वाला, अत्यन्त शान्त जिसका चित्त, इन्द्रिय रूप शत्रुओं को जीतने वाला होता है यदि जन्मसमयमें छः ग्रह एकत्र बैठे होवें तौ वह मनुष्य राजकुलमें भी जन्मा होय तब भी केवल पर्वतों की शिलापर बैठने वाला होता है ॥ १० ॥ जिस मनुष्यके जन्मसमयमें यदि दोनों ही योग (प्रव्रज्या और राज्य) प्रबल होकर पड़े होवें तबतौ प्रथम प्रव्रज्यायोगका अनुभव करके फिरपीछे वो मनुष्य राजपदके अधिकार को प्राप्त होताहै ॥ ११ ॥

इति जातकाभरणे मार्जन्यां टीकायां भाषानुवादितायां प्रव्रज्यायोगवर्णने सप्तविंशोध्यायः ॥ २७ ॥

अथारिष्टाध्यायः ॥

रिष्टाध्यायाधीनमायुर्नराणां यस्मात्तस्माद्रिष्टमात्रं प्रवच्मि ॥
यस्याभावे साधितायुः प्रमाणे प्रामाण्यं स्यात्संभवे सर्वथैव ॥१॥
भौमालयेकीरशनीन्दुदृष्टे गृहेष्टम चित्रशिखण्डिसूनुः ॥
अदृष्ट मूर्तिर्भृगुणात्र योगे प्राणैर्वियोगं लभते मनुष्यः ॥ २ ॥

सब मनुष्योंकी आयुष्य इसी अरिष्टाध्याय के आधीन है इससे अब मैं अरिष्टों मात्रोंको कहता हूं क्योंकि जिस अरिष्ट के नहीं होने से सिद्ध क्या आयुष्य के प्रमाणमें सब योगों के फल होनेका संभव होता है अर्थात् सब राजयोगादि योगों के फल जो जीतारहेगा तबही उस मनुष्यको होगा जो जीवेगाही नहीं तब फिर फल कैसा होवे ॥१॥ अष्टम घरमें मेषया वृश्चिक राशि होवे, उसमें बृहस्पति बैठा होवे, उसे सूर्य मङ्गल शनि और चन्द्रमा इनमें से कोई गृह देखताहोवे और लग्नको बृहस्पति देखता न होवे इस योगमें जिस पुरुष का जन्म होवे वो पुरुष अल्पायु के होने से प्राणों से वियोग पाताहै नाम मरजाता है ॥ २ ॥

षष्ठेष्टमे वापि चतुष्टये वा बिलोमगामी कुजमन्दिरस्थः ॥
बलान्वितेनावनिजेन दृष्टो वर्षैस्त्रिभोरिष्टकरः शनिः स्यात् ॥३॥
चन्द्रार्कयुक् जन्मनि भानुसूनुः करोति नूनं निधनं नवाब्दैः ॥
मासेन मन्दावनिसूनुसूर्याश्छिद्रारिगेहाश्रिततासमेताः ॥ ४ ॥

जिसमनुष्यके जन्म समय में शनि वक्री होकर छठे घरमें अथवा अष्टम घरमें या चौथे घरमें मङ्गल के स्थान का होकर बैठा होवे और उस शनिको बली होकर मङ्गल देखता होवैतौ इस योगमें जन्म लेनेवाले मनुष्य को तीन वर्षकी आयुमें रिष्ट करनेवाला होता है ॥३॥ शनि, चन्द्रमा और सूर्य दोनों ग्रहोंके सङ्ग चाहे किसी स्थानमें बैठा होवे तौ तिस मनुष्य की नौ ९ वर्षकी आयुष्य होती है और शनि मङ्गल और सूर्य ये तीनों ग्रह इकट्ठे छठे या आठवें घरमें बैठेहोवें तो एक महिना की आयु में मर जाता हैं ॥ ४ ॥

एकोऽपि पापोष्टमगोरिगेहे पापेक्षितोऽब्देन शिशुं निहन्यात् ॥
सुधारसो यद्यपि येन पीतःकिमत्र चित्रं नहि येन पीतः ॥५॥

सूर्येन्दुगेहे दनुजेन्द्रमन्त्री व्ययाष्टमारिस्थितसौम्यखेटैः ॥
सर्वैं प्रदृष्टः खलु षड्भिरब्दैर्जातस्य जन्तोर्वितनोति रिष्टम् ॥६॥

एकभी पापग्रह छठे घरमें या आठवे घरमें वैठा होवे और पापग्रह ही उसे देखता होवे तव वो बालक एक वर्षकी आयुमें मरजाता है यदि जिसने अमृतभी लिया होवे तोभी वो मरता है तो जिसने अमृत नहीं पिया वो मरजावे यामें तौ कहना ही क्याहै॥५॥जिसके जन्मसमयमें शुक्र सूर्य या चन्द्रमाके घरका होकर वैठा होवे उसे वारहवे छठे आठमे घरमें वैठा हो और शुभ ग्रह देखते होवें उस पुरुषको छठे वर्षमें मृत्यु करनेवाले होतेहैं ॥६॥

सोमस्य सूनुर्यदि कर्कटस्थः षष्ठेऽष्टमे वा भवने विलग्नात् ॥
चन्द्रेण दृष्टाऽब्दचतुष्टयेन जातस्य जन्तोः प्रकरोति रिष्टम् ॥७॥
केतुदयो भे प्रभवेच्च यस्मिन् तस्मिन्प्रसूतिर्यदि यस्य जन्तोः ॥
स्यात्तस्य मासाद्वितयेन नाशो विनिश्चयेनेति वदन्ति पूर्वे ॥८॥

बुध यदि कर्कराशिका होकर लग्नसे छठे आठवे घरमें वैठा होवे और चन्द्रमा उसे देखता होवे तव उस पुरुषकी चतुर्थ वर्षमें मृत्यु करताहै ॥ ७ ॥ जिस जिस नक्षत्रमें केतुका उदय हुआ होवे यदि उसी नक्षत्रमें जन्म हुआ होवे उस पुरुषका दोमासमेंही निश्चय मरण होजाताहै ऐसा पूर्वाचार्य कहते हैं ॥८॥

मेषूरणेर्कोधरणीसुतस्य गेहेथवार्कात्मजधामसंस्थः ॥
पापैरनेकैश्च निरीक्ष्यमाणः प्राणैर्वियोगं स तु याति तूर्णम् ॥९॥
लग्ने भवन्ति द्रेक्काणाः शृंखलापाशपक्षिणाम् ॥
सपापा मरणं कुर्युः सप्तवर्षैर्न संशयः ॥

सूर्य मङ्गलके घरका होकर या शनिके घरका होकर दशम घरमें सूर्य वैठा होवे और अनेक पापग्रह उसे देखते होवें वो शीघ्रही प्राणोंसे वियोग को पाता है ॥९॥ शृङ्खला पाश पक्षि इनका यदि लग्न में द्रेष्काण होवे और उस द्रेष्काणमें पापग्रह वैठा होवे तव उसका सातवर्षकी आयुमें मरण होता है ॥१०॥

राहुर्भवेज्जन्मनि केन्द्रवर्ती क्रूरग्रहैश्चापि निरीक्षितश्चेत् ॥
करोति वर्षैर्दशभिर्विनाशं वदन्ति वा षोडशभिश्च केचित् ॥११॥

षष्ठाष्टमस्थाः शुभखेचरेन्द्राः पापास्त्रिकोणे यदि जन्मलग्नात् ।
क्रूरेक्षितास्ते निधनं विदध्युर्वर्षाष्टकेनैव खलप्रदृष्टाः ॥१२॥

जिसके जन्मसमयमें केन्द्रमें राहु बैठा होवे और क्रूर ग्रह उसे देखते होवें तब वो दशवर्षमें मरजाताहै और कोई कहते हैं कि सोलहवर्षकी आयुमें मरजाता है ॥११ जिस मनुष्यके जन्मलग्नसे शुभ ग्रह तौ छठे आठवे घरमें बैठे होवें और पाप ग्रह जन्मलग्नसे नवम पंचम घरमें बैठे होवें उनको क्रूर ग्रह देखते होवें तब वे उस बालकको अष्टम घरमें मृत्यु करते हैं ॥ १२॥

सूतिकाले भवेच्चन्द्रः षष्ठोवाष्टमसंस्थितः ॥
बालस्य कुरुत सद्यो मृत्युं पापविलोकितः ॥१२॥
शुभाशुभालोकनतुल्यतायां वर्षैश्चतुर्भिर्निधनं तदानीम् ॥
न्यूनाधिकत्वे सुधियाविधेयस्त्रैराशिकेनैव विनिश्चयोयम् ॥१४॥

यदि जन्म समयमें चन्द्रमा छटे घरमें या आंठवे घरमें बैठा होवे और उसको पापग्रह देखता होवे उस बालककी तत्कालही मृत्यु करताहै ॥१३॥ उस चन्द्रमापर शुभ ग्रह और पापग्रहोंकी दृष्टिकी तुल्यता होवे यानी जितने पापग्रह देखते होवें उतनेही शुभ ग्रह चन्द्रमाको देखते होवें तब उस बालककी चारवर्षकी आयुमें मृत्यु होजातीहै और यदि पापग्रह और शुभग्रहोंकी दृष्टिका न्यूनाधिक्य होवे तौ त्रैराशिक रीतिसे बुद्धिमानोंको निश्चय करलेना चाहिये ॥१४॥

धनान्त्यगैर्वाऽरिमृतिस्थितैर्वा धर्माष्टमस्थैर्व्ययशत्रुगैर्वा ॥
क्रूरग्रहैर्यो जननं प्रपन्नः षष्ठेऽष्टमे मासि मृतिं प्रयाति ॥१५॥
षष्ठाष्टमस्थाः शुभखेचरेन्द्रा विलोमगैः पापखगैःप्रदृष्टाः ॥
शुभैरदृष्टा यदि ते भवन्ति मासेन नूनं निधनं तदानीम् ॥१६॥

द्वितीय द्वादश घरमें अथवा छटे आठवे घरमें अथवा नवम अष्टमघरमें अथवा छठे बारहवें घरमें क्रूर ग्रह बैठे होवें इन योगोंमें जो बालक जन्म लेवे वो छठे या आठवे महीनामें मृत्युको प्राप्त होजाताहै॥ १५॥ जिसके जन्मसमयमें छठे आठवे घरमें शुभग्रह बैठे होवें उन्हें वक्री भये हुए पापग्रह देखते होवें और कोई शुभ ग्रह उन्हें देखते होवें तब वो मनुष्य एक मासमें अवश्य मृत्युको प्राप्त होता है ॥१६॥

विलग्नजन्माधिपती भवेतामस्तङ्गतावष्टरिपुव्ययस्थौ ॥
जातस्य जन्तोर्मरणप्रदौ तौ वदन्ति राशिप्रमितैर्हि वर्षैः ॥ १७ ॥
होराधिपः पापखगैः प्रदृष्टश्चतुर्थमासे मृतिकृन्मृतिस्थः ॥
जन्मेश्वरस्तन्निधने दिनेशः शुक्रेक्षितोऽब्दैर्भवनप्रमाणैः ॥ १८ ॥

जिसके जन्म समयमें लग्नेश और जन्मराशीश अस्तङ्गत हुए छठे आठवें घरमें वैठे होवें उस वालककी वारह वर्षके भीतर मृत्यु होतीहै ॥ १७॥ यदि जन्म होरेश को पापग्रह देखता होवे और वो अष्टम घरमें वैठा होवे तव वह वालककी चतुर्थ-महीना में मृत्यु करनेवाला होताहै और जिसके जन्मराशीश अष्टम घरमें वैठा होवे और सूर्यको शुक्र देखता होवे तव उसकी चौदह वर्षमें मृत्यु होतीहै ॥ १८ ॥

होराधिपः पापयुतः स्मरस्थः करोति नाशं खलु जीवितस्य ॥
मासेन जन्माधिपतिस्तु तद्वत्पापान्वितो रन्ध्रगृहाश्रितश्च ॥ १९ ॥
युक्तो भवेदारदिवाकराभ्यां निशाकरश्चारुखगैर्न दृष्टः ॥
स्वसूनुगेहोपगतो विनाशं करोति वर्षे नवमेऽर्भकस्य ॥ २० ॥

जिसका जन्म होरेश पापग्रह युक्त होकर सप्तम घरमें वैठा होवे तव वो मनुष्य एक महीनामें मृत्यु करताहै इसी तरह जन्म लग्नेश पापग्रह युक्त होकर अष्टम घरमें वैठा होवे तव भी एकही मासकी आयुमें मरजाताहै ॥ १९ ॥ और जिस मनुष्यकी जन्मकुण्डलीमें मङ्गल और सूर्य इनसे युक्त चन्द्रमा होवे और उसे शुभग्रह कोई देखता न होवे और अपने क्षेत्रसे पञ्चम घरमें वैठा होवे तव उस वालक का नवम वर्षमें विनाश (मृत्यु) करताहै ॥ २० ॥

लग्नास्तरन्ध्रान्त्यगते शशाङ्के पापान्विते सौम्यखगैरदृष्टे ॥
केन्द्रेषु सौम्यग्रहवर्जितेषु कीनाशदेशं हि शिशुः प्रयाति ॥ २१ ॥
रन्ध्रालये वाथ चतुष्टयेषु खलग्रहाणां मिलनं यदि स्यात् ॥
कलानिधौ क्षीणकलाकलापे लग्नस्थिते नश्यति यः प्रसूतः ॥ २२ ॥

लग्न सप्तम अष्टम और द्वादश इनमें किसी घरमें चन्द्रमा पापग्रह सहित वैठा होवे और सौम्यग्रह कोई उसे देखता न होवे और केंद्र में कोई सौम्यग्रह होवे नहीं तव वो वालक यमलोकको जाताहै । २१ ॥ अष्टम घरमें अथवा चतुर्थ घरमें पापग्रहोंका

समागम होवे और चन्द्रमा क्षीण होकर लग्न में बैठा होवे इस योगमें जन्म लिया बालक यमलोक को जाताहै ॥ २२ ॥

लग्ने कुलीरेप्यथवालिसंज्ञे खलग्रहाः पूर्वदले यदि स्युः ॥
सौम्यः परार्धे खलु वज्रमुष्टियोगोयमुक्तः प्रकरोति रिष्टम् ॥ २३ ॥
व्ययारिरन्ध्रेषु शुभाभिधानास्त्रिकोणकेन्द्रेषु भवन्ति पापाः ॥
सरोजवन्धोरुदये प्रसूतिर्यस्यान्यलोकं त्वरया सयाति ॥ २४ ॥

अथवा लग्नवर्ती कर्कराशि या वृश्चिक होवे और पूर्वदलमें पापग्रह और परार्धमें शुभ ग्रह बैठे होवें तब यह वज्रमुष्टियोग होताहै इस योगमें जन्मे बालककी मृत्यु होतीहै ॥ २३ ॥ अथवा बारहे छटे आठवें घरमें शुभ ग्रह होवें नवम पञ्चम घरमें पापग्रह होवें इस योगको सरोज वन्धयोग कहते हैं इस योगमें जन्म लेनेवाला बालक जलदीही यमलोकको जाताहै ॥ २४ ॥

सौरस्यालयसंस्थो देवगुरूर्निधनभावगो लग्नात ॥
पापग्रहदृष्टतनुर्निधनायैकादशेह्नि तुल्यः स्यात् ॥ २५ ॥
रन्ध्राम्बुजायाभवनेषु खेटा विधौ च पापद्वयमध्ययाते ।
यस्य प्रसूतिः स तुयाति कामं यमस्य धाम प्रवदन्ति पूर्वे ॥ २६ ॥

शनिके घरका होकर बृहस्पति लग्नसे अष्टम घरमें बैठा होवे और लग्न को पापग्रह देखता होवे तब वो बालक ग्यारहवें दिन मृत्युको प्राप्तहै ॥ २५ ॥ अथवा अष्टम चतुर्थ एकादश इन घरोंमें सब ग्रह होवें और चन्द्रमा दो पाप ग्रहों के बीचमें बैठा होवे इस योगमें जिसका जन्म होवे वो शीघ्र ही यमलोकको जाता है ऐसा पूर्वाचार्य कहते हैं ॥ २६ ॥

संध्योदये भान्त्यगताश्च पापाश्चन्द्रस्य होरा यदि जन्मकाले ॥
चतुर्षु केन्द्रेषु शशाङ्कपापाः स याति बालः किल कालगेहम् ॥
स्मराष्टमस्था यदि पापखेटाः पापेक्षिताः साधुखगैर्न दृष्टाः ॥
करोति रिष्टं त्वरयार्भकस्य साकं जनन्याभिमतं बहूनाम् ॥ २८ ॥

प्रातःकाल के समय अथवा सायङ्कालके समय तो जिसका जन्म हुआ होवे और पापग्रह राशिके अन्तमें होवे और चन्द्रमाके होरामें जिसका जन्म हुआ होवे

और चारों केंद्रों में पापयुक्त चन्द्रमा होवे इस योगमें जिसका जन्म होवे वो मनुष्य अवश्यही यमलोकको जाता है ॥ २७ ॥ सप्तमाष्टम घरमें पापग्रह होवें और उनको पापग्रहही देखते होवें और शुभग्रह कोई उन्हें देखते न होवें इस योगमें जिसका जन्म होवे तब शीघ्रही उस बालककी मृत्यु होतीहै और किसीका ऐसाभी मत है कि वो बालक अपनी माता सहित मृत्यु को जाताहै ॥ २८ ॥

निजापरागे त्वशुभान्वितेन्दुर्लग्नस्थितो भूमिसुतोऽष्टमस्थः ॥
ततो जनन्या सह बालकस्य मृत्युस्तथार्के सति शस्त्रघातः ।२९
भूमीसुते वार्कसुते विलग्ने भानौ स्मरस्थानगतेऽन्यथा वा ॥
युक्ते तयोरन्यतमेन चन्द्रे चिरेण मृत्युः परिवेदितव्यः ॥ ३० ॥

जिसके जन्मकाल में अपने ग्रहणयुक्त ता चन्द्रमा होवे वो चन्द्रमा पापग्रह से युक्त होवे और वो चन्द्रमा लग्नमें स्थित होवे और मङ्गल अष्टम घरमें स्थित होवे इस योगमें मातासहित बालककी मृत्यु होतीहै और यदि ग्रहण युक्त सूर्य लग्नमें पापग्रहयुक्त बैठा होवे अष्टम घरमें मङ्गल होवे तब उसकी शस्त्रघातसे मृत्यु होतीहै ॥ २९ ॥ मङ्गल या शनि लग्न में होवें और सूर्य सप्तम घरमें स्थित होवे अथवा मङ्गल शनि सप्तम में और सूर्य लग्नमें अथवा चन्द्रमा मङ्गल से या शनिसे युक्त होवे इस योगमें जन्म लेनेवाला बालक शीघ्रही मृत्यु को जाताहै ॥ ३० ॥

पापैर्विलग्नाष्टमधामसंस्थैः क्षीणे विधौ द्वादशभावयाते ॥
केन्द्रेषु सौम्या न भवन्ति नूनं शिशोस्तदानीं निधनं प्रकल्प्यम् ॥
त्रिकोणकेन्द्रेषु भवन्ति पापाः शुभग्रहालोकनवर्जिताश्चेत् ॥
लग्नोपयाते सति भास्करे वा निशाकरे रिष्टसमुद्रगःस्यात ॥३२॥

पापग्रह लग्नमें या अष्टम घरमें स्थित होवे और क्षीण चन्द्रमा बारहवें घरमें बैठा होवे और केन्द्र में कोई सौम्यग्रह होवे नहीं इस योग में जन्म लेने वाले बालककी तत्काल मृत्यु होतीहै ॥ ३१ ॥ अथवा नवम पञ्चम घर में और केन्द्रमें पापग्रह होवें उन्हे शुभग्रह कोई देखता न होवे और लग्नमें चन्द्रमा या सूर्य होवें इस योगमें जन्म लेनेवाला बालक मृत्यु को प्राप्त होताहै ॥ ३२ ॥

भानुभानुतनयोशनसः स्युश्चेत्प्रसूतिसमये खलयुक्ताः ॥
यद्यपीन्द्रगुरुणा परिदृष्टा रिष्टदास्तनुभृतां नवमेब्दे ॥३३॥
कामिनीभवनगस्तु हिमांशुर्लग्नगो मृतपतिः शनिदृष्टः ॥
रिष्टदो नवसमाभिरीडितो जातकज्ञमुनिभिः पुरातनैः ॥ ३४ ॥

सूर्य शनि शुक्र ये तीनों ग्रहही यदि पापयुक्त होकर बैठे होवें उस बालकका यदि बृहस्पतिभी रक्षा करै तौभी वो बालक नवम वर्षकी उम्र में मरजाताहै॥३३॥ सप्तम घरमें तो चन्द्रमा होवे और लग्न में अष्टमेश होवे और शनि उसे देखता होवे यह योग जातकशास्त्र के जाननेवाले मुनियोंने नवम वर्षमें मृत्युका देनेवाला कहाहै ॥ ३४ ॥

दृष्टे रिष्टे नाप्रदृष्टेस्य काले प्रालेयांशौ स्वालयं वा विलग्नम् ।
वीर्योपेतं संगते पापदृष्टे शक्त्यायुक्ते मृत्युकालोऽब्दमध्ये ॥ ३५ ।
लग्नत्रिकोणान्तिमसप्तरन्ध्रे चन्द्रे सपापेपचयं प्रयाते ॥
शुभैर्नयुक्ते यदि न प्रदृष्टे रिष्टं भवेदत्र किमत्र चित्रम् ॥ ३६ ॥

जिसके जन्म कुण्डलीमें कोई अरिष्ट मात्र हो तो दीखता होवे समयका निश्चय नहीं किया होवे और चन्द्रमा अपने ४ नवांशमें बैठा होवे वो चन्द्रमा बली होवे और ग्रह से युक्त अथवा दृष्ट होवे तब एक वर्षके भीतर ही मृत्यु का देनेवाला होताहै, ॥ ३५ ॥ क्षीण चन्द्रमा लग्न नवम पञ्चम सप्तम अष्टम घरमें पापग्रह से युक्त बैठा होवे और न तो शुभ ग्रह कोई सङ्ग होवे और न शुभग्रह कोई उसे देखता होवे फिर उसको मृत्यु होजावे तौ क्या आश्चर्य है ॥ ३६ ॥

सूर्यज्ञजीवाः शनिशुक्रभौमाः सूर्यारमान्दाश्च यदीन्दुयुक्ताः ॥
प्रसूतिकाले मिलिता यदि स्युर्नाशः शिशोरब्दकपञ्चकेन ॥ ३७॥
विलग्ननाथोभवनप्रमाणैर्वर्षैर्विनाशं कुरुते रिपुस्थः ॥
मासैर्द्रेकाणाधिपतिर्लवेशोदिनैर्मुनीन्द्राः प्रवदन्ति सर्वे ॥ ३८ ॥

सूर्य बुध बृहस्पति अथवा शनि शुक्र मङ्गल या सूर्य मङ्गल शनि ये जन्म समय में चन्द्रमा से युक्त एक घरमें स्थित होवें तब उस बालककी पञ्चम वर्ष में मृत्य होतीहै ॥ ३७ ॥ लग्नेश छठे घरमें बैठा होवे तब जितनी गिनती का

अङ्क उस छठे घरमें होवें उतनी ही गिनती के वर्षमें उस बालक की मृत्यु करताहै और यदि लग्न का द्रेष्काणपति छठे घरमें होवे तब छठे घरके अङ्कके प्रमाण का मास और यदि लग्नका नवांशपति छठे करके राश्यंक प्रमाण दिनमेंही उस बालकी मृत्यु होती है ये सब आचार्यों का मत है ॥ ३८ ॥

लग्ने शनिः क्रूरनिरीक्षितश्चेच्छिशोर्विनाशं खलु षोडशाब्दात् ॥
करोति मासेन च पापयुक्तः पापैर्वियुक्तः खलु वत्सरेण ॥ ३९ ॥
रवीन्दुयुक्पापनिरीक्षितोज्ञश्चेकादशाब्दैः कुरुते विनाशम् ॥
लग्नेर्कमन्दावनिजाः कृशेन्दुः स्मरे षडब्दैरथ सप्तभिर्वा ॥ ४० ॥

लग्नमें तौ शनि होवे उसे कोई क्रूर ग्रह देखता होवे उस बालककी सोलह वर्षकी आयुमें मृत्यु होतीहै और यदि शनि पाप ग्रहयुक्त लग्नमें बैठे पापग्रह देखता होवे तब सोलह महीनामें मृत्यु करता है और यदि पापग्रह से रहित होवे तौ वर्ष एक में ही मृत्यु करता है ॥३९॥ बुध, सूर्य चन्द्रमासे युक्त होवे और पापग्रह उसे देखता होवे इस योगसे ग्यारह वर्षकी आयु में मृत्य होती है अथवा लग्न में तौ सूर्य शनि मङ्गल होवे और क्षीण चन्द्रमा सप्तम घरमें बैठाहोवे इस योगमें छ अथवा सात वर्ष की आयुमें मृत्यु करते हैं ॥ ४० ॥

कृशः शशाङ्कः स्मरगोविलग्ने मन्दारशुक्रागुरुदृष्टिहीनाः ॥
विनाशनं तेऽब्दकसप्तकेन कुर्वन्ति जातस्य विनिश्चयेन ॥ ४१ ॥
चन्द्रः सचान्द्रिर्यदि केन्द्रसंस्थः सूर्यांशुलुप्तः कुजमन्ददृष्टः ॥
वर्षद्वयेन प्रकरोति रिष्टं स्पष्टं वसिष्ठादय एवमूचुः ॥ ४२ ॥

क्षीण चन्द्रमा सप्तम घरमें होवे और बृहस्पति जिनको नहीं देखता होवे ऐसे शनि मङ्गल और शुक्र लग्न में बैठे होवें इस योगमें जन्म लेने वालेकी निश्चय सात वर्ष की उम्र में मृत्यु करते हैं ॥ ४१ ॥ चन्द्रमा बुधसहित केन्द्र में बैठा होवे वो चन्द्रमा सूर्य से अस्त होवे और उसे मङ्गल और शनि देखते होवें इस योगमें जन्म लेने वाले बालककी दो वर्षकी आयुमें मृत्यु करते हैं ऐसा वसिष्ठादि ऋषियों ने स्पष्ट कर कहा है ॥ ४२ ॥

निशापतिर्लग्नपतेः सकाशाच्चेदष्टमस्थः कृशतां प्रयातः ॥
क्रूरैश्च दृष्टश्च शुभैर्न दृष्टो वर्षद्वयान्ते स करोति रिष्टम् ॥ ४३ ॥

लग्नाधिपः पापखगो नवांशे चन्द्रस्य च द्वादशगः शशाङ्कात ॥
पापेक्षितो मारयति प्रसूतौ शिशुं नवाब्दैः खलु कीर्तयन्ति ॥४४॥

क्षीण चन्द्रमा लग्नेश से अष्टम स्थानमें बैठा होवे और पापग्रह उसे देखतेहोवें और शुभग्रह उसे कोई देखता न होवे यह योग दो वर्षमें ही मृत्यु करताहै ॥४३॥ लग्नेश पापग्रह होवे और चन्द्रमा के नवांशका होकर चन्द्रमासे बारहवे स्थानमें बैठा होवे और पापग्रह उसे देखता होवे इस योगमें जन्म लेने वाले बालककी नवम वर्ष में मृत्यु होती है ॥ ४४ ॥

लग्नेश्वरः सूर्यमयूखलुप्तोऽष्टमेश्वरेण प्रविलोक्यमानः ॥
रिष्टं करो राशिसमानवर्षैः प्राज्ञैरुदाहारि नरस्य जन्म ॥ ४५ ॥
अदृश्यभागे यदि पापखेटो दृश्ये विभागे शुभदा भवन्ति ॥
स्वर्भानुनामा तनुभावगामी जीवेत्प्रसूतोऽब्दकसप्तकं हि ॥४६॥

लग्नेश अस्त हुआ होवे और अष्टमेश उसे देखताहोवे ऐसा जिसराशिमें बैठाहोवे उसी राशयङ्क के प्रमाण गिनती के वर्षमें मृत्यु होती है ऐसा ज्योतिर्विदों ने कहा है ॥ ४५ ॥ पाप ग्रह तो अदृश्य भागमें होवे और दृश्यभागमें शुभ ग्रह होवे और राहू लग्न में होवे इस योग में जन्म लेने वाला बालक सातवर्ष जीवता है ॥४८॥

सिंहीसुतः सप्तमभावसंस्थः शनैश्चरादित्यनिरीक्षितश्चेत् ॥
नालोकितः सौम्यखगैस्तु जीवेद्वर्षाणि हि द्वादश यःप्रसूतः॥४७॥
सिंहालिकुम्भस्थितसैंहिकेयो विलोकितः क्रूरखगैर्यदि स्यात् ॥
वर्षाणि सप्तैव तदीयमायुः प्रकीर्तितं जातकशास्त्रविद्भिः॥४८॥

राहु सप्तम घरमें बैठा होवे और यदि शनि सूर्य उसे देखता होवे और शुभ ग्रह कोई देखता न होवे तब वो बालक बारह वर्ष की आयुमें मृत्यु पाता है ॥४७॥ क्रूर ग्रह जिसे देखते होवें ऐसा राहु सिंह वृश्चिक कुम्भ इनमें से किसी राशिका होकर बैठाहोवे उस बालककी आयु ज्योतिर्विदों ने सात वर्षकी ही कही है ॥४८॥

केतूदयः स्यात्प्रथमं ततश्चेन्निर्घातवाताशनयो भवन्ति ॥
योरौद्रसापाख्यमुहूर्तजन्मा प्राप्नोति कामं यममन्दिरं स ः॥४९॥
चन्द्रं क्रूरयुतं क्षीणं पश्येद्राहुर्यदा तदा ॥

दिनै स्वल्पतरैर्बालःकालस्यालयमाव्रजेत् ॥ ५० ॥
मातंगे ८ नवभिश्च९ रामनयनै २३ र्नेत्राश्विभिः २२सायकै ॥
रेकेनाम्बुधिभि ४ स्त्रिलोचनमितै२३र्धृत्या १८चविंश२०न्मितैः।
भूनेत्रै२१ र्दशभि र्लवै १९र्यदि भवेन्मेषादिसंस्थोविधु ॥
र्वर्षैर्भागसमः करोति निधनं कालोऽयमत्रोदितः ॥५१॥

पहले तो केतुका उदय भया होवे तिसके पीछे वज्रपात हुआ होवे और रौद्र सार्पमुहूर्तमें जन्म होवे वो भी यम मन्दिरको प्राप्त होताहै ॥ ४९ ॥ अथवा क्षीण चन्द्रमा क्रूरग्रहयुक्त होवे उसे यदि राहु देखता होवे वो बालक थोरेही दिनोंमें यमग्रहका महमान होताहै ॥५०॥ अब सब योगों का निष्कर्षकरके कहते हैं कि यदि चन्द्रमा उक्त योगमें नवांशोंके भागोंके तुल्य होकर मेषके नवांशका होकर मेषमें स्थित होवे तब आठ वर्षकी आयुमें और यदि वृषके नवांशका होकर वृष राशिमें बैठा होवे तब नव वर्षकी आयुमें और मिथुनका होवे तो २३ वर्षकी आयुमें और कर्कका होकर बैठे तो २२ वर्षकी आयुमें और सिंहका होकर चन्द्रमा बैठे तो ५ वर्षकी आयुमें और कन्या का होकर चन्द्रमा बैठा होवे तौ १ वर्षकी आयुमें और यदि तुलाका होकर बैठा होवे तौ४वर्षकी आयुमें और वृश्चिकका होकर बैठा होवे तब २३ वर्षकी आयुमें और यदि धनका होकर बैठे तौ १८ वर्षकी आयुमें और यदि मकरके नवांशका होकर मकरराशिमें चन्द्रमा बैठा होवे तौ २० वर्षकी आयुमें और कुम्भके नवांशका होकर कुम्भमें बैठा होवे तौ २१ वर्षकी आयुमें और यदि मीनके नवांशका होकर मीनराशिमेंही चन्द्रमा स्थित होवे तब उस मनुष्यकी १९ वर्षकी आयुमें मृत्यु करता है ऐसा निश्चय किया है ॥ ५१ ॥ इति जातकाभरणे भाषानुवादिनायां वनमालिचतुर्वेदकृतमार्जन्यां टीकायामारिष्टाध्यायोष्टविंशः समाप्तः ॥ शुभं भूयात्॥

अथ चन्द्रारिष्टभङ्गाध्यायोविविच्यते।

होरागमज्ञैर्बहुविस्तरेण रिष्टाख्ययोगा यदपि प्रदिष्टाः ॥
ते रिष्ट भंगे यदि नो समर्थाः सरिष्टभंगोप्यभिधीयते ततः॥१॥
पूर्णैःकैरविणीपतिर्दिविचरैः सर्वैः प्रदृष्टस्तदा

रिष्टं हन्त्यथवा सुहृल्लवगत सद्वीक्षितोऽतिप्रभः ॥
क्षीणो वापि निजोच्चगैः शुभखगैः शुक्रेण च प्रेक्षितो
रिष्टं यः समुपागतं सतु हरेत्सिंहो यथा सिन्धुरम् ॥ २ ॥

यद्यपि ज्योतिःशास्त्रवेत्ताओंने बहुत विस्तारकरके बहुतसे अरिष्ट कहे हैं परन्तु वे यदि अरिष्ट कुण्डलीमें वर्तमानभी होवें तौ भी जिन अरिष्ट भङ्ग योगोंके होनेसे उक्तारिष्टयोग अपने फल करनेको समर्थ नही हो सकते हैं उन अरिष्टभङ्ग योगों को अब मैं कहता हूं ॥१॥ तिनमेंसे प्रथम चन्द्रकृत अरिष्टोंके भङ्ग योगोंको कहतेहैं॥ यदि पूर्ण चन्द्रमाको सम्पूर्ण ग्रह देखते होवें तब अरिष्टको नाश करता है अथवा पूर्ण चन्द्रमा यदि अपने मित्र ग्रहके नवांशका होकर बैठा होवे और शुभ ग्रह उसे देखते होवें तब भी उक्त फलको देता है ॥ २ ॥

रिष्टं निहन्युः शुभदाः शशाङ्कात्पापैर्विनातेष्टमशत्रुसंस्थाः ॥
शुभान्वितःसाधुदृक्काणवर्ती पीयूषमूर्तिः शमयेत्सरिष्टम् ॥३॥
शुभग्रहद्वादशभावसंस्थः पूर्णः शशी रिष्टहरः प्रदिष्टः ॥
लग्नेशदृष्टः शुभराशियातो नान्येक्षिते रक्षति रिष्टयोगात्॥४॥

जो चन्द्रमासे अष्टम या षष्ठस्थानसे शुभग्रह स्थित होवें और पाप ग्रह उनको न देखते होवें तब अरिष्टका नाश करते हैं और चन्द्रमा शुभग्रहोंसे युक्त और शुभ ग्रहोंके दृक्काणमें बैठा होवे तब सर्वारिष्टोंको नाश करता है ॥ ३ ॥ जब शुभग्रह के बारहवे घरमें चन्द्रमा पूर्ण होकर बैठा होवे तब अरिष्टभङ्ग करता है अथवा पूर्ण चन्द्रमाको लग्नेश देखता होवे और वो शुभग्रहकी राशिका होकर बैठा होवे और कोई ग्रह उसे देखता न होवे तब भी अरिष्टयोग में रक्षा करता है ॥ ४ ॥

वलक्षपक्षे यदि जन्मरात्रौ कृष्णे दिवाष्टारिगतोपि चन्द्रः ॥
क्रमेण दृष्टः शुभपापखेटैः पितेव बालं परिपालयेत्सः ॥
संस्थः शशी क्रूरखगस्य राशौ राशी श्वरेणापि विलोकितश्च ॥
तद्वर्गगो वा यदि तेन युक्तः कुर्यादलं मंगलमेव नान्यत् ॥६॥

शुक्लपक्षकी रात्रिका जन्म होवे और शुभग्रह से दृष्ट चन्द्रमा अष्टम घरमें बैठा होवे और यदि दिनका जन्म होवे और पापग्रहसे दृष्ट चन्द्रमा छठे घरमें बैठा

होवे इन दोनों योगोंसे अनेक अरिष्ट योगों को नाश करके पिता की तरह बालक की रक्षा करताहै ॥५॥ अथवा चन्द्रमा क्रूर ग्रहकी राशिका होकर बैठे और राशीश उसे देखता होवे अथवा लग्नेशके षड्वर्गका या लग्नेश के साथ चन्द्रमा बैठा होवे तब भी मङ्गल करताहै अरिष्टको नाश करता है ॥ ६ ॥

जन्माधिपालो बलवान्किल स्यात्सौम्यैः सुहृद्भिश्च निरीक्ष्यमाणः॥
यद्वा तनुस्थः सकलैः प्रदृष्टो रिष्टं हि चण्द्रेण कृतं निहन्ति ॥७॥
स्वोच्चे स्वभे वा यदि वात्मवर्गेस्थितोहितानां च सतां प्रदृष्ट ॥
शुभैर्नपापारियुतेक्षितश्च रिष्टं हरेत्पूर्णकलः कलावान् ॥ ८ ॥

अथवा जन्मलग्नेश बलवान होवे और शुभग्रह और मित्रगृह उसे देखते होवें अथवा जन्मलग्नेश लग्नमें बैठा होवे सब ग्रह उसे देखतेहोवें तबभी चन्द्रमाके किये अरिष्टोंका नाश करता है ॥७॥ अथवा पूर्ण चन्द्रमा अपने उच्चका अथवा स्वक्षेत्री या अपने वर्गका होकर बैठा होवे अथवा अपने मित्रोंके वर्गका होकर बैठा होवे शुभ ग्रहही उसे देखते होवें पापगृह कोई देखता न होवे और न कोई पापगृह सङ्ग होवे तब भी अनेक अरिष्टों का नाश करता है॥ ८ ॥

वाचामधीशो दशमे शशाङ्काद्व्ययेज्ञशुक्रा च खलाः किलाये ॥
विलग्नपात्र्यम्बुदशान्त्यलाभे शुभेक्षितेन्दुश्च हरेत्स रिष्टम् ॥९॥
प्रसूतिकाले यदि जन्मपालः किलेक्षितोनिर्मलखेचरैश्च ॥
बलाधिशाली प्रलयं करोति रिष्टस्य शीतांशुसमुद्भवश्च ॥१०॥

अथवा बृहस्पति चन्द्रमासे दशम घरमें बैठा होवे और बारहवें घरमें बुध शुक्र होवें और पापगृह ग्यारहवें घरमें बैठे होवें और लग्नेश तृतीय चतुर्थ दशम द्वादश एकादश इन घरोंमें से कहीं बैठा होवे और चन्द्रमाको शुभगृह देखताहोवे वह योग अरिष्ट को नाश करता है ॥९॥ अथवा जन्म लग्नेशको शुभगृह देखते होवें और वह बली होकर लग्नेश बैठा होवे जिसके जन्मसमय में यह योग होवे तब वह चन्द्र जन्य अरिष्टों को नाश करता है ॥ १० ॥

भवेन्निशाजन्मनि पद्मिनीशः परोच्चगामी निजवेश्मगो वा ॥
तदंशगो वापि शुभेक्षितश्च पूर्णः शशाङ्को निधनं निहन्ति ॥११॥

दास्रेऽग्निभे वा गुरुभे शशाङ्के वर्गोत्तमे पूर्णकलाकलापे ॥
त्रिपुस्करे शीतकरे हि रिष्टं प्रकृष्टमप्याशु लयं प्रयाति ॥१२॥

अथवा अपने परम उच्चका सूर्यहोवे अथवा स्वक्षेत्रीहोवे और रात्रिका जन्म होवे और चन्द्रमा सूर्यके नवांशका होवे और शुभग्रह पूर्ण देखता होवे और क्षीण होवे नहीं तब अरिष्ट योगों का नाश करता है ॥ ११ ॥ अथवा पूर्ण चन्द्रमा अश्विनी या कृत्तिका या पुष्पका होवे अथवा वर्गोतमो होकर त्रिपुस्करयोगमें होवे तब शीघ्र ही अनेकारिष्टोंको नाश करता है ॥ १२ ॥

पादे द्वितीये यदि वा तृतीये पुष्यस्य ताराधिपतिर्यदि स्यात् ॥
वा रोहिणीनां चरणे द्वितीये सौम्येक्षितो रक्षति मृत्युदोषात् ॥१३॥
कुलीरमेषगश्चन्द्रः केन्द्रस्थः शुभवीक्षितः ॥
ग्रस्तोपि रिष्टभंगाय भवेदत्र न संशयः ॥ १४ ॥
केन्द्रेषु चेदम्बरमार्गगानां द्वयं द्वयं सौम्यखगे ऽबलग्ने ॥
क्षीणोपि चन्द्रः स्मरभावसंस्थः संप्राप्तरिष्टं शमयेदवश्यम् ॥१५॥

अथवा पुष्पनक्षत्रके द्वितीयपादपर या तृतीय पादपर चन्द्रमा होवे या रोहिणी के द्वितीयपादपर चन्द्रमा होवे और शुभग्रह उसे देखते होवें तब वह चन्द्रमा मृत्युयोगसे रक्षा करता है ॥ १३ ॥ अथवा चन्द्रमा कर्क वा मेपका होकर केन्द्रमें बैठा होवे और शुभग्रह उसे देखते होवें तब जो ग्रस्तभी होय तब भी निस्संदेश अरिष्टोंका नाश करनेवाला होताहै ॥ १४ ॥ अथवा केन्द्रमें दो दो गृह बैठे होवें और शुभगृह लग्नमें होवे और चन्द्रमा भलेही चाहे क्षीण होवे परन्तु लग्नसे सप्तम घरमें बैठाहोवे तब प्राप्त हुये अरिष्टको अवश्यही नाश करताहै॥१५॥ इति चंद्रारिष्ट-भङ्गाध्यायः ॥

अथ सर्वगृहारिष्टभंगाध्यायः ।

मरीचिमालामलकान्तिशाली प्रसूतिकाले प्रबलो यदि स्यात् ॥
वृहस्पतिर्मूर्तिगतो निहन्ति रिष्टानि नूनं मुनयो वदन्ति ॥१॥
पापैरवीर्यैश्च शुभैः सवीर्यैः शुभस्य राशौ तनुभावयाते ॥
निरीक्षिते व्योमचरैः शुभाख्यैः संक्षीयते रिष्टमुपागतं वै ॥२॥

यदि जन्म समयमें पूर्ण चन्द्रमा बली होकर बैठा होवे और लग्न में बृहस्पति होवे तब अवश्यही अरिष्टोंका नाश करते हैं ऐसे ज्योतिर्विद मुनिलोग कहते हैं॥१॥ अथवा शुभ ग्रहकी राशि जन्मलग्नमें होवे और शुभग्रहही उसे देखते होवें और पापग्रह सब निर्बल होवें शुभग्रह सब बली होकर बैठे होवें उस योगसे आये हुये भी सर्वारिष्ट शांत होजाते हैं ॥ २ ॥

सौम्यवर्गाश्रिता पापाः सौम्यवर्गाश्रितैः शुभैः ॥
दृष्टा अपि प्रकृष्टं ते रिष्टं नाशयितुं क्षमाः ॥ ३ ॥
मूर्तेस्तु राहुस्त्रिषडायवर्ती रिष्टं हरत्येव शुभैः प्रदृष्टः ॥
शीर्षोदयस्थैर्विकृतिं न यातैः समस्त खेटैः खलु रिष्टभंग ॥४॥

अथवा सब पापग्रह सौम्यग्रहोंके होवें और उन्हें सौम्यग्रहोंके वर्गके शुभग्रह देखते होवें तब वे प्रबल अरिष्टके नाश करनेमें समर्थ होते हैं ॥३॥ अथवा जन्म लग्नसे तीसरेछठे ग्यारहवें घरमें शुभग्रह से दृष्ट राहु बैठा होवे तब अरिष्टोंका नाश करता है अथवा समस्त ग्रह शुद्ध होकर शीर्षोदय राशियोंमेंही स्थित होवे तबभी अवश्यही अरिष्टोंका नाश होता है ॥ ४ ॥

प्रसूतिकाले विजयाधिशाली शुभोहरेद्रिष्टमपापदृष्टः ॥
कश्चिद्ग्रहश्चेत्परिवेषगामी क्रूरैः प्रदृष्टः सतु रिष्टभङ्क्ता ॥५॥
रजोविहीनं गगनं चरस्था स्वस्थाभवेयु जलदाः सुनीलाः ॥
मन्दानिलाश्चाद्धिमलामुहूर्त्ताः प्रसूतिकाले किल रिष्टभंगाः ॥६॥

अथवा यदि जन्मसमयमें बली होकर ग्रह बैठे होवें उन्हें कोई पापग्रह देखते न होवें और कोई ग्रह सूर्य मण्डलके भीतर होवे उसे क्रूरग्रह देखते होवें तब अरिष्टों का नाशकारक होता है ॥५॥ जिसके जन्मकालमें आकाश निर्मल होवे और आकाशमें जल वर्षानेवाले नीलरङ्गके बद्दल आकाशको छाय रहे होवें और मन्द२ पवन सुहावना चलरहा होवे और मुहूर्त निर्दोष होवे ऐसे समयमें जिसका जन्म हुआ होवे उसके भी सर्वारिष्ट नाश होजाते हैं ॥६॥

कुम्भयोनेर्मुनीनां चेदुद्गमे जननं भवेत् ॥
विलीयते तदारिष्टं नूनं लाक्षेव वान्हिना ॥ ७ ॥

वृषाजकर्काख्यविलग्नसंस्थो राहुर्भवेद्रिष्टविनाशकर्त्ता ॥
शुभाश्च योगा बहवो यदि स्युस्तथापिरिष्टं विलयं प्रयाति ॥८॥

जिसका जन्म अगस्ति और सप्तर्षियोंके उदयमें होवे तौभी सब अरिष्ट ऐसे नाश होजातेहैं जैसे अग्निसे लाख नष्टहोजातीहै ॥७॥ वृष मेष और कर्क इनमें से कोई लग्न होवे और राहु उसमें स्थित होवे तबभी अनेकारिष्टोंको नाश करता है और बहुतसे शुभ योग होवें तबभी उक्त राहुके योगसे अनेकारिष्टशांत होजातेहैं॥८

नक्रत्रये लाभरिपुत्रिसंस्थः केतुस्तु हेतुर्निधनोपशान्त्यै ॥
परस्परं भार्गवजीवसौम्यास्त्रिकोणगास्तेपि हरन्त्यरिष्टम् ॥ ९॥
सन्ध्या भवा वैधृतिपातभद्रागण्डान्तयुक्ता अपि जन्मकाले ॥
भवन्ति रिष्टस्य विनाशनाथ निरन्तरा दृश्यदलेथ सर्वे ॥ १० ॥

मकर कुम्भ मीन इनमेंसे कोई राशि ग्यारहे छटे तीसरे इनमें से किसी घरमें होवे और उनमें केतु बैठा होवे अथवा शुक्र बृहस्पति बुध ये नवम पंचम घरमें बैठे होवें इन दोनों योगोंसे सर्वारिष्टोंका नाश होता है ॥ ९ ॥ संध्या समयमें वैधृति-नाम योग या व्यतीपात या भद्रा या गंडांत होवे उस समय जिसका जन्म हुआ होवे और समग्र ग्रह जिसके जन्म समयमें दृश्य दलमें होवें तब वे अरिष्टोंके विनाश करनेवाले होते हैं ॥१०॥

त्र्यायारितुंगेषुगतः पतंगो नोपप्लुतो रिष्टविनाशकर्त्ता ॥
एकर्क्षगोः षट्त्रिदशायसंस्थाः सर्वेपिरिष्टं शमयन्ति खेटाः॥११॥
शीतभानोस्तनोर्वापि द्वौ त्रयो वाप्यनेकशः ॥
एकान्तस्थास्तदारिष्टभंगो भवति निश्चितम् ॥ १२ ॥

ग्रहण योगसे रहित अपने उच्चका सूर्य होकर तृतीय एकादश छटे घरमें होवे तब अरिष्टोंको नाश करता है और भी किसी एकराशिके होकर कोई ग्रह छठे तीसरे ग्यारह बैठें तब भी अरिष्टोंको नाश करते हैं ॥११ ॥ चन्द्रमासे अथवा लग्नसे दो ग्रह या तीन ग्रह या अनेक ग्रह एकही स्थान में बैठे होवें तो भी अवश्य अरिष्ट भङ्ग करनेवाला योग होता है ॥१२॥

पातालयातः प्रबलेन्दुदृष्टो निजालयस्थो यदि जन्मकाले ॥
देवेन्द्रमंत्री दलयत्यवश्यममङ्गलं रिष्टभवं क्षणेन ॥

लग्नस्थितस्य खेटस्य व्यये वित्ते त्रयस्त्रयः ॥
तत्कालमुद्भवाः खेटा रिष्टदारणकारिणः ॥ १४ ॥

बली चन्द्रमासे दृष्ट स्वक्षेत्री होकर यदि वृहस्पति जन्म समयमें चौथे घरमें बैठा होवे तौ अरिष्टजन्य दोषोंको अवश्यही दूर करताहै ॥ १३ ॥ लग्न में बैठे ग्रहके बारहवें और दूसरे घरमें यदि तीन तीन ग्रह दोनों तरफ बैठे होवें तब भी अरिष्टों के नाश करने वाले होते हैं ॥ १४ ॥

केन्द्रेष्वापोक्लिमेष्वेव यद्वा पणफरेषु च ।
शुभांशस्थाग्रहाः सर्वे रिष्टभङ्गकराः स्मृताः ॥ १५ ॥
अन्योन्यं हि चतुर्थस्था युग्मभावमुपागताः ।
स्वर्भानुसंयुताः खेटारिष्टदोषापहारकाः ॥ १६ ॥

अथवा सबग्रह केंन्द्रमें बैठे या आपोक्लिम संज्ञक घरोंमें सब ग्रह बैठे होवें यद्वा फणफर संज्ञक घरोंमें सब ग्रह बैठे होवें और वे ग्रह शुभग्रहों के नवांशोंके होकर बैठे होवें वे सब ग्रह अरिष्टोंके भङ्ग करनेवाले माने हैं ॥१५॥ राहुसमेत दोदो ग्रह परस्पर एकसे एक चौथे चौथे घरमें बैठे होवें तौभी अरिष्टोंको नाश करतेहैं ॥१६॥

चतुष्टये श्रेष्ठबलाधिशाली शुभो नभोगोऽष्टमगो न कश्चित् ॥
त्रिंशन्मितायुः प्रकरोति नूनं दशान्वितं तच्छुभखेटदृष्टः ॥ १७ ॥
निजत्रिभागे स्वगृहे गुरुश्चेदायुर्मितिः स्यात्खलु सप्तविंशत् ॥
बृहस्पतिस्तुङ्गगतो विलग्ने भृगो सुतः केन्द्रगतः शतायुः ॥ १८ ॥

अथवा केंन्द्रमें तौ शुभग्रह बली होकर बैठा होवे और उसे शुभग्रह देखता होवे और अष्टम घरमें कोई शुभग्रह होवे नहीं तब मनुष्यकी चालीश वर्षकी आयु करताहै ॥ १७ ॥ अथवा वृहस्पति अपने द्रेष्काणमें स्वक्षेत्री होकर बैठा होवे तब मनुष्यकी सत्ताईस वर्षकी आयुष्य होतीहै और जिसके वृहस्पति उच्चका होकर लग्न में बैठा होवे और शुक्र केंद्रमें होवें तब मनुष्यकी पूर्ण सौ१०० वर्षकी आयु होतीहै।

लग्ने स्वतुंगे बलशालिनीन्दौ सौम्याः स्वभस्थाः खलु षष्टिरायुः ॥
मूलत्रिकोणेषु शुभेषुतुंगे लग्ने गुरावायुरशीतिरेव ॥ १९ ॥
लग्नाष्टमारीन्दुयुता न चेत्स्युः क्रूराः स्वभस्था यदि खेचरौ द्वौ ॥
बलान्वितावम्बरगौ भवेतां जातः शतायुः कथितो मुनीन्द्रैः ॥ २० ॥

शून्ये रन्ध्रे केन्द्रगैः सौम्यखेटैर्लग्ने जीव नैधनेन्दूदयश्चेत् ॥
नो संदृष्टा पापखेटैस्तदा स्यादायुर्मानं सप्तति र्वत्सराणाम् ॥२१॥

अथवा लग्नमें बली होकर चन्द्रमा अपने उच्चका बैठा होवे और शुभग्रह अपने स्वक्षेत्री होकर बैठे तो मनुष्य की ६० वर्षकी आयुष्य होतीहै अथवा मूल-त्रिकोणी शुभग्रह होवे और उच्चका बृहस्पति लग्नमें होवे तब मनुष्यकी ८० वर्ष की आयु होतीहै ॥ १९ ॥ लग्न छठे आठवें घरमें तौ चन्द्रमा बैठा न होवे क्रूरग्रह स्वक्षेत्री होवे और बली होकर दो ग्रह दशम घरमें बैठे होवें इस योगमें जन्म लेने वाले मनुष्यकी मुनीद्रोंने सौ १०० वर्षकी आयु कही है ॥ २० ॥ अष्टम घरमें तौ कोई ग्रह होवे नहीं और शुभग्रह केंद्रमें बैठे होवें लग्नमें बृहस्पति होवें और अष्टम घरमें पूर्ण चन्द्रमा होवे और इन सबों को पापग्रह कोई देखता न होवे तब उस मनुष्यकी उम्र सत्तर ७० वर्ष की होती है ॥ २१ ॥ जातकाभरणे सर्वग्रहरिष्टभङ्गे एकोनत्रिंशोध्यायः समाप्तः ॥ २९ ॥

——:+:——

अथ सदसद्दशाविचारणा ।

राजयोगगृहभावसंभवं रिष्टयोगजनितं च यत्फलम् ॥
तद्दशाफलगतं यतो भवेत्तेन तत्फलमलं ब्रुवेधुना ॥ १ ॥
सर्वदेववरदो वरदो वः शारदापि वरदा वदनाब्जे ॥
इन्दिरा च खलुमान्दिरसंस्था प्रास्थिता जलनिधीन्प्रतिकीर्तिः ॥२॥

राजयोग से हुआ और ग्रहों के भावसे हुआ और अरिष्ट योगों से उत्पन्न हुआ जो फल वे सब फल जिन ग्रहोंकी दशाके आनेसे ही होता है इससे अब मैं ग्रहोंकी दशाके फलों को कहता हूँ ॥ १ ॥ सब देवताओं के वर देनेवाले भगवान् तुमको वर देनेवाले होउ और वर देनेवाली सरस्वती मुखकमल में निवास करो और लक्ष्मी सदा अचल होकर घरमें स्थित होओ और समुद्रपर्यंत कीर्ति व्याप्त होवै ॥ २ ॥

स्वोच्चे स्वगेहे यदि वा त्रिकोणे वर्गे स्वकीयेथ चतुष्टये वा ॥
यास्तङ्गतोनोशुभदृष्टियुक्तोजन्माधिपः स्याच्छुभदःस्वपाके ॥ ३॥

त्रिषष्ठलाभेषु गतैः समस्तैः सौम्यैः सुखार्थाश्च भवन्तिबाल्ये ॥
तत्रैवपापैर्वयसोन्त्यभागेजायार्थपुत्रादिसुखानिसम्यक् ॥४॥

अपने उच्चका या स्वक्षेत्री अथवा त्रिकोण (९।५) में अथवा अपने वर्णका अथवा केन्द्रमें जन्म लग्नका स्वामीहोवे वह अस्तहोवे नहीं पापग्रह कोई उसे देखता न होतो तब वह अपनी दशामें पूर्ण फल देताहै॥ ३ ॥ जिसकी कुण्डलीमें शुभग्रह तीसरे छठे ग्यारहवें घरमें बैठे होवें उसको बाल्यपन में सुख और धन होतेहैं और उक्त घरों (३।६।११) में यदि पापग्रह बैठे होवें तब अवस्था के अन्तिम भाग में स्त्री पुत्र धनादिकोंके सम्यक् सुख मिलते हैं ॥ ४ ॥

तुंगेस्वगेहेस्वसुहृद्गृहांशे नीचारिभस्थेपि च खेचरेन्द्रे ॥
मिश्रं फलं स्यात्खलुतस्यपाके होरागमज्ञैः परिकल्पनीयम् ॥५॥
वाचां पतिर्लग्नपतेः स्वतुंगे स्वर्क्षे दशायात्रिगतश्च सूतौ ॥
करोति राज्यं स्वकुलानुमानान्नानाविधोत्कर्षविशेषयुक्तम् ॥६॥

उच्चमें या स्वक्षेत्रमें या अपने मित्र के घरमें अथवा मित्रके नवांश में और नीचमें या शत्रुक्षेत्र में जब ग्रह बैठते हैं उनकी दशाके पाकमें मिश्रफल देतेहैं ये होराशास्त्रके जाननेवालोंको कल्पना करना चाहिये ॥५॥ जिसके जन्मसमयमें बृहस्पति अपने उच्चका होकर लग्नेशसे दशम एकादश तृतीय घरमें बैठा होवे तब वह अपने कुलानुमान से नानाप्रकारके उत्कर्षोंसे युक्त राज्ययोग को करता है ॥६॥

आरोहिणी दशा यस्य खेचरः सत्फलप्रदः ॥
सत्फलापचयं कुर्याद्दशाचेदवरोहिणी ॥ ७ ॥
स्त्रीमित्रपुत्राद्रविणोपलब्धिं कर्के हिमांशुः कुरुते दशायाम् ॥
जायापशूनां हनने प्रवृत्तिं करोति पृथ्वीतनुजस्यगेहे ॥८॥

जिस गृहकी आरोहिणी दशा होतीहै वह ग्रह शुभफल देनेवाला होताहै और जिस गृहकी अवरोहिणी दशा होतीहै तब वह फलको नाश करतीहै ॥७॥ जिसके जन्मसमयमें चन्द्रमा कर्कका होकरबैठै तबवह अपनी दशामें स्त्रीपुत्र मित्र और धनकी उपलब्धि (प्राप्ति) करताहै और यदि चन्द्रमा मङ्गलके घरका होकर बैठे तब वह स्त्री पशुओं के मारनेमें प्रवृत्ति करता है ॥ ८ ॥

सच्छात्रमित्राधिगमं करोतिबुधस्यराशौ गुरुधामसंस्थः ॥
नृपप्रसादं विपुलां च लक्ष्मीं शुक्रस्य गेहे फलमेतदेव ॥ ९॥
तुषाररश्मिःशनिवेश्मसंस्थः प्रेष्यं मनुष्यं कुरुते दशायाम् ॥
अरण्यदुर्गस्थितिमाददाति प्रीतिं मरुद्वा गृहनिर्मितौ च ॥१०॥
मित्रोच्चोपचयस्थाने त्रिकोणेसप्तमेपि वा ॥
पाकेश्वरात् स्थितश्चन्द्रः कुरुते सत्फलां दशाम् ॥ ११ ॥

यदि चन्द्रमा बुधके घरमें बैठे तौ उत्तम शिष्य और मित्रोंकी प्राप्ति अपनी दशामें करता है और यदि बृहस्पति के घरमें चन्द्रमा बैठे तौ अपनी दशा में राजा नुग्रह कराता है और यदि शुक्रके घरमें बैठेतौ विपुल लक्ष्मी करताहै ॥९॥ यदि शनिके घरमें चन्द्रमा बैठे तौ अपनी दशामें मनुष्यको नौकरी कराताहै और वनका वास या गोग्रहवास कराताहै ॥१०॥ यदि चन्द्रमा दर्शनार्थसे मित्रके घरमें या उच्च होकर उपचयमें या त्रिकोणमें या सप्तममें बैठे तौ अपनी दशाको उत्तम फल देने वाली करताहै ॥११॥ इति जातकाभरणे सदसद्दशाविचारणायां त्रिंशोध्यायः॥३०

अथ रविदशाफलविचारणालिख्यते ।

भानोर्दशायां हि विदेशवासो भवेत्कदाचिन्नतु मानवानाम् ॥
भूवह्निभूपद्विजवर्यशस्त्रभैषज्यतोऽतीवधनागमः स्यात् ॥१॥
मन्त्राभिचारैरभिरुचिर्विचित्रा धात्रीपतेः सख्यविधिर्विशेषात् ॥
विख्यातकर्माभिरतिर्मतिः स्यादनल्पजल्पेचरणे न चिन्ता ॥२॥
व्ययश्च दन्तोदरनेत्रबाधा कान्तासुताभ्यांवियुतिश्च चिन्ता ॥
नृपाग्निचोराहितबन्धुवर्गः स्वगोत्रजैर्वा प्रबलः कलिः स्यात ॥३॥

सूर्यकी दशामें मनुष्यका विदेशवास होताहै और कभी अवश्य करके पृथ्वी अग्नि राजा विप्रमुख्य शस्त्र और औषधी इनमें अत्यन्त धनकीप्राप्ति उस मनुष्यको होतीहै ॥१॥ मन्त्राभिचार में रुचि राजासे विशेष करके मित्रता, विख्यात कर्मोंमें अभिरुचि बहुत बकवाद करनेमें बुद्धि और रण करनेमें चिन्ता, खरच दन्त नेत्र पेटमें बाधा स्त्रीपुत्रसे वियोग, चिन्ता राजा अग्नि चोर शत्रु और भाईबंदोंसे, अपने गोत्र के लोगोंसे प्रबल कलि ये सब बातें सूर्यकी दशामें होती हैं ॥ २ ॥ ३ ॥

दशा दिनेशस्य निजोच्चगस्य स्वधर्मकर्माभिरुचिं करोति ॥
तातार्जितद्रव्यगृहादिलाभं नानासुखानि प्रमदासुतेभ्यः ॥ ४ ॥

यह सब फल सामान्य रीतिसे सूर्यकी दशामें होताहै अब विशेष फल कहतेहैं यदि अपने उच्चका सूर्य होवे उसकी जब दशा आतीहै तब निजधर्म कर्ममें रुचि करताहै और पिताके सञ्चित किये गृह धनादिकका लाभ और पुत्रकलत्र से नाना प्रकार सुखों के लाभको कराताहै ॥ ४ ॥

उच्चच्युतस्यातितरामरिष्टं कष्टं च रोगान् स्वजनैर्विरोधम् ॥
रवेर्दशातीव चतुष्पदानां करोति हानिं ननु मानवानाम् ॥ ५ ॥
कान्तासुतानां कृषिवाहनानां प्रपीडनं स्यान्नयनाननेषु ॥
हृद्रोगबाधा बहुधा नराणां वृषाधिरूढस्य रवेर्दशायाम् ॥ ६ ॥

जिस मनुष्य को उच्चसे भ्रष्ट हुये सूर्य की जब दशा आतीहै तब उस पुरुष को अत्यन्त कष्ट होताहै और अरिष्ट, कष्ट, अनेक प्रकारके रोग, स्वजनोंसे विरोध और चौपाये जीवोंकी हानि होतीहै ॥ ५ ॥ सूर्य वृषराशि में स्थित होवे और यदि उसकी दशा आवे तौ स्त्री पुत्र खेती और सवारी इन सबों से पीड़ा होतीहै और उनके नेत्रों में मुखमें खेद, हृदयके रोगसे बाधा ये सब भोगने पड़ते हैं ॥ ६ ॥

स्यान्मन्त्रशास्त्रोत्तमकाव्यकर्त्ता प्रीतिः पुराणे च भवेन्नराणाम् ॥
कृषिक्रियाधान्यधनैः सुखानि नृयुग्मसंस्थस्य रवेर्दशायाम् ॥ ७ ॥
ख्यातिर्नृपप्रीतिरतीव नित्यं स्त्रीनिर्जितत्वं च महत्प्रकोपः ॥
सुहृज्जने नूनमनूनपीडा कर्काधिरूढस्य रवेर्दशायाम् ॥ ८ ॥

जब मिथुनराशिस्थ सूर्यकी दशा आतीहै तब वह पुरुष मन्त्रशास्त्र और उत्तम काव्यका करनेवाला होताहै और उसकी पुराणमें प्रीति, खेती करने से और धान्य धनसे सुख होते हैं ॥ ७ ॥ जब कर्कस्थ सूर्यकी दशा आतीहै तब सर्वत्र ख्याति, राजासे प्रीति होतीहै वह पुरुष अपनी स्त्रीके वश होताहै उन दिनोंमें उस मनुष्यका स्वभाव क्रोधी होजाताहै और सुहृज्जनोंसे अवश्य पूर्ण पीड़ा होतीहै ॥ ८ ॥

दुर्गादरण्याच्च कृषिक्रियायांधनान्यनेकानि भवन्तिनूनम् ॥
स्यात्ख्यातिरुच्चैर्नृपगौरवं च कण्ठीरवस्यार्कदशाप्रवेशे ॥ ९ ॥

स्यात्कन्यकानां जननं च मानोदेवद्विजानामनुपूजनं च ॥
लब्धिः पशूनां च भवेद्दशायां कन्यागतस्यांबुजबान्धवस्य ॥१०॥

जब मनुष्यको सिंहस्थ सूर्यकी दशा आतीहै तब उस मनुष्यको दुर्गसे वनसे अथवा खेती करने में अवश्यही अनेक तरहकी धन प्राप्ति होतीहै और जाति में ख्याति, राजासे गौरव प्राप्त होता है । ९ ॥ कन्याराशिस्थ सूर्यकी दशा पुरुष को आतीहै तब उस पुरुषके घरमें कन्याओंका ही जन्म होताहै और देवता ब्राह्मणोंका पूजन और पशुओं का लाभ होताहै ॥ १० ॥

क्षेत्रात्मजार्थप्रमदासु पीडा चाराग्निभीतिश्च विदेशयानम् ॥
नीचत्वमुच्चैः खलु मानवानां तुलाधरस्थस्य खेर्दशायाम् ॥ ११ ।
नीचांशमुक्तस्य खेर्दशायां सुखेन लाभः परवञ्चनंच ॥
जायानिमित्तोद्यतदुःखलब्धिर्नीचैर्भवेत्सख्यविधिर्नितान्तम् ॥२२।

जब पुरुषको तुलाराशिगामी सूर्य की दशा आतीहै तब खेत पुत्र धन स्त्री इनमें पीड़ा होतीहै और चोर अग्निसे भय होताहै और प्रदेशका जाना और अपने सजातियोंमें निकृष्टता होती है ॥ ११ ॥ जब नीचांश छूटे सूर्य की दशा पुरुषको आती है तब उस पुरुषको बिना परिश्रम करनेसे ही लाभ होताहै और सब पुरुषों का वञ्चन करना होताहै और अपनी पत्नी के निमित्त से दुःख की प्राप्ति उस पुरुषको होतीहै और नीच पुरुषों से मित्रता होती है ॥ १२ ॥

नीचाष्टमस्थस्य खेर्दशायामुद्विग्नतादोषसमुद्भवः स्यात् ॥
षष्ठाश्रितस्य व्रणजन्यपीडापित्रोश्च बाधा बहुधाऽवगम्या ॥ १३ ॥
तेजोविशेषाभियुतो नितान्तं विषाग्निशस्त्रैः परिपीडितश्च ॥
पित्रा जनन्या गतचित्तशुद्धिः स्याद्वृश्चिकस्थस्य खेर्दशायाम् ।१४।

जब मनुष्योंको नीचके सूर्य की और अष्टमस्थ सूर्यकी दशा आतीहै तब उस मनुष्य को उद्विग्न होने के निमित्त दोष उत्पन्न होताहै और छठे घरमें बैठे सूर्यकी दशा जब आतीहै तब उस मनुष्य को घावों के निमित्तसे पीड़ा होतीहै और उसके मातापिताको भी अनेक प्रकार की पीड़ा होतीहैं ऐसा जानना चाहिये॥ १२ ॥ जब वृश्चिक राशि में बैठे हुए सूर्य की जिस मनुष्य को दशा आतीहैं तब मनुष्य निरंतर तेजस्वी होताहै और विष अग्नि और शस्त्र से पीड़ित होता है और मातापिता से चित्त शुद्धि रहित पुरुष होताहै ॥ १४ ॥

कलत्रपुत्रद्रविणादिसौख्यं स्याद्गौरवं राजकुलाद्द्विजेभ्यः ॥
संगीतशास्त्रागमसौख्यमुच्चैश्चापोपयातस्य रवेर्दशायाम् ॥१५॥
जायात्मजद्रव्यसुखाल्पता स्यादनल्पपीडामयतो नितान्तम् ॥
भवेत्पराधीनतयातिचिन्ता नक्रोपयातस्य रवेर्दशायाम् ॥१६॥

जब मनुष्यको धनराशिस्थ सूर्यकी दशा आती है तब स्त्रीपुत्रधनसे सुखी होता है राजकुलसे और ब्राह्मणसे गौरव (बड़प्पन) मिलताहै और गानविद्यासे अतिशय सुख मिलता है ॥१५॥ जब पुरुषको मकरगत सूर्यकी दशा आतीहै तब स्त्री पुत्रधन इनके सुखकी अल्पता होती है और रोगोंके हेतुसे निरन्तर पीड़ा होती है और पराधीनताके कारणसे अत्यन्त चिन्ता होती है ॥ १६ ॥

हृद्रोगबाधासुतवित्तकान्ताचिन्तापरान्नादिसुखं नकिंचित् ॥
शत्रूद्गमश्चाप्यतिदीनता स्याद्घटाधिरूढस्य रवेर्दशायाम् ॥१७॥
स्त्रीवित्तसौख्योपचयः प्रतिष्ठा ज्वरादिपीडा च सुतादिकानाम्॥
वृथाटनत्वं ननु मानवानां मीने दिनेशस्य दशाप्रवेशे ॥१८॥

जब कुम्भराशिस्थ सूर्यकी दशा आती है तब उसको हृदयके रोगकी बाधा होतीहै पुत्रकी धनकी और स्त्रीकी चिन्ता होतीहै पराये अन्नसे सुख नहीं होता है अनेक शत्रुओंकी उत्पत्ति और अत्यन्त दीनता होतीहै॥१७॥जब मीनराशिस्थ सूर्यकी दशा आतीहै तब स्त्री पुत्र धनके सुखकी वृद्धि होतीहै प्रतिष्ठाकी प्राप्ति होती है और उसके पुत्रादिकों के देहमें ज्वरादिकोंकी पीड़ा होतीहै और भूमि में निरर्थ भ्रमण कराने वाली भी दशा होती है ॥ १८ ॥

स्वोच्चस्थितस्याष्टमभावगस्य दशादिनेशस्य च दोषदा स्यात् ॥
षष्ठस्थितस्य व्रणजातपीडां करोति बाधां च पितुर्जनन्याः ॥१९॥
पूर्वं भवेत्सूर्यदशाप्रवेशः पित्रोश्च बाधा विविधा तदानीम् ॥
लग्नाद्दशा क्लेशविशेषदात्री नक्षत्रनाथस्य दशातिशस्ता ॥२०॥

सूर्य अपने उच्चका होकर अष्टम घरमें बैठा होवे तब सूर्यकी दशा दोष देनेवाली होती है और षष्ठस्थानस्थित सूर्यकी दशा उसके मातापिताके देहमें घावों

की पीड़ा करतीहै॥१९॥जब सूर्यकी दशा लगतीहै तब मातापिताको अनेक तरहकी बाधा होती है यह दशालग्नसे विशेष क्लेश देनेवाली होतीहै और चन्द्रमाकी दशा मातापिताको शुभफल देने वाली होती है ॥२०॥ इति सूर्य दशा फल विचारः ॥

॥ अथ चन्द्रदशाफलानि ॥

आरोहिणी चन्द्रदशा नराणां सर्वार्थसिद्ध्यैकथिता विशेषात् ॥
तथावरोहाकुरुते विलम्बं सर्वेषु कार्येषु च बुद्धिमान्द्यम् ॥ १ ॥
नक्षत्रनाथस्य दशाप्रवेशे भवेन्नराणां महती प्रतिष्ठा ॥
मन्त्रित्वमुच्चैर्नृपतेः प्रसादोभूदेवदेवार्चनताप्रवृद्धिः॥ २ ॥

आरोहिणी (लगती) चन्द्रमाकी दशा मनुष्योंको विशेष करके सर्वार्थ सिद्धि देनेवाली कही है और अवरोहिणी (उतरती) उक्त दशा सब कामों में विलंब करतीहै और बुद्धिको मन्द करतीहै ॥१ ॥ चन्द्रमाकी दशाके प्रवेशमें मनुष्योंको बड़ी प्रतिष्ठा मिलती है और मन्त्रीपना और राजाका अनुग्रह प्राप्त होता है और देवता ब्राह्मणोंके पूजन में प्रवृत्तिहोती है॥ २ ॥

सन्मन्त्रविद्याविविधाधनाप्तिर्नानाकलाकौशलशालिता च ॥
गन्धैस्तिलैश्चापि फलैः प्रसूनैर्वृक्षैरलं वा द्रविणोपलब्धिः ॥३॥
ख्यातिः सुकीर्तिर्विनयाधिकत्वं परोपकाराय मतिर्यशश्च ॥
इतस्ततः सञ्चलनप्रियत्वं कन्याप्रजासंजननं मृदुत्वम् ॥४॥
जलस्य कर्मण्यतिसादरत्वमालस्यनिद्राकुलता क्षमा च ॥
कृष्यादिकर्माभिरुचिः शुचित्वं कफानिलाधिक्यमतीव सत्वम् ॥
भवेद्विरोधः स्वजनेन नूनं कलिप्रसङ्गो बहुजल्पताच ॥
चित्तस्थितिर्नैव च साधुकार्ये सामान्यतः कीर्तितमेतदत्र ॥६॥

अनेक तरहकी उत्तम मन्त्र विद्या अनेक प्रकार धनकी प्राप्ति नानाकलाओंमें कुशलता मिलतीहै और गन्ध तिल फलपुष्प और वृक्ष इनसे धनकी प्राप्ति, सर्वत्र ख्याति, उत्तम कीर्ति, विनयकी अधिकता परोपकार करनेमें बुद्धि,यश इत उत डोलने में रुचि कन्यासंततिकी प्राप्ति, और नरमाई,जलके कर्ममें अति आदर, आलस्य निद्राका रहना, क्षमा, खेती करने आदि कर्म करनेमें रुचि, पवित्रता, कफ वायुका

धिक्य, बड़ा पुरुषार्थ, स्वजनोंसे विरोध, कलह, बहुत बोलना, सत्कर्ममें मनका न लगना ये सब चन्द्रमाकी दशामें फल होते हैं ये सामान्यरीति से चन्द्रमा की दशा का फल कहा है ॥ ३।४।५।६ ॥

मेषे शशाङ्कस्य दशाप्रवेशे योषात्मजानन्दभरो जनानाम् ॥
विदेशकर्माभिरतिर्व्ययः स्यात्क्रौर्यं शिरोरुक्सहजारिबाधा ॥७॥
उच्चाधिरूढस्य दशा जडांशोः कुलानुसारं हि ददाति राज्यम् ॥
योषाविभूषात्मजगोतुरङ्गगजाप्तिसौख्योपचयं जयं च ॥८॥

मेषमें चन्द्रमा स्थित होवे यदि उसकी दशा आती है तब स्त्रीपुत्रों का आनन्द होताहै और विदेश कर्ममें अभिरति,निरंतर खर्च,क्रूरता,शिरमें दर्द और स्वाभाविकी शत्रुसे बाधा होतीहै ॥७॥ उच्चके चन्द्रमा की जब दशा आतीहै तब उस मनुष्यको उसके कुलानुसार राज्य देती है और स्त्री भूषण पुत्र गऊ घोड़े और हाथी इनकी प्राप्ति से सुख की वृद्धि और सर्वत्र जय होतीहै ॥ ८ ॥

मूलत्रिकोणाश्रितशीतरश्मेर्दशा विदेशाभिगमं करोति ॥
कृषे क्रयाद्विक्रयतो धनाप्तिं कफानिलार्तिं स्वजनैर्विरोधम् ॥९॥
वृषस्य पूर्वार्द्धगतो हिमांशुः पापान्वितः संजनयेज्जनन्याः ॥
मृत्युं परार्द्धे जनकस्य सौम्यसंगं क्षणान्मृत्युसमानरोगम् ॥१०॥

मूलत्रिकोणी चन्द्रमा की दशा परदेशको गमन कराती है और खेती करनेसे क्रयविक्रयसे धनकी प्राप्ति कराती है और कफवायुकी पीड़ा और स्वजनोंसे विरोध करातीहै ॥९॥ वृषिराशिके पूर्व अर्द्धमें स्थित जो चन्द्रमा है उसकी दशा जिस मनुष्य को जब आतीहै यदि वह पापग्रह युक्त होवे तौ उस चन्द्रमाकी दशा माता की मृत्यु करती है और पापग्रह युक्त वृषके उत्तरार्द्धवर्ती चन्द्रमा की दशा आवे तौ पिता की मृत्यु होती है ॥ १० ॥

द्वन्द्वाधिसंस्थेन्दुदशाप्रवेशे देवद्विजार्चाधनभोगसंस्थम् ॥
स्थलान्तरे संचलनं किल स्यात्सुखेन सम्यङ्मतिवैभवं च ॥११॥
कुलीरसंस्थस्य कलानिधेः स्यात्पाके पशुद्रव्यकृषिप्रवृद्धिः ॥
कलाकलापाकलनं च शैलवनेरुचिर्गुह्यगदप्रकोपः ॥ १२ ॥

मिथुन राशिस्थ चन्द्रमा की दशाके प्रवेशमें देवता ब्राह्मणोंका पूजन धनभोग इनसे सुख मिलता है और निश्चय देशांतरमें संचलन होताहै और सुखपूर्वक भलीप्रकार बुद्धिद्वारा वैभव की प्राप्ति होतीहै ॥ ११ ॥ कर्क राशिस्थ चन्द्रमा की दशा आतीहै तब पशु,द्रव्य,खेतीकी अतिशय वृद्धि होतीहै और अनेक कलाओं का ज्ञान वनमें पर्वतमें रहने की रुचि और गुह्येंद्रियमें रोग का कोप होता है ॥१२॥

कण्ठीरवस्थस्य निशाकरस्यपाके नरोऽर्थंलभते च नित्यम् ॥
श्रेष्ठांप्रतिष्ठां विकलत्वमंगेऽनंगेपि हीनत्वमनुप्रयाति ॥ १३ ॥
कन्याश्रितेन्दोश्च दशाप्रवेशे विदेशयानं वनितोपलब्धिः ॥
कलाकलापामलबुद्धि वृद्धिः स्वल्पार्थसिद्धिश्च भवेन्नराणाम् ॥१४॥

जब सिंहके चन्द्रमाकी मनुष्यको दशा आतीहै तब नित्य धनकीप्राप्ति होतीहै और श्रेष्ठ प्रतिष्ठा,अङ्गमें विकलता और कामदेवसेरहित वह मनुष्य होताहै ॥१४॥ कन्याराशिमें स्थित जो चन्द्रमाहै उसके दशा प्रवेशमें मनुष्यको देशांतरगमन होताहै और उसकी जगह उसको स्त्रीकी प्राप्ति होती है और अनेक कलाओं में निर्मल बुद्धि बढ़तीहै और उन मनुष्योंको स्वल्प अर्थसिद्धि होती है ॥१४॥

कलानिधेस्तौलिगतस्य पाके लोलं मनः स्याद्वनिताविषादः ॥
वादश्च कैश्चिद्धनहीनता च प्रोत्साहभंगः खलु नीचसंगः ॥१५॥
नीचोपयातस्य विधोर्दशायां स्याद्व्याधिवृद्धिर्बहुधा नराणाम् ॥
वियोजनं वै स्वजनेन नूनं मानाल्पताऽनल्पविकल्पचिन्ता॥१६॥

जब तुलाराशिस्थ चन्द्रमाकी दशा आतीहै तब उस मनुष्यको मनमें चञ्चलता, स्त्रीके निमित्त विषाद, कितनेही मनुष्योंसे विवाद, धनकी हीनता, उत्साहका भङ्ग और नीच मनुष्योंसे सङ्ग ये सब बातें अवश्य ही होतीहैं ॥१५॥ यदि नीचस्थान (८) को प्राप्त हुये चन्द्रमा की दशा जब जिस मनुष्यको आतीहै तब पुरुषोंको बहु प्रकार व्याधि वृद्धि होतीहै और स्वजनजनोंसे अवश्य वियोग;मानकी न्यूनता और अनेक प्रकारकी पूर्ण चिन्ता उस मनुष्य को होती है॥ १६ ॥

विमुक्तनीचोडुपतेर्दशायां भवेदवाप्तिः क्रयविक्रयाभ्याम् ॥
धर्मेऽन्यथाधर्मविधनमल्पमल्पं च सख्यं जनमित्रवर्गैः ॥१७॥

चापोपयातस्य च शीतरश्मेर्दशाप्रवेशे गजवाजिवृद्धिः ॥
पूर्वार्जितार्थोपहतिर्नितान्तमन्यत्र सौभाग्यसुखानि नूनम् ॥१८॥

अपने नीच भावसे निवृत्तहुये चन्द्रमाकी जब दशा आतीहै तब उस पुरुषको क्रयविक्रयव्यापारसे लाभ होताहै धर्म विषयमें व्यथा और धर्म विधानकी अल्पता और मित्रवर्गोंसे अल्पस्नेह होताहै॥१७॥धनराशिस्थ चन्द्रमाकी जब दशा आती है तब उस पुरुषको हाथी घोड़ोंकी वृद्धि और पूर्वसंचित धनका नाश होताहै और अन्यत्र सौभाग्यजन्य अनेक सुख प्राप्त होते हैं॥ १८ ॥

हिमकरस्य दशामकरस्थितः सुखसुखानि धनागमनानिच ॥
वितनुते तनुतामनिलात्तनोरनु दिनं गमनागमनानिवै॥१९॥
क्रीडा च पीडाव्यसनानि नूनं स्युर्मानवानां तनुता शरीरे ॥
ऋणोपलब्धिश्चलतानितान्तं दशाप्रवेशे कलशस्थितेन्दोः ॥२०॥

जब मकरराशिमें चन्द्रमा बैठा होवे यदि उसकी दशा होवे तब पुत्रोंके सुख और वनका गमन और वायुके निमित्त देह में दुर्बलता और प्रतिदिन वनका आना जाना होता है॥१९॥यदि कुम्भ राशिगत चन्द्रमाकी दशा होती है तब क्रीड़ा पीड़ा व्यसन अवश्यही मनुष्योंको होते हैं और शरीरमें दुर्बलता होती है और ऋणकी उपलब्धि प्राप्ति निरन्तर चंचलता होती है॥२०॥

वर्गोत्तमस्थस्य घटे हिमांशोर्दशाप्रवेशे बलिभिर्विरोधः ॥
कलत्रमित्रद्रविणात्मजाद्यैर्भवेद्वियोगो दशनास्यपीडा ॥ २१ ॥
मीनोपयातस्य च शीतभानोर्दशाप्रवेशे हि जलोद्भवार्थः ॥
कलत्रपुत्रादिसुखादि नूनं शत्रुक्षयोबुद्धिविवृद्धिरुच्चैः ॥२२॥

चन्द्रमा कुम्भराशिमें वर्गोत्तमीका होवे उसकी दशाके प्रवेशमें पुरुषका बली पुरुषोंसे विरोध होता है और स्त्री पुत्र मित्रऔर धनसे वियोग होता है और दांतोंमें मुखमें पीड़ा होती है॥२१॥ मीनराशिमें प्राप्त हुये चन्द्रमाकी दशा प्रवेश में जलके निमित्तसे धन प्राप्त होताहै और कलत्रपुत्रादिकोंका सुखशत्रुओंका नाश और बुद्धिकी वृद्धि होती है॥ २२ ॥

वर्गोत्तमस्थस्य झषे हिमांशोर्दशाप्रवेशे महिषीगजाश्वान ॥
पुत्रादितोषं रिपुनाशमुच्चैर्लभेन्मनुष्यो हि यशो मनीषाम्॥२३॥

दशाप्रवेशे व्ययभावगेन्दोः पापार्जित द्रव्यसमुद्गमः स्यात् ॥
क्षीणे रिपुस्थानगते हिमांशौ सम्यक्फलंप्रागुदितं वृथैव ॥२४॥
नीचास्थितस्याष्टमभावगेन्दोर्दशाप्रवेशे हि गदोद्गमः स्यात ॥
चेत्पापयुक्तो निधनं तदानीं जातिच्युतिं वा लभते मनुष्यः॥२५॥

और मीनराशिमें वर्गोत्तमीके चन्द्रमाकी दशाप्रवेशमें मनुष्यको महिषी हाथी घोड़ोंकी प्राप्ति होती है पुत्रादिकोंकी तरफ से संतोष, शत्रुओंका नाश, यश और बुद्धि प्राप्त होती है॥२३॥जब व्ययस्थ चन्द्रमाकी दशाका प्रवेश होता है तब पाप से संचित कीनी हुई द्रव्यकी उत्पत्ति होतीहै और चन्द्रमा क्षीण होकर शत्रु घरमें बैठे उसकी दशाके प्रवेशमें जो फल होताहै सो तो अच्छीतरहसे हम पहले कहचुके हैं उसका व्यर्थ फल होताहै॥२४॥नीचका होकर अष्टम घरमें बैठे चन्द्रमाकी दशामें मनुष्यके देहमें रोगकी उत्पत्ति होती है और यदि पापग्रह युक्त अष्टमस्थ चन्द्रमाकी दशा होवे तब उस मनुष्यकी मृत्यु होजातीहै अथवा वह मनुष्य जातिसे भ्रष्ट होता जाता है ॥ २५ ॥ इति चन्द्रदशा फलानि ॥

अथ भौमदशाफलानि ।

ताराग्रहाः स्वोच्चगृहादिसंस्था वक्रास्तमानानुगता यदि स्युः ॥
मिश्रं फलं ते निजपाककालेयच्छन्ति नूनं सुधिया विचिन्त्यम्॥१
स्यात्पाके क्षितिनन्दनस्य च धनं शस्त्राच्च धात्रीपते
भैषज्याच्च चतुष्पदादपि तथा नानाविधैरुद्यमैः ॥
पित्तासृक्ज्वरपीडनं क्षितिपतेर्भीतिं च नीतिच्युतिं
मूर्च्छाद्यं च निजालये कलिरिति प्रोक्तं फलं सूरिभिः ॥ २ ॥

नक्षत्र और ग्रह यदि अपने उच्चादि घरोंमें स्थित होवें परन्तु वक्री ग्रह और असङ्गत गृहोंके साथ होवें तौ वे ग्रह अपनी २ दशामें मिला हुआ शुभाशुभ फल देते हैं बुद्धिमान पुरुषोंको अवश्यही विचार करना चाहिये ॥ १ ॥ जब मनुष्यको मङ्गलकी दशा आती है तब उस दशा के पाकमें उस पुरुषको शस्त्रके निमित्त से अथवा राजासे औषधीसे चतुष्पदजीवोंसे और नाना प्रकारके उद्यमोंसे धनकी प्राप्ति होतीहै और पित्तसे रुधिरके कोपसे और ज्वरसे पीड़ा होतीहै और राजसे भय होता है नीतिसे च्युति,मूर्च्छादि और अपने घरमें कलह होताहै ये सब फल ज्योतिर्विद मनुष्योंने कहाहै ॥ २ ॥

मूलत्रिकोणोपगतस्य पाके क्षोणीसुतस्यात्मजदारसौख्यम् ॥
अर्थोपलब्धिं खलु साहसे न रणाङ्गणे चारुयशो विशेषात् ॥ ३ ॥
मेषोपयातस्य च भूसुतस्य स्युः पाककाले किल मंगलानि ॥
स्यात्सन्ततिः साहसमग्निबाधा नानाविधारातिसमुद्भव स्यात् ॥ ४ ॥

मूलत्रिकोण को प्राप्त हुए मङ्गल की दशा में पुत्र और स्त्री के तरफ से सुख होताहै और साहस कृत्य से अर्थ की उपलब्धि (प्राप्ति) होतीहै और विशेषकर के रणांगणमें यश की प्राप्ति होतीहै ॥ ३ ॥ मेषराशिके होकर बैठे हुए मङ्गलकी दशा में मङ्गल होतेहैं और सन्तति अग्नि से बाधा और अनेक प्रकार के शत्रुओं की उत्पत्ति होतीहै ॥ ४ ॥

वृषस्थितस्यावनिनन्दनस्य पाकप्रवेशे पुरुषः सहर्षः ॥
अनल्पजल्पो गुरुदेवभक्तः परोपकारादरतासमेतः ॥ ५ ॥
युग्मस्थितोर्वीतनयस्य पाके प्रवासशीलोऽनिलपित्तकोपः ।
बहुव्ययः स्यात्स्वजनैर्विरोधी नरः कलाज्ञो नितरां विधिज्ञः ॥ ६ ॥

वृषराशिमें स्थित हुए मङ्गल की दशा में पुरुष हर्षसे युक्त होताहै और बहुत बोलनेवाला गुरुदेवताओंका भक्त और परोपकार करनेमें आदरयुक्त होताहै ॥ ५ ॥ मिथुनराशिस्थित मङ्गल की दशाके परिपाक में पुरुष परदेशमें रहनेवाला, वायुपित्त के कोपसे हुए रोगसे युक्त, बहुत खरच करनेवाला, स्वजनोंसे विरोध करनेवाला, अनेक कलाओंका जाननेवाला और निरंतर अनेक विधियोंका जाननेवाला होताहै।

कर्कस्थभौमस्य भवेद्दशायामुद्यानवह्निप्रभवार्थयुक्तः ॥
नरो हि दारासुतदूरवर्ती क्लेशोपलब्धेर्बलहीनमूर्तिः ॥ ७ ॥
संत्यक्तनीचांशकुजस्य पाके ख्यातः पुमान्सर्वगुणोपपन्नः ॥
चतुष्पदाढ्यो बलवानकस्मात्प्रजायते गुह्यरुजाभिभूतः ॥ ८ ॥

कर्क में स्थित हुए मङ्गलकी दशा में पुरुष बगीचा और अग्निसे उत्पन्न हुए धनसे युक्त होताहै और स्त्री पुत्र से दूर रहनेवाला और क्लेशों के मारे बलसे हीन शरीरवाला होताहै ॥ ७ ॥ नीचके अंशको जिसने त्यागा ऐसे मङ्गलकी दशाके पाक में पुमान् सर्वत्र विख्यात सकल गुणसम्पन्न चौपाये जीवोंका रखने वाला बलवान होताहै और उस मनुष्यको अकस्मात गुह्य रोग होताहै ॥ ८ ॥

सिंहाश्रितक्ष्मातनयस्य पाके नूनं भवेन्नायकता बहूनाम् ॥
कान्तासुताद्यैश्च वियोगता च बाधा तथा हेतिहुताशजाता ॥९॥
कन्यानुयातावनिनन्दनस्य पाके सदाचारपरो नरः स्यात् ॥
यज्ञक्रियायामपि सादरः स्याद्दारात्मजोर्वीधनधान्यसौख्यः ॥१०॥

सिंहराशिको प्राप्त हुए मङ्गलकी दशाके परिपाक में पुरुष बहुत मनुष्यों का स्वामी होताहै और स्त्री पुत्रों के वियोगसे युक्त होताहै और चक्रादिशस्त्रोंसे अथवा अग्नि से बाधायुक्त होताहै ॥ ९ ॥ कन्याराशि को प्राप्त हुए मङ्गल की दशाके परिपाकमें सदाचारमें तत्पर मनुष्य होताहै और यज्ञ करनेमेंभी आदर करने वाला और स्त्री पुत्र भूमि धन धान्यमें सुख भोगनेवाला होताहै ॥ १० ॥

तुलागतेलासुतपाककाले स्याद्द्रव्यभार्यावियुतो हि मर्त्यः ॥
चतुष्पदाभावकलिप्रसंगैर्हतोत्सवो वै विकलांगयष्टिः ॥ ११ ॥
पुमान्भवेद्वृश्चिकराशिगस्य भौमस्य पाके कृषिकर्मकर्त्ता ॥
सुसंग्रहे जातमनः प्रवृत्तिर्द्वेषी बहूनामतिजल्पकश्च ॥ १२ ॥

तुलाराशि में स्थित हुए मङ्गलकी दशाके परिपाकसमय में मनुष्य द्रव्य से भार्यासे वियोगी होताहै और चतुष्पद जीवोंके अभावसे और कलहके प्रसङ्गों से उत्सवहीन और खेद युक्त देहवाला होताहै ॥११॥वृश्चिकराशिस्थ मङ्गलकी दशाके परिपाकमें पुरुष खेती कर्म करनेवाला अनेक वस्तुओंका संग्रह करनेमें मन रखनेवाला बहुतोंसे द्वेष करने वाला और बहुत बोलने वाला होताहै ॥ १२ ॥

धनुर्धरस्थस्य धरासुतस्य पाकप्रवेशे द्विजदेवभक्तः ॥
नरो नरेन्द्राप्तमनोरथः स्यात्कलिप्रसङ्गोपहतोत्सवश्च ॥ १३ ॥
वक्रस्यनक्रोपगतस्य पाके राज्योपलब्धिः स्वकुलानुमानात् ॥
युद्धेविवादे विजयो नितान्तं सद्रत्नचामीकरवाजिसौख्यम् ॥१४॥

धनुराशिस्थ मङ्गलकी दशा जब आतीहै तब वो मनुष्य ब्राह्मण और देवताओं का भक्त होताहै और राजासे मनोरथोंकी प्राप्ति होतीहै और कलहके कारणसे उत्सवों से रहित होताहै ॥ १३ ॥ मकरराशिमें स्थित जो मङ्गल है उसका जब दशाका पाक होताहै तब उस पुरुषको अपने कुलके अनुसार राज्यकी प्राप्ति होतीहै

और युद्धमें विवादमें सब समय जय होता है और उत्तम रत्न सुवर्ण और घोड़े इनके सम्बन्धसे सुख होता है ॥ १४ ॥

उच्चांशमुक्तस्य महीसुतस्य पाके प्रयत्नात्खलु कार्यसिद्धिः ॥
शास्त्राद्भवेच्छ्वापदतोपि भीतिः सन्तोषजाल्पत्वमहाप्रयासः ॥१५॥
आचारहीनश्च सुषादिचिन्ता बहुव्ययोद्वेगसमाकुलत्वम् ॥
कुम्भोपयातस्य च मंगलस्य स्यात्पाककाले फलमेतदेव ॥१६॥

उच्चके अन्शसे निकले मङ्गल की जब दशा आतीहै उसके परिपाकमें यत्नके करनेसे कठिनसे कठिन कार्य सिद्धि होतीहै और शस्त्रसे और कुत्ताके काटनेसे भय होताहै संतोषकरनेसे महान् परिश्रमसे थोरा धन मिलताहै ॥१५॥ जब कुम्भराशि में स्थित मङ्गल की दशा आती है तब वो मनुष्य आचार से रहित, पुत्रादिकोंकी चिन्ता से युक्त बहुत खरच करनेसे उद्वेगयुक्त होता है ॥ १६ ॥

मीनोपयातावनिनन्दनस्य दशाप्रवेशे हि सुतादिचिन्ता ॥
व्ययामयत्वं च ऋणोपलब्धिर्विचर्चिकादद्रुविदेशवासाः ॥१७॥
संग्रामसंप्राप्तजयाधिशाली बलान्वितोऽत्यन्तगुणाभिरामः ॥
वर्गोत्तमांशस्थितभूसुतस्य पाके च नानाविधवस्तुलब्धिः ॥१८॥

मीन राशिगत मङ्गलकी दशा जिस पुरुषको आती है उस दशाके प्रवेश में ही पुत्रादिक की चिंता होती है और वेफायदे खर्च और अनेक रोग और ऋण इन सबों की प्राप्ति होती है और विचर्चिका[1] नामक रोग और दाद ए सब शरीर में होतेहैं और परदेश का वासी होता है ॥ १७ ॥ जब वर्गोत्तमी मङ्गलकी दशाका परिपाक होताहै तब वो पुरुष संग्राममें जीतनेवाला बड़ा बलवान्,अत्यन्त गुणवान् होता है और नानाप्रकारके वस्तुओं का लाभ होता है ॥ १८ ॥

नीचांशसंस्थस्य कुजस्य पाके वृथाटनत्वं मनसो विषाद ॥
फलोन्मुखं कार्यमतीव दूरे नीचत्वमुच्चैर्विगताधिकत्वम् ॥१९॥
मूलत्रिकोणोच्चगृहास्थितस्य कुजस्यकर्माधिगतस्य पाके ॥
राज्योपलब्धि विजयो रिपुभ्यः सद्वाहनालंकरणानि नूनम् ॥२०॥

(१) खुजली फुंसी

नीचके अंशोंमें स्थित जो मङ्गल है उसकी जब दशा होतीहै तब वृथाटन (निष्प्रयोजनभ्रमण),मनको खेद होताहै और फलके देनेका भी जो काम दीखे वोभी नहीं होता है उत्कर्षके अभाव होनेसे निकृष्टता मिलती है ॥१९॥ मूलत्रिकोणका या उच्चका जो मङ्गल है उसकी दशा का जब परिपाक समय आता है तब मनुष्यको राज्यप्राप्ति और शत्रुओंसे विजयप्राप्ति और उत्तम सवारी आभूषण इनकी प्राप्ति होती है इसमें सन्देह नहीं ॥ २० ॥ इति भौमदशाफलम् ॥

अथ बुधदशाफलानि ।

विद्याविवेकप्रभुतासमेतः कृषिक्रियायज्ञविधानचित्तः ॥
महोद्यमादाप्तधनश्च नूनं भवेन्मनुष्यः शशिजस्य पाके ॥१॥
शिल्पादिकर्मण्यतिकौशलं स्यान्नित्योत्सवोत्कर्षविशेष एव ॥
सद्वाद्यगीताभिरुचिर्नवीनसद्भाण्डभूषागृहनिर्मितत्वम् ॥२॥
कुतूहलैर्भाषणहास्यहर्षैः कालक्रमत्वं विनयोपलब्धिः ॥
आचार्यविद्वद्गुरुसंमतत्वं कलत्रपुत्रादिसुखोपलब्धिः ॥
पीडापि गाढा कफवातपित्तैरसंचयोऽर्थस्य च सौम्यपाके ॥
बलाबलत्वं प्रविचार्य सर्वं शुभाशुभत्वं सुधिया विचिन्त्यम् ॥४॥

जिस पुरुषको बुधकी दशा आतीहै वो पुरुष विद्या ज्ञान प्रभुता इनसे युक्त होताहै खेती करनेमें यज्ञविधानमें चित्त रखनेवाला वो पुरुष होता है और उद्यम करनेसे धनसंचय करनेवाला होता है ॥१॥ इसी बुधकी दशामें शिल्प आदि विद्याओंमें बड़ा कुशल, नित्यप्रति अनेक उत्सवविशेषोंसे युक्त, उत्तम बाजे गीतों में रुचि रखनेवाला और नवीन बाजे भांडभूषण घर इनके बनाने में कुशल अनेक तरह क्रीड़ा भाषण हास्य और हर्ष इनसे युक्त कालानुसार विनय संपन्न और आचार्य विद्वान पुरुष गुरु इनके संमत होता है और स्त्रीपुत्रादिकोंके सुखसे संपन्न होताहै कफवात पित्तकी गाढपीडासे युक्त, धनके संचय से रहित ए सब बातें बुध की दशामें पुरुषको होतीहैं इससे बुद्धिमान पुरुषको बलाबलका विचार करके इस तरह शुभाशुभ का चिंतवन करना चाहिये ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥

मेषस्थशीतद्युतिसूनुपाके नैकत्रसंस्थानकरो नरः स्यात् ॥
स्तेयानृतद्युतशठत्वयुक्तो विमुक्तसौजन्यविधिस्तु निःस्वः॥५॥

वृषाधिरूढस्य जडांशुसूनोर्दशाप्रवेशे व्ययकृन्मनुष्यः ॥
मातुस्त्वनिष्टश्च कलत्रपुत्रमित्रादिचिन्तागलरुग्भयार्त्तः ॥ ६ ॥

मेष राशिमें स्थित जो बुध है उसकी दशाके परिपाकमें मनुष्य एक जगह नहीं रहताहै और चोरी झूठ जूआ शठता इनसे युक्त, भलेपनसे रहित और धनसे रहित होताहै ॥ ५ ॥ जब वृषराशिस्थ बुधकी दशाका प्रवेश होताहै तब वो मनुष्य खरचका करनेवाला, अपनी माताको अनिष्ट, कलत्र पुत्र मित्रादिकोंकी चिन्ता से युक्त, बड़ा भयभीत और गलेके विषरोगसे संयुक्त होताहै ॥ ६ ॥

द्वन्द्वाधिसंस्थस्य बुधस्य पाके त्वनेकवार्त्ता बहुजल्पकर्ता ॥
दारात्मजज्ञातिसुखोपपन्नो नूनं जनन्याश्च सुखेन हीनः ॥ ७ ॥
कर्काश्रितस्येन्दुसुतस्य पाके विदेशवासाल्पसुखो विरोधी ॥
मित्रैश्च सत्काव्यकलार्जितार्थोऽत्यर्थं मनुष्यो व्यवसाययुक्तः ॥ ८ ॥

जब जिस पुरुषको मिथुनराशिस्थ बुधकी दशा आतीहै तब वो मनुष्य अनेक जीविकाओंका करनेवाला, बहुत बकवादी, स्त्रीपुत्र और ज्ञातिजनोंके सुखसे संयुक्त और माताके सुखसे रहित होताहै ॥ ७ ॥ जब जिस मनुष्यको कर्कराशिस्थ बुध की दशाकी परिपाक अवस्था आतीहै तब वो मनुष्य परदेशका रहनेवाला, अल्प सुखसे युक्त सबोंसे विरोध रखनेवाला और अपने मित्रोंसे भी विरोध करनेवाला सत् काव्य कलाओंसे धनसञ्चय करनेवाला और अत्यन्त व्यवसाययुक्त होताहै ॥ ८

सिंहस्थितस्येन्दुसुतस्य पाके लोलं भवेद्वैभवमेव धैर्यम् ॥
स्वमित्रदारात्मजसौख्यहानिः स्यान्मानवानां मतिहीनता च ॥ ९ ॥
उच्चाश्रितस्येन्दुसुतस्य पाके स्यान्मानवो वै बहुवैभवाढ्यः ॥
लेखक्रियाकाव्यकलानुरक्तो जितारिपक्षश्च सुनीतियुक्तः ॥ १० ॥

जब जिस मनुष्यको सिंहराशिस्थ बुधकी दशाकी परिपाक अवस्था आती है तब वो मनुष्य लोल (चञ्चल) वैभवसे युक्त होताहै और धैर्य भी स्थिर नहीं होता और मित्र स्त्री पुत्र इनके सुखसे रहित और बुद्धिहीन होता है ॥ ९ ॥ उच्चको आश्रित हुए बुधकी दशाको परिपाक अवस्था आतीहै तब वो मनुष्य अनेक वैभवों से संपन्न होताहै और लिखनेकी क्रियामें काव्यकलाओंमें अनुराग करनेवाला, शत्रुपक्षका जीतनेवाला और उत्तम नीतिसे संयुक्त होताहै ॥ १० ॥

मूलत्रिकोणोपगतस्य पाके विवेकविख्यातिगुणैः प्रपूर्णः ॥
विदेशयानानुरतो नरः स्यात्पराक्रमादाप्तधनो विधिज्ञः ॥ ११ ॥
तुङ्गत्रिकोणक्रमणप्रकर्तुर्बुधस्य पाके पशुसौख्यहानिः ॥
स्वबन्धुवैरं विकलत्वमंगे कलिप्रसंगेऽतिविहीनता स्यात् ॥ १२ ॥

मूलत्रिकोणी बुधकी दशा जब जिस मनुष्यको आतीहै तब वो मनुष्य विवेक विख्याति गुणोंसे परिपूर्ण, परदेशके जाने में अनुराग रखनेवाला, पराक्रमसे धन सञ्चय करनेवाला और अनेक विधियोंका जाननेवाला होताहै ॥ ११ ॥ अपने उच्चपर जानेवाला या त्रिकोणपर जानेवाले बुधकी जब दशा आतीहै तब वो पुरुष पशुसुख की हानिवाला, अपने बन्धुओं से वैरवाला, अङ्गसे विकल और कलहके प्रसङ्गसे रहित होताहै ॥ १२ ॥

तुलागतस्येन्दुसुतस्य पाके स्यात्क्षीणताहृङ्मतिवाग्विलासे ॥
शिल्पादिकर्मण्यतिनैपुणं च वाणिज्यतोऽर्थः पशुपीडनं च ॥१३॥
पाके भवेद्वृश्चिकसंस्थितस्य मृगाङ्कसूनोर्मनुजोल्पतुष्टः ॥
आचारकर्मक्रमणानुरक्तो व्ययेन युक्तः स्वजनैर्वियुक्तः ॥ १४ ॥

जब जिसके तुलाराशिस्थित बुधकी दशा की परिपाक अवस्था आतीहै तब उस पुरुष के अङ्गमें दृष्टिमें बुद्धिमें और वाग्विलासमें क्षीणता और शिल्पादि कर्म में अत्यन्त निपुणता, वणिजव्योपार से धनकी प्राप्ति होतीहै और पशुओं को पीड़ा होतीहै ॥ १३ ॥ जब वृश्चिक संस्थित जो मङ्गल है उसकी दशाकी परिपाक अवस्था आतीहै तब वो किंचित् तुष्ट, आचार कर्म करने में अनुराग करनेवाला, खरचसे युक्त और अपने जनों से वियोगी होतीहै ॥ १४ ॥

शरासनाद्यासनतां गतस्य बुधस्य पाके बहुनायकः स्यात् ॥
मन्त्री च नामद्वयतासमेतः कृषिक्रियावित्तयुतो मनुष्यः॥१५॥
मृगाङ्कसूनोर्हि मृगास्थितस्य पाके भवेद्भूरि ऋणं नाराणाम् ॥
बह्वाटनं वै कपटत्वमुच्चैर्नीचैश्च सख्यं मतिहीनता च ॥ १६ ॥

जब धनराशि में स्थित बुधकी दशाकी परिपाक अवस्था आतीहै तब वो मनुष्य बहुतों का स्वामी होतीहै और राजाका मंत्री होताहै दो नामों से युक्त होताहै और खेती करनेमें धन संपादन करनेवाला होताहै।१५।मृगाङ्क (चंद्रमा) का पुत्र

बुध जब मकरका होवे और उसकी दशाकी परिपाक अवस्था आतीहै तब पुरुषको बहुत ऋण होताहै और भूमिमें अत्यन्त भ्रमण, अत्यन्त कपटी, नीचोंसे मित्रता करने वाला और बुद्धिसे हीन होता है ॥ १६ ॥

सौम्यस्त कुम्भोपयुतस्य पाके विहीनतेजा मनुजोऽतिनिःस्वः ॥
मित्रादिपीडापरिपीडितात्मा विदेशयानव्यसनानुरक्तः ॥१७॥
नीचांशसंस्थस्य कुजस्य पाके विवेकसत्योपहितो हि मर्त्यः ॥
स्थानान्तरस्थोऽव्यवसायशीलः स्यादल्पलाभः कृशकायकान्तिः १८

जब पुरुषको कुम्भराशिस्थ बुधकी दशाका परिपाक आता है तब वो मनुष्य तेजहीन होता है और अत्यन्त धनहीन मित्रादिकोंकी पीड़ासे पीड़ित और परदेश जानेका जिसको व्यसन ऐसा होता है ॥१७॥ नीचांशस्थित बुधकी दशाकी जब परिपाक अवस्था आतीहै तब वो मनुष्य विवेकी और सत्यसे रहित, किसी जगे स्थित हुआभी निश्चय करनेवाला, अल्प जिसको लाभ, दुर्बल जिसका शरीर और कांतिहीन होता है ॥ १८ ॥ इति बुधदशाफलानि ॥

अथ गुरुदशाफलानि ।

दशाप्रवेशे त्रिदशार्चितस्य भूपप्रधानाप्तमनोरथः स्यात् ॥
सत्कर्मधर्मागमशास्त्रवेत्ता भवेन्मनुष्यः सततं विनीतः ॥ १ ॥
यज्ञादिकर्मण्यतिसादरत्वं भवेत्प्रवृत्तिर्द्विजवेदभक्तौ ॥
अत्यर्थमर्थो विभुताविशेषः पुत्रादितोषः पुरुषस्य नूनम् ॥ २॥

जब बृहस्पतिकी दशाका प्रवेश होताहै तब वो पुरुष राजमन्त्रीसे मनोरथ पाने वाला, सत्कर्म धर्म आगमशास्त्रोंका जाननेवाला और सब समय नम्र होताहै ॥१॥ यज्ञादि कर्म करनेमें आदर रखनेवाला, ब्राह्मण और वेदकी भक्तिमें प्रवृत्ति युक्त, अत्यन्त धनवान, वैभवयुक्त और पुत्रादिकोंसे परितोष पानेवाला होता है ॥ २ ॥

भूम्यम्बराश्वादिसुखोपलब्धिर्बलोपपन्नः कुलधुर्यता च ॥
गतागतागामिविचारणोच्चैः सत्संगतिश्चारुमतिर्धृतिश्च ॥३॥
दाहादिपीडापि गले कदाचिद्विरुद्धभावस्थितितो विचिन्त्यम् ॥
सामान्यमेतत्फलमुक्तमार्यैर्वक्ष्येऽधुना यत्प्रतिराशिसूक्तम् ॥ ॥ ४॥

पृथिवी वस्त्र घोड़े इनसे आदिलेकर अनेक सुखोंकी प्राप्तिसे युक्त, बड़ा बलवान्, अपने कुलमें प्रधान; अगाड़ी पिछाड़ीकी बातका विचार रखनेवाला, सत्संग करनेवाला, पवित्र जिसकी बुद्धि और धैर्ययुक्त होता है ॥३॥ कभी जलनेसे गलेमें पीड़ा युक्त होताहै ये सब बातें विरुद्ध भावकी स्थितिसे विचारनी चाहिये, वृद्ध पुरुषों ने ये सब फल कहे हैं अब एक एक राशिका फल कहता हूं ॥ ४ ॥

दशाप्रवेशे त्रिदशार्चितस्य मेषोपयातस्य भवेन्नराणाम् ॥
धनं धनेशाद्बहुनायकत्वं कलत्रपुत्रादिसुखोपलब्धिः ॥ ५ ॥
वृषोपयातस्य च गीष्पतेः स्याद्दशाप्रवेशे पुरुषोतिदुःखी ॥
विदेशवासी बहुसाहसश्च वित्ताल्पतावित्तगतोत्सवश्च ॥ ६ ॥

बृहस्पतिमेषराशिकाहोकर बैठा होवे उसकी दशाका जब प्रवेश होता है तब मनुष्यको अनेक तरहसे धन मिलता है और अनेक पुरुषोंका स्वामी होता है और स्त्री पुत्र आदिकोंसे सुख मिलताहै ॥५॥ जब जिसको बृषराशिमें स्थित बृहस्पतिकी दशा आती है तब वो मनुष्य अत्यन्त दुःखी, परदेशमें रहनेवाला, बड़ा साहसी, अल्प जिसका धन और उत्सवोंसे रहित होता है ॥ ६ ॥

युग्मोपयातस्य बृहस्पतेश्च दशाप्रवेशे पुरुषो शुचिः स्यात् ॥
मात्रा च गोत्रप्रभवैर्विरोधी कलत्रवादातिविषादतप्तः ॥७॥
वाचस्पतेरुच्चसमाश्रितस्य स्यात्पाककाले कुलराजलब्धिः ॥
विशिष्टनाम्ना प्रथितत्वमुच्चैरुच्चैश्च सख्यं बहुवैभवं च ॥८॥

जब मनुष्यको मिथुनराशिस्थ बृहस्पतिकी दशा आती है तब वो पुरुष अति पवित्रतासे रहनेवाला, माता से और गोत्रके पुरुषोंसे विरोध रखनेवाला स्त्रीके सङ्ग वाद और अत्यन्त विषादसे तापयुक्त होता है ॥७॥ जब जिस पुरुषके उच्चस्थान में स्थित गुरुकी दशा आतीहै तब वो मनुष्य आपके कुलके राज्यकी प्राप्तिवाला, विशिष्ट नामसे प्रसिद्धिवाला, बड़ेबड़े लोगोंसे स्नेहवाला और बहुत वैभववाला होताहै॥८॥

वाचांपतेरुच्चसमुत्थितस्य पाकप्रवेशे पितृमातृदुःखी ॥
पूर्वार्जितद्रव्यपरिक्षयेण तप्तश्च नानाव्यसनाभिभूतः ॥९॥
सिंहस्थितस्यामरपूजितस्य पाकप्रवेशे धनवान्वदान्यः ॥
नृपाप्तमानो ननु मानवः स्याज्जायातनूजानुजजातहर्षः ॥१०॥

जब मनुष्यको अपने उच्चपर स्थित वृहस्पतिकी दशा आतीहै तब पिता माता औंसे दुःखी, प्रथम कमायेहुए द्रव्यके क्षयसे संतप्त और अनेक संकटों से पराभूत होता है ॥९॥ जब सिंहराशिस्थ वृहस्पतिकी दशा आती है तब मनुष्य बड़ा धनवान्, सत्य बोलनेवाला, राजासे मान पानेवाला और स्त्री पत्रभाइयोंके हेतुसे आनंद भोगनेवाला होता है ॥ १० ॥

कन्याधिरूढस्य गुरोर्दशायां भवेन्मनुष्यो नृपलब्धमानः ॥
कान्तासुतावाप्तसुखः कदाचिच्छूद्रादिनीचैः कलहप्रसक्तः ॥११॥
तुलास्थदम्भोलिभृदीज्यपाके विवेकहीनः प्रमितान्नभोक्ता ॥
कलत्रपुत्रैः कृतशत्रुभावश्चोत्साहहीनो ननु मानवः स्यात् ॥१२॥

जब कन्याराशिस्थ गुरुकी दशा मनुष्यको आतीहै तबवो मनुष्य राजासे मान पानेवाला और स्त्रीपुत्र से सुखी होताहै परन्तु कभी शूद्रादि नीचोंसे कलह करनेवाला होताहै ॥११॥ जब तुलाराशिस्थ वृहस्पतिकी दशा आती है तबवो मनुष्य ज्ञानसे हीन, प्रमित अन्नका खानेवाला, कलत्र पुत्रोंसे शत्रुभाव रखनेवाला और उत्साह से रहित होता है ॥ १२ ॥

वृहस्पतेर्वृश्चिकराशिगस्य दशाप्रवेशे मतिमान्समर्थः ॥
प्राज्ञः सुतोत्साहयुतो विनीतोऽनृणीभवेन्ना नियमेन हीनः ॥१३॥
मूलत्रिकोणांशगतस्य पाके गुरोर्दशायां मतिमान्मनुष्यः ॥
स्यान्माण्डलीको यदि वा प्रधानःपित्रान्वितःस्त्रीवचनानुषक्तः॥१४

जब वृहस्पति वृश्चिकराशिका होवे उसकी दशा जब आतीहै तब वो मनुष्य बड़ा बुद्धिमान, समर्थ, पुत्रोत्साह से युक्त, बड़ा नम्र, ऋण से रहित और नियमसे हीन होता है ॥ १३ ॥ जब मूलत्रिकोणांशगत वृहस्पतिकी दशा होती है तब वो पुरुष बड़ा बुद्धिमान मांडलीक राजा अथवा राजाका मन्त्री, पिता से युक्त और स्त्रीके वचनमें आसक्त होता है ॥ १४ ॥

नवांशकेभ्यः परतश्च चापे संस्थस्य देवेन्द्रगुरोर्दशायाम् ॥
कृषिक्रियायज्ञचतुष्पदेषु भवेन्मनुष्यस्य मनःप्रवृत्तिः ॥ १५॥
नीचांशसंस्थस्य मृगान्वितस्य गुरोर्दशायां परकर्मकर्त्ता ॥
मर्त्यो भवेज्जाठरगुह्यरोगी सार्द्धं वियोगी धनबन्धुभिश्च ॥१६॥

धनके बीस अंश गये पर स्थित बृहस्पतिकी जब दशा होती है तब वो पुरुष खेती करनेमें, यज्ञ करनेमें और चौपाये पशुओंमें मनको रखनेवाला होताहै॥१५॥ नीचांशस्थ बृहस्पति की जब दशा होती है तब वो पुरुष औरोंके काम का करने वाला और पेटमें तथा गुह्येंद्रियमें रोगसे युक्त और धनसे तथा भाईबन्दों से वियोग युक्त होता है ॥ १६ ॥

वाचस्पतेर्नीचलवोर्जितस्य पाके निषादात्कृषितो धनाप्तिः ।
भूमीरुहेभ्यो धनवञ्चनाद्वा क्लेशोपलब्धिर्ननु मानवस्य ॥१७॥
पाकप्रवेशे कलशस्थितस्य वाचामधीशस्य नरः कलाज्ञः ।
विद्याप्रसादार्थमहामतिः स्यात्कान्ताविलासानुरतो नितान्तम्॥१८॥
झषोपयातस्य च गीष्पतेः स्याद्दशाप्रवेशे पुरुषो मनीषी ।
सन्मानसूनुप्रमदादिसम्पद्राजान्वयोपात्तमहासुखश्च ॥ १९ ॥

नीचांशसे निकलकर मकरराशिका बृहस्पति होवे उसकी दशामें उस मनुष्य को निषादजातिसे या खेतीसे धनकी प्राप्ति होतीहै और वृक्षों के लगाने से या अथवा धनके बंचनसे क्लेश की प्राप्ति होतीहै ॥१७॥ जब कुम्भराशिस्थ बृहस्पति की दशा आतीहै तब वो पुरुष अनेक कलाओं का जाननेवाला, विद्यासे प्रसन्न रहने वाला बड़ा बुद्धिमान और स्त्रीसे विलास करनेमें निरंतर प्रीति रखनेवाला होता है ॥१८॥ जब मीनराशिमें बृहस्पति स्थित होवे उसकी दशाके परिपाकमें पुरुष बड़ा बुद्धिमान् होताहै सन्मान पुत्र और स्त्री आदि अनेक संपत्तियों से युक्त और राजकुलसे उत्कृष्ट सुख पाने वाला होता है ॥

अथ शुक्रदशाफलानि ।

दैत्यामात्यः स्वीयपाके प्रवेशे योषाभूषारत्नवस्त्रोपलब्धिम् ॥
नानामानं मानवानां प्रकुर्यात्कन्दर्पस्याभ्युद्गमात्सौख्यमुच्चैः॥१॥
गीते नृत्येऽत्यन्तसंजातहर्षो विद्याभ्यासप्रीतिकृच्चारुशीलः ॥
बुद्ध्याधिक्यश्चान्नदानप्रवृत्तिर्दक्षो मर्त्यो विक्रये वा क्रये वा ॥ २॥

जब शुक्रकी दशा आतीहै और दशाकी परिपाक अवस्था होती है तब उस पुरुषको स्त्री भूषण रत्नवस्त्रोंकी प्राप्ति होतीहै और अनेक तरह से मानकी प्राप्ति

करताहै और कामदेव की वृद्धिसे अत्यन्त सुख होताहै ॥ १ ॥ वा मनुष्य गाने बजानेमें सदा प्रवृत्त रहताहै विद्याके अभ्यासमें प्रीति रखनेवाला, उत्तम जिसका स्वभाव, बुद्धि की अधिकतासे युक्त, अन्नदान में प्रवृत्ति रखनेवाला, बड़ा चतुर, बेचने खरीदने का काम रखनेवाला होताहै ॥ २ ॥

गोवाहनेभ्यो ननु नन्दनेभ्यः सौख्यं भवेन्नन्दननन्दनेभ्यः ॥
पूर्वार्जितस्य द्रविणस्य लब्धिः कलिः कुले स्याच्चलनात्स्थलाच्च॥
कफानिलाभ्यां किल निर्बलं स्यात् कलेवरं नोचतरैश्च वैरम् ॥
विप्रादिचिन्तापरितप्तमेवं चित्तं च सख्यं कुजनैः कदाचित्॥४॥

गौ वाहन (सवारी) से, पुत्रोंसे और पुत्रोंके पुत्रों से सुख होताहै और पूर्व सञ्चित धनकी प्राप्ति होतीहै और कुलमें चलने से और स्थल से कलह होता है ॥ ३ ॥ कफवायु से देहमें निर्वलता, अत्यन्त नीच मनुष्यों से वैर, ब्राह्मणादिकों की चिन्तासे चित्तमें ताप और दुष्ट मनुष्योंसे कभी मित्रता ए सब फल होतेहैं ।४।

सामान्यतः प्रोक्तमिदं सितस्य दशाफलं पूर्वमुनिप्रणीतम् ॥
अथोच्यतेऽत्र प्रतिराशिजातं फलं प्रयोज्यं बलतारतम्यात्॥ ५ ॥
शुक्रस्य पाके क्रियसंस्थितस्य स्त्रीवित्तसौख्यापचयो नराणाम् ॥
सदाटनत्वं व्यसनानि नूनमुद्वेगता चञ्चलचित्तवृत्तिः ॥ ६ ॥

पूर्वाचार्योंका कहाहुआ शुक्रका ये फल मैंने सामान्यरीतिसे कहाहै अबआगाड़ी शुक्रका राशिराशि के अनुसार दशाओं का पृथक् पृथक् फल बलके तारतम्यसे कहता हूँ ॥ ५ ॥ जब मेषराशिपर स्थित शुक्रकी दशा की परिपाकावस्था आतीहै तब मनुष्योंको स्त्री पुत्र धनके सुखका नाश होताहै और सब समय भ्रमण करना और अनेक तरह के व्यसन और उद्वेगता और चञ्चल युक्त चित्तवृत्ति इन सब बातों से युक्त होताहै ॥ ६ ॥

वृषोपयातोशनसो दशायां कृषिक्रियासत्पशुसौख्यवृद्धिः ॥
शास्त्रे मतिः स्यात्सुतरां विचित्रा दातृत्वकन्याजननप्रमादाः ॥७॥
युग्मगामिभृगुजस्य दशायां मानुषो भवति काव्यकलाज्ञः ॥
हास्यविस्मयकथारुचिरुच्चैरन्यदेशगमनोत्सुकचित्तः ॥ ८ ॥

वृषराशिमें शुक्र होवे उसकी दशा जब होवे तब उस मनुष्यको उत्तम खेती करनेमें उत्तम पशुओंके द्वारसे सुखकी वृद्धि होतीहै और शास्त्रमें बुद्धि होतीहै और अतिशय करके देनेकी सामर्थ्य कन्याकी उत्पत्ति और प्रसन्नता होती है ॥ ७ ॥ मिथुनराशिस्थ शुक्रकी दशामें मनुष्य काव्यकलाओं का जाननेवाला होताहै और वो मनुष्य हास्यविस्मय कथाओंमें रुचि रखनेवाला होताहै और सब समय अन्य-देशके जानेमें रुचि रखने वाला होताहै ॥ ८ ॥

कर्कोपयातस्य सितस्य पाके भवेन्मनुष्यो निजकार्यदक्षः ॥
भार्यान्तरावाप्तिसमुत्सुकोपि नानाप्रकारोद्यमकृत्कृतज्ञः ॥ ९ ॥
दैत्येन्द्रवन्द्यस्य मृगेन्द्रगस्य पाकप्रवेशे वनिताप्तवित्तः ॥
नूनं भवेदन्यधनोपजीवी पश्वादिपुत्राल्पसुखो मनुष्यः ॥ १० ॥

कर्कराशिपर स्थित शुक्रकी दशा में मनुष्य अपने काम करने में चतुर होता है और दूसरी भार्याकी प्राप्ति में उत्कण्ठित और नानाप्रकार के उद्यमोंका करने वाला और करे उपकारका जाननेवाला होताहै ॥ ९ ॥ सिंहराशि पर स्थित शुक्र की दशामें मनुष्यको स्त्रीसे धनकी प्राप्ति होतीहै और अन्यधनसे देहनिर्वाह करने वाला और पशुपुत्रादिकोंके अल्प सुखसे युक्त मनुष्य होताहै ॥ १० ॥

पाके भवेद्दानववन्दितस्य कन्यास्थितस्यापचयः सुखानाम् ॥
वित्ताल्पता भग्नमनोरथत्वं लोलं मनः स्वस्थलतश्चलत्वम् ॥ ११ ॥
तुलाधरस्थासुरपूजितस्य दशाप्रवेशे कृषिकृन्मनुष्यः ॥
विशिष्टमानोधनवाहनाढ्यः स्वज्ञातिसंप्राप्तमहासुखः स्यात् ॥ १२ ॥

कन्याराशि पर स्थित शुक्रकी दशामें सुखोंका नाश होताहै, धनकी अल्पता होतीहै और मनके विचारे मनोरथोंका नाश होताहै, चञ्चल मन और अपने स्थान से अन्यत्र गमन होताहै ॥ ११ ॥ जब तुलाराशि पर स्थित शुक्रकी दशा आतीहै तब मनुष्य खेती करनेवाला, उत्कृष्ट सन्मान पानेवाला, धनवाहनसे परिपूर्ण और और अपनी ज्ञातिसे महत्सुख पानेवाला होताहै ॥ १२ ॥

भवेद्भृगोर्वृश्चिकराशिगस्य दशाप्रवेशे पुरुषः प्रवासी ॥
परस्य कार्ये निरतः प्रतापी ऋणार्थयुक्तः कलहानुरक्तः ॥ १३ ॥

चापोपयातासुरपूजितस्य पाके प्रकामं नृपतेः प्रतिष्ठा ॥
कलाकलापाकलनं किल स्यात्क्लेशाधिकत्वं द्विषतां प्रवृद्धिः॥१४॥

वृश्चिक राशिपर स्थित शुक्रकी दशाकी परिपाक अवस्था होती है तब वो मनुष्य परदेशका रहनेवाला होता है और औरोंके काम करनेमें निरत होताहै और बड़ा प्रतापी, ऋणधनसे युक्त और निरन्तर कलह करनेवाला होताहै ॥१३॥ जब धन राशिस्थ शुक्रकी परिपाक अवस्था आती है तब वो पुरुष राजासे प्रतिष्ठा पाताहै और अनेक कलाओंका जाननेवाला और क्लेशाधिक्यसे युक्त होताहै और शत्रुजनोंकी वृद्धिसे युक्त वो मनुष्य होता है ॥ १४ ॥

नक्रस्थशुक्रस्य दशाप्रवेशे स्यात्पूरुषः शत्रुविनाशदक्षः ॥
श्लेष्मानिलाभ्यां विबलः कदाचित्कुटुम्बचिंतासहितः सहिष्णुः॥
उशनशः कलशास्थितिकारिणो यदि दशापुरुषो व्यसनाकुलः ॥
गदयुतो वियुतः शुभकर्मणा व्रतहतोप्यनृतोक्तिरतो भवेत् ॥१६॥

मकर राशिस्थ शुक्रकी दशाकी परिपाक अवस्था जब होती है तब वो पुरुष शत्रुनाश करनेमें कुशल होताहै और कफ वायुकी वृद्धि से उत्पन्न हुए रोग से निर्बलांग, कुटुम्बकी चिंतासे युक्त और बड़ा सहनशील होताहै॥१५॥कुम्भ राशि पर वर्तमान होनेवाले शुक्रकी जब दशा आतीहै तब वो पुरुष अनेक प्रकारके व्यसनोंसे आकुल,रोगोंसे युक्त,शुभ कर्मकरनेसे रहित,व्रतोंसे हीन और झूठ बोलनेमें मन रखनेवाला होता है॥ १६ ॥

दशाप्रवेशे भृगुनन्दनस्य मीनादिसंस्थस्यःनृपप्रधानः ॥
स्यान्मानवोऽत्यन्तधनप्रसन्नः कृषिक्रियाभोगभरोपपन्नः ॥१७॥
स्वोच्चांशभाजो भृगुजस्य पाके विलग्नकर्मोपगतस्य मर्त्यः ॥
क्षोणीहिरण्योत्तमवारणाद्यैर्युतो भवेद्वा निजवंशनाथः॥ १८ ॥

मीन राशिपर स्थित शुक्रका जब दशा आती है तब पुरुष राजाका मंत्री होताहै और अत्यन्त धनप्राप्तिसे प्रसन्न और खेती करनेके कामसे प्राप्त हुए भोगोंसे सम्पन्न होता है ॥१७॥अपने पूर्ण उच्चांशोंपर स्थित हुए शुक्रकी जब दशा होतीहै और कदाचित् वो कहीं लग्नमें या दशम घरमें बैठा होवे तब भूमी सुवर्ण हाथी आदिकोंके सुखसे युक्त अपने कुलका नाथ होताहै ॥१८॥ इति शुक्रदशाफलानि॥

अथ शनिदशाफलानि ।

भवेद्दशायां हि शनैश्चरस्य नरः पुरग्रामकृताधिकारः ॥
धीमांश्च दानाधिकतातिशाली नानाकलाकौशलसंयुतश्च ॥१॥
तुरंगहेमाम्बरकुञ्जराद्यैः संपन्नतां याति विनीततां च ।
देवद्विजार्चाभिरतोविशेषात्पुरातनस्थानकलब्धसौख्यः ॥२॥

यदि शनैश्चर कहीं मनुष्यके योगकारकहोकर बैठा होवे तब उसकी दशा के प्रवेशमें पुरुष नगर ग्रामका अधिकार करनेवाला होताहै और बड़ा बुद्धिमान,दानका अधिकारवाला और नाना प्रकार कलाकौशलसे युक्त होता है ॥ १ ॥ घोड़े सुवर्ण वस्त्रहाथी आदिकोंसे युक्त, बड़ा नम्र, देव ब्राह्मणोंकी पूजा करनेमें अभिरत और किसी पुरातनस्थानकी तरफसे सुख पानेवाला वो पुरुष होता है ॥ २ ॥

देवद्विजेन्द्रालयकृत्सुशीलो विशालकीर्तिः स्वकुलावतंसः ॥
आलस्यनिद्राकफवातपित्तजानांगनादद्रुविचर्चिकार्तः ॥३॥
सामान्यमेतत्फलमुक्तमत्र शनेर्दशायां गदितं हि पूर्वैः ॥
अथाभिधास्ये प्रतिराशिजाते फलं सुधीभिर्बलतो विचिन्त्यम् ॥४॥

देवता और ब्राह्मणोंके स्थानोंका बनानेवाला, सुशील, विशाल जिसकी कीर्ति अपने कुलका मुकुटमणि होता है और आलस्य निद्रा कफ वातपित्तसे उत्पन्न हुए अनेक अङ्गरोगोंसे युक्त और दाद विचर्चिका (खुजलीफुंसी) से आर्त होताहै ॥ ३ ॥ ये हमने सामान्यसे शनिदशाका फल कहाहै अब अगाड़ी हर एक राशिस्थ शनिदशाओंके पृथक् फल कहता हूं वे फल बुद्धिमानोंको बलाबल देखकर विचार करने चाहिये ॥ ४ ॥

मेषोपयातस्य शनैश्चरस्य दशाप्रवेशे पुरुषो विशेषात् ॥
क्लेशाभिभूतः पतनाप्तदुःखो विचर्चिकाद्यामयत कृशांगः ॥५॥
वृषोपयातस्य दिनेशसूनोः पाकप्रवेशे मतिमान्मनुष्यः ॥
नरेन्द्रसन्मानविराजमानः संग्रामसंप्राप्तयशोविशेषः ॥ ६ ॥

मेषराशिपर प्राप्त हुए शनिकी जिसको दशा होवे वह पुरुष अनेक क्लेशों से व्याप्त,ऊपरसे गिरनेसे दुःख पानेवाला और संग्राममें यश पानेवाला होताहै॥५॥वृष

राशि को प्राप्त हुए शनिकी दशा जब किसी मनुष्यको आतीहै तब वो पुरुष बड़ा बुद्धिमान् और राजासे मिले सन्मानसे विराजमान और संग्राममें यशोविशेष का पाने वाला होता है ॥ ६ ॥

शनेर्दशायां मिथुनाश्रितस्य नरो भवेच्चारुविलासशीलः ॥
चोराच्च दारादिजनाद्धनाप्तीरणप्रसङ्गाच्च परोपकारी ॥ ७ ॥
कर्कस्थितार्कात्मजपाककाले लोलं मनः पुत्रकलत्रमित्रैः ॥
श्रोत्रे च नेत्रे परिपीडनं स्यात्कलेवरं निर्बलतां प्रयाति ॥८॥

मिथुन राशिपर वर्तमान शनिकी दशा जब पुरुषको आती है तब वो पुरुष उत्तम विलास करनेवाला होता है और चोरसे और स्त्रीसे उस पुरुषको धनकी प्राप्ति होती है और संग्रामसे भी वो मनुष्य लूटकर धनको लाताहै और परोपकार का करने वाला होता है ॥७॥ कर्कराशिपर स्थित शनिकी जिस पुरुषको दशा वर्त्तमान होती है वो पुरुष पुत्र स्त्री मित्रों के हेतुसे चंचल मनसे युक्त होताहै और उस मनुष्यके कानोंमें और आंखोंमें पीड़ा होतीहै और उस पुरुषका देह निर्बलता को प्राप्त होता है ॥ ८ ॥

पञ्चाननस्थस्य शनेर्दशायां बाधा भवेद्वै विविधा नराणाम् ॥
दारात्मजाद्यैः कलहप्रसङ्गस्तुरंगगोदासजनेष्वसौख्यम् ॥ ९ ॥
कन्योपयातस्य शनेर्दशायां भवेत्क्रमेण द्रविणोपलब्धिः ॥
जलाच्च भूमीरुहतस्तथोच्चप्रदेशतश्चापि महाप्रमोदः ॥ १० ॥

सिंह राशिपर स्थित शनिकी दशा जब आती है तब उन पुरुषोंको अनेक तरहकी बाधा होती है और दारा पुत्रादिकोंसे सबसे सब समय कलह होताहै और घोड़ा गऊ और दासजनोंसे सुख नहीं मिलता है ॥ ९ ॥ कन्याराशिमें प्राप्त हुए शनि की दशा आती है तब क्रमकरके धनकी उपलब्धि होतीहै और जलसे और वृक्षसे और उच्चस्थानसे महान आनन्द होता है ॥ १० ॥

काले दशायां नलिनीशसूनोस्तुलागतस्योत्तमराज्यलक्ष्मीः ॥
गजाश्वहेमाम्बररत्नपूर्णा भवेन्नराणां करुणाधिकत्वम् ॥ ११ ॥
सरीसृपस्थस्य शनैश्चरस्य पाके नरः साहसकर्मयुक्तः ॥

वृथाटनो वै कृपणोऽनृतश्च नीचानुरक्तश्च दयाविहीनः॥१२॥

शनि तुलाराशिका होवे उसकी दशाकी जब परिपाक अवस्था होतीहै तब उस मनुष्यको राज्यलक्ष्मीकी प्राप्ति होतीहै और गज अश्व सुवर्ण वस्त्र और रत्न इनसे पूर्ण मनुष्य होताहै और वो मनुष्य अधिक दयायुक्त होताहै ॥११॥ जब वृश्चिक राशिस्थ शनिकी दशा मनुष्यको होती है तब वो पुरुष साहस कर्म करनेवाला, निरर्थक भ्रमण करनेवाला, बड़ा कृपण, झूठ बोलनेवाला, नीचोंसे स्नेह करने वाला और बड़ा निर्दया होताहै॥ १२ ॥

धनुर्धरस्थस्य शनैश्चरस्य पाके नरः स्यात्सचिवो नृपाणाम् ॥
संग्रामधीरश्चतुरङ्घ्रियुक्तः कान्तासुतानन्दविनोदयुक्तः ॥१३॥

शनेर्दशायां मकराश्रितस्य बहुश्रमोत्पन्नधनं नराणाम् ॥
नपुंसकस्त्रीजनसेवनत्वं विश्वासघातेन धनक्षतिश्च ॥ १४ ॥

जब धनराशिस्थ शनिका परिपाक अवस्था आतीहै तब वो पुरुष राजमन्त्री होता है और संग्राम करनेमें बड़ा धीर और चार अंगुलियोंसे युक्त और स्त्री पुत्रानन्द विनोद से संयुक्त होताहै ॥१३॥ शनि मकर राशिका होवे उसकी दशा में मनुष्यों को बड़े श्रमसे धन मिलता है और नपुंसकका और स्त्रीजनोंका सेवन करनेवाला वो पुरुष होताहै और विश्वासघात से उसके धनका नाश होताहै॥१४

शनेर्दशायां कलशाश्रितस्य सुखानि नूनं महती प्रतिष्ठा ॥
श्रेष्ठत्वमुच्चैः स्वकुले नरस्य कृषिक्रियापुत्रधनादिलब्धिः ॥१५॥
भवेद्दशायां ननु भानुसूनोर्मीनोपयातस्य च मानवस्य ॥
नाना पुरग्रामधनाङ्गनाभ्यः सुखं तथोत्साहविहीनता च ॥१६॥

कुम्भराशिमें बैठे हुये शनिकी दशा जब जिस पुरुषको आतीहै तब उस मनुष्यको अवश्यही धनकी प्राप्तिहोतीहै और अवश्यउसको बड़ीभारी प्रतिष्ठा मिलती है और अपने कुलमें श्रेष्ठताकी प्राप्ति होतीहै और खेती करना पुत्र धन इन वस्तुओं की उस मनुष्य को प्राप्ति होतीहै ॥ १५ ॥ मीनराशिपर स्थित शनिकी दशामें पुरुष को नानापुर ग्राम धन और स्त्रीसे सुखकी प्राप्ति होतीहै और वो पुरुष निरुत्साह होताहै अर्थात् उस मनुष्यका किसी काम करनेमें उत्साह नहीं होताहै ॥१६

इतिजातकाभरणे भाषानवोद्दितायां मार्जन्यां टीकायां वनमालिचतुर्वेदकृतायां रव्यादि दशाफलवर्णनंनाम एकत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३१ ॥

अथ महादशाफलाध्यायः ।

दशादृक्काणैश्च तनोः क्रमेण स्यादुत्तमा मध्यतमाधमा च ॥
स्थिरे च कष्टा शुभदा च मध्या मिश्रेऽधमा मध्यतमोत्तमा च ॥१॥
शुभानि मध्यानि च निन्दितानि फलानि लग्नेशदशोदितानि॥
तान्येव कल्प्यानि सुधीभिरत्र बलानुमानात्तनुनायकस्य ॥२॥

लग्नकी दशाका फल द्रेष्काणोंसे क्रमसे उत्तम, मध्यम और अधम कहना चाहिये जैसे चरराशि यदि लग्नगत राशिचर होवे तब तौ प्रथम द्रेष्काणका उत्तम फल, द्वितीय द्रेष्काणका मध्यम फल और तृतीय द्रेष्काणका अधम होता है और यदि लग्नगत राशि स्थित होवे तव प्रथम द्रेष्काणका फल कष्टप्रद और द्वितीय शुभ फल और तृतीय द्रेष्काणका मध्यम (सम) फल होताहै और यदि लग्नगत राशि द्विःस्वभाव होवे तव प्रथम द्रेष्काणका समफल और द्वितीय द्रेष्काणका मिश्रितफल और तृतीय द्रेष्काणका उत्तम फल होताहै ऐसा ज्योतिर्विदोंने निश्चय कियाहै॥१॥लग्नेशकी दशाके जे शुभ फल मध्यमफल और निंदितफल कहे हैं वे लग्नेशके फलके अनुसारसे बुद्धिमानोंको कहने चाहिये, यदि लग्नेश पूर्ण बली होवे तव उत्तम फल और लग्नेश मध्यम बली होवे तौ मध्यमफल और लग्नेश हीनबल होवे तो निंदित फल कहना चाहिये ॥ २॥

संशालते यः किल दिग्बलेन खेटः स्वकाष्ठां पुरुषं च नीत्वा ॥
महाप्रतिष्ठां कुरुते दशायां नानाधनाभ्यागमनानि नूनम् ॥३॥
विलोमगामिग्रहपाककाले स्थानार्थसौख्यान्यतिचञ्चलानि ॥
प्रवासशीलत्वमतीव जन्तोर्लोके महत्त्वापचयत्वमेव ॥४॥

जो ग्रह दिग्बलसे पुरुषको अपनी दिशाको प्राप्तकरके सुशोभित होता है वो ग्रह अपनी दिशासे उस पुरुषको महती प्रतिष्ठाको प्राप्त कराताहै और उसी दिशासे उस पुरुषको अनेक प्रकारसे अनेक तरहके धनकी प्राप्ति अवश्यही करातांहै॥३॥ जो ग्रह वक्री होकर चलनेवाला है उसकी दशाकी जब पाकावस्था आतीहै तब जो स्थान धन सुख आदि होते हैं वे अति चञ्चल होते हैं और परदेशके रहने में रुचि रखनेवाला वो पुरुष होता है और लोकमें महत्वकी हानि होती है ॥४॥

ऋजुप्रयातद्युचरस्य पाके सन्मानसौख्यार्थयशःप्रवृद्धिः ।
षष्ठाष्टमद्वादशवर्जितस्य ग्रहस्य पाकेऽभिमतार्थसिद्धिः ॥५॥

नीचारिभस्थस्य च वक्रिणो वा पाके कुकर्माभिरतिर्मनुष्यः ॥
विदेशवासी निजबन्धुवर्गैस्त्यक्तो भवेदाग्रहताभियुक्तः ॥ ६ ॥

जब मार्गी ग्रहकी दशाकी पाकावस्था आती है तब उस पुरुषको सन्मान सौख्य अर्थ और यश इन सबोंकी बृद्धि होती है और षष्ठेशअष्टमेश और व्ययेश इनको छोड़कर लग्नपंचमेशादि ग्रहोंकी दशापरिपाकमें वांछितार्थकी सिद्धि होती है ॥५॥ नीचका ग्रह या शत्रुक्षेत्री ग्रह या बक्री ग्रहकी दशाके परिपाक में मनुष्य कुकर्ममें प्रीति रखनेवाला होताहै और सब समय परदेशका रहनेवाला, भाई बन्दों ने जिसको त्याग दिया और बड़ा आग्रही होता है ॥६॥

स्वर्भानुयुक्तस्य च खेचरस्य दशावरिष्ठाप्यतिरिष्टदा स्यात ॥
पाकावसाने ननु मानवानां दुःखानि हानिश्च विदेशयानम् ॥७॥
जननराशिजनुस्तनुनाथयोरिपुदशासमये मतिविभ्रमः ॥
भयमरेरपि राज्यपरिच्युतिः खलजनैः कलहो बलहीनता ॥८॥

राहुसे युक्त जो ग्रह है उसकी यदि उत्तमभी दशा होवे तबभी अत्यन्त अरिष्ट देनेवाली होतीहै राहुयुक्त ग्रहकी दशा पाकमें पुरुषको अवश्य दुःख, हानि और विदेशयात्रा होतीहै॥७॥ जन्मराशि और जन्मलग्न इनके स्वामीकी दशामें पुरुषकी बुद्धि में भ्रम होजाता है और शत्रुसे भय, स्थानसे भ्रष्ट होना, दुष्ट पुरुषोंसे कलह और बलकी हीनता ए सब बातें होती है ॥ ८ ॥

लग्नेश्वरस्याष्टमभावगस्य भवेद्दशायामतिपीडनं हि ॥
दशावसानेऽपि च मानवानां भवेत्समाप्तिः खलु जीवितस्य ॥९॥
क्रूराख्यखेटस्य दशान्तराले क्रूरग्रहस्यान्तरजा दशा चेत ॥
शत्रूद्गमोऽर्थस्य परिक्षयः स्यादायुःक्षयो वेति वदेन्नराणाम् ॥१०॥

जो लग्नेशग्रह होवे और यदि वो अष्टम घरमें बैठा होवे उसकी दशामें अत्यन्त पीड़ा होतीहै और उक्त लक्षण युत ग्रहकी दशाके बीततेबीतते उस पुरुषका जीवन समाप्ति होजाता है ॥९॥ क्रूर ग्रहकी महादशा होवे उस दशा में यदि क्रूर ग्रहकीही यदि अंतरदशा आजावे तब उस पुरुषको शत्रुओंकी उत्पत्ति, धनका नाश होता है अथवा आयुष्यकाही क्षय (मरण) होजाता है ॥ १० ॥

दशाप्रवेशेऽपि खगाः सलग्ना
कार्याः स्फुटास्तत्र दशापतिश्चेत्
लग्न १ त्रि ३ खा १० या ११ रि ६ गतोऽथ लग्ने
तन्मित्रवर्गः शुभदा दशा सा ॥ ११ ॥
श्रेष्ठा प्रदिष्टेष्टफलाधिकस्य दुष्टा दशा कष्टफलाधिकस्य ॥
यस्येष्टदृष्टे भवतः सामने फलं विमिश्रं किल तस्य पाके ॥१२॥
दशाप्रवेशे खचरः स्वतुङ्गे मूलत्रिकोणे यदि वा स्वगेहे ॥
शुभेष्टवर्गस्थितिकृच्छुभैर्दृष्टे दशारिष्टहरोभवेत्सः ॥ १३ ॥

दशाके प्रवेश हुएपरभी लग्नसहित ग्रह स्पष्ट करने चाहिये उस स्पष्टकरण में यदि दशापतिग्रह लग्न तृतीय दशम एकादश और षष्ठ इन घरोंमेंसे किसी घरमें प्राप्त होवे और लग्नमें दशापतिग्रहके मित्रका षड्वर्ग आजावै तबभी वो दशा शुभ फल देनेवाली होतीहै ॥ ११ ॥ जिस ग्रहका इष्टफल अधिक होताहै उस ग्रहकी दशा (श्रेष्ठ उत्तम फल देनेवाली) होतीहै और जिस ग्रहका कष्ट फल अधिक होता है उस ग्रहकी दशा कष्टफल देनेवाली होतीहै और जिस ग्रहके इष्टफल कष्टफल दोनों तुल्य होतेहैं उस ग्रहकी दशाकी परिपाक अवस्थामें मिश्रित (शुभाशुभ) फल होताहै॥१२॥ दशाके प्रवेशसमयमें यदि ग्रह अपने उच्चका होवे या मूलत्रिकोणका होवे या स्वग्रही होवे और शुभग्रहके अष्टवर्गमें बैठा होवे और शुभग्रहही उसे देखते होवे तौ वो ग्रह भलेई अशुभ होवे परन्तु शुभफलका देनेवाला होता है ॥ १३ ॥

इति जातकाभरणे मार्जन्या टीकायां महादशाफलकथनंनाम द्वात्रिंसोध्यायः ॥१२॥

अथांतर्दशाफलाध्यायः ॥

अथ प्रवेशे खलु खेचराणामन्तर्दशासूक्ष्मफलप्रसिद्ध्यै ॥
विचारपूर्वं सदसत्प्रकल्प्यंफलं सुधीभिर्विधिनोदितेन ॥ १ ॥
अन्तर्दशा चेदशुभग्रहाणामेकर्क्षगानां कुरुते सदैव ॥
गदं विवादं रिपुभूपभीतिं दैन्यं धनस्यापचयं विशेषात् ॥ २ ॥

अब हम सूक्ष्मफलकी प्रसिद्धि के अर्थ ग्रहोंके अन्तर्दशाका प्रवेशफल कहतेहैं वो बुद्धिमान पुरुषोंको विधिके कहेके अनुसार विचार करके सत् असत्फल कल्पना

करना चाहिये ॥१ ॥ यदि अशुभ ग्रहोंकी दशा होवे और महादशाका स्वामी ग्रह और अन्तर्दशाका स्वामी ग्रह दोनों वे ग्रह एकही घरमें बैठे होवे तब उस मनुष्यके अर्थ रोग विवाद शत्रुभय राजभय दीनता और विशेषकरके धनका नाश करताहै॥२

अन्तर्दशायां मदनास्थितस्य खेचारिणः स्यान्मरणं गृहिण्याः ॥
रोग कुभोगः कलहादिभङ्गः सङ्गश्च निन्द्यैर्हरणं धनस्य ॥ ३ ॥
खेचारिणानष्टमभावगानामन्तर्दशा संजनयेदरिष्टम् ॥
धनस्य नाशं व्यसनानि पुंसां षष्ठोपगस्यापि गदप्रवृद्धिम् ॥ ४ ॥
त्रिकोणमेषूरणवेश्मगानामन्तर्दशासौख्यमतीव नित्यम् ॥
करोति लाभं त्रिविधं नराणामारोग्यतामानसमुन्नतिं च ॥ ५ ॥

यदि अन्तर्दशाका स्वामी ग्रह महादशाके स्वामी ग्रहसे सप्तम घरमें बैठा होवे अथवा सप्तम घरमें बैठनेवाले ग्रहकी अन्तर्दशा आजावे तब उस पुरुषकी पत्नी का मरण होजाताहै और रोग, कुत्सित भोग, कलह, भङ्ग, निंदित मनुष्यों से सङ्ग और धनका हरण ए सब फल होतेहैं ॥ ३ ॥ अष्टम भावमें प्राप्त होनेवाले ग्रहों की अन्तर्दशा अरिष्ट देनेवाली, धनका नाश करनेवाली और अनेक तरहके व्यसनोंको देनेवाली होतीहै और षष्ठ घरमें बैठे ग्रहकी अन्तर्दशामें भी रोगकी वृद्धि होतीहै ॥ ४ ॥ नवम पञ्चम दशम घरमें बैठे ग्रहकी अन्तर्दशा जब होती है तब नित्यही अत्यन्त सुख देनेवाली होतीहै और मनुष्योंको अनेक तरहका लाभ करती और आरोग्यता और मानसमुन्नतिको करती है ॥ ५ ॥

अथ सूर्यांतर्दशाफलानि ।

करोति चन्द्रस्तरणेर्दशायां सुवर्णभूषाम्बरविद्रुमाप्तिम् ॥
समुन्नतिं मानसुखाभिवृद्धिं विरोधिवर्गापचयं जयं च ॥ १ ॥
पङ्केरुहेशस्य चरन्विपाके कुर्यान्मृगाङ्को यदि लाभमुच्चैः ॥
प्रमादमङ्ग्यो ग्रहणीं च पाण्डुं केषांचिदेतन्मतमत्र चोक्तम् ॥ २ ॥

सूर्यकी महादशामें जब चन्द्रमाकी अन्तर्दशा होती है तब भूषणवस्त्र और विद्रुमणि (मूंगा) की प्राप्ति करताहै और समुन्नति मानसुखकी वृद्धि करताहै और शत्रुओंका नाश और जय करताहै ॥ १ ॥ कितनेक ज्योतिर्विदों का मत ऐसा

है कि सूर्यकी महादशामें जब चन्द्रमा आताहै तब मतपुरुषों के द्वारा लाभ कराता है और ग्रहणी रोग और पांडुरोग को करता है ॥ २ ॥

सत्प्रवालकलधौतसुचेलं मंगलानि विजयं च विधत्ते ॥
मंगलः कमलिनीशदशायां भूमिपालकुलतः किल पुंसः ॥३॥
विचर्चिकादद्रुविकारपूर्वैः पामामयैर्देहनिपीडनं स्यात् ॥
धनव्ययश्चापि हतोत्सवश्च विधोः सुत भानुदशां प्रयाते । ४ ॥

जब सूर्यकी महादशामें मङ्गल की अन्तर्दशा आतीहै तब उत्कृष्ट मूंगा सुवर्ण उत्तम वस्त्र अनेक मङ्गल और विजय इन सब वस्तुओंको राजाके द्वारा देताहै॥३॥ जब सूर्य की अन्तर्दशामें बुध आता है तब विचर्चिका (फुंसी खुजली) दादखुजली आदि रोगोंसे देहको पीड़ादेताहै और धनका व्यय उत्सवोंका अभाव करताहै॥४॥

सद्वस्त्रधान्यादिषु संग्रहेच्छा स्वच्छा मतिर्विप्रसुरार्चनेषु ॥
भूपाप्तसंमानधनानि नूनं भानोर्दशायां चरतीन्द्रवन्द्ये ॥ ५ ॥
विदेशयानं कलहाकुलत्वं शूलं च मौलिस्थतकर्णपीडाम् ॥
गाढज्वरं चापि करोति नित्यं दैत्यार्चितोभानुदशां प्रयातः॥६॥
नीचारिभूमीपतिभीतिरुग्भिः कण्डूयनाद्यामयसंभवः स्यात् ॥
मित्राण्यमित्राणि भवन्ति नूनं शनैश्चरे भानुदशान्तरस्थे ॥७॥

जब सूर्यकी महादशामें बृहस्पतिकी अन्तर्दशा आतीहै तब उत्तम वस्त्र धान्यादिक का संग्रह करनेमें इच्छा होती है, निर्मल बुद्धि, देवता ब्राह्मणों के पूजन में रुचि भूषणप्रिय पुरुषों से मान और धनकी अवश्यही प्राप्ति करताहै ॥५॥ जब सूर्यकी महादशा के भीतर शुक्र की अन्तर्दशा आतीहै तब परदेशको यात्रा, नित्य कलह मस्तक में शूल, कानमें पीड़ा और नित्य गाढज्वर इन सब बातोंको करताहै॥६॥ सूर्यकी महा दशाके भीतर शनिकी अन्तर्दशा आती है तब नीच पुरुष शत्रु और राजा से भय, खुजली आदि रोगों की उत्पत्ति, और मित्रभी शत्रु होजाते हैं॥६॥ इति सूर्यांतरदशाफलानि ॥

अथ चंद्रांतर्दशाफलानि ।

नरेश्वराद्गौरवमर्थलाभं क्षयामयार्तिप्रकृतेर्विकारम् ॥
चोराग्निवैरिप्रभवां च भीतिं शीतांशुपाके कुरुते दिनेशः॥१॥

कोशभ्रंशं रक्तपित्तादिदोषं रोषोत्पत्तिं स्थानतः प्रच्युतिं च ॥
कुर्यात्पीडां मातृपित्रादिवर्गैर्भूमीसूनुर्यामिनीनाथपाके ॥

जब चन्द्रमा की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा आती है तब पुरुषोंको राजा की तरफ से मान, धनका लाभ, क्षय रोग की पीड़ा, प्रकृतिका विकार और चोर से अग्निसे भय करता है ॥ १ ॥ जब चन्द्रकी महादशा में मङ्गलकी अन्तर्दशा आती है तब खजानेका नाश, रक्तपित्तादिक दोष, रोषकी उत्पत्ति, स्थानसे भ्रष्ट होना और माता पिता आदिकों से पीड़ा करता है ॥ २ ॥

उदारनामान्तरलब्धिमुच्चैर्लाभगोभूमिगजाश्ववृद्धिम् ॥
विद्याधनैश्वर्यसमुन्नतत्वं कुर्याद्बुधश्चन्द्रदशान्तराले ॥ ३ ॥
विशिष्टधर्मो धनधान्यभोगानन्दाभिवृद्धिर्गजवाजिसम्पत् ॥
पुत्रोत्सवश्चापि भवेन्नराणां गुरौ सुराणां शशिपाकसंस्थे ॥४॥

जब पुरुष को चन्द्रमाकी महादशा के भीतर बुधकी अन्तर्दशा होती है तब उस पुरुष को उदारनामांतर की प्राप्ति उत्कृष्ट गौ पृथ्वी हाथी घोड़ों की वृद्धि विद्या धन ऐश्वर्य की उन्नति करता है ॥२॥ जब चन्द्रमा की दशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा आतीहै तब विशिष्ट धर्म,धन धान्योंके भोग और आनन्दकी वृद्धि करता है और हाथी घोड़ों की संपत्ति, पुत्रोंके उत्सव उस पुरुष को होते हैं ॥ ४ ॥

नानाङ्गनाकेलिविलासशीलो जलोद्भवैर्धान्यधनैश्च युक्तः ॥
मुक्ताफलाद्याभरणैरपि स्यादिन्दोर्दशायां हि सिते मनुष्यः॥५॥
नरेन्द्रचाराहितवह्निभीति कलत्रपुत्रासुखरुक्प्रवृद्धिम् ॥
करोति नानाव्यसनानि पुंसां शनिर्निशानाथदशां प्रविष्टः॥६॥

जब चन्द्रमाकी महादशा के भीतर शुक्रकी अन्तर्दशा आतीहै तब पुरुष अनेक स्त्रियों से विहार करनेवाला जलसे उत्पन्न धान्यधनोंसे युक्त और मुक्ताफल (मोती) आदि आभूषणों से भी संयुक्त होताहै ॥५॥ जब जिस मनुष्यको चन्द्रमहादशाके भीतर शनिकी अन्तर्दशा आतीहै जब वोमनुष्य राजदूतसे शत्रुसे और अग्निसे भय युक्त होता है और उस पुरुष के कलत्रपुत्र को दुःख और रोग की वृद्धि होती है और भी अनेक तरहके दुःखोंको शनि करता है ॥ ६ ॥ इति चन्द्रांतर्दशाफलम् ॥

अथ भौमांतर्दशाफलानि ।

नानाधनाभ्यागमनानि नूनं सन्मानवृद्धिं मनुजाधिराजात ॥
चण्डत्वमाजौ विजयं विदध्याद्भानुर्धरासूनुदशान्तरस्थः ॥१॥
दुर्गशैलवनसंचलनेच्छा बन्धुतातजनितातिविरोध ॥
मानवो भवति भूतनयान्तभास्करे चरति केपि वदन्ति ॥२॥

जब मङ्गलकी महादशामें जिस पुरुषको सूर्यकी अन्तर्दशा आती है तब वो सूर्य उस पुरुषको राजासे अनेकतरहके धनोंका और सन्मानका लाभ कराताहै और संग्राम करने में चंडता और विजय करता है ॥ १ ॥ कोई मनुष्य ऐसा कहते हैं कि जब मङ्गलकी महादशाके भीतर सूर्यकी अन्तर्दशा आती है तब उस पुरुषकी दुर्ग पर्वत वनमें विचरनेकी इच्छा होतीहै और बन्धु पिता और मातासे विरोध करनेवाला वो पुरुष होता है ॥ २ ॥

नित्योत्सवानन्दमहापदानिमुक्ताफलद्रव्यविभूषणानि ॥
मित्रोद्गमं श्लेष्मविकारमिन्दुर्भौमस्य पाके विचरन्करोति ॥३॥
अरातिभूपामयतस्करेभ्यः पीड़ां वियोग सुतदारमित्रैः ॥
स्वल्पोत्सवं यच्छति चन्द्रसूनुर्भौमस्य पाके यदि सम्प्रविष्टः ॥४॥

जब मङ्गलकी महादशामें चन्द्रमाकी अन्तर्दशा आतीहै तब उस पुरुषको नित्य नवीन उत्सवोंको, आनन्दयुक्त महत्पदको, मोती द्रव्य आभूषणोंको, मित्रोंकी, उत्पत्तिको और कफजन्यविकारको चन्द्रमा देता है ॥३॥ जब मङ्गलकी महादशाके अंतर्गत बुधकी अन्तर्दशा आती है तब उस पुरुष को शत्रुसे राजासे रोगसे पीड़ा और पुत्रमित्रस्त्रीसे वियोग और किंचित् उत्सवको बुध देता है ॥ ४ ॥

कलाधिकत्वं नृपतेधनाप्तिं कलत्रमित्रात्मजवाहसौख्यम् ॥
सत्कर्मधर्मानुरतत्वमुच्चैर्बृहस्पतिर्भौमदशां प्रविष्टः ॥ ५ ॥
विदेशयानव्यसनामयाद्यैः कुटुम्बवादद्द्रविणव्ययश्च ॥
नानाप्रवासैश्चलचित्तवृत्तिर्भौमान्तरे दानवराजपूज्ये ॥ ६ ॥
कलत्रपुत्रात्मजनेषु बाधा प्राणप्रयाणान्तशरीरपीडा ॥
स्वस्थानयानं यदि भानुसूनोरन्तर्दशा भौमदशान्तराले ॥ ७ ॥

जब मङ्गलकी महादशाके भीतर बृहस्पतिकी अन्तर्दशा आती है तब उस पुरुष को कलाओंमें आधिक्य, राजा से धनप्राप्ति, स्त्री मित्र और सवारिके सुख और सत्कर्म धर्ममें स्नेह इन सब वस्तुओंको बृहस्पति देता है॥५॥ जब मङ्गलकी महादशा के अन्तर्गत शुक्रकी अन्तर्दशा आतीहै तब वो पुरुष विदेशके जानेसे अनेक व्यसनों से रोगोंसे पीड़ित होताहै और कुटुम्बवाद, धनके खरचसे युक्त होताहै और अनेक समय विदेश जानेसे चञ्चलचित्तवृत्तिसे युक्त होता है ॥६॥ जब मङ्गलकी दशाके भीतर शनिकी अन्तर्दशा आतीहै तब स्त्री पुत्र और अपने जनोंसे वाधा युक्त होताहै और प्राणिजानेके समान पीड़ाको प्राप्त वो पुरुष होता है ॥ ७॥ इति भौमांतर्दशाफलम् ॥ अथ बुधांतर्दशाफलम् ।

तुरङ्गहेम्नां च सुविद्रुमाणां सदम्बराणामपि वारणानाम् ॥
भवेदवाप्तिर्बहुवैभवानां सौम्यस्य पाके तपने प्रपन्ने ॥१ ॥
स्वस्थानतः संचलनं कदाचिद्रुद्प्रकोपात्मजजन्मवित्तम् ॥
धर्मे प्रवृत्तिं कुरुते ज्ञपाके पङ्करुहेशः प्रवदन्ति केचित् ॥२॥

यदि बुधमहादशाके भीतर जब सूर्यांतदशा आतीहै तब उस मनुष्यको घोड़े सुवर्ण उत्तम मूंगा उत्कृष्ट वस्त्र उत्तम हाथी और अनेक वैभवोंकी प्राप्ति होतीहै॥१॥ जब बुधकी महादशाके भीतर सूर्यांतर्दशा आतीहै तब वो मनुष्य अपने घरसे वाहिर भ्रमण करनेवाला होता है और उसके शरीर में रोगोंका प्रकोप होता है और पुत्र का जन्म और धनकी प्राप्ति होती है और उस पुरुषकी धर्ममें प्रवृत्ति होतीहै ऐसा कोई आचार्य कहते हैं ॥ २ ॥

पामादिनानामयसंभवः स्यान्मृतप्रजासंजननं विवादः ॥
पित्तप्रकोपः खलु यानपीडा यदा जडांशुर्ज्ञदशां प्रपन्नः ॥३॥
गुह्यामयार्थव्यसने युतः स्यात्कान्तासुतप्रीतिविमुक्तचित्तः ॥
विलुप्तधर्मो मनुजः प्रविष्टे बुधस्य मध्ये वसुधातनूजे ॥ ४ ॥

बुधकी महादशाके भीतर जब चन्द्रमाकी अन्तर्दशा आती है तब उसके शरीर में कंडू आदि अनेक प्रकारके रोगोंकी उत्पत्ति होती है, उसके हुई संतान मरजातीहै सबोंसे विवाद, पित्तके प्रकोप और सवारीके हेतुसे पीड़ा ये सब बातें मनुष्योंको होती हैं॥ ३॥ जब बुधकी महादशाके भीतर मङ्गलकी अन्तर्दशा आतीहै तब वो पुरुष गुप्तरोगसे और धनके निमित्त दुःखसे युक्त, स्त्री पुत्रोंके प्रीतिसे रहित चित्तवाला और धर्मका त्याग करनेवाला होता है ॥ ४ ॥

कान्तासुतानन्दयुतोऽरिहन्ता सत्कर्मकृच्चारुमतिर्विनीतः ॥
मन्त्री नरः स्यात्पितृमातृदुःखी बृहस्पतौ सौरिदशां प्रयाते ॥५॥
विबुधसाधुजनातिथिसादरः सुकृतकर्मसमुत्सुकमानसः ॥
विविधवस्त्रविभूषणभाङ् नरो बुधदशान्तरगे सति भार्गवे ॥ ६॥

जब बुधकी महादशामें बृहस्पतिकी अन्तर्दशा आतीहै तब वो मनुष्य स्त्रीपुत्रों के आनन्द से युक्त, शत्रुओंको मारनेवाला, सत्कर्मका करनेवाला, पवित्र जिसकी बुद्धि, बड़ा नम्र, मन्त्रका जाननेवाला और मातापितासे दुखी वो मनुष्य होता है ॥ ५ ॥ जब बुधकी महादशाके भीतर शुक्रकी अन्तर्दशा आतीहै तब वो मनुष्य देवता साधुजन और अतिथि इनमें आदर रखनेवाला, सुकर्ममें उत्कण्ठित मनवाला और अनेक वस्त्राभूषणोंका पहरनेवाला होताहै ॥ ६ ॥

नानाप्रयासैश्च निरोधनैर्वा शिरोरुजा वापि शरीरभाजाम् ॥
करोति बाधां विबुधान्तराले सितः प्रयातः प्रवदन्ति केचित् ॥७॥
सत्कर्मधर्मद्रविणानुकम्पाकन्दर्पहीनो मनुजः प्रलापी ॥
वातामयार्तोऽतिमृदुस्वभावः सौम्यान्तराले नलिनीशसूनौ ॥ ८॥

कोई ऐसा कहते हैं कि जब बुधकी महादशामें शुक्रकी अन्तर्दशा आती है तब अनेक प्रकारके परिश्रमोंसे या बन्दकरने से या शिरके दर्दसे अनेक प्रकारकी बाधा मनुष्य को शुक्र करताहै ॥७॥ जब बुधकी महादशाके भीतर शनिकी अन्तर्दशा आतीहै तब वो मनुष्य सत्कर्म धर्मधन दया और मदन इन सबसे रहित, प्रलाप (निरर्थकवाद) करनेवाला, वात व्याधिसे युक्त और कोमल जिसका स्वभाव ऐसा वो पुरुष होताहै ॥ ८ ॥ इति बुधांतर्दशाफलम् ॥

अथ गुर्वंतर्दशाफलम् ॥

सुतीर्थनानाविधवस्तुलाभं विशिष्टनामान्तरमाधिपत्यम् ॥
मानं नरेशात्कुरुते दिनेशो वाचामधीशस्य दशां प्रपन्नः ॥ १ ॥
नानांगनाक्रीडनजातचित्तः श्रीराजचिह्नैश्च विराजमानः ॥
विद्यानवद्यार्थयुतो नरः स्याज्जीवान्तरे शीतकरप्रचारे ॥ २ ॥

जब बृहस्पतिके दशाके भीतर सूर्य की अन्तर्दशा आतीहै तब सुन्दरतीर्थ और नानाप्रकारके वस्तुओंका लाभ और अनेक उत्कृष्टनामांतर वस्तुओंका आधिपत्य (स्वाम्य) और राजासे सन्मान इन सब पदार्थोंका लाभ उस पुरुष को करताहै ॥ १ ॥ जब बृहस्पतिकी महादशाके भीतर चन्द्रमाकी अन्तर्दशा आतीहै तब अनेक स्त्रियोंसे क्रीड़ा करनेमें मन रखनेवाला, राजाओं के चिन्होंसे विराजमान, विद्या और निर्दोष अर्थ युक्त वो पुरुष होताहै ॥ २ ॥

रणांगणप्राप्तयशो विशेषैः सद्भोगसौख्यार्थसमन्वितश्च ॥
प्रौढप्रतापोऽतितरां नरः स्याद्धरासुते जीवदशां प्रयाते ॥ ३ ॥
शीर्षे गुदे वापि भवेत्कदाचित्पीडा नराणामरिभीतियुक्ता ॥
बलक्षयः संचलनं कुजस्य जीवान्तराले प्रवदन्ति केचित् ॥ ४ ॥

जब बृहस्पतिकी महादशाके भीतर मङ्गलकी अन्तर्दशा आतीहै तब वो पुरुष रणांगणमें यशोविशेषको प्राप्त होनेवाला, उत्तम भोगसुख और अर्थसे युक्त और बड़ा प्रतापी होताहै ॥ ३॥ कोई ऐसा कहतेहैं कि जब बृहस्पतिकी महादशामें मङ्गल की अन्तर्दशा आतीहै तब उस पुरुषके शिरमें गुदामें पीड़ा होतीहै और वो पुरुष कभी शत्रुभयसे संयुक्त होताहै और बलका क्षयभी होताहै ॥ ४ ॥

सद्बुद्धिकौशल्यसुरार्चनानि सदिन्दिरामन्दिरवाहनानि ॥
कलत्रपुत्रादिसुखानि नूनं कुर्याद्बुधो जीवदशां प्रपन्नः ॥ ५ ॥
विदेशयानं चलचित्तवृत्तिर्जलात्प्रमादः शिरसि प्रपीडा ॥
गुरोर्दशायां चरतीन्दुपुत्रे केषांचिदेवात्र मतं निरुक्तम् ॥ ६ ॥

जब बृहस्पतिकी महादशाके भीतर बुधकी अन्तर्दशा आतीहै तब उस पुरुषको उत्तम बुद्धिमें कुशलता, देवपूजन करना, उत्कृष्ट लक्ष्मी, महलमंदिरवाहन स्त्री पुत्रादिकोंके सुखोंको बुध करताहै ॥ ५ ॥ कोई ऐसा कहते हैं कि जिस पुरुष के बृहस्पतिकी महादशाके भीतर बुधांतर्दशा आतीहै तब वो पुरुष परदेशका जानेवाला, चञ्चल चित्तवृत्तिसे युक्त, जलसे प्रमादवाला और शिरमें पीड़ायुक्त होताहै ॥ ६॥

निजैर्वियोगोर्थविनाशनं च श्लेष्मानिलश्चापि कलिप्रसंगः ॥
स्यान्मानवानां व्यसनोपलब्धिर्भृगोः सुते जीवदशां प्रयाते ॥ ७॥

धर्मक्रियायां निरतत्वमुच्चैर्विद्याम्बरान्नादिकसंग्रहश्च ।।
द्विजाश्रयः स्याद्गुरुपाकयाते सिते वदन्तीति फलं तु केचित् ।।८
वेश्यासवद्यूतकृषिक्रियाद्यैर्विलुप्तधर्मार्थयशाः कृशाङ्गः ।।
खरक्रमेलादियुतो नरः स्याद्गुरोर्दशायां चलितेऽर्कसूनौ ।।९।।

जब वृहस्पति की महादशामें शुक्रकी अन्तर्दशा आतीहै तब वो मनुष्य अपने मनुष्योंसे वियोगी, धनका नाश करनेवाला, कफवात प्रकृति, कलह करने वाला और अकस्मात् दुःखीहोताहै ।।७।। ऐसा कहतेहैं कि जिस मनुष्यके वृहस्पतिकी महादशामें जब शुक्रकी अंतर्दशा आतीहै तबवो मनुष्य धर्म क्रियामें अत्यन्त निरत विद्या; वस्त्र और अन्नादिकोंका संग्रह करनेवाला और ब्राह्मणोंका आश्रय करनेवाला होता है ।।८।। कोई ऐसा कहते हैं कि जिस मनुष्यको बृहस्पतिकी महादशामें शनिकी अन्तर्दशा आतीहै तबवो मनुष्य वेश्या मद्य जूआ खेती आदिकाम करनेसे धर्म धन और यश का नाश करनेवाला और दुर्बल जिसका अङ्ग ऐसा होताहै ।।९।। इति गुर्वंतर्दशाफलम् ।।

अथ शुक्रांतर्दशाफलानि ।

भूपभीतिरपि बन्धुनिमित्तं वित्तनाशनमरात्युदयः स्यात् ।।
क्रोडगण्डनयनेष्वपीडा भार्गवे यदि रवेर्विनिवेशः ।।१।।
शीर्षदन्तनखपीडनमुच्चैः कामलप्रबलता किल पित्तम् ।।
श्वापदादपि भयं च नराणां भार्गवान्तरगते हिमरश्मौ ।।२।।

जिस मनुष्यके शुक्रकी महादशा केभीतर सूर्यांतर्दशा जब आती है तब उस मनुष्यको राजभय होताहै और भाईबन्दोंके निमित्तसे धनका नाश, शत्रुओं की उत्पत्ति, हृदय कपोल और नेत्रोंमेंपीड़ा होतीहै ।।१।। जब मनुष्यको शुक्रकी महादशा में चंद्रांतर्दशा आतीहै तब शिरदंतनखों में पीड़ा, कमलवायु की प्रबलता और पित्तका विकार होता है और कुत्तासेभी भय होता है ।। २ ।।

भूदेवदेवाग्निमनःप्रवृत्तीरणांगणे स्याद्विजयो नराणाम् ।।
मातंगकार्याद्वनिताश्रयाद्वा लाभः सिते चन्द्रदशेति केचित् ।।३
पित्तात्क्षताद्रक्तविकारतो वा वैकल्यमंगे प्रभवेन्नराणाम् ।।
उत्साहहीनत्वमतीव याते भूमीसुते दैत्यगुरोर्दशायाम् ।।४।।

कोई ऐसाभी कहते हैं कि जब जिस मनुष्यको शुक्रकी महादशाके भीतर चंद्रांतर्दशा आती है तब उस मनुष्य को ब्राह्मण देवता अग्निके पूजादिक में मनकी प्रवृत्ति होती है रणांगण में विजय होता है हाथियों के व्यापार से या स्त्रीके आश्रय से उसको लाभ होता है ॥३॥ जिसके शुक्रमहादशांतर्गत मङ्गल की अन्तर्दशा आती है तब पित्तसे घावसे या रक्तविकार से अङ्गमें बिकलता और उत्साहसे हीनता उस मनुष्यको होती है ॥ ४ ॥

सन्माननानाविधवस्तु सौख्यं भूमीपतः स्यात्खलु भूमिलाभः॥
अङ्गारके भार्गवपाकसंस्थे केषांचिदेवं मतमस्ति शस्तम् ॥५॥
वृक्षैः फलैश्चापि चतुष्पदाद्यैर्वित्तं भवेत्सख्यविधिर्नृपेण ॥
दुरन्तकार्याभिरतिर्नितान्तं भृगोर्दशायां चरतीन्दुसूनौ ॥६॥

कोई ऐसा कहतेहैं कि जब जिसको शुक्रकी महादशा में मङ्गल की अन्तर्दशा आतीहै तब नानाप्रकार के सन्मान, अनेक वस्तुओंके लाभसे सुख और राजा से भूमिलाभ उस मनुष्यको होताहै ॥५॥ जब जिसको भृगुकी महादशामें बुधकी अन्तर्दशा आतीहै तब वृक्षोंसे फलोंसे चतुष्पद जीवोंसे धनप्राप्ति,राजासे मित्रता और निरंतर अति दुष्कर काम करने में प्रीति उस मनुष्यकी होतीहै ॥ ६ ॥

यज्ञादिसत्कर्मणि सादरत्वं गतार्थसिद्धिः सुतदारसौख्यम् ॥
महापदानेकविभूषणाप्तिर्भृगोर्दशायां चरतीन्द्रवन्द्ये ॥७॥
मित्रोन्नतिर्ग्रामपुराधिपत्यं वृद्धांगनाकेलिरतीव नित्यम् ॥
स्याद्वैरिनाशो ह्युशनोदशायां शनैश्चरस्यान्तरजा दशा चेत् ॥८॥

जब जिसको शुक्रकी महादशामें गुरुकी अन्तर्दशा होतीहै उस मनुष्यका यज्ञादि सत्कर्ममें आदर होना,गतभये अर्थकी प्राप्ति, पुत्रस्त्रीसे सुख, उत्कृष्टस्थानसे अनेक भूषणादिकोंकी प्राप्ति होतीहै ॥७॥ जब जिसको शुक्रकी दशाके भीतर शनिकी अन्तर्दशा आतीहै तब मित्रोंके द्वारा उन्नति, ग्रामपुरका स्वाम्य, वृद्धस्त्रीसे अतिप्रीति और वैरियोंका नाश ये सबबातें उस मनुष्यको होतीहैं ॥८॥ इति शुक्रांतर्दशाफलानि।

अथ मंदांतर्दशाफलानि ।

धनागनानन्दनबन्धुपीडा गादापि बाधात्मकलेवरे स्यात् ॥
रिपूद्गमः संचलनं नलिन्यापत्यौ स्थिते मन्ददशान्तराले ॥१॥

नित्यं कलिर्बन्धुजनैर्वियोगो हतिर्मृतिर्वापि भवेद्गृहिण्याः ॥
उत्साहसौख्योपहतिर्नितान्तं शीतद्युतौ मन्ददशान्तरस्थे ॥ २ ॥

जिसको शनिकी महादशामें सूर्यकी अन्तर्दशा होती है उस मनुष्यको धन स्त्री पुत्र भाईबन्दोंकी तरफसे पीड़ा, देहमें अत्यन्त पीड़ा, शत्रुओंकी उत्पत्ति और देशोंमें भ्रम यह होतेहैं ॥ १॥ जब शनिदशामें चन्द्रांतर्दशा आतीहै तब बन्धुजनों से नित्य कलह, स्त्री का वियोग, हरण या मरण और निरन्तर उत्साहका और सुखको नाश ए सब बातें होतीहैं ॥ २ ॥

स्वस्थानयानं विकलत्वमंगधनांगनासूनुवियोजनं स्यात् ॥
सन्मानहानिर्ननु सूर्यसूनोर्दशान्तरे भूमिसुतप्रचारे ॥ ३ ॥
धनांगनासूनुसुखोपपन्नः सद्राजमानेन विराजमानः ॥
विद्वज्जनानन्दकरः कफार्त्तो मर्त्यो भवेज्ज्ञे शनिपाकसंस्थे ॥ ४ ॥

जिसको शनिकी महादशाके भीतर मङ्गलकी अन्तर्दशा आतीहै उस मनुष्य को अपने घरसे परदेशकी यात्रा, अङ्गमें विकलता, धन स्त्री पुत्रसे वियोग और सन्मानहानि ए सब बातें प्राप्त होतीहैं ॥ ३ ॥ जिसको शनिकी महादशाके भीतर बुधांतर्दशा आतीहै धन स्त्रीपुत्रोंका सुख, उत्तम राजमानसे विराजमान, विद्वज्जनों को आनन्द करने वाला और कफरोगसे ग्रस्त होता है ॥ ४ ॥

कलाकलापे कुशलो विलासी पद्मालयालंकृतचारुशीलः ॥
भूपालभूलाभयुतो नरः स्याद्बृहस्पतौ मन्ददशां प्रयाते ॥ ५॥
योषाविभूषासुतसौख्यलब्धिः श्रीग्रामदेशाधिकृतत्वमुच्चैः ॥
यशःप्रकाशोऽरिकुलस्य नाशः शनेर्दशायामुशनः प्रवेशे ॥ ६ ॥

जिसको शनिकी महादशामें बृहस्पतिकी अन्तर्दशा आतीहै तब वो पुरुष कलाओं के समूहमें बड़ा कुशल, क्रीड़ा करनेवाला, लक्ष्मीसे सुशोभित और विद्वान् मनुष्यों का आनन्द देनेवाला होताहै ॥५॥ जिसको शनिकी महादशामें शुक्रकी अन्तर्दशा आतीहै स्त्रीविभूषण पुत्र इनके सुखका भोगनेवाला, ग्रामका देशका अधिकार भोगनेवाला, सर्वत्र जिसका यश और सत्रुकुलका नाश ए सब बातें मनुष्यको होतीहैं ॥ ६ ॥

अन्तर्दशा चेन्नलिनीशसूनोर्दशांतराले किल मंगलस्य ॥
भवेत्तदानीं निधनं नराणां यद्यप्यहो दीर्घमवाप्तमायुः ॥ ७ ॥

लग्ननाथरिपुर्लग्नदशायां प्रविशेद्यदि ॥
अकस्मान्मरणं कुर्यात्प्राणिनां सत्यसंमतम् ॥ ८ ॥

जब मङ्गलकी महादशामें शनिकी अन्तर्दशा आतीहै तब दीर्घायु भी मनुष्य होवे तौ भी मनुष्यको मृत्युयोग होताहै ॥ ७ ॥ कही लग्न की दशा होवे तौ उसमें लग्नेशके शत्रुकी अन्तर्दशा आजावै तब वह मनुष्योंकी अकस्मात् मृत्यु करताहै इसमें सन्देह नहींहै ॥ ८ ॥ इति ढुण्ढिराजकृते जातकाभरणे वनमालीचतुर्वेदकृतायां मार्जनीनामटीकायांमन्तर्दशाफलकथने त्रयस्त्रिंशोध्यायः ॥ ३३ ॥

अथ दानोध्यायःप्रोच्यते ।

अथ दानाध्यायः ॥

ये खेचरा गोचरतोऽष्टवर्गाद्दशाक्रमाद्वाप्यशुभा भवन्ति ॥
दानादिना ते सुतरां प्रसन्नस्तेनाधुना दानविधिं प्रवक्ष्मि ॥ १ ॥
माणिक्यगोधूमसवत्सधेनुकौसुम्भवासोगुडहेमताम्रम् ॥
आरक्तकं चन्दनमम्बुजं च वदन्ति दानं हि विरोचनाय ॥ २

जो ग्रह अष्टवर्गसे अथवा दशाके क्रमसे अशुभ होवे वे ग्रह दानादि करनेसे अतिशय प्रसन्न होजातेहैं इससे अबमैं दानविधिको कहताहूँ ॥ १ ॥ माणिक, गेहूँ, सवत्स धेनु, कुसुम्भावस्त्र, गुड़, सुवर्ण, तावां, रक्तचन्दन और कमलका पुष्प इतनी सब वस्तु सूर्यके दानमें देनी चाहिये ॥ २ ॥

सद्वंशपात्रस्थिततण्डुलांश्च कर्पूरमुक्ताफलशुभ्रवस्त्रम् ॥
युगोपयुक्तं वृषभं च रौप्यं चन्द्राय दद्याद्घृतपूर्णकुम्भम् ॥ ३ ॥
प्रवालगोधूममसूरिकाश्च वृषोऽरुणश्चापि गुडः सुवर्णम् ॥
आरक्तवस्त्रं करवीरपुष्पं ताम्रं हि भौमाय वदन्ति दानम् ॥ ४ ॥

बांसके पात्र (टिपारी) में भरे चांवल, कपूर, मोती, सफेद वस्त्र; जुआ सहित वृषभ और चांदी ए सब वस्तु चन्द्रमा के दानमें देने चाहिये ॥ ३ ॥ मूंगा, गेहूँ, मसुर, लाल वृषभ, गुड, सुवर्ण लाल वस्त्र. कनेरके पुष्प और तांबा ए सब वस्तु मङ्गल के दान में होतेहैं ॥ ४ ॥

चैलं च नीलं कलधौतकांस्यं मुद्गाजगारुत्मतसर्वपुष्पम् ॥
दासी च दन्तो द्विरदस्य नूनं वदन्तिदानं विधुनन्दनाय ॥ ५॥
शर्करा च रजनी तुरङ्गमः पीतधान्यमपि पीतमम्बरम् ॥
पुष्प रागलवणे च काञ्चनं प्रीतये सुरगुरोः प्रदीयताम् ॥६॥

नीलवस्त्र, सुवर्ण, कांसीका पात्र मूंग, बकरा, गारुत्मत मणि, सब तरहके पुष्प, दासी, हाथी, ए सब वस्तु बुधके दानमें होती हैं ॥ ५ ॥ कच्ची खांड, हलदी, पीला घोड़ा, चनाकी दाल, पीताम्बर, पुखराज, सेंधालवण और सुवर्ण ए सब वस्तु बृहस्पतिके दानमें होते हैं ॥ ६ ॥

चित्राम्बरं शुभ्रतरस्तुराङ्गे धेनुश्च वज्रं रजतं सुवर्णम् ॥
सुतण्डुलाज्योत्तमगन्धयुक्तं वदन्ति दानं भृगुनन्दनाय ॥७॥
माषांश्च तैलं विमलेन्द्रनीलस्तिलाः कुलित्था महिषी च लोहम्॥
सद्दक्षिणं चेति वदन्ति नूनं दुष्टाय दानं रविनन्दनाय ॥८॥

चित्रवस्त्र, सफेद घोड़ा, गौ, हीरा, चांदी, सुवर्ण, चावल, घृत और अतर एसब वस्तु शुक्रके दानमें होतीहैं॥७॥काले उडद, तैल; इन्द्रनील (नीलम), काले तिल, कुलथी, भैंस, लोहा ए सब वस्तु दक्षिणासहित शनिके दानमें होती हैं ॥८॥

गोमेदरत्नं च तुरङ्गमश्च सुनीलचैलानि च कम्बलश्च ॥
तिलाश्च तैलं खलुलोहमिश्रं स्वर्भानवे दानमिदं वदन्ति ॥९॥
वैडूर्यरत्नं सतिलं च तैलं सुकम्बलश्चापि मदो मृगस्य ॥
शस्त्रं च केतोः परितोषहेतोरुदीरितं दानमिदं मुनीन्द्रैः ॥१०॥

गोमेदनाम रत्न, घोड़ा नीलवस्त्र, काला कंबल, तिल, लोह मिश्र तेल ये सब वस्तु राहुके दानमें होतीहै॥९॥वैदूर्यमणि, तिल, तेल, कंबल, कस्तूरी, छुरी ए सब वस्तु केतुके दानमें कहींहैं ॥ १० ॥ इति श्री जातका भरणे ढुन्ढिराजकृते वनमालिचतुर्वेदिकृतायां मार्जन्यां टीकायां दानाध्यायश्चतुस्त्रिंशोऽध्यायः ॥३४॥

अथ नष्टजातकाध्यायः ।

आधानकालोऽप्यथ जन्मकालो न ज्ञायते यस्य नरस्य नूनम् ॥
प्रसूतिकालं प्रवदन्ति तस्य नष्टाभिधानादपि जातकाच्च ॥
तज्जातकं येन शुभाशुभाप्तिर्जातस्य जन्तोर्जननोपकालात् ॥
तस्मिन्प्रणष्टे सति जन्मकालो येनोच्यते नष्टकजातकं तत् ॥२॥

जिस मनुष्यका गर्भाधानका समय अथवा जन्मका समय नहीं जाना जावे उस पुरुषका जन्मकाल नष्टनामजातकसे कहा जाता है उसे नष्टजातक कहते हैं ॥१॥ देखो पुरुष मात्रके जे शुभाशुभ फल समग्र कहे जातेहैं वे सब जन्म समयसे कहे जाते हैं यदि जन्मसमयकाही निश्चय न होवे तब फिर शुभाशुभ फल किसके आश्रयसे कहे जावें ? इससे उस अज्ञात जन्म कालका जिससे निश्चय कियाजाताहै उसे नष्ट जातक कहते हैं ॥ २ ॥

मेषादितः प्रश्नविलग्नलिप्ताः कार्याः क्रमात्तामुनिभिः७खचन्द्रैः॥
१०गजैश्च:८वेदै४र्दशाभिश्च१०बाणैः५शैलै७र्भुजंगैः८खचरैः९शरैश्च
५शिवैः११पतंगै१२ र्निहताःपुनस्ता विलग्नगाश्चेद्भृगुभौमजीवाः॥
तदा तुरंगैः७ करिभिः ८ खचन्द्रै१०र्गुण्याःशरैरन्यखगा यदि स्युः

उसका जो क्रम है उसे कहतेहैं देखो इसका क्रम यहहै कि, जब पुरुष आकर प्रश्न करे किमेरा जन्मपत्र नष्ट है आप कहो, उसी समय का लग्न देखना कि इस समय कौनसा लग्नहै यह देखना चाहिये जो लग्न उस समय होवे उस लग्न को कलात्मक (कलारूप) करके मेषादिलग्नोंकेक्रमसे७।१०।८।४।१०।५।७।८।९।५। ११।१२इन अङ्कोंसे गुणा करे अर्थात् यदि प्रश्नलग्न मेष होवे तो उसके कलात्मक पिंडको सातसे गुणा करै, वृष होवे तो उसके कलात्मक पिंडको दश से, मिथुन होवे तौ उसके कलात्मकपिंडको आठसे कर्क होवे तो उक्त रीतिसे चारसे, सिंह होवे तौ दश से, कन्या होवे तौ पांचसे, तुला होवे तो सातसे वृश्चिक हो तो उक्त क्रमसे आठसे,धन होवे तो उक्त क्रमसे नौसे,मकर होवे तो उक्त रीतिसे,पांचसे, कुम्भ होवे तौ उक्त रीतिसे ग्यारहसे और मीन लग्न यदि प्रश्नलग्न होवे तो उसे कलात्मक पिंड बनाकर बारहसे गुणाकरै, इस प्रकार इन्होंको गुणाकर देखना चाहिये, यदि

इनमेंसे कोईसाभी लग्नहोवें परंतु शुक्र,मङ्गल,बृहस्पति,इनमेंसे कोई ग्रह लग्नवर्ती होवे तौ ७।८।१० इन अङ्कोंसे क्रमसे फिर उस गुणे हुऐ अङ्कको गुणाकरे अर्थात् लग्न में शुक्रहोवे तवतौ गुणेगुणाये अङ्क को सातसे गुणा करे यदि लग्नवर्ती मङ्गलहोवे तौ गुणित अङ्कको आठसे गुणा करे और यदि लग्नगत बृहस्पति होवे तौ गुणित अङ्कको दससे फिर गुणाकरै और शुक्र मङ्गल बृहस्पति इनसे व्यतिरिक्त कोई अन्य ग्रह गुणित प्रश्न लग्नमें वर्तमान होवे तौ गुणितराश्यंकको पांचसे गुणाकरै।३।४॥

ग्रहद्वयं वा बहवो विलग्ने तदा तदीयैर्गुणकैश्च गुण्याः ॥
एवं कृते कर्म विधाय योग्यो राशिः पृथक्स्थः परिरक्षणीयः॥५॥
पृथक्स्थराशिमुनिभिर्विनिघ्नस्त्वाद्ये दृकाणे नवयुग् द्वितीये ॥
यथास्थितोयं नववर्जितोऽन्त्ये भसंज्ञयाप्तो ह्यवशेषमृक्षम् ।

यदि प्रश्नलग्न दो ग्रह अथवा तीन चार आदि वहुत ग्रह होवें तौ कहे हुए प्रत्येक पूर्व अङ्क ७।१०।८।४।१०।५।७।८।९।११।१२ हैं उन्होंसेही मेषादि राशिके गुणित अङ्कको फिर गुणा करै, जैसे मेषको७से वृषको१०से मिथुनको ८से इत्यादि इस प्रकारसे गुणा करै पीछे कर्मके विधान योग्य (नाम जिस अङ्कसे अगाड़ी काम लेनाहै) जो गुणित पिंडीभूत राश्यङ्क है उसे पृथक् पृथक् स्थापन करदेना चाहिये। ॥५॥ उस प्रथम स्थापन कीनी राशिको फिर सातसे गुणा करै यदि प्रश्नलग्न का पहलाही द्रेष्काण आया होवे तब तौ उसी गुणित राश्यङ्कपिण्डमें नौ९ और मिला देवे और यदि दूसरा द्रेष्काण आया होवे तव उस गुणति राश्यङ्कपिण्ड को यथा वत् (जैसेकातैसा) रक्खे और यदि उस गुणित राश्यङ्कपिण्डमें राशिका तृतीय द्रेष्काण आया होवे तौ उस गुणित राश्यंकपिण्डमें नौ९ घटाय देवे फिर जो अङ्क उपलब्ध होवे उसमें सत्ताईस का भाग देवे भाग दिये पीछे जो अङ्क शेष रहे उसे पृच्छक पुरुषका जन्म नक्षत्र जाने जैसे१ अङ्क शेष रहा तौ अश्विनी नक्षत्र, दो शेष रहेतौ भरणी, ३ अङ्क शेष रहे तौ कृत्तिका, यदि शून्य शेष रहेतौ रेवती नक्षत्र समझ लेना चाहिये ॥ ६ ॥

स्त्रीपुत्रमित्रादिनिमित्तकं चेत्पृच्छा विलग्नं त्वृतुभिश्च वेदैः ॥
त्रिभिः शरैर्युक्तमनुक्रमेण ततो विलग्नस्य कला विधेयाः ॥७॥
लग्नस्य राशेर्गुणकेन गुण्याश्चैत्संभवो लग्नगतग्रहस्य ॥
पुनस्तदीयेन गुणेन गुण्याः प्रागुक्तवद्धं परिवेदितव्यम् ॥७॥

यदि प्रश्न करने वालेका नष्टका प्रश्न अपना न होवे किन्तु स्त्री पुत्र मि त्रादिके विषयमें नष्टका प्रश्नहोवे तब पूर्वोक्त रीतिसे सिद्ध किये पिण्डांकको यदि स्त्रीके नष्टका प्रश्न होवे तब तौ छःसे युक्त करे और जो पुत्रके विषय नष्टका प्रश्न होवे तबउसी सिद्ध पिंडांकको चारसे युक्तकरै और जो मित्रके विषयमें नष्टकाप्रश्न होवे तब उसी सिद्ध पिंडांकको तीनसे युक्त करै और जो इनसे व्यतिरिक्त किसी अन्यविषयमें नष्टका प्रश्न होवे तब उसी सिद्धपिंडांकको पांच से युक्तकरे तदनन्तर लग्नकी कलाओंको स्पष्ट करै ॥ ७ ॥ फिर उस कलात्मक अङ्कको राशिके गुणक अङ्कसे गुणाकरै फिर यदि लग्नगत ग्रहका संभव होवे अर्थात् लग्नमें कोई ग्रह होवे तव पूर्वोक्त राशियोंके गुणक अङ्को ७।८।१०।५ से गुणाकरै, गुणाकरे पीछे पूर्व कही रीतिसे २७का भाग देकर शेषाङ्कको राशि जाननी चाहिये ॥ ८॥

दशाहते कर्मबिधानराशौ प्राग्वन्नवोनेप्यथवाधिकेस्मिन् ॥
खार्कैर्हते शेषमिताष्टिसंख्यमायुर्गतं तत्खलु पृच्छकस्य ॥ ९ ॥
षड्भिर्विभक्ते ऋतवो भवन्ति शेषाङ्कतुल्याःशिशिरादयःस्युः॥
द्विभाजिते शेषकमेकमभ्रं पूर्वापरौ तावृतुजौ च मासौ ॥ १०॥

अब कहतेहैं कि जो कर्मविधानयोग्य राशिअङ्क दूसरे स्थानपर रक्खा है उसे दससे गुणा करें फिर उसमेंसे पूर्ववत् ९ नौ घटाये पीछे जो अङ्क सिद्ध रहे उसे फिर १२० से गुणा करै शेष बचेके प्रमाण आठ संख्यासे वो पृच्छक की गतायु को जाने ॥९॥ फिर छःके भाग देनेसे ऋतु आतीहै उनकी संख्या १बचे तौ शिशिर २ बचे तौ वसंत, ३ अङ्क शेष बचेतौ ग्रीष्मऋतु आदि छः ऋतु समझनी चाहिये फिर उसमें दोका भाग देनेसे एक शेषसे पूर्वमास, शून्यशेषसें ऋतुका दूसरा मास समझ लेना चाहिये ॥ १० ॥

अष्टाहते कर्मविधानराशौ प्राग्वन्नवोनेप्यथवाधिकेस्मिन् ॥
द्विभाजिते शेषकमेकमभ्रतुल्येस्ति पूर्वापरपक्षकौ स्तः ॥११॥
पञ्चेन्दुभक्ते सति शेषतुल्याः पक्षे च तस्मिंस्तिथयो भवन्ति ॥
नक्षत्रतिथ्यानयनाय योग्यादहर्गणाद्वारविचारणात्र ॥१२॥

फिर उसी कर्मविधान सिद्धराश्यङ्कको आठसे गुणा करे फिर सिद्धाङ्क में नौ घटाये अथवा पूर्व रीतिसे नौ और जोड़े फिर उसमें दोका भाग देवे फिर यदि १ शेष रहे तौ शुक्लपक्ष शून्य शेष रहे तो कृष्णपक्ष होता है ॥ ११ ॥ अङ्क में

पंद्रहका भाग देनेसे शेषांकके तुल्य जन्मतिथि होती है और नक्षत्रानयनके अर्थ और तिथ्यानयनके अर्थ योग्य जो अहर्गण है उससे इस विषयमें वारका विचार होता है ॥१२॥

सप्ताहते कर्मविधानराशौ प्राग्वन्नवोनेऽप्यथवाऽधिकेऽस्मिन्॥
द्विभाजिते शेषकमेकमात्रं दिवा च रात्रौ जननं तदानीम्॥१३॥
पञ्चाहते कर्मविधानराशौ प्राग्वन्नवोनेऽप्यथवाऽधिकेऽस्मिन् ॥
दिनस्य रात्रेरथवा प्रमित्या भक्तेऽवशिष्टं दिनरात्रिनाड्यः॥१४॥

फिर उसी कर्म विधान सिद्ध किये राश्यंकको सातसे गुणा करै फिर उस सिद्धांकको पूर्व कही रीतिसे ९ घटानेपर या ९ अङ्क बढ़ानेपर जो सिद्धांक होवे उसमें २ का भाग देवे शेष एक अङ्करहे तौ दिनका जन्म जाने और यदि शून्य शेष रहे तौ रात्रिका जन्म जाने ॥ १३ ॥ इसी तरह उसी कर्मविधान नामक पूर्व सिद्धांकको पांचसे गुणा करै फिर जो सिद्धांक है उसमें पूर्वोक्त रीतिसे ९ घटाने बढ़ानेपर जो अङ्क आवे उसमें यदि दिनका जन्म समय आया होवे तब तौ दिन मानकी घटी अङ्कका भाग देवे शेष अङ्कको उस दिनकी इष्ट घटी अङ्क जाने और यदि रात्रिका जन्म आया होवे तौ उसी अङ्कमें रात्रिमानकी घटी अङ्कका भागदेवे शेष अङ्कको उसी रीतिकी इष्ट घटीका अङ्क जाने १४ ॥ इति जातकाभरणे नष्ट जातकवर्णनं नाम चतुस्त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३४ ॥

अथ निर्याणाध्यायः।

दिनकरप्रमुखैर्निधनस्थितैर्भवति मृत्युरिति प्रवदेत्क्रमात् ॥
अनलतो जलतःकरवालतो ज्वरभवो गदतः क्षुधया तृषा ॥१॥
स्थिरश्चरोद्व्यङ्गसमाह्वयश्च राशिर्यदा जन्मनि चाष्टमस्थः ॥
स्वकीयदेशे विषयान्तरे च मार्गे प्रकुर्यान्मरणं क्रमेण ॥२॥

सूर्यादि ग्रह यदि लग्नसे अष्टम घरमें स्थित होवे तौ अग्निसे, जलसे खड्ग से ज्वरसे, रोगसे, क्षुधासे, और प्यासके निमित्त से उस मनुष्य की मृत्यु है होती यदि सूर्य अष्टम होवे तौ अग्निसे, चन्द्रमा अष्टम होवे तौ जलके निमित्त से, मङ्गल अष्टम होवे तौ खड्गसे, बुध अष्टम होवे तौ ज्वरसे, बृहस्पति अष्टम होवे तौ रोगसे,

शुक्र अष्टम होवे तौ भूखसे और शनि अष्टम होवे तौ प्यासके निमित्तसे मृत्यु होतीहै ॥१॥ स्थिर चर द्विस्वभाव तीन तरहके लग्न होते हैं उनमेंसे स्थिर राशि जिसके लग्नसे अष्टम आवे तौ अपने देश में और जो चरराशि लग्नसे अष्टम आवे तौ परदेशमें और यदि द्विस्वभावराशि लग्नसे अष्टम आवे तौ उस मनुष्यकी मार्गमें मृत्यु होती है ॥ २ ॥

आयुर्गृहं खेटविवर्जितं चेद्विलोकयेद्वा बलवान् ग्रहेन्द्रः ॥
तद्धेतुजात प्रवदन्ति मृत्युं बहुप्रकारं बहवो बलिष्ठाः ॥ ३॥
पित्तं कफः पित्तमथ त्रिदोषः श्लेष्मानिलौ वाप्यनिलः क्रमेण ॥
सूर्यादिकेभ्यो मरणस्य हेतुः प्रकल्पितः प्राक्तनजातकज्ञैः ॥५॥

लग्नसे अष्टम घरमें यदि कोई भी ग्रह न होवे अथवा बली ग्रह कोई अष्टम घरको देखता होवे तब उसी हेतुसे मृत्यु कहते हैं और यदि बली होकर बहुत से ग्रह अष्टम घरको देखते होवे तौ मृत्युभी अनेक तरहसे होती है ॥ ३ ॥ पित्त वात और कफ इसे त्रिदोष कहते हैं इनमें यह नियम है सूर्य पित्त का अधिष्ठाता, चन्द्रमा कफका, मङ्गल पित्तका, बुध त्रिदोषका, बृहस्पति कफका, शुक्र वायुका और शनि वायुका अधिष्ठता है इनका प्रयोजन यह है इनमें जो बलवान् होकर अष्टम घरमें स्थित होवे या देखता होवे अथवा जिस बली ग्रहका अष्टम घरमें पड्वर्ग होवे उसी दोषसे उस मनुष्यकी मृत्यु होतीहै जैसे सूर्य हो तौ पित्तव्याधिसे चन्द्रमा होवे तो कफ व्याधिसे मृत्यु होती है इत्यादि ॥ ४ ॥

युक्तं नैवालोकितं खेचरेन्द्रैर्मृत्युस्थानं यो विलग्ने दृकाणः ॥
द्वाविंशोस्मात्सोपि तस्यापि भर्ता कुर्यान्मृत्युं हेतुना स्वेन नूनम् ॥
अनलतो जलतो यदुदीरितं भवति तत्त्रिलवाधिपहेतुकम् ॥
अथ दृकाणफलानि सविस्तरं मुनिवरैरुदितानि वदाम्यहम् ॥६॥

यदि अष्टम घरमें कोई ग्रह न होवे और न कोई देखता होवे तो जन्म लग्नमें बाईसमें द्रेष्काणके स्वामी ग्रहके हेतुसे उस मनुष्यकी मृत्यु होतीहै ॥५॥ जो अग्नि से जलसे मृत्यु होतीहै वे द्रेष्काणके अधीन होतीहै इससे अब हम द्रेष्काणके फलों को विस्तारसे कहते हैं जो मुनिश्रेष्ठोंने कहे हैं ॥ ६ ॥

मेषस्य पूर्वत्रिलवेन दृष्टे शुभग्रहैः पापनिरीक्ष्यमाणे ॥
प्लीहोद्भवो वा विषपित्तजो वा मृत्युस्तदानीं परिवेदितव्यः ॥७॥
मेषे द्वितीये जलजो वनान्ते तृतीयके कूपतडागजातः ॥
वृषस्य पूर्वत्रिलवे खराश्व क्रमेलकादिप्रभवो हि मृत्युः ॥ ८ ॥

यदि मेषके प्रथम द्रेष्काणको कोई शुभ ग्रह न देखते होवें और पापग्रह उसे देखते होवें तौ पथरीके निमित्त से अथवा विषसे या पित्तसे उस मनुष्यकी मृत्यु जाननी चाहिये ॥ ७ ॥ यदि मेषके द्रेष्काण होवें तौ जलके हेतु से अथवा वनमें मृत्यु जाननी और यदि मेषका तृतीय द्रेष्काण होवे तब कूपसे या तालाव से मृत्यु जाननी चाहिये और वृषका पूर्व द्रेष्काण होवे तौ गधा घोड़ा या क्रमेलक (ऊँट) आदिके निमित्त से मृत्यु होतीहै ऐसा समझना ॥ ८ ॥

द्वितीयके पित्तहुताशचोरैरुच्चस्थलाश्वादिभयस्तृतीये ॥
आद्ये दृकाणे मिथुने च वातश्वासैर्द्वितीये वृषगे त्रिदोषैः ॥९॥
गजादितः पर्वतपाततो वा भवेदरण्ये मिथुनान्तदृक्के ॥
अपेयपाना दपि कण्टकाश्च स्वप्नाच्च कर्कप्रथमे दृकाणे ॥ १० ॥

वृषका द्वितीय द्रेष्काण होवे तौ पित्तके रोगसे या अग्निसे अथवा चोरोंके निमित्तसे मृत्यु होतीहै और यदि वृषके तृतीय द्रेष्काणका जन्म होवे तौ उच्च स्थान के निमित्तसे या घोड़े आदिके निमित्तसे मृत्यु होतीहै और मिथुनका प्रथम द्रेष्काण होवे तौ वातव्याधिसे या श्वाससे मृत्यु होतीहै और मिथुनका द्वितीय द्रेष्काण होवे तौ त्रिदोषसे मृत्यु होतीहै ॥ ९ ॥ मिथुनका तृतीय द्रेष्काण होवे तौ हाथी आदि से या पर्वतके गिरनेसे अथवा वनमें मृत्यु होतीहै और यदि कर्कका पहला द्रेष्काण होवे तौ अपेयके पीनेसे या कण्टकसे अथवा स्वप्नसे मृत्यु होतीहै ॥ १० ॥

विषादिदोषादतिसारतो वा कर्कस्य मध्यत्रिलवे मृतिः स्यात् ॥
महाभ्रमप्लीहकगुल्मदोषैः कर्कान्तदृक्के निधनं निरुक्तम् ॥ ११ ॥
विषाम्बुरोगैः श्वसनाम्बुरोगैरपानपीडाविषशस्त्रकैश्च ॥
क्रमेण सिंहस्थदृकाणकेषु नूनं मुनीन्द्रैर्मरणं प्रदिष्टम् ॥ १२ ॥

यदि कर्क द्वितीय द्रेष्काण होवे तौ विष आदि दोष से अथवा अतिसार रोगसे मृत्यु होतीहै और जो कर्कका अन्त्य द्रेष्काण होवे तौ महा भ्रमसे या पथरी गुल्म

रोगसे मृत्यु होतीहै ॥११॥ सिंहका प्रथम द्रेष्काण होवे तो विष से या जलन्धर रोग से और द्वितीय द्रेष्काण होवे तौ वातव्याधि और जलंधरादि जलके रोगों से और यदि सिंहका तृतीय द्रेष्काण होवे तौ अपान वायुकी पीड़ा से या विषसे या शस्त्र से मृत्यु होतीहै ॥ १२ ॥

कन्याद्यदृक्केनिलमौलिरुग्जोदुर्गाद्रिपाताच्च नृपैर्द्वितीये ॥
खरोष्ट्र शास्त्राम्बुनिपातकान्तानिमित्तजातं निधनं तृतीये ॥ १३॥
तुलादृकाणे प्रथमे निपातात्कलत्रतो वा पशुतोपि मृत्युः ।
नूनं द्वितीये जठरामयैश्च व्यालाज्जलाच्चापि भवेत्तृतीये ॥१४॥

कन्याका प्रथम द्रेष्काण होवे तौ वातव्याधि से या मस्तक रोग से मृत्यु होती है और कन्याका द्वितीय द्रेष्काण होवे तौ दुर्गस्थान से या पर्वतके गिरने से या राज निमित्त से मृत्यु होतीहै और जो कन्याका तृतीय द्रेष्काण होवे तौ गधा घोडा शस्त्र जल गिरना और स्त्री इनके निमित्त से मृत्यु होतीहै ॥ १३ ॥ तुलाका प्रथम द्रेष्काण होवे तौ गिरने के या स्त्रीनिमित्त सेपशु से मृत्यु होतीहै और तुलाका द्वितीय द्रेष्काण होवे तौ जठररोग से और यदि तुलाका तृतीय द्रेष्काण होवे तौ सर्प से या जल से मृत्यु होतीहै ॥ १४ ॥

पूर्वे दृकाणे खलु वृश्चिकस्य मृत्युर्विषान्नास्त्रभवोऽवगम्यः ॥
भारश्रमाद्वाकटिबस्तिरोगैर्भवेद्द्वितीये त्रिलवे तु मार्गे । १५ ॥
जङ्घास्थिभंगाश्मकलोष्टकाष्ठैर्भवेत्तृतीये त्रिलवेऽलिराशेः ॥
आद्ये दृकाणे धनुषो मृतिः स्याद्गुदामयैश्चापि मरुद्विकारैः॥१६॥

वृश्चिकका प्रथम द्रेष्काण होवे तौ विषान्न से या शस्त्र से मृत्यु होती है और यदि वृश्चिकका द्वितीय द्रेष्काण होवे तौ भार से श्रम से या कटि वस्ति (नले) के रोगों से मृत्यु होतीहै और तृतीय द्रेष्काण होवे तौ मार्ग में मृत्यु होतीहै॥१५॥ जंघाके हाड़ टूटने से या पाषाण से या लोष्ट से या काष्ठ से भी उक्त राशिके तृतीय द्रेष्काण होने से मृत्यु होतीहै, और धनराशिके प्रथम द्रेष्काण के होने से वात जन्य व्याधि से और गुदा के रोग से मृत्यु होतीहै ॥ १६ ॥

विदाहतो वा विपतः शराद्वा नाशो दृकाणे धनुषो द्वितीये ॥
भवेज्जलाद्वा जलचारिणो वा क्रोडामयाद्वा धनुषस्तृतीये ॥ १७॥

पूर्वे दृकाणे मकरस्य सिंहाद्व्याघ्राद्वराहाद्वृकतो द्वितीये ॥
यादोभुजङ्गैश्च तथा तृतीये चोराग्निशस्त्रज्वरतो हि मृत्युः॥१८॥

धनके द्वितीय द्रेष्काणके होनेसे दाह रोगसे या विषसे या बाणसे मृत्यु होती है और जो धनका तीसरा द्रेष्काण होवेतौ जलसे या जलजंतुसे या कमरके रोग से मृत्यु होतीहै ॥१७॥ जो मकरराशिका प्रथम द्रेष्काण होवेतौ सिंहसे या व्याघ्र से या वराहसे या ल्यारीसे मृत्यु होतीहै और जो मकरका द्वितीय द्रेष्काण होवेतौ मकरमत्स्यसे या सर्पसे और जो मकरका तृतीय द्रेष्काण होवे तौ चोरोंसे अग्निसे शस्त्रसे या ज्वरसे मृत्यु होती है ॥ १८ ॥

कुम्भस्य पूर्वत्रिलवेषु पत्नी सुतोदरव्याधिकृतो द्वितीये ॥
गुह्यामयात्पर्वतपातनाद्वा विषात्तृतीये मुखरुक्पशुभ्यः ॥ ॥१९॥
मानाद्यदृक्के ग्रहणीप्रमेहगुल्मांगनाभ्यश्च भवेद्द्वितीये ॥
जलोदराद्यैश्च गजग्रहैर्वा जलस्य मध्येपि च नौप्रभेदात् ॥

कुम्भराशिका प्रथम द्रेष्काण होवेतौ स्त्रीकी कियी या पुत्रका कियी या उदर व्याधिसे मृत्यु होतीहै और यदि कुम्भका द्वितीय द्रेष्काण हो तब गुह्यरोग से या पर्वतके गिरनेसे या विषसे और तृतीय द्रेष्काण होवेतौ मुखरोग या पशुसे मृत्यु होतीहै ॥१९॥ मीनका प्रथम द्रेष्काण होवेतौ ग्रहणी प्रमेह गुल्म इन रोगों से या स्त्री निमित्त उपदंशादि रोगोंसे मृत्यु होतीहै और जो मीनका द्वितीय द्रेष्काण होवे तो जलोदरसे और गजग्रहसे या जलके मध्यसे या नौका टूटनेसे मृत्यु होतीहै ॥२०

प्रान्त्ये दृकाणे पृथुरोमसंस्थे मृत्युः कुरोगैः परिवेदितव्यः ॥
एवं तदानीं निधनं नियुक्तं नैव प्रदृष्टं गगनेचरेन्द्रैः॥२१॥
पापान्तरे शीतकरे कुमार्यां शोषान्मृतिर्वा रुधिरप्रकोपात्॥
शुभान्तरे शीतकरेऽष्टमस्थे पातेन पाशेन हुताशनेन ॥२२ ।

मीनके अन्तके द्रेष्काणका जन्म होवे तब मत्स्यसे या कुत्सित रोगों से उस पुरुषकी मृत्यु जाननी चाहिये परन्तु यदि उस अष्टम भावमें कोई ग्रहन होवे और कोई ग्रह अष्टम भावको देखताभी न होवे तब ये सब योगफल देतेहैं नहीं तौ नहीं ॥२१॥ यदि चन्द्रमा पाप ग्रहोंसे युक्त होकर कन्याराशिका अष्टम स्थानमें बैठा होवे तब उस पुरुषको सूखनेके रोगसे या रुधिरके कोपसे मृत्यु होतीहै और यदिशुभग्र-

होंसे युक्त चन्द्रमा अष्टम घरमें बैठा होवे तब उस मनुष्यकी गिरने से या खांसीसे अथवा अग्निसे मृत्यु होती है ॥ २२ ॥

पापेक्षिता पापखगौ त्रिकोणे यद्वाष्टमे बन्धुभुजङ्गपाशात् ॥
दृकाणकाः स्युर्जनने हि यस्य कारागृहे स्यान्मरणं हि तस्य ॥२३
मीनोदयेऽर्केस्तगते मृगाङ्के सपापके चास्फुजिति क्रियस्थे ॥
भार्याकृतं स्यान्मरणं स्वगेहे वदन्ति सर्वे मुनयः पुराणाः ॥२४॥

यदि पापग्रह जिनको देखते होवें ऐसे पापग्रह नवम पंचम दोनों घरोंमें बैठेहोवें अथवा उक्त लक्षण पापग्रह अष्टम घरमें बैठे होवें तब उस मनुष्य की बंधनसे या सर्पसे या पाशसे मृत्यु होतीहै और जिस मनुष्यके जन्मसमयमें अष्टम स्थानमें पाप ग्रहों के द्रेष्काण नवमपंचम अष्टम घरमें वर्तमान होवें उस मनुष्य का जेलखाने में मरण होताहै ॥२३॥ यदि सूर्य मीनका होकर अस्त होवे और पापग्रह संयुक्त होकर बैठाहोवे और शुक्र क्रिय (मेष) का होकर बैठा होवे तब उस मनुष्यकी अपने स्त्रीके निमित्तसे मृत्यु होतीहै ऐसा सब पुराने मुनि कहतेहैं ॥२४॥

क्षीणेन्दुमन्दौ गगने चतुर्थे दिनाधिराजोऽवनिजोथ वा स्यात् ॥
मूर्तित्रिकोणोपगताः खलाख्याः शूलस्य मौलौ प्रलयं प्रयान्ति ॥१५
मेषूरणस्थे धरणीतनूजे दिवामणौ भूतलभावसंस्थे ॥
क्षीणेन्दुमन्दप्रविलोक्यमाने कष्टाभिघातेन वदन्ति मृत्युम् ॥२६॥

क्षीण चन्द्रमा और शनि दोनों दशम घरमें, सूर्य या मङ्गल चौथे घरमें, लग्न में और नवम पंचम घरमें पापग्रह बैठे होवें यह योग जिसके जन्मपत्र में होवेतौ वह मनुष्य शिरमें शूलसे मृत्यु पाताहै ॥ २५ ॥ दशम घरमें मङ्गल बैठाहोवे और क्षीण चन्द्रमा और शनि जिसे देखते होवें ऐसा सूर्य यदि चतुर्थ घरमें बैठा हो तब उस मनुष्य की कष्टाभिघातसे मृत्यु होती है ॥ २६ ॥

क्षीणेन्दुभौमार्किदिवाकरैः स्यादायुः खलग्नाम्बुगतैर्गदादेः ॥
मृत्युः खपुण्योदयपञ्चमस्थैस्तैरेव नानाविधकुट्टनेन ॥ २७ ॥
भूसूनुसूर्यार्किसुता यदि स्युश्चतुर्थजामित्रनभोगृहस्थाः ॥
कुर्वन्ति ते शस्त्रहुताशभूपप्रकोपजातं नियमेन मृत्युम् ॥ २८ ॥

क्षीण चन्द्रमा, मङ्गल, शनि, सूर्य ये चार ग्रह दशम घरमें या लग्नमें अथवा चतुर्थ घरमें बैठे होवें तो उस मनुष्यकी रोगादिकसे मृत्यु होती है और यदि उक्त वेही चारों ग्रह दशम, नवम, लग्न और पञ्चम इन घरोंमें बैठे होवें तो उस मनुष्यकी अनेक प्रकारके कुट्टनसे मृत्यु होती है ॥२७॥ मङ्गल, सूर्य और शनि चतुर्थ दशम सप्तम घरमें बैठे होवें तो उस पुरुषकी शस्त्र अग्नि और राजाका कोप इन निमित्तों से मृत्यु होतीहै ॥ २८ ॥

कुजेन्दुमन्दाः खजलद्विसंस्थाः क्रमिक्षतैस्ते मरणं प्रकुर्युः ॥
मेषूरणस्थैरविभौमसोमैर्भवेत्प्रवासेऽनलवाहनाद्यैः ॥२९॥
क्षीणेन्दुदन्दार्कयुते विलग्ने भूमीसुते सप्तमभावसंस्थे ॥
विनाशनं यन्त्रनिपीडनेन भवेदवश्यं परिवेदितव्यम् ॥ ३ ॥

मङ्गल चन्द्रमा शनि ए ग्रह यदि दशम चतुर्थ या द्वितीय इन स्थानोंमें से कहीं बैठे होवें तब उस पुरुषकी कृमियुक्त घावोंके निमित्तसे मृत्यु होतो है और सूर्य मङ्गल चन्द्रमा ये ग्रह जिसके दशम घरमें बैठे होवें तब उस मनुष्यकी अग्निसे या सवारीके मिमित्तसे परदेशमें मृत्यु होतीहै॥२९॥जो लग्न क्षीण चन्द्रमा शनि और सूर्य इन्होंसे संयुक्त होवे और सप्तम घरमें मङ्गल बैठा होवे तब उस पुरुष की यंत्र निपीडनसेही मृत्यु होती है ऐसा समझ लेना चाहिये ॥ ३० ॥

भौमे तुलायां च यमे च कर्के प्रालेयरश्मौ रविजालयस्थे ॥
विण्मूत्रितासंकुलितप्रदेशेऽवश्यं विनाशः परिवेदितव्यः ॥३१॥
मेषूरणास्ताम्बुगृहैः क्रमेण क्षीणेन्दुमन्दावनिपुत्रयुक्तैः ।
दुर्गान्तराले च शिलोच्चये वावनान्तराले प्रलयः किल स्यात॥३२॥

यदि मङ्गल तुलाका होवे शनि कर्क राशिका होवे और चन्द्रमा सिंहका होवे इस योगमें जन्म लेनेवाला पुरुष विष्ठा मूत्रादियुक्त प्रदेशमें मरताहै इसमें संन्देह नही है ॥ १ ॥ दशम घरमें क्षीण चन्द्रमा और सप्तम घरमें शनि और चतुर्थ घरमें मङ्गल बैठा होवे तो इस योगमें जन्म लेनेवाले पुरुषका किसी दुर्गभूमिमेंया पर्वत में या वनमें मरण होताहै ॥ ३२ ॥

बलोपपन्नावनिसूनुदृष्टे क्षीणे विधौ रन्ध्रगतेऽर्कपुत्रे
गुह्यामयाद्वा कृमिहेतुतो वा भवेदवश्यं मरणं रणाद्वा॥३३॥

मित्रे कलत्रोपगते सभौमे मन्देष्टमस्थे च विधौ चतुर्थे ।।
विहंगम श्वापदकारणेन निर्याणमाहुर्मुनयः पुराणाः ।।३४।।

बली मङ्गलसे दृष्ट क्षीण चन्द्रमा होवे और अष्टम घरमें शनि बैठा होवे तौ इस योगमें जन्म लेनेवाले पुरुषकी गुह्य रोगसे या कृमि पड़नेसे अथवा संग्रामके हेतुसे मृत्यु होती है ॥ ३३ ॥ सूर्य सप्तम घरमें मङ्गलके साथ बैठा होवे और अष्टम घरमें शनि बैठा होवे और चतुर्थस्थानमें चन्द्रमा बैठा होवे तौ इस योगमें जन्म लेनेवाले मनुष्यकी पक्षीसे या श्वापदोंसे मृत्यु होतीहै ऐसा पुराने आचार्योंने कहाहै ॥३४॥

लग्नाष्टमात्रिकोणेषु भानुभौमार्कजेन्दुषु ।।
पार्वतीयो भवेन्मृत्युर्भित्तिपातभवोऽथवा ।।३५।।
सौम्येऽष्टमस्थे शुभदृष्टियुक्ते धर्मेश्वरे वा शुभखेचरेन्द्रे ॥
तीर्थेमृतिः स्याद्यदि योगयुग्मंतीर्थे हि विष्णुस्मरणेन मृत्युः।।३६।।
धर्मस्वामी धर्मगोधर्मसंस्थो सूर्यक्ष्माजौ चेत्तदाग्निप्रवेशम्
कुर्यात्पत्नी लग्नजा मित्रनाथौ मित्रे स्यातां नान्यथा सद्भिरुक्तम्।।

लग्न अष्टम नवम पञ्चम घरमें क्रमसे सूर्य मङ्गल शनि चन्द्रमा बैठे होवें अर्थात् लग्नमें सूर्य, अष्टम मङ्गल,नवम शनि और पञ्चम चंद्रमा बैठे होवें तौ उस पुरुषकी पर्वतमें या भीतके नीचे दबनेसे मृत्यु होती है ॥३५॥ बुध अष्टम घरमें बैठा होवे उसे शुभ ग्रह देखता होवे अथवा नवम घरका स्वामी शुभ ग्रह अष्टम स्थानमें बैठा होवे उस पुरुषकी तीर्थमें मृत्यु होतीहै यदि जिसकी कुण्डलीमें इकट्ठे दोनों उक्त योग होवें उस पुरुषकी तीर्थमें भगवन्नाम लेतेलेते मृत्यु होतीहै ॥३६॥धर्म (नवम) स्थानका स्वामी धर्मस्थानमें हो, सूर्य और मङ्गल धर्मस्थानमें हो और लग्नका स्वामी और सप्तम स्थानका स्वामी परस्पर मित्र होवें तौ पत्नी सहगमन करती है अन्यथा नहीं ऐसा ज्ञानियोंने कहाहै ॥३७॥ इति ढुंढिराजकृते जातकाभरणे वनमालिचतुर्वेदकृतायां मार्जनीटीकायां भाषानुवादितायां निर्याणकथनं पंचत्रिंशोध्यायः ॥३५॥

अथ मेषराशिस्थचन्द्रनिर्याणम् ॥

इति प्रणीतं निर्याणं प्राचीनमुनिसंमतम् ।।
यवनैरुदितं यत्र सविस्तरमथोच्यते ।। १ ।।
धनवान्पुत्रवानुग्रः परोपकरणेरत ।
सर्वकर्मसमायुक्तः सुशीलो राजवल्लभः २।।

यह मैंने प्राचीन मुनियोंका कहा निर्याण (मृत्युयोग) कहा ॥ अब अगाड़ी यवनजातकोक्तरीतिसे कहे निर्याण को विस्तारसे कहते हैं ॥ १ ॥ कि जिस पुरुष के जन्म समयमें चन्द्रमा मेषराशिका होकर बैठा होवे वो पुरुष धनवान् पुत्रवान् बड़ा उग्र परोपकार करनेमें रत सब कर्मों से युक्त बड़ा सुशील राजाका प्यारा॥२॥

गुणाभिरामः सततं देवब्राह्मणपूजकः ॥
कोष्णशाकाल्पभोक्ता च ताम्रविस्तृतलोचनः ॥ ३ ॥
शूरः शीघ्रप्रमादी च कामी दुर्बलजानुकः ॥
शिरोव्रणयुतो दाता कुनखो सेवकप्रियः ॥ ४ ॥

सकल गुणोंमें अभिराम, भोगोंका भोगनेवाला, देवता ब्राह्मणोंका पूजन करने वाला, किंचित् गरम शाकाओंका भोजन करनेवाला, अरुणतायुक्त विशाल जिसके नेत्र, बड़ा शूरवीर, बड़ा प्रमादी, बड़ा कामी, पतली जिसकी पिंडरी, शिरमें घावों से युक्त, दान देनेवाला, कुत्सित जिसके नख, सेवकोंको प्रिय ॥ ४ ॥ ३ ॥

द्विभार्यः सङ्गरे भीरुश्चपलो नितरां भवेत ॥
प्रथमे सप्तमे वर्षे त्रयोदशमिते ज्वरः ॥ ५ ॥
षोडशे वा सप्तदशे वर्षे स्यात्तु विषूचिका ॥
तृतीये द्वादशे वापि जलाद्भीतिः प्रजायते ॥ ६ ॥

दो जिसके पत्नी, संग्राममें डरपोक, बड़ा चपल और पहले सातवें तेरहवें वर्ष में ज्वर वाला होताहै ॥ ५॥ उस पुरुषको षोडश या सप्तदशवर्षमें विषूचिका नाम रोग होताहै और तृतीय वर्षमें और द्वादशवर्षमें उसे जलसे भय होताहै ॥ ६ ॥

पंचविंशमिते वर्षे सन्तानं च निशान्धता ॥
द्वात्रिंशत्प्रमिते वर्षे शस्त्रघातः प्रजायते ॥ ७ ॥
कार्यारम्भप्रलापी च विदेशगमने रतः ॥
कृशाङ्गः शीघ्रगो मानी शुभलक्षणसंयुतः ॥ ८ ॥

पचीशवें वर्षमें उसके सन्तान होतीहै और रतौंधरोगसे युक्त और बत्तीसमे वर्षमें उस पुरुष को शस्त्रघात होताहै ॥ ७ ॥ कार्यके आरम्भको सबोंके अगाड़ी कहनेवाला, परदेशके जानेमें प्रवृत्त, दुर्बल जिसका अङ्ग, शीघ्र चलनेवाला, बड़ा मानी, शुभ लक्षणों से होताहै ॥ ८ ॥

वाताधिक्यः शुभैर्दृष्टे चन्द्रे नवति संमितम् ॥
आयुस्तस्य विनिर्देश्यं कार्तिकस्य सितेतरे ॥ ९ ॥
पक्षे बुधे नवम्यां च निशीथे च शिरोरुजा ॥
निधनं जायते नूनं जन्मनीन्दावजास्थिते ॥ १० ॥

वातकी अधिकता से युक्त होताहै और यदि चन्द्रमा को कोई शुभग्रह देखता होवे तौ उस पुरुष की नवे ९० वर्ष की उम्र कहनी चाहिये और कार्तिक वदी ९ बुधकी अर्धरात्रि के समय उस के शिरमें रोग होताहै और इसी रोग से वो पुरुष मरजाताहै ॥ ९ ॥ १० ॥ इति मेषराशिस्थचन्द्रनिर्याणम् ।

अथ वृषभराशिस्थचन्द्रे निर्याणम् ।

अल्पतेजा नरः स्तब्धः कर्मशुद्धिविवर्जितः ॥
सत्यवागर्थवान्कामी कामिनीवचनानुगः ॥ १ ॥
चिरायुरल्पकेशश्च परोपकरणे रतः ॥
पितुर्मातुर्गुरूणां च भक्तो भूपतिवल्लभः ॥ २ ॥

जिसके जन्म समयमें चन्द्रमा वृषराशिका होकर बैठताहै वो पुरुष अल्पतेज से युक्त, वड़ा अनम्र, कर्मशुद्धि से रहित, सत्य वोलनेवाला, वड़ा कामी, स्त्री के कहने को मानने वाला ॥ १ ॥ दीर्घायु, अल्प जिस के वाल, परोपकार करने में निरत, माता पिता गुरुका भक्त, राजाको प्रिय ॥ २ ॥

सभायां चतुरो नित्यं संतुष्टो येनकेनचित् ॥
पीडा स्यात्प्रथमे वर्षे तृतीयेऽग्निभयं दिशेत् ॥ ३ ॥
विषूचिकाभयं विद्यात्सप्तमे नवमे व्यथा ॥
दशमे रुधिरोद्गाराद्द्वादशे पतनं तरोः ॥ ४ ॥

सभामें चतुर और नित्य ही सन्तोषी होताहै और उस पुरुष के पहले वर्ष में पीड़ा होतीहै और तीसरे वर्षमें अग्नि से भय कहना चाहिये ॥ ३ ॥ सप्तम वर्ष में विशूचिका रोग से भय और नवम वर्ष में व्यथा जाननी चाहिये और दशम वर्षमें रुधिर निकलने से और वारहवें वर्षमें वृक्ष के गिरने से भय होताहै ॥ ४ ॥

सर्पाच्च षोडशे भीतिः पीडा चैकोनविंशके ॥
पञ्चविंशमिते तोयाद्भयं भवति निश्चितम् ॥ ५ ॥

त्रिंशन्मिते तथा पीडा द्वात्रिंशत्प्रमितेपि च ॥
श्लेष्मलः शान्तिभाक् शूरः सहिष्णुर्बुद्धिमान्नरः ॥ ६ ॥

सोलहवें वर्षमें सर्प से भय होताहै और उन्नीशवें वर्षमें पीड़ा होतीहै और पचीसवें वर्षमें जलसे भय अवश्यही होताहै॥५॥ तीसवें बत्तीसमें वर्षमें पीड़ाहोतीहै और कफप्रकृति, शांति रखनेवाला ,बड़ा शूरवीर,सहनशील,बड़ा बुद्धिमान् ॥६॥

सौम्यग्रहेक्षिते चन्द्रे षण्णवत्यष्टसंख्यकम् ।
आयुर्जन्तोर्विनिर्देश्यमवश्यं वचनात्सताम् ॥ ७ ॥
माघमासे नवम्यां च शुक्लपक्षे भृगोर्दिने ॥
रोहिण्यां निधनं विद्याज्जन्मनीन्दौ वृषस्थिते ॥ ८ ॥

जिसके जन्मसमय में चंद्रमा वृषराशिमें स्थित होवे और चन्द्रमाको कोई शुभ ग्रह देखता होवे तो मनुष्यकी छयानवे वर्षकी आयुष्य होती है ये सत्पंडितों के वचनसे कहनी चाहिये ॥ ७ ॥ माघमास, शुक्ल पक्ष,नवमी,शुक्रवारके दिन रोहिणी नक्षत्रमें मनुष्यका मृत्यु होतीहै ॥८॥ इति वृषभराशिस्त चंद्रनिर्याणम् ॥

अथ मिथुनराशिस्थे चन्द्रेनिर्याणम् ॥

ग्रामण्यां चतुरः प्राज्ञो दृढसौहृदकारकः ॥
मिष्टान्नाशी सुशीलश्च च्छिन्नवाक्चललोचनः ॥ १ ॥
कुटुम्बवत्सलः कामी कुतूहलरतिप्रियः ।
वयसः पूर्वभागे तु सुखी मध्ये तु मध्यमः ॥ २ ॥

जिस मनुष्यके जन्म समयमें चन्द्रमा,मिथुनका होकर बैठाहोवे वो मनुष्य ग्राम भरका स्वामी, बड़ाचतुर, बड़ा बुद्धिमान, दृढस्नेह करनेवाला,मिष्टान्न भोजन करने वाला; बड़ा सुशील,तोतला चंचल जिसके नेत्र ॥१॥ कुटुम्बमें स्नेह रखनेवाला, बड़ा कामी,कौतुक और रति जिसको प्रिय और अवस्थाके पूर्वभागमें सुखी और मध्य अवस्थामें न सुखी न दुखी ॥ २ ॥

चरमेतितरां दुःखी द्विभार्यो गुरुवत्सलः ॥
स्वल्पापत्यो गुणैर्युक्तो नरो भवति निश्चितम् ॥ ३ ॥
वृक्षाद्रीः पञ्चमे वर्षे षोडशेरिकृतं भयम् ॥

अष्टादशप्रमाणे तु कर्णरुक्परिपीडनम् ॥ ४ ॥

पिछली अवस्थामें अत्यन्त दुखी, दो भार्यासंपन्न, गुरुओंमें स्नेह रखनेवाला, थोरा जिसको संतान और गुणोंसे युक्त मनुष्य होताहै ॥ ३ ॥ उस मनुष्यको पांच में वर्षमें वृक्षसे भय होताहै और षोडश वर्षमें शत्रुसे भय होताहै और अठारहे वर्ष में कानके रोगकी पीड़ा होतीहै ॥ ४ ॥

विंशत्याप्रमिते वर्षे पीडात्यन्तं प्रजायते ॥
अष्टत्रिंशन्मिते नूनं पीडा स्यामृत्युना समा ॥ ५ ॥
भोगी दानरतो नित्यं सत्यधर्मपरायणः ॥
सुभगो विषयासक्तो गीतनृत्यप्रियः सुधीः ॥ ६ ॥

वीसवें वर्षमें अत्यन्त पीड़ा होतीहै और अड़तीसवें वर्षमें मृत्युके समान पीड़ा उस मनुष्यको होतीहै ॥५॥ भोगोंका भोगनेवाला, दान करनेमें निरत, नित्य सत्य और धर्ममें तत्पर, बड़ा सुन्दर, विषयोंमें आसक्त, गाने वजानेमें प्यार रखने वाला और सुन्दर जिसकी बुद्धि ॥ ७ ॥

शास्त्रज्ञः शुभवाग् जीवेदशीतिं शरदां नरः ॥
बैसाखे शुक्लपक्षे च द्वादश्यां बुधवासरे ॥ ७ ॥
माध्याह्ने हस्तनक्षत्रे निर्याणं खलु निर्दिशेत् ॥
इत्युक्तं मिथुनस्थे तु जन्मकाले कलानिधौ ॥ ८ ॥

शास्त्रका जाननेवाला और मीठी वाणी बोलनेवाला होताहै और वो अस्सी वर्णतक जीताहै और वैशाख शुक्ल द्वादशी बुधवार॥७॥ मध्यान्हकेसमय हस्तनक्षत्रमें उस मनुष्यकी मृत्यु कहनी चाहिये. ये समग्र फल मिथुनस्थ चन्द्रमाका कहाहै ॥८॥

इति मिथुनराशिस्थे चन्द्रे निर्याणम् ॥

अथ कर्कराशिस्थे चन्द्रे निर्याणम् ॥

परोपकृतिकर्त्ता च सर्वसंग्रहतत्परः ॥
पुत्रवान् गुणवान्साधुर्भक्तः पित्रोः स्त्रियाजितः ॥ १ ॥
अल्पायुः प्रथमे भागे निःस्वो मध्ये सुखी भवेत ॥
तृतीये धर्मसंसक्तस्तीर्थयात्रापरायणः ॥ २ ॥

जिस पुरुषके जन्म समयमें चन्द्रमा कर्कराशिका होकर बैठता है वो पुरुष परोपकार करने वाला, सब वस्तुओंका संग्रह करनेमें तत्पर, पुत्रवान् गुणवान् बड़ा साधु, माता पिताका भक्त और स्त्रीके कहेमें रहनेवाला ॥१॥ अल्प जिसकी आयु और आयुके प्रथम भागमें दरिद्र भोगनेवाला, मध्यायुमें सुखी, पिछली आयुमें धर्म करनेवाला और तीर्थयात्रा करनेमें परायण होता है ॥ २ ॥

रेखा तस्य भवेन्नूनं ललाटे मध्यगामिनी ॥
वामाङ्गेग्निभयं विद्याच्छीर्षरुक्परिपीडितः ॥ ३ ॥
बान्धवैर्बहुभियुक्तो बहुभार्यः प्रजायते ॥
भग्रहस्थितिवेत्ता च बहुमित्रः प्रियंवदः ॥४॥

उस मनुष्यके माथेमें मध्यगामिनी एक रेखा होती है और वाम अङ्गमें अग्निसे भय होता है और शिरमें रोगसे पीड़ित होता है ॥३॥ बहुत बांधवोंसे युक्त, बहुत जिसकी भार्या होतीहैं, भचक्रवर्ती ग्रहोंका जाननेवाला, बहुत जिसके मित्र और प्रियवाक्य बोलनेवाला होता है ॥ ४ ॥

रोगी स्यात्प्रथमे वर्षे तृतीये लिङ्गपीडनम् ॥
एकत्रिंशन्मिते वर्षे सर्पतो भयमादिशेत् ॥५॥
द्वात्रिंशत्प्रमिते वर्षे बहुपीडोद्भवो भवेत् ॥
पञ्चाशीतिमितं ब्रूयादायुः षण्णवतिश्च वा ॥६॥

प्रथम वर्षमें रोगी होता है और तृतीय वर्षमें लिङ्गमें पीड़ायुक्त होताहैं और इकतीसमे वर्षमें सर्पसे भय होता है ॥५॥ बत्तीसमे वर्षमें अत्यन्त पीड़ाकी उत्पत्ति होतीहै और पिचासी८५वर्षकी या छियाणमे वर्षकी आयु होती है ॥६॥

माघे मासि सिते पक्षे नवम्यां भृगुवासरे ॥
रोहिणीनामनक्षत्रे व्रजेदायुः प्रपूर्णताम् ॥७॥
प्रसूतौ कर्कराशिस्थे कुमुदानन्दने सति ॥
पुराणैर्मुनिभिःप्रोक्तं निर्याणमिति निश्चितम् ॥८॥

जिसके जन्मसमयमें कर्कराशिमें चन्द्रमा होवे उस पुरुषको आयु माघमहीनामें शुक्लपक्षमें नवमी शुक्रवारके दिन रोहिणी नाम नक्षत्रमें पूर्ण होतीहै यह पुराने ऋषियोंने निश्चय करके कहाहै ॥७॥ ॥८॥ इति कर्कराशिस्थेचन्द्रकृतनिर्याणम् ॥

अथ सिंहराशिस्थचन्द्रकृतनिर्याणम् ।

धनधान्यसमायुक्तः श्रीमांश्च समरप्रियः ॥
विद्वान्सर्वकलाभिज्ञो विदेशगमने रतः ॥ १ ॥
विशालपिङ्गलाक्षश्च क्रोधी स्वल्पात्मजो नरः ॥
सर्वगः शत्रुहन्ता च शिरोरुङ्निष्ठुरो महान् ॥२॥

जिसके जन्मसमयमें चन्द्रमा सिंहराशिका होकर बैठताहै वो पुरुष धनधान्यसे युक्त,धनवान्,संग्राम जिसको प्रिय, बड़ा विद्वान, सब कलाओंका जाननेवाला,परदेशके जानेमें निरत॥१॥बड़े विशाल पीले नेत्रोंसे युक्त,बड़ा क्रोधी, थोड़ी जिसके संतति, सर्वत्र जिसकी गति, शिरमें जिसके रोग और बड़ा निठुर होताहै ॥ २ ॥

भूताद्बाधादिमे वर्षे पञ्चमेऽब्देऽग्नितो भयम्॥
सप्तमे ज्वरबाधा च नृणां भवति निश्चितम् ३ ॥
विषूचिकोद्भवा पीडा नृणां भवति निश्चितम् ॥
विंशन्मिते भयं सर्पादेकविंशे प्रपीडनम् ॥ ४ ॥

प्रथम वर्षमें भूतसे बाधा होती है और पंचम वर्षमें अग्निसे बाधा होती है और सप्तमें वर्षमे पुरुषको अवश्यज्वरसे बाधा होती है॥३॥उस पुरुषकोबीस वर्षकी अवस्थामें अवश्यही विषूचिका नाम रोगसे बाधा होतीहै और इकईसवी वर्षमें सर्पसे अवश्य भय होता है॥ ४ ॥

अष्टाविंशन्मिते वर्षे चापवादभयान्वितः ॥
द्वात्रिंशत्प्रमिते नूनं वत्सरे परिपीडनम् ॥५॥
उदरे सव्यभागे तु वातगुल्मादि संभवः ॥
सुशीलः कृपणोत्यन्तं सत्यवादी विचक्षणः ॥ ६ ॥

अठाईसवें वर्षमें अपवादके निमित्तसे भय होता है और बत्तीसमें वर्षमें अवश्य ही पीड़ा होतीहै ॥५॥ उक्त वर्ष में पेटमें बांई बगलमें वात, गुल्मरोगका संभव होताहै और वो मनुष्य बड़ा सुशील, बड़ा कृपण, सत्य बोलने वाला और बड़ा चतुर होता है ॥ ६ ॥

शुभग्रहेक्षिते चन्द्रे शतायुर्जायते नरः ॥
फाल्गुनस्यासिते पक्षे पञ्चम्यां भौमवासरे ॥७॥
मध्याह्ने जलमध्ये च मृत्युर्नूनं न संशय ॥
सिंहराशिस्थिते चन्द्रे निर्याणमिदमीरितम् ॥ ८ ॥

जिसके जन्मसमयमें चन्द्रमा सिंहराशिमें होवे और उस चन्द्रमाको कोई शुभ ग्रह देखता होवे वह मनुष्य पूर्ण शत १०० वर्षायु होताहै और जो पुरुष फाल्गुण महीना कृष्णपक्ष पंचमी मङ्गलवार मध्यान्ह कालकेसमय जलके भीतर मृत्यु पाताहैं इसमें संदेह नहीं है यह सिंहराशिस्थित चन्द्रमाके निमित्त निर्याण कहा है ॥ ७ ॥ ॥ ८ ॥ इति सिंहराशिस्थितचन्द्रे निर्याणम् ॥

अथ कन्याराशिस्थे चन्द्रे निर्याणम् ।

स्वजनानन्दकृन्नित्यं धनवान्बहुसेवकः ॥
प्रवासी च कलाभिज्ञो गुरुभक्तः प्रियंवदः ॥१॥
देवताद्विजवर्याणां भक्तौ तत्परमानसः ॥
धर्मकर्मसमायुक्तो जनानामतिदुर्लभः ॥२॥

जिस मनुष्यके जन्म समयमें कन्या राशिमें चन्द्रमा स्थित होताहै वो मनुष्यस्वजनों को नित्य आनंद करनेवाला, धनवान, बहुतसे जिसके सेवक, परदेशका रहनेवाला कलाओंका जाननेवाला, गुरुओंका भक्त, प्रियवाक्यका कहनेवाला॥१॥देव ब्राह्मणों कीभक्तिमें तत्परमन वाला, धर्म कर्मसे युक्त, मनुष्योंको अत्यन्त दुर्लभ ॥२॥

कन्याल्पकत्वनापन्नो भूरिपुत्रो भवेन्नरः ॥
शिश्ने कण्ठप्रदेशे च लाञ्छनं निश्चितं भवेत् ॥३॥
वह्निपीडा तृतीयेऽब्दे पञ्चमे लोचनव्यथा ॥
नवमे द्वारबाधा च त्रयोदशमितेपि च ॥ ४ ॥

अल्प कन्या संततियुक्त, बहुपुत्र संततिवाला होताहै और उस पुरुषके कण्ठमें और शिश्न (लिंग) में अवश्य कोई तिल आदि चिन्ह होताहै ॥३ ॥ उस पुरुष को तीसरे वर्षमें अग्नि निमित्त से पीड़ा और पञ्चमवर्षमें नेत्रोंमें पीड़ा और नवम द्वादशवर्षमें गुदामें बाधा होतीहै ॥ ४ ॥

तथा पंचदशे वर्षे सर्पतो भयमादिशेत् ॥

एकविंशन्मिते वर्षे पतनं वृक्षभित्तितः ॥ ५ ॥
अरण्ये शस्त्रघातः स्याद्वर्षे त्रिंशन्मिते ध्रुवम् ॥
अशीत्यब्दे भवेदायुश्चन्द्रे सौम्यग्रहेक्षिते ॥ ६ ॥
चैत्रे कृष्णत्रयोदश्यां निधनं रविवासरे ॥
शीतद्युतौ स्थिते सूतौ कन्यायामिति संस्मृतम् ॥ ७ ॥

इसीतरह पन्द्रहवें वर्षमें सर्पसे भय होताहै और इकईसवें वर्षमें वृक्षसे या भीतसे भय होताहै ॥ ५ ॥ तीसवें वर्षमें वनमें शस्त्रसे घात होताहै और अशीतिवर्षकी आयु होतीहै यदि चन्द्रमा को सौम्य ग्रह कोई देखते होवे तो ॥ ६॥ चैत्र महीना के कृष्णपक्षकी त्रयोदशी तिथिको रविवार के दिन मृत्यु होतीहै यह कन्याके स्थित चन्द्रमा के विषयमें निर्याण कहाहै ॥ ७॥ कन्याराशिस्थिते चंद्रे निर्याणम् ॥

अथ तुलाराशिस्थितचंद्रे निर्याणम् ॥

मान्यः सर्वजनैर्नूनं वस्तुसंग्रहतत्परः ॥
भोगी धर्मपरः श्रीमान् बहुभृत्यो बिचक्षणः ॥ १ ॥
वापीकूपतडागादिनिर्मितौ सादरः सदा ॥
प्राज्ञः सर्वकलाभिज्ञो नृपाणामतिवल्लभः ॥ २ ॥

अब कहते हैं कि जिस मनुष्य के तुलाराशिका होकर चन्द्रमा बैठा होवे वो मनुष्य सब जनों को मान्य, अनेक वस्तुओंका संग्रह करने में तत्पर, भोगों का भोगनेवाला, धर्म करनेमें तत्पर, धनवान्, वहुत नोकरों का रखनेवाला, वड़ा चतुर ॥ १ ॥ वावड़ी कूआ तलाव आदिकों के वनानेमें आदर रखने वाला, वड़ा वुद्धिमान्, सब कलाओंका जाननेवाला, राजाओं को अति प्रिय ॥ २ ॥

मधुरान्नरसप्रीतिर्द्विभार्यः पितृभक्तिकृत ॥
स्वल्पापत्योल्पवन्धुश्च कृषिकर्मविचक्षणः ॥ ३ ॥
क्रयविक्रयसंप्राप्तिर्देवब्राह्मणपूजकः ॥
भार्यावचोनुगामी च सप्तमेब्देग्निजं भयम् ॥ ४ ॥

मीठे अन्नके खाने में प्रीति रखनेवाला, दो जिसके पत्नी, पिताकी भक्ति से युक्त, अल्पसंतानयुक्त, अल्पबन्धुयुक्त, खेती करने में वड़ा चतुर ॥ ३ ॥ वेचने खरीदनेवाला, देवता ब्राह्मणोंको पूजा करनेवाला और भार्याके कहेका करनेवाला

होता है और उस मनुष्यको सप्तम वर्षमें अग्निसे भय होताहै ॥ ४ ॥

अष्टमे ज्वरजा पीडा द्वादशे च जलाद्भयम् ॥
तरोस्तुरंगतः पातः सर्पभीर्वापि विंशके ॥ ५ ॥
एवं विंशन्मिते पीडा चन्द्रे सौम्यग्रहेक्षिते ॥
पञ्चाशीतिर्भवेदायुर्वैशाखस्याद्यपक्षके ॥
सार्पेऽष्टम्यां भृगोर्वारे निधनं पूर्वयामके ॥
तुलाराशिस्थिते चन्द्रे नियाणमिति सूचितम् ॥ ७ ॥

अष्टम वर्षमें ज्वरकी पीडासे युक्त और बारहवें वर्षमें जलसे भययुक्त होता है और वीशमें वर्षमें वृक्षसे घोड़े से गिरनेका भय और सर्पके काटनेका भय होताहै ॥ ५ ॥ इस तरह विंशन्मित वर्षमें पीड़ा होतीहै और जो कोई शुभ ग्रह चंद्रमाको देखता होवे तब पिचासी वर्षकी आयु होतीहै, वैशाख महीनाके कृष्णपक्षकी॥६॥ अष्टमी शुक्रवार प्रथम प्रहरमें श्लेषा नक्षत्रमें मृत्यु होतीहै, यह तुलाराशिस्थ चंद्रमाका निर्याण सूचन कियाहै ॥ ७ ॥ इति तुलाराशिस्थे चंद्रे निर्याणम् ॥

अथ वृश्चिकराशिगतचंद्रे निर्याणम् ॥

परतापकरः क्रोधी विद्वेषी कलहप्रियः ॥
विश्वासघातकश्चापि मित्रद्रोही विचक्षणः ॥ १ ॥
असन्तुष्टो नृपैः पूज्यो विघ्नकर्तान्यकर्मणि ॥
शुभलक्षणसंयुक्तो गुप्तपापश्च विक्रमी ॥ २ ॥
बहुभृत्यश्चतुर्बन्धुर्द्विभार्यो जायते पुमान् ॥
प्रथमेऽब्दे ज्वरात्पीडा तृतीये भयमग्नितः ॥ ३ ॥
पंचमेऽब्दे ज्वरात्पीडा तथा पंचदशेपि च ।
पंचविंशन्मिते वर्षे पीडा स्यान्महती ध्रुवम् ॥ ४ ॥

जिसके जन्मलग्नमें चंद्रमा वृश्चिकराशिका होकर बैठा होवे वो मनुष्य दूसरेको ताप करनेवाला, बड़ा क्रोधी, विद्वेष करनेवाला, कलह करना जिसको प्रिय, विश्वासघात करनेवाला, मित्रों से द्रोह करनेवाला, विचक्षण (चतुर) ॥ १ ॥ संतोषसे रहित, राजाओंको पूज्य, दूसरेके काममें विघ्न करनेवाला, शुभ लक्षणों से युक्त, गुप्तपापका करनेवाला, बड़ा पराक्रमी, बहुतसे जिसके सेवक, चार जिसके भाई, दो जिसको भार्या, ऐसा होताहै, और उस मनुष्यके देहमें पहले वर्षमें ज्वरसे पीड़ा

होतीहै, तीसरे वर्षमें अग्निसे भय होताहै, फिर पंचमवर्षमें ज्वरसे पीड़ा होती है और पंद्रहवें वर्षमें भी ज्वर पीड़ा होतीहै और पंचविषतिमे वर्षमें भी वड़ी भारी पीड़ा होतीहै ॥२॥३॥४॥

चन्द्रे सौम्यग्रहैर्दृष्टे नवत्यब्दान्स जीवति ॥
ज्येष्ठे मासि सिते पक्षे दशम्यां बुधवासरे ॥ ५ ॥
हस्तनक्षत्रसंयुक्ते मध्यरात्रे गते सति ॥
चन्द्रे वृश्चिकराशिस्थे निर्याणमिति कीर्तितम् ॥ ६ ॥

और चन्द्रमा सौम्य ग्रह करके दृष्ट होवे तो वह पुरुष नब्वे९० वर्षकी आयु तक जीताहै और ज्येष्ठका मास शुक्लपक्ष दशमी बुधवार ॥५॥ हस्त नक्षत्रमें अर्द्ध रात्रिके समय मृत्यु होतीहै यह वृश्चिकराशिस्थ चन्द्रमाके हेतुसे पुरुषका निर्याण (मरण) कहाहै ॥६॥ इति वृश्चिकराशिस्थचन्द्रकृतनिर्याणम् ॥

अथ धनूराशिस्थचन्द्रे निर्याणम् ।

प्राज्ञो धर्मी सुपुत्रश्च राजमान्यो जनप्रियः ॥
द्विजदेवार्चनप्रीतिर्वस्तुसंग्रहतत्परः ॥ १ ॥
सभायां च भवेद्वक्ता सुनखी सुमतिः शुचिः ॥
स्थूलदन्ताधरग्रीवः काव्यकर्ता प्रगल्भकः ॥ २ ॥

जिस मनुष्यके जन्मसमयमें चन्द्रमा धनराशिका होकर वैठताहै वो मनुष्य वड़ा बुद्धिमान्, धर्माचरण करनेवाला, उत्तम जिसके पुत्र; राजाओं को मान्य, सबों को प्यारा,ब्राह्मण देवताओंकी पूजामें तत्पर,सब वस्तुओंका संग्रह करनेवाला ॥१ सभामें बोलनेवाला, सुन्दर जिसके नख, सुन्दर जिसकी बुद्धि, वड़ा पवित्र, स्थूल दन्त ओष्ठ ग्रीवावाला, काव्यका बनानेवाला, वड़ा धृष्ट ॥ २ ॥

कुलशाली वदान्यश्च सभाग्योदृढसौहृदः ॥
निम्नपादतलः क्लेशी साहसी विनयान्वितः ॥ ३ ॥
शान्तक्षिप्रप्रकोपी च तापसः स्वल्पभुङ्नरः ॥
स्वल्पापत्यः सुबन्धुश्च पूर्वे वयसि वित्तवान् ॥ ४ ॥

कुलवान्, दाता,बड़ा भाग्यवान्, दृढ स्नेह करनेवाला, निम्न (गेहरे) जिसके पावोंके तलुये, क्लेश भोगनेवाला, साहस कर्म करनेवाला, विनयसे युक्त, शान्तिसे रहने वालाभी शीघ्रही क्रोध करनेवाला,बड़ा तपस्वी,थोड़ा भोजन करनेवाला, अन्य

जिसके संतति, उत्तम जिसके भाईवन्द और पूर्वावस्थामें धनवान होताहै ॥३॥४॥

सबाधः प्रथमे वर्षे महापीडा त्रयोदशे ॥
अष्टषष्टिमितं प्राहुरायुर्वा पञ्चसप्ततिः ॥ ५ ॥
चन्द्रे सर्वशुभैर्दृष्टे शतवर्षाणि जीवति ॥
आषाढस्यासिते पक्षे पञ्चम्यां भृगुवासरे ॥ ६ ॥
निशायां हस्तनक्षत्रे निधनं सर्वथा भवेत् ॥
नियाणमिति संप्रोक्तं चन्द्रे सूतौ धनुस्स्थिते ॥ ७ ॥

उस मनुष्यको प्रथम वर्षमें बाधा होतीहै फिर तेरहवें वर्षमें महापीड़ा होतीहै और ६८ वर्षकी अथवा ७५ वर्ष की उस मनुष्यको आयुष्य होतीहै ॥५॥ यदि चन्द्रमाको सब शुभग्रह देखते होवें तो वो मनुष्य पूर्ण भी १०० वर्ष की आयु को भोगताहै और असाढ़ कृष्ण पंचमी शुक्रवारके दिन॥६॥ हस्त नक्षत्रमें रात्रिमें मृत्यु होतीहै, यह राशिस्थ चन्द्रमाका निर्याण(मृत्यु)है ॥७॥ इति धनुस्थिचन्द्रकृतनिर्याण॥

अथ मकरराशिस्थचन्द्रकृतनिर्याणम् ॥

धीरो विचक्षण क्लेशी पुत्रवान् नृपतिप्रियः ॥
कृपालुः सत्यसम्पन्नो वदान्यः सुभगोऽलसः ॥ १ ॥
कृष्णतालुः पुमान्नूनं विस्तीर्णकटिरुद्भवेत् ॥
पञ्चमे वत्सरे पीडा सप्तमे च जलाद्भयम् ॥ २ ॥

जिस मनुष्यके जन्मसमयमें मकरराशिका होकर चन्द्रमा स्थित होताहै वो पुरुष बड़ा धीर, चतुर, क्लेशों का भोगने वाला, पुत्रवाला, राजाका स्नेहपात्र, बड़ा दयालु, सत्यवक्ता, दाता, बहुत सुन्दर, बहुत आलकसी ॥१॥ काली जिसकी तालु और बड़ी पुष्ट जिसका कमर, ऐसा होताहै और उसको पंचम वर्षमें पीड़ा होती है और सप्तम वर्षमें उसको जलसे भय होताहै ॥ २ ॥

दशमे पतनं वृक्षाद्द्वादशे शस्त्रपीडनम् ॥
विंशन्मिते ज्वराद्बाधा शाखासु पञ्चविंशके ॥ ३ ॥
पंचत्रिंशत्समाकाले वामाङ्गेग्निभयं दिशेत् ॥
अब्दानां नवतिर्नूनमायुस्तस्य प्रकीर्तितम् ॥ ४ ॥
श्रावणस्य सिते पक्षे दशम्यां भौमवासरे ॥
ज्येष्ठायां निधनं नूनं चन्द्रे मकरसंस्थिते ॥ ५ ॥

दशमवर्षमें वृक्षके गिरनेसे भय होताहै और बारहवें वर्षमें शस्त्रसे भय होता है और बीसवेंवर्षमें उसको ज्वरसे विशेषकर बाधा होता है और पचीसवेसाल में वृक्षको हारसे भय होता है ॥३॥ पेंतीशवे वर्ष में वाम अङ्गमें अग्निसे भय होता है और मनुष्यकी नब्बे ९० वर्षकी आयु होती है ॥४॥ उस मनुष्यकी श्रावण शुदी दशमी मङ्गलवार मकरके चन्द्रमामें ज्येष्ठानाम नक्षत्र में मृत्यु होती है ॥ इति मकरराशिस्थ चन्द्रकृतनिर्याणफलम् ।

अथ कुम्भराशिस्थे चन्द्रे निर्याणम्

दाता मिष्टान्नभोक्ता च धर्मकार्येषु सत्वरः ॥
प्रियवक्तृत्वसंयुक्ता नरः क्षीणकलेवरः ॥१॥
स्वल्पापत्यो द्विभार्यश्च कामी द्रव्यविवर्जितः ॥
वामहस्ते भवेल्लक्ष्म पीडा प्रथमवत्सरे ॥ २ ॥

जिस पुरुषके जन्म समयमें चन्द्रमा कुम्भराशिका होकर बैठा होवे वो पुरुष दानका देनेवाला, मिष्टानभोजन करनेवाला, धर्मकाम करने में तत्पर अथवा धर्म कामको तुरन्त करनेवाला, प्रिय वाक्य बोलनेवाला, दुबला जिसका अङ्ग॥१॥अल्प जिसके संतान, दो जिसकी पत्नी, बड़ा कामी, द्रव्यसे हीन और उस पुरुषके वाम हातमें कोई चिन्ह होताहै और उसके देहमें प्रथम वर्षमें पीड़ा होती है ॥२॥

पञ्चमेऽग्निभयं विद्यादथ द्वादशवत्सरे ॥
व्यालाद्वा जलतो भीतिरष्टाविंशतिमे क्षतिः ॥ ३ ॥
चौरेभ्यश्च भवेदायुर्वर्षाणां नवतिध्रुवम् ॥
भाद्रे मास्यसिते पक्षे चतुर्थ्यां शनिवासरे ॥ ४ ॥
भरणीनामनक्षत्रे गृणन्ति मरणं नृणाम् ॥
एवमुक्तं मुनिश्रेष्ठश्चन्द्रे जन्मनि कुम्भगे ॥५॥

पांचवे बारहवे वर्ष में अग्निनिमित्तसे पीड़ा होतीहै अट्ठाइसमें वर्षमें सर्पसे या जलसे भीति उस पुरुषको होती है ॥ ३ ॥ अट्ठाईसवें वर्षमें चोरोंसे नुकसान होता है और नब्बे ९० वर्षकी आयुष्य उस पुरुषकी होती है और भादों मास कृष्णपक्ष चतुर्थी शनिवार ॥४॥ भरणी नाम नक्षत्रमें उस पुरुषकी मृत्यु होतीहै, हे मुनिश्रेष्ठ ! यह मैंने कुम्भराशिस्थ चन्द्रमाका निर्याण(मृत्यु) का फल कहा है ॥५॥ इति कुम्भराशिगतचन्द्रकृतनिर्याणम् ।

अथ मीनराशिस्थचन्द्रकृतनिर्याणम् ।

धनी मानी विनीतश्च भोगी संत्दृष्टमानसः ॥
पितृमातृसुराचार्यगुरुभक्तिपरो नरः ॥ १ ॥
उदारो रूपवान् श्रेष्ठो गन्धमाल्यविभूषणः ॥
पञ्चमेब्दे जलाद्भीतिरष्टमे ज्वरपीडनम् ॥ २ ॥

जिस पुरुषके जन्मसमय में चन्द्रमा मीन राशिका होकर स्थित होता है वो पुरुष धनवान्, सर्वत्र मान पानेवाला, बड़ा नम्र, भोगोंका भोगनेवाला, सदा प्रसन्न मुखसेरहने वाला, माता पिता गुरु आचार्य देवताओंमें भक्ति रखनेवाला॥१॥बड़ा, उदार, बड़ा रूपवान्, सबोंमें श्रेष्ठ, सुगंधित चन्दन लगाने वाला, और पुष्पोंके आभूषण धारण करनेवाला होता है परन्तु उस पुरुषको पांचवे सालमें जलसे भय होताहै और अष्टम सालमें ज्वरसे पीड़ा होती है ॥२॥

द्वाविंशे महती पीडा चतुर्विंशमितेब्दके ॥
पूर्वाशां गमनं चायुरब्दानां नवतिः स्मृता ॥ ३ ॥
आश्विनस्यासिते पक्षे द्वितीयायां गुरोर्दिने ॥
कृत्तिकानामनक्षत्रे सायं मृत्युर्न संशयः ॥२ ॥
इतीरितं तु निर्याणं यवनाचार्यसंमतम् ॥
मीनस्थे यामिनीनाथे भवेदत्र न संशयः ॥५॥

वाइसमें सालमें देहमें बड़ी भारी पीडा होतीहै चोवीशवें सालमें उसकी पूर्व दिशामें यात्रा होती है और नवे सालकी उसकी आयु होतीहै ॥३॥ और आश्विन मासके कृष्णपक्षकी दूजके दिन बृहस्पतिवार कृत्तिकानाम नक्षत्रमें सायंकालके समय उस पुरुषकी मृत्यु होतीहै ॥४॥ यह निर्याण(मृत्यु) ययनाचार्यकी संमति यवनजातकके अनसार कहा है, मीनराशिस्थ चन्द्रमाके होनेसे ये सब फल होते हैं इसमें संदेह नहीं है ॥ ५ ॥ इति मीनराशिस्थितचन्द्रकृतनिर्याणम् ॥ इति देवज्ञढुंढिराजकृते जातकाभरणे वनमालिचतुर्वेदिकृतायां मार्जन्यां टीकायांभाषानुवादितायां निर्याणाध्यायः पंचत्रिंशः ॥ ३५ ॥

अथाग्रे स्त्रीजातकाध्यायो निगद्यते ॥

यज्जन्मकालादुदितं नराणां होराप्रवीणैः फलमेतदेव ॥
स्त्रीणां प्रकल्प्यं खलु चेदयोग्यं तन्नायके तत्परिवेदितव्यम् ॥१॥
लग्ने शशाङ्के च वपुर्विचिन्त्यन्तयोः कलत्रे पतिवैभवानि ॥
सुताख्यभावे प्रसवोऽवगम्यो वैधव्यमस्याः किल कालगेहे ॥ २॥

जो ज्योतिषशास्त्र जाननेवाले आचार्योंने पुरुषोंके वास्ते फल कहा येही फल स्त्रियोंके लिये भी कहना चाहिये यदि वो फल नहीं मिले तब वो फल उस स्त्रीके स्वामीके विषय में जान लेना चाहिये ॥ १ ॥ स्त्रियोंके जन्मपत्र देखनेकी रीति यह है कि लग्न में चन्द्रमा जिस जगे स्थित होवे इन दोनों घरों से तो स्त्री के शरीर विषयका विचार करना चाहिये और लग्नसे सप्तम घरसे और चंद्रमासे सप्तम घरसे स्त्रीके पतिके विषयका विचार करना चाहिये और लग्नसे और चन्द्रमासे जो पञ्चम घरहै उससे संतति के विषयका विचार करना चाहिये और लग्न से अष्टम और चंद्रमा से जो अष्टम घर है उससे स्त्रीके वैधव्यका विचार करना चाहिये ॥ २ ॥

लग्ने च चन्द्रे समराशियाते कान्ता नितांतं प्रकृतिस्थिता स्यात् ॥
सद्रत्नभूषासहिताथ सौम्यैर्निरीक्षितौ तौ यदि चारुशीला ॥ ३ ॥
तयोः स्थितिश्चेद्विषमाख्यराशौ नारी नराकारधरा कुरूपा ॥
पापग्रहालोकनयोगयातौ तौ चेत्कुशीला गुणवर्जितालम् ॥ ४ ॥

जो समराशिका होकर चंद्रमा लग्नमें होवे तव स्त्री निरन्तर अपनी प्रकृति में स्थित होतीहै और उत्तम रत्नभूषणोंसे युक्त होतीहै और यदि लग्न को और चन्द्रमाको सौम्य ग्रह देखते होवें तब वो स्त्री बड़े पवित्र स्वभाव से युक्त होती है ॥ ३ ॥ जो लग्नभी विषमराशि होवे और चन्द्रमा भी विषम राशिका होकर बैठा होवे तौ स्त्री पुरुषके आकार को धारण करने वाली कुरूपा होतीहै, यदि पाप ग्रह लग्न को और चन्द्रमाको देखते होवें तव वह स्त्री खोटे स्वभाववाली और गुणोंसे रहित होती है ॥ ४ ॥

लग्नेन्द्वोर्बलवान कुजस्य भवने शुक्रस्य त्र्यंशके
कन्या स्याददतिनिन्दिता सुरगुरोः साध्वी नितान्तं भवेत ॥
दुष्टा भूतनयस्य नूनमुदिता सौम्यस्य मायाविनी
दासीतिग्ममरीचिसूनुगगनाग्न्यंशे फलानि क्रमात ॥ ५ ॥
तारानायकपुत्रभेऽवनिसुतत्रिंशल्लवे कापटा
शौक्रे हीनमनोभवा शशिसुतस्यातीव युक्ता गुणैः ॥
देवाधीशपुरोहितस्य हि भवेत्साध्वी नितान्तं तथा
त्वाग्न्यंशेर्कसुतस्य सा निगदिता क्लीवस्य भार्या बुधैः ॥ ६ ॥

लग्नमें और चन्द्रमाके स्थानमें वली मङ्गलके घरमें यदि शुक्रका त्रिंशांश होवे

तब वो कन्या अत्यन्त निन्दिता होती है, यदि बृहस्पतिका त्रिंशांश होवे तब वो कन्या निरन्तर पतिव्रता होतीहै,यदि मङ्गल काही त्रिशांश हो तौ वो कन्या अति-दुष्टा होतीहै, बुधका त्रिंशांश होवे तो मायाविनी कन्या होतीहै, सूर्यके पुत्र शनिका त्रिंशांश होवे तौ वह कन्या दासी का काम करने वाली होती है इस प्रकार फल जानने चाहिये ॥ ५ ॥ बुधके भवनमें अर्थात् जिस घरमें बुध बैठा होवे वहां यदि मङ्गलका त्रिंशांश होवे तो कार्पटा यानी अतिमलिन फटे वस्त्र पहरनेवाली वो कन्या होतीहै, यदि बुधके स्थानमें शुक्रकाही त्रिंशांश होवे तौ कामदेव से रहित वो कन्या होतीहै यदि बुधके स्थानमें बुधकाही त्रिशांश होवे तब वो कन्या अत्यन्त गुणों से युक्त होतीहै, यदि बुधस्थान में बृहस्पतिका त्रिंशांश होवे तब वो स्त्री निरन्तर पतिव्रता होतीहै, यदि बुधके स्थानमें शनिका त्रिंशांश होवे तौ वो स्त्री नपुंसककी भार्या होतीहै ॥ ६ ॥

देवाचार्यगृहेऽमृतांशुरथवा लग्नं खवह्न्यंशके
भूसूनोर्गुणशालिनी सुरगुरोः ख्याता गुणानां गणैः ॥
तारास्वामिसुतस्य चारुविभवा शुक्रस्य साध्वी भवे-
न्नूनं भानुसुतस्य चाल्पसुरता कान्ता बुधैः कीर्तिता ॥ ७ ॥

दैत्याचार्यगृहे सुरेन्द्रसचिवस्यांशवह्न्यंशके
लग्ने वाप्युडुनायको गुणवती भौमस्य दौष्ट्याधिका
सौम्यस्यातिकलाकलापकुशला शुक्रस्यचञ्चद्गुणै
र्युक्ताद्यैर्निपुणैर्दिवामणिसुतस्यांशे पुनर्भूरिति ॥ ८ ॥

देवाचार्य (बृहस्पति) के घरमें यदि चन्द्रमा होवे अथवा जन्मलग्न होय और जन्मलग्नमें मङ्गलका त्रिंशांश होवे तब वो कन्या गुणशालिनी होती है और यदि बृहस्पतिका त्रिंशाश होवे तौ वह कन्या गुणगणों से युक्त होती है और बुधका त्रिंशांश होय तौ वह कन्या उत्तम वैभवोंसे युक्त होवे, शुक्रका त्रिशांश होवे तोवो कन्या साध्वी होती है शनिका यदि त्रिंशांश होवे तो वो कन्या अल्पसुरता (रति हीना) होतीहै ॥ ७ ॥ शुक्रके स्थानमें बृहस्पतिका त्रिशांश होवे अथवा लग्नमें चंद्रमा होवे तब वो कन्या गुणवती होतीहै और शुक्रके घरमें यदि मङ्गलका त्रिंशांश होवे तो अधिकदुष्टतायुक्त होती है और जो शुक्रके घरमें बुधका त्रिंशांश होवे तब वो कन्या अत्यन्त कलासमूहोंमें कुशल होतीहै और शुक्रके घरमें यदि शुक्रका ही

त्रिंशांश होवे तब उत्तम गुणोंसे युक्त वो कन्या होतीहै और यदि शुक्रके घरमें शनिका त्रिंशांश होवे तब वो कन्या पुनर्भू नामकी (गर्भिणी व्याही जावै)होतीहै॥८

मन्दालये खाग्निलवे कुजस्य दासी च सौम्यस्य खला हि बाला ॥
बृहस्पतेःस्यात्पतिदैवता सा बन्ध्या भृगोर्नीचरतार्कसूनोः॥९॥

लग्ने वा बिधुरर्कमन्दिरगतो भौमस्य खाग्न्यंशके
स्वेच्छासंचरणोद्यताशशिसुतस्यातीव दुष्टाशया ॥
देवाधीशपुरोधसो निगदिता सा राजपत्नी भृगोः
पौंश्चल्याभिरता शनेरतितरां पुंवत्प्रगल्भाङ्गना ॥ १० ॥

शनिके घरमें मङ्गलका त्रिंषांश होवे तब वो कन्या दासी होतीहै और शनिके घरमें बुधका त्रिंशांश हावे तबवो कन्यादुष्टा होतीहै और वृहस्पतिका त्रिंशांश होवेतौ वो कन्या पतिव्रता होतीहै और यदि शनिके घरमें शुक्रका त्रिंशांश होवे तौवो कन्या वंध्या होतीहै और यदि शनिके स्थानमें शनिकाही त्रिंशांश होवे तौ वो स्त्री नीच पुरुषके सङ्ग रति करनेवाली होतीहै ॥९॥ सिंह लग्न होवे उसमें चन्द्रमा बैठा होवे और मङ्गलका त्रिंशांश होवे तौ वह स्त्री स्वेच्छाचारिणी होतीहै और सिंह लग्न चन्द्रमा युक्त होवे उसमें बुध का त्रिंशांशहोवे तब वो स्त्री दुष्टांतःकरणयुक्त होती है और सिंहलग्न चन्द्रमायुक्तहोवे उसमें वृहस्पतिका त्रिंशांशहोवेतब वहस्त्री राजा की पत्नी होतीहै और यदि चन्द्रयुत सिंहलग्नमें शुक्रका त्रिंशांश होवे तबवो स्त्री पुंश्चली कर्ममें निरत होतीहै और यदि चन्द्रयुत सिंहलग्नमें शनिका त्रिंशांश होवे तो वह स्त्री पुरुषके समान ढीठ होती है ॥ १० ॥

चन्द्रागारे खाग्निभागे कुजस्य स्वेच्छावृत्तिर्यस्य शिल्पे प्रवीणा ।
वाचांपत्युःसद्गुणा भार्गवस्य साध्वी मन्दस्य प्रियप्राणहन्त्री ॥११॥
अन्योन्यभागे क्षणगौसितार्की यद्वा सितर्क्षे तनुगे घटांशे ॥
कन्दर्पशान्तिं कुरुते नितान्तं नारी नराकार कराङ्गनाभि ॥१२॥

चन्द्रमाके स्थान (४) में जो मङ्गलका त्रिंशांश होवे तबवो स्त्री स्वेच्छाचारसे चलनेवाली और कारीगरीके काममें प्रवीण होतीहै और जो चन्द्रमाके घर (४) में

बृहस्पतिका त्रिंशांशहोवे तब उत्तम गुणोंसे युक्त स्त्री होतीहै और चन्द्रग्रह कर्कमें शुक्र का त्रिंशांश होवे तो वो स्त्री पतिव्रता होतीहै और यदि चन्द्रग्रहमें शनिका त्रिंशांश होवे तब वह स्त्री अपने खसमको मारनेवाली होतीहै ॥ ११ ॥ जिस स्त्रीके जन्म पत्रमें शनिको शुक्र और शुक्र शनि परस्पर देखते होवें और शुक्र शनिके त्रिशांश में होवे और शनि शुक्रके त्रिंशांशमें होवे अथवा लग्नमें वृषराशि या तुलाराशि होवे उसमें कुम्भका नवांश होवेतौ सबसमय कामदेवकी शांतियुक्त वोस्त्री होती है और वह स्त्री स्त्रियोंके साथ पुरुषके आकारसे रहनेवाली होतीहै ॥ १२ ॥

शून्ये मन्मथमन्दिरे शुभखगैर्नालोकिते निर्बले
बालायाः किल नायको मुनिवरैः कापूरुषः कीर्तितः ॥
जामित्रं बुधमन्दयोर्यदि गृहं षण्ढो भवेन्निश्चितं
राशौ तत्र चरे विदेशनिरतो द्व्यङ्गे च मिश्रस्थितिः ॥१३॥
सप्तमे दिनपतौ पतिभुक्ता क्षोणिजे च विधवा खलु बाल्ये ॥
पापखेचरविलोकनयाते मन्दगे च युवतिर्जरती स्यात् ॥१४॥

जिस स्त्रीका लग्नसे सप्तमघर खाली होवे और शुभग्रह कोई उसे देखता हो और सप्तम भवन निर्बल होवे उस स्त्रीका पति कायर होताहै अथवा लग्नसे सप्तम जो घर होवे वो बुधकी या शनिको राशि युक्त होवे तब उसका पति नपुंसक होता है और यदि सप्तम घरमें चरराशि होवे तौ उसका पति परदेशका निवासी होताहै यदि सप्तम घरमें दुःस्वभाव राशि होवे तौ उसका पति कभी स्वदेशमें और कभी परदेश का रहनेवाला होताहै ॥ १३ ॥ जिस स्त्रीके लग्नसे सप्तम घरमें सूर्य होवेतौ वह अपने पतिसे भोगी हुई होतीहै और सप्तम घरमें मङ्गल होवेतौ वो कन्या बालक पनमें ही विधवा होतीहै और जिसके सप्तम ग्रह को पापग्रह देखते होवें और शनि स्थित होवे तौ वह स्त्री युवा अवस्थामें ही वृद्ध हो जातीहै ॥

खलैः कलत्रे च गतालका स्यात्कान्ताविमिश्रैश्च भवेत्पुनर्भूः ॥
कलत्रसंस्थे विबले खलाख्ये सौम्यैरदृष्टे विभुना विमुक्ता ॥१५॥
अन्योन्यांशावस्थितौ भौमशुक्रौ स्यातां कान्तासंगतान्येन नूनम् ॥
चन्द्रोपेतौ शुक्रवक्रौ स्मरस्थावज्ञेव स्यात्स्वामिनश्चामनन्ति ॥१६॥

जिस स्त्रीके जन्म लग्नमें शुक्रके नवांशमें मङ्गल और मङ्गलके नवांशमें शुक्र बैठे होवें वो स्त्री अवश्य पर पुरुषगामिनी होती है और जिस स्त्रीके चन्द्रमायुक्त मंङ्गल और शुक्र सप्तम घरमें बैठे होवें वो अज्ञाके समान होतीहै ऐसा स्वामि जन कहते हैं अर्थात् वो पतिके सुख को नहीं जाननेवालीके समान होती है ॥१५॥ जिस स्त्रीके लग्नसे सप्तम घरमें कई पापग्रह बैठे होवें तब वो स्त्री खुले केश रहनेवाली होतीहै और जिसके सप्तम स्थानमें पापग्रह शुभग्रह दोनोंही साथबैठे होवें वो पुनर्भू होती है और जिसके सप्तम घरमें निर्बल होकर पापग्रह बैठे होवें और कोई शुभ ग्रह उन्हें देखते न होवें तब वो स्त्री पतिसे रहित (विधवा) होतीहै ॥१६॥

लग्ने सितेन्दू कुजमन्दभस्थौ क्रूरेक्षितौ सान्यरता निरुक्ता ।
स्मरे कुजे सार्कसुतेन दृष्टे विनष्टयोनिश्च शुभा शुभाङ्के ॥१७॥
भानोर्भं यदि वा लवः स्मरगृहे संभोगमन्दः पति
श्चन्द्रस्यातिमदो मृदुः क्षितिसुतस्य स्त्रीप्रियः क्रोधयुक् ।
विद्वान् ज्ञस्य गुरोर्वशी गुणयुतः शुक्रस्य भाग्यान्वितो
मन्दस्य प्रवयास्तु गूढमतिरित्युक्तो बुधैर्होरिकैः ॥१८॥

शुक्र और चन्द्रमा मङ्गल या शनिके राशिके होकर जिस स्त्रीके लग्नमें बैठे होवें और उन्हें पापग्रह देखते होवें वो स्त्री परपुरुषगामिनी होतीहै और जिसके सप्तम घरमें मङ्गल बैठा होवे और उसे शनि देखता होवे तौ वह स्त्री विनष्टयोनि होती है और यदि सप्तम भवनमें शुभग्रहका नवांश वर्तमान होवे तौ वह स्त्री शुभा होतीहै॥१७॥जिसके सप्तम घरमें सिंहराशि स्थित होवे अथवा सूर्यका नवांश सप्तम घरमें होवे तौ उसका पति संभोग करनेमें अति मन्द और चन्द्रमाका नवांश सप्तम घरमें होवे तौ उसका पति अतिमदवाला और मृदु होता है और मङ्गलका नवांश सप्तम घरमें होवे तौ उसका पति स्त्रीप्रिय और बड़ा क्रोधी होताहै और यदि बुधका नवांश होवे तौ उसका पति बड़ा विद्वान होताहै और गुरुका नवांश सप्तम घरमें होवे तो उसका पति उसके वशंगत और गुण संपन्न होता है और शुक्रका नवांश सप्तम घरमें होवे तो उसका पति भाग्य संपन्न होताहै और यदि सप्तम घरमें शनिका नवमांश होवे तौ उस स्त्रीका पति वृद्ध होताहै ऐसा ज्योतिष शास्त्रज्ञोंने कहाहै॥१८॥

शुक्रेन्दू स्मरगो स्त्रियं प्रकुरुतः सेर्ष्यां सुखेनान्वितां
सौम्येन्दू च कलासुखोत्तमगुणां शुक्रेन्दुपुत्रावथ ॥

चञ्चद्भाग्यकलाञ्चिताभिरुचिरां सौम्यग्रहेन्द्रास्तनौ
नानाभूषणसद्गुणाम्बरसुखाम्पापग्रहैस्त्वन्यथा ॥ १९ ॥
वैधव्यं स्यात्पापखेटेऽष्टमस्थे रन्ध्रस्वामीसंस्थितो यस्य चांशे ॥
मृत्युः पाके तस्य वाच्योऽङ्गनायाः सौम्यैरर्थस्थानगैःस्यात्स्वयंहि ।

सप्तम घरमें शुक्रचन्द्रमा बैठे होवें तौ उस स्त्रीको ईर्षा करनेवाली और सुखसे युक्त करतेहैं और सप्तम घरमें बुध चन्द्रमा बैठे होवें तौ उस स्त्रीको अनेक कलाओं की जाननेवाली, सुखभोग भोगनेवाली करतेहैं और यदि सप्तमघरमें बुध शुक्रबैठे होवें तब उसे बड़ी भाग्यवती और कलाओंको जाननेवाली करतेहैं और शुभ ग्रह लग्नमें बैठे होवें तौ उस स्त्रीको नाना भूषणोंसे युक्त, उत्तम गुणवती, सुख भोगने वाली, उत्तम वस्त्रोंको पहरनेवाली करतेहैं और यदि पाप ग्रह लग्नमें बैठे होवें तौ इससे विपरीत (इन सब बातोंसे रहित) करतेहैं ॥१९॥ अष्टम घरमें बैठे पापग्रह वैधव्ययोगको करते हैं और अष्टमेश ग्रह जिस ग्रहके नवमांशमें बैठा होवे उसी ग्रहकी दशामें उस स्त्रीकी मृत्यु होतीहै और जे शुभग्रह द्वितीयस्थानमें बैठेहैं वे ग्रह आपही अपनी दशामें उस स्त्रीकी मृत्यु करते हैं ॥ २० ॥

सूर्यारौ खजलाश्रितौ हिमवतः शैलाग्रपातान्मृति
र्भौमेन्द्वर्कसुताःस्वसप्तजलगाः स्यात्कूपवाप्यादितः ॥
सूर्याचन्द्रमसौ खलेक्षितयुतौ कन्यास्थितौ बन्धना
त्तौ चेद्द्व्यङ्गविलग्नसंस्थितिकरौ तोये विलग्नाः स्वतः ॥२१॥
रविसुतो यदि कर्कमुपागतो हिमकरो मकरोपगतो भवेत् ॥
किल जलोदरसंजनिता तदा निधनता वनितासु च कीर्तिता ॥२२॥

सूर्य और मङ्गल दशम और चतुर्थ घरमें बैठे होवें तौ हिमालयपर्वतके शिखरसे गिरनेसे उस स्त्रीकी बावडी कूएसे मृत्यु होतीहै और सूर्यचन्द्रमा दोनों पापग्रहोंसे दृष्ट अथवा युक्त होकर कन्याराशिमें बैठे होवें तौ उस स्त्रीको बंधनसे मृत्यु करते हैं और यदि सूर्य चन्द्रमा दोनों दुःखभाव लग्नके होकरबैठे होवें तौ उस स्त्रीकी आपसे जलमें डूबकर मृत्यु करतेहैं॥२१॥शनि कर्कका होकर बैठा होवे चन्द्रमा मकर का होकर बैठा होवे तब वो स्त्री जलोदर रोगसे मरतीहै ॥ २२ ॥

निशाकरः पापखगान्तरस्थः शस्त्राग्निमृत्युं कुजभे करोति ॥
पापेस्मरस्थेन्यखगे च धर्मे क्लिांगना प्रव्रजितत्वमेति ॥२३॥

कन्यालिगे सिंहगते शशांके पंकेरुहाक्षी खलु साल्पपुत्रा ॥
पुत्रालयं चेत्खलु खेचरेन्द्रैर्दृष्टं युतं वा बहुता च तेषाम् ॥ २४ ॥

पापग्रहोंके साथ चन्द्रमा यदि मङ्गलकेघर का होकर बैठा होवे तब उस स्त्रीकी शस्त्रसे या अग्निसे मृत्यु करताहै और जिसके पापग्रह तौ सप्तम घरमें बैठे होवें और ग्रह नवमस्थानमें स्थित होवे वह स्त्री सन्यास लेनेवाली (अवधूतानी) होतीहै ॥ ॥ २३ ॥ कन्या या बृश्चिक या सिंह इन राशियों में से किसी राशिका होकर चंद्रमा होवे तौ वह स्त्री अल्पपुत्रा होतीहै और यदि पुत्रस्थान (५) को ग्रह देखते होवें तौ वह स्त्री अनेक पुत्रवाली होतीहै ॥ २४ ॥

शुक्रेन्दुसौम्याविबला भवेयुः शनैश्चरोमध्यबलो यदि स्यात
शेषाः सवीर्या विषमे च लग्ने योषाविशेषात्पुरुषप्रगल्भा ॥ २५॥
समे विलग्ने यदि संस्थिताः स्युर्बलान्विताः शुक्रबुधेन्दुजीवाः ॥
स्यात्कामिनी ब्रह्मविचारचर्चा परागमज्ञानविराजमाना ॥ २६ ॥

जिस स्त्रीके शुक्र चन्द्रमा बुध ए तीनों ही ग्रह विबल होकर बैठे होवें और शनैश्चर मध्यबली होवे और बाकी सब ग्रह बली होवें और विषमलग्न होवे तब वो स्त्रीभी पुरुषसे धृष्ट होतीहै ॥२५॥ शुक्र बुध चंद्रमा और बृहस्पति ये सब बली होकर समसंख्याक लग्न २।४।६।८।१०।१२ में बैठे होवें तौ वह स्त्री ब्रह्मविचार चर्चाके बराबर ज्ञानसे विराजमान होतीहै ॥ २६ ॥

पूर्वैर्यन्मुनिभिः सविस्तरतया स्त्रीजातके कीर्तितं
सम्यग्वाप्याशुभं च यन्मतिमता वाच्यं विदित्वा बलम् ॥
योगानां च नियोजयेत्फलमिदं पृच्छाविलग्ने तथा
पाणिप्रग्रहणे तथा च वरणे संभूतिकालेपि च ॥२७ ॥

जो पहले मुनियोंने विस्तारसे स्त्रीजातकमें कहाहै वो सब ठीक २ ही कहा है इसमें जो कुछ शुभाशुभ फल कहना होवे सो सब बुद्धिमानको बलाबल विचार कहना चाहिये इन सब योगोंके फलको प्रश्न लग्नके समय अथवा पाणिग्रहण के समयमें और सगाई के समयमें और जन्मसमयमें विचार करना चाहिये॥२७ ॥

नारीचक्रे मस्तके त्रीणि भानि वक्त्रेभानां सप्तकं स्थापनीयम् ॥
प्रत्येकं स्युर्वेदतारा उरोजे तिस्रस्तारा हृत्प्रदेशे निवेश्याः ॥ २८॥

नाभौ देयं भत्रयं त्रीणि गुह्ये भानोर्धिष्ण्याच्चन्द्रधिष्ण्यावधीत्थम्।
सत्संतापः शीर्षभे वक्त्रसंस्थे नित्यं मिष्टान्नानि सौख्योपलब्धिः॥२९
कामं स्वामिप्रेमवृद्धिस्तनस्थे वक्षोदेशावस्थितेऽत्यन्तहर्षः ॥
पत्युश्चिन्तानन्तवृद्धिश्च नाभौ गुह्यस्थे स्यान्मन्मथाधिक्यमुच्चैः॥३०

स्त्रीके देहाकार एक चक्र बनावें उस मूर्ति के प्रत्येक अङ्ग में सूर्याधिष्ठित नक्षत्रसे लेकर चंद्राधिष्ठित नक्षत्र पर्यंत इस रीति से नक्षत्रोंको स्थापन करे शिर में तीन नक्षत्र, मुखमें सात नक्षश स्तनों में ४ नक्षत्र, हृदयमें ३ नक्षत्र, नाभिमें ३ नक्षत्र और त्रिशयेंद्रिय में ३ नक्षत्र रक्खै उनमें सिरके नक्षत्रोंका फल सत्संताप होताहै ॥ २९ ॥ स्तनगत नक्षत्रोंमें स्वामिसे प्रेमकी वृद्धि फल होताहै और वक्षस्थानगत नक्षत्रोंसे अत्यन्त हर्ष होताहै और नाभिगत नक्षत्रोंसे स्त्रीको पतिकी चिंता होतीहै और अत्यन्त वृद्धिभी होतीहै और गुह्येंद्रियगत नक्षत्रोंसे स्त्री को मन्मथा (कामा) धिक्य होताहै यह सब स्त्री आकार चक्रका फल कहाहै ।

ग्रंथकर्तृवंशवर्णनम् ।

गोदावरीतीरविराजमानं पार्थाभिधानं पुटभेदनं यत ॥
सद्गोलविद्यामलकीर्तिभाजां मत्पूर्वजानां वसतिस्थलं तत ॥ ३१॥
तत्रत्यदैवज्ञनृसिंहसूनुर्गजाननाराधनजाभिमानः ॥
श्रीढुण्ढिराजो रचयांबभूव होरागमेनुक्रममादरेण ॥ ३२ ॥
इतिश्रीदैवज्ञढुण्ढिराजविरचिते जातकाभरणे स्त्रीजातकाध्यायः ॥

गोदावरी नदीके तीरपर विराजमान (अतिसुशोभित) पार्थ नाम से विख्यात नगर जो उत्कृष्ट खगोल विद्याकी अमल कीर्तिसे जगत में विख्यात हमारे पूर्वजोंका निवास स्थान है ॥ ३१ ॥ उस पार्थ नाम नगर में निवास करने वाले नृसिंहनाम ज्योतिर्विदके पुत्र श्रीगजाननके आराधनसे हुआहै अभिमान जिसको ऐसे उत्पन्न श्रीढुंढिराजनाम कविने आदरसे इस जातकाभरण नाम ग्रंथको निर्माण किया है जिसमें समग्र ज्योतिषशास्त्रका अनुक्रम गर्भित है ॥ ३२ ॥

इतिश्री जातकाभरणे ढुण्ढिराजकविकृते मलमार्जन्यां टीकायां चतुर्वेदिवनमालिकृतायां भाषानुवादितायां स्त्रीजातकवर्णनं नामषट्त्रिंशोऽध्यायः समाप्तः ॥३६॥

सर्वार्थचिंतामणौ राहुकेत्वोरुच्चादिविचार ॥

राहोः कन्यागृहं प्रोक्तं राहूच्चं मिथुनं स्मृतं ॥
एतत्सप्तमराशिस्तु केतोश्चैव तथैव च ॥ १ ॥
राहोर्वृषं च केतोस्तु वृश्चिकं तुङ्गसंज्ञितम् ॥
मूलत्रिकोणं कर्कं च क्रियं मित्रभमुच्यते ॥ २ ॥
एतत्सप्तमराशिस्तु केतोर्मूलत्रिकोणकम् ॥ इतिज्ञेयम् ॥

राहुका क्षेत्र कन्या समझना और राहुका उच्च मिथुन जानना और इससे सप्तम राशि (मीन)केतुका क्षेत्र है और धनराशि केतुका उच्च है ॥१॥ कोई ऐसा कहतेहैं कि राहुका उच्च वृष है और केतुका उच्च वृश्चिकहै और कर्क इसका मूल त्रिकोण है और मेष इसका मित्र है और इससे सप्तम राशि केतुका मूल त्रिकोण कहलाता है ॥ २ ॥

रा		के
स्वक्षेत्र	६	१२
उच्चका	३	९
तु०	२	८
मूलत्रिकोण	४	१०
मित्रक्षेत्र	१	७

जन्मनिलग्नसंधिनिर्माणश्लोकाः॥

जिस लग्नमें चंद्रमा कुण्डलीमें बैठा होवे उस लग्नकास्वामी ग्रह जिस जगह पर बैठा होवे उससे त्रिकोण ९।५ राशि जन्मलग्न होती है अथवा चन्द्र लग्नका स्वामीजो ग्रहहै, वोजिस जगह बैठा होवे उसकी राशिसे सप्तम राशि या नवम पंचम राशि लग्न होती है इस प्रकारसे जन्मलग्नका निश्चयकरना चाहिये ॥ १ ॥

अथारिष्टशांत्युपायः ।

देवताओं का पूजन करनेसे दान करनेसे साधुजनों के सङ्गमसे और ब्राह्मणों की सेवा करने से अपमृत्यु नष्ट हो जातीहै इससे देव पूजनादि तीनों काम मनुष्यको अवश्य ही करने चाहिये ॥ १ ॥

मधुपुरीवसतिर्द्विजमाधुरोमधुकरो यतिराजपदांबुजे ॥
व्यरचितेन विदा वनमालिना नरगिरेयमहो मलमार्जनी ॥ १ ॥
ग्रहशराङ्कनिशाकरैः [illegible] ॥
कुजदिने समगादियमंततो [illegible] मलमार्जनी ॥ २ ॥